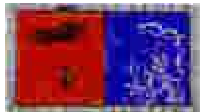
## 'विदेह' ३०९ म अंक ०१ नवम्बर २०२० (वर्ष १३ मास १५५ अंक ३०९)

*ऐ अंकमे अछि:-*



विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



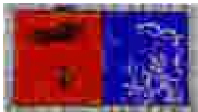
मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

**३. पद्य**



विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

Go to the link below for download of old issues of VIDEHA Maithili e magazine in .pdf format and Maithili Audio/ Video/ Books/ paintings/ photo files. विदेहक पुरान अंक आ ऑडियो/ वीडियो/ पोथी/ चित्रकला/ फोटो सभक फाइल सभ डाउनलोड करबाक हेतु नीचाँक लिंक पर जाउ।



VIDEHA ARCHIVE विदेह पेटार

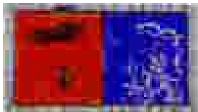


View Videha googlegroups (since July 2008)



view Videha Facebook Official Group (since January 2008)- for announcements

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

१. *गजेन्द्र ठाकुर*

.................................................................................................................

.................................................................................................................

**[संघ लोक सेवा आयोग/ बिहार लोक सेवा आयोगक परीक्षा लेल मैथिली (अनिवार्य आ ऐच्छिक) आ आन ऐच्छिक विषय आ सामान्य ज्ञान (अंग्रेजी माध्यम) हेतु सामिग्री]**

**[एन.टी.ए.- यू.जी.सी.-नेट-मैथिली लेल सेहो]**

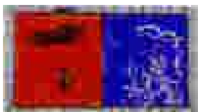
[STUDY MATERIALS FOR UPSC (UNION PUBLIC SERVICE COMMISSION) & BPSC (BIHAR PUBLIC SERVICE COMMISSION) EXAMS- MAITHILI (COMPULSORY & OPTIONAL) AND OTHER OPTIONALS AND GENERAL STUDIES (ENGLISH MEDIUM)]

[FOR NTA-UGC-NET-MAITHILI ALSO]

**यू. पी. एस. सी. (मेन्स) २०२० ऑप्शनल: मैथिली साहित्य विषयक टेस्ट सीरीज**

यू.पी.एस.सी. क प्रिलिमिनरी परीक्षा २०२० सम्पन्न भऽ गेल अछि। जे परीक्षार्थी एहि परीक्षामे उत्तीर्ण करताह आ जँ मेन्समे हुनकर ऑप्शनल विषय मैथिली साहित्य हेतन्हि तँ ओ एहि टेस्ट-सीरीजमे सम्मिलित भऽ सकैत छथि। टेस्ट सीरीजक प्रारम्भ प्रिलिम्सक रिजल्टक तत्काल बाद होयत। टेस्ट-सीरीजक उत्तर विद्यार्थी स्कैन कऽ editorial.staff.videha@gmail.com पर पठा सकैत छथि, जँ मेलसँ पठेबामे असोकर्ज होइन्हि तँ ओ हमर ह्वाट्सएप नम्बर 9560960721 पर सेहो प्रश्नोत्तर पठा सकैत छथि। संगमे ओ अपन प्रिलिम्सक एडमिट कार्डक स्कैन कएल कॉपी सेहो वेरीफिकेशन लेल पठाबथि। परीक्षामे सभ प्रश्नक उत्तर नहि देमय पड़ैत छैक मुदा जँ टेस्ट सीरीजमे विद्यार्थी सभ प्रश्नक उत्तर देताह तँ हुनका लेल श्रेयस्कर रहतन्हि। विदेहक सभ स्कीम जेकाँ ईहो पूर्णतः निःशुल्क अछि।- **गजेन्द्र ठाकुर**

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

**संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित सिविल सर्विसेज (मुख्य) परीक्षा, २०२० मैथिली (ऐच्छिक) लेल टेस्ट सीरीज/ प्रश्न-पत्र- १ आ २**

TEST SERIES-1

[एन.टी.ए.- यू.जी.सी.-नेट-मैथिली लेल/ FOR NTA-UGC-NET-MAITHILI]

NTA_UGC_NET_MAITHILI_01

NTA_UGC_NET_MAITHILI_02

NTA_UGC_NET_MAITHILI_03 (श्री शम्भु कुमार सिंह द्वारा संकलित)

*Videha e-Learning*




MAITHILI (COMPULSORY & OPTIONAL)

UPSC MAITHILI OPTIONAL SYLLABUS

BPSC MAITHILI OPTIONAL SYLLABUS

**मैथिली प्रश्नपत्र- यू.पी.एस.सी. (ऐच्छिक)**

**मैथिली प्रश्नपत्र- यू.पी.एस.सी. (अनिवार्य)**

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

**मैथिली प्रश्नपत्र- बी.पी.एस.सी.(ऐच्छिक)**

**मैथिलीक वर्तनी**

१

भाषापाक

२

मैथिलीक वर्तनीमे पर्याप्त विविधता अछि। मुदा प्रश्नपत्र देखला उत्तर एकर वर्तनी इग्नू BMAF001 सँ प्रेरित बुझाइत अछि, से एकर एकरा एक उखड़ाहामे उनटा-पुनटा दियौ, ततबे धरि पर्याप्त अछि। यू.पी.एस.सी. क **मैथिली (कम्पलसरी) पेपर लेल सेहो ई पर्याप्त अछि,** से जे विद्यार्थी मैथिली (कम्पलसरी) पेपर लेने छथि से एकर एकटा आर फास्ट-रीडिंग दोसर-उखड़ाहामे करथि|

IGNOU इग्नू BMAF-001

....................................................................................................................

MAITHILI (OPTIONAL)

TOPIC 1 [Place of Maithili in Indo-European Language Family/ Origin and development of Maithili language (Sanskrit, Prakrit, Avhatt, Maithili) भारोपीय भाषा परिवार मध्य मैथिलीक स्थान/ मैथिली भाषाक उद्भव ओ विकास (संस्कृत, प्राकृत, अवहट्ट, मैथिली)]

TOPIC 2 (Criticism- Different Literary Forms in Modern Era/ test of critical ability of the candidates)

TOPIC 3 (ज्योतिरीश्वर, विद्यापति आ गोविन्ददास सिलेबसमे छथि आ रसमय कवि चतुर चतुरभुज विद्यापति कालीन कवि छथि। एतय समीक्षा शृंखलाक प्रारम्भ करबासँ पूर्व चारू गोटेक शब्दावली नव शब्दक पर्याय संग देल जा रहल अछि। नव आ पुरान शब्दावलीक ज्ञानसँ ज्योतिरीश्वर, विद्यापति आ

गोविन्ददासक प्रश्नोत्तरमे धार आओत, संगहि शब्दकोष बढ़लासँ खाँटी मैथिलीमे प्रश्नोत्तर लिखबामे धाख आस्ते-आस्ते खतम होयत, लेखनीमे प्रवाह आयत आ सुच्चा भावक अभिव्यक्ति भय सकत।)



विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

.........................................................................................................................

GENERAL STUDIES (PRELIMINARY & MAINS)

GS (Pre)

TOPIC 1

GS (Mains)

NCERT-ENVIRONMENT CLASS XI-XII

NCERT PDF I-XII

TN BOARD PDF I-XII

ALL INDIA RADIO ENGLISH NEWS

ALL INDIA RADIO NEWS ARCHIVE

ALL INDIA RADIO TALKS AND CURRENT AFFAIRS

RAJYA SABHA TV NEWS DISCUSSIONS

.........................................................................................................................

OTHER OPTIONALS

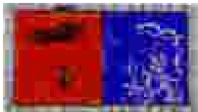
.........................................................................................................................

IGNOU eGYANKOSH

(अनुवर्तते)

**-गजेन्द्र ठाकुर**

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

## २. गद्य



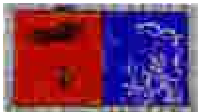
विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

**योगेन्द्र पाठक वियोगी**

**नरक विजय**

(एहि नाटकक एक संस्करण हमर पोथी 'त्रिनाटकम्' मे छपि गेल अछि। ओहि मे दृश्यक संख्या बहुत बेसी रहला सँ किछु निर्देशक लोकनि एकर मंचन पर प्रश्न चिन्ह लगौलनि। ओहि आलोचना कें ध्यान मे रखैत एकरा परिवर्धित कएल गेल। एकर बंगला अनुवाद श्री नवीन चौधरी केलनि अछि।- नाटककार)

**पात्र परिचय**

**मानव पात्र** – रमेश, सुरेश, अनुपम अमित (वैज्ञानिक)

**पौराणिक पात्र** – ब्रह्मा, विष्णु, महेश, नारद, यमराज, चित्रगुप्त, दू यमदूत

**अंक 1**

**दृश्य 2**

*मंच सज्जा पछिले दृश्य सन, खाली शास्त्र-पुराणक पोथीक बदला मोटका विज्ञान पोथी, जर्नल आदि राखल। कुर्सी चारिटा। डिजिटल डिस्प्ले बोर्ड पर लीखल छैक ''AI Laboratory (highly confidential)'। ई वैज्ञानिक अनुपमक प्रयोगशाला थिक। प्रकाश वैज्ञानिक पर फोकस होइत अछि। अपना प्रयोगशाला मे बैसल ओ लैपटॉप पर कोनो लेख देखि रहल छथि आ लेगो ब्लॉक सँ खेला रहल छथि। सामनेक टेबुल पर एकटा छोट आकारक डिजिटल घड़ी, किछु सीडी/डीभीडी, किछु कोटक बटन, लेजर टॉर्च, आर किछु यंत्रादि पसरल छैक। इलेक्ट्रोनिक्स बला टेबुल कने परिवर्तित आ सजाओल। एहि टेबुल पर छद्म वेश मे रमेश आ सुरेश खेलौना बला छोटका ड्रोन सँ किछु काज कऽ रहल छथि।*

*मंचक उपर पर्दा सँ एकटा एलईडी बल्ब लटकि रहल छैक जाहि सँ किछु अन्तराल पर लाल रंगक प्रकाश मंच कें आलोकित करैत छैक। वैज्ञानिक लैपटॉप देखि चौंकैत छथि।*

**वैज्ञानिक** ई की ? *(फेर लैपटॉप कें देखऽ लगैत छथि)*

**रमेश** की भेल सर ?

**वैज्ञानिक** एखनहि बूझि जेबैक, काज करैत रहू।

*जींस-कुर्ता पहिरने एकटा अपरिचित व्यक्तिक प्रवेश। हाथ मे गिटार सन बाजाक गिगबैग लटकल। एकदम वैज्ञानिकक सामने ठाढ़ भऽ जाइत छथि। प्रकाश पहिने आगन्तुक पर पड़ैत अछि तखन पूरा मंच आलोकित होइत अछि।*
*वैज्ञानिक तरे तर मुसकिआइत छथि मुदा अकचकेबाक अभिनय करैत छथि।*

**वैज्ञानिक** अहाँ के छी, एतए भीतर कोना घुसि गेलहुँ ? सुरक्षा अधिकारी अहाँ कें रोकलनि नहि ?

**आगन्तुक** *(ठाढ़ भेल, कने दूर हटि कए स्वतः)* हम तीनू लोक मे स्वच्छन्द विचरण करैत रहैत छी। हमरा के रोकत ? *(प्रकट, वैज्ञानिक लग जा कए)* हम एतए आकाश मार्ग सँ एलहुँ। मुदा अहाँ घबराउ नहि, अहाँक सुरक्षा कें हमरा सँ कोनो खतरा नहि अछि।

**वैज्ञानिक** *(आश्चर्यचकित हेबाक अभिनय करैत, कुर्सी आगू बढ़बैत)* अच्छा, बैसू। बाजू अहाँ की चाहैत छी ? चाह, काफी किछु मँगाबी ?

**आगन्तुक** *(कुर्सी पर बैसैत)* चाह, काफी छोड़ू, काज सूनल जाओ। ओना तऽ हम संगीत सँ सम्बन्ध रखैत छी मुदा एखन अहाँ लग वैज्ञानिक आविष्कार सबहक जानकारी लेबा लेल आएल छी।

**वैज्ञानिक** सब आविष्कारक वर्णन इंटरनेट पर उपलब्ध छैक। आब इंटरनेट अपना ब्रह्मांड मे सबतरि उपलब्ध छैक आ कोनो ग्रहक बासी कतहु बैसल एकरा पढ़ि सकैत अछि।

**आगन्तुक** हम अहाँक मुहें सूनए चाहैत छी।

**वैज्ञानिक** *(रमेश, सुरेश दिस इंगित करैत)* हमर ओ दूनू सहकर्मी एतए काज करथि तऽ कोनो असुविधा नहि ने ?

**आगन्तुक** कोनो असुविधा नहि। अपने सुनाउ।

**वैज्ञानिक** बेस, हम किछु पुरान आविष्कारक जानकारी दऽ सकैत छी। जाहि विषय पर शोध चलिए रहल छैक तकरा बारे मे हम किछु नहि कहब।

**आगन्तुक** कोनो बात नहि, जतेक अहाँ बता सकैत छी से बताउ। *(कागत पर लिखब शुरू करैत छथि।)*

**वैज्ञानिक** (*किछु सोचि आ घड़ीक आकारक अपन स्मार्टफोन बहार करैत)* एकरा देखियौ, आब ई बड़ पुरान आविष्कार भऽ गेलैक, एकर अनेक नव रूप सेहो आबि गेलैक अछि मुदा हम एखनहुँ कखनो कए एकर व्यवहार कऽ लैत छी। एकरा स्मार्टफोन कहल जाइत छैक।

**आगन्तुक** *(किछु लिखैत)* ई की काज करैत छैक ?

**वैज्ञानिक** एना कहियौ –
ई की नहि करैत छैक। साधारण दूरभाष सँ लऽ कए सिनेमा देखब, चित्रक आदान प्रदान करब आ रोबोट कें कोनो काजक लेल आदेश देब तऽ पुरान बात भऽ गेलैक, आब हम एतए बैसले बैसल विश्वक कोनो भाग मे बरखा सेहो करबा सकैत छी, कोनो अन्य भाग मे रातिओ मे कृत्रिम सूर्य उगा सकैत छी, कोनो अन्य ग्रह पर आक्रमण करबा सकैत छी, आरो बहुत किछु।

**आगन्तुक** *(चिन्तित होइत)* कृत्रिम सूर्यक निर्माण भऽ गेल। आश्चर्य ! अहाँ कोनो अन्य ग्रह पर आक्रमण करबा सकैत छी, ई तऽ विशेष चिन्ताक बात। *(लाल प्रकाश हुनका मुह पर पड़ैत अछि, ओ विचलित होइत छथि)* ई प्रकाश किएक ?

**वैज्ञानिक** एतुका सब गतिविधिक जानकारी केन्द्र कें पठाओल जा रहल छैक। असुविधाक लेल क्षमा चाही। *(रमेश आ सुरेश अपना मोबाइल पर कोनो ट्यून लगबैत छथि आ नेपथ्य मे जोर सँ वर्षा आ बिहाड़ि एबाक आवाज होइत छैक। आगन्तुक ध्यान सँ सुनैत छथि)*

**आगन्तुक** ई की भऽ रहल छैक ?

**वैज्ञानिक** कृत्रिम वर्षा लेल एकटा नव प्रयोगक तैयारी मे किछु जाँच कएल जा रहल छैक। चिन्ताक कोनो बात नहि।

**आगन्तुक** कृत्रिम वर्षा ! आश्चर्य। *(लेगो ब्लॉक दिस देखबैत)* ई की छिऐक ?

**वैज्ञानिक** ब्रह्माण्डक अन्य ग्रह पर बनऽ बला महल आदिक नमूना। सौरमंडलक सब ग्रह पर एहन भवन सब बनि गेल छैक। वायुमंडलक संरचनाक हिसाबें भवनक डिजाइन तैयार कएल जाइत छैक।

**आगन्तुक** किछु बुझबा मे नहि आएल, आगू कहियौ।

**वैज्ञानिक** *(हाथ मे एकटा प्लास्टिक जकाँ कोनो पारदर्शी चीज उठबैत)* एकरा देखियौ, ई अद्भुत वस्तु थिक।

**आगन्तुक** *(किछु नहि देखैत)* अहाँ हमरा बड़ बुड़िबक बुझैत छी की ? खाली हाथ देखा कए कहैत छी एकरा देखियौ। एना ठकू नहि।

**वैज्ञानिक** इएह तऽ एकर विशेषता छैक, हमरा हाथ मे अछि मुदा अहाँ देखि नहि सकैत छिऐक। ई अदृश्य पदार्थ छिऐक। एकर गुण सब सुनबैक तऽ ततेक आश्चर्य लागत जे अहाँ फेर कहब ठकैत छी।

**आगन्तुक** बेस, कहियौ।

**वैज्ञानिक** संक्षेप मे बूझि लिअऽ जे धरती पर जे कोनो प्राकृतिक धातु (metal) पदार्थ अछि तकर नीक सँ नीक गुण एकरा गुणक तुलना मे करोड़ो गुणा न्यून लागत। आ सबसँ महत्वपूर्ण बात जे एकरा पर तापक कोनो असरि होइते नहि छैक, कतेको सूर्यक सम्मिलित ताप कें ई सहि सकैत अछि। एकर वस्त्र जे कोनो वस्तु कें ओढ़ा देबैक ओ अदृश्य भऽ जाएत। ओकरा आगिक कोनो डरे नहि रहतै।

**आगन्तुक** *(बेस आश्चर्यचकित होइत)* सत्ते कहैत छी ?

**वैज्ञानिक** हम तऽ पहिनहि कहलहुँ जे अहाँ कें लागत हम झूठ बजैत छी। हमर काज छल सुना देब, विश्वास करी बा न हि से तऽ अहाँ जानी।

**आगन्तुक** *(बेस चिन्तित होइत)* ठीक छैक, किछु आर सुनाउ।

**वैज्ञानिक** एकर दोसर गुण छैक जे विशेष तरीका सँ एहि मे बिजलीक धारा बहाओल गेला सँ ई पारदर्शी नहि रहि जाइत छैक, एकरा सँ लेजर प्रकाश बहराइत छैक।

**आगन्तुक** *(लिखबाक उपक्रम करैत)* ई लेजर प्रकाश की होइत छैक ?

**वैज्ञानिक** कृत्रिम सूर्ये जकाँ पूर्णतः मानव निर्मित अजूबा। *(एकटा लेजर टॉर्च उठा कए वैज्ञानिक ओकर प्रकाश चारू कात देखबऽ लगैत छथि, प्रकाश अनेक पुंज मे बँटैत छैक, एक दू बेर आगन्तुकक आँखि पर सेहो पड़ैत छनि, ओ हाथ सँ आँखि झँपैत छथि आ विस्मित होइत छथि)*

**आगन्तुक** एहि सँ तऽ आँखि आन्हर भऽ जेतैक।

**वैज्ञानिक** ओ क्षणिक प्रभाव छैक, चिन्ताक बात नहि।

**आगन्तुक** बेस, मानि लैत छी। एकर आर की की गुण छैक ?

**वैज्ञानिक** सबटा विस्तार सँ कहऽ लागब तऽ एक दिन मे खतमो नहि होएत। संक्षेप मे बूझि लिअऽ जे लेजर प्रकाश धरती पर प्रायः सब क्षेत्र मे उपयोग भऽ रहलैक अछि आ सब लोक एकर गुण सँ परिचित अछि। एही प्रकाश द्वारा हम एतए बैसले बैसल कोनो ग्रह पर शत्रु कें नष्ट कऽ सकैत छी।

**आगन्तुक** एकर एकटा नमूना हमरा भेटि सकत की ?

**वैज्ञानिक** *(एकटा पुरान छोट लेजर पेन हुनका दैत)* ई राखि लेल जाओ।

*(सुरेश खेलौना बला ड्रोन कें उड़बैत छथि। नेपथ्य मे हवाइ जहाज उड़बाक आवाज होइत। आगन्तुक एहि खेला कें आश्चर्यचकित भावें देखैत छथि आ आबाज कें अकानैत छथि। ड्रोन मंच पर एम्हर ओम्हर उड़ैत रहैत छैक आ फेर एक क्षणक लेल आगन्तुक के माथ पर बैसि जाइत छैक। ओ अकचकाएल भावें छड़पि कए कुर्सी सँ उठि जाइत छथि। तखने ड्रोन हुनका माथ सँ उड़ि जाइत छैक। ओ असौकर्यक भाव देखबैत माथ हँसोथैत छथि। तकर बाद ओ ड्रोन वैज्ञानिक के सामने रुकि जाइत छैक।)*

**रमेश** हमरा सबहिक प्रयोग सफल रहल सर। ई यान आब तैयार अछि। आब हमरा सबकें अनुमति भेटए।

**वैज्ञानिक** बहुत नीक। आब अहाँ दूनू गोटे अपन अभियान पर जा सकैत छी। हमर शुभकामना। *(वैज्ञानिकक पैर छुबैत रमेश आ सुरेशक प्रस्थान)*

**आगन्तुक** ई कोन चिड़ै छियैक जे एतेक जोर के आवाज करैत उड़ैत छैक ?

**वैज्ञानिक** चिड़ै नहि
ई अन्तरिक्ष यान छिऐक जे अपना ब्रह्मांड मे कतहु जा सकैत अछि। एकर ओजन मात्र सौ ग्राम छैक मुदा ई एक हजार किलोग्रामक ओजन उठा कए उड़ि सकैत अछि।

**आगन्तुक** ई तऽ पुष्पक विमानक कान कटलक यौ।

**वैज्ञानिक** आब ककर कान कटलक आ ककर नाक कटलक तकर अन्दाज हमरा तऽ नहि अछि। अहाँ कोन काल्पनिक पुष्पक विमानक चर्चा करैत छी से तऽ अहीं जानी मुदा हमर टीम एकटा एहन यान पर शोध कऽ रहल अछि जे अन्य ब्रह्मांडक यात्रा सेहो कऽ सकत। एकर बारे मे हम एखन किछु नहि कहि सकब।

**आगन्तुक** मुदा अन्य ब्रह्मांड पर जेबा लेल अहाँ सब कें देवता सबहक संग युद्ध करऽ पड़त।

**वैज्ञानिक** *(कने खिसिएबाक मुद्रा मे)* ई तऽ अनर्गल बात भेल, देवता लोकनि अपने सबतरि बौआइत रहथि से नीक आ मानव अपन आविष्कारक बल पर कतहु जाए तऽ हुनका सँ युद्ध करऽ पड़त। ओना कोनो युद्ध लेल हम सब रोबोट सेना आ विभिन्न प्रकारक परमाणु बम तैयार कइए लेने छी।

**आगन्तुक** रोबोट सेना की भेलैक ?

**वैज्ञानिक** रोबोट माने भेल यंत्र मानव जे पूर्णतया मानव निर्मित अछि। छिऐक तऽ ई एक प्रकारक यंत्र मुदा प्रजनन छोड़ि बाँकी सब काज मनुक्खे जकाँ करैत अछि। सीमित मात्रा मे प्रजनन सेहो कऽ सकैत अछि, माने दोसर रोबोट कें बना सकैत अछि यदि अनुमति दऽ दियैक।

**आगन्तुक** *(आश्चर्य सँ आँखि पसारैत)* अद्भुत, एहि रोबोट सेनाक संहारक कोनो विधि ?

**वैज्ञानिक** ओ हम नहि कहि सकैत छी। एतेक बूझि लिअऽ जे अस्त्र शस्त्रक कोनो असरि नहि होइत छैक एकरा पर।

**आगन्तुक** आ परमाणु बम की भेलैक ?

**वैज्ञानिक** कने घुसकि आउ। *(लैपटॉप पर एकटा छोट भिडियो हुनका देखेबाक उपक्रम)* अपने जे देखलियैक ताहि सँ दस लाखक जनसंख्या बला शहर नष्ट भऽ गेल छलैक। एखन एहन शक्तिशाली बम सब छैक जे एकेटा सँ आर्यावर्त सदृश देश स्वाहा भऽ जाएत।

**आगन्तुक** *(बहुत बेसी चिन्तित होइत)* एतेक शक्तिशाली ! एहन अस्त्र तऽ महाभारत युद्ध मे सेहो नहि छलैक। बेस, आगू कहियौ।

**वैज्ञानिक** एकरा देखियौक *(हाथ मे एकटा बटन सदृश वस्तु लैत)* ई भेल हमर प्रतिरूप। हमर मस्तिष्कक सब ज्ञान एहि मे भरल छैक। एकरा साइबोर्ग (cyborg) अवस्था कहल जाइत छैक। हम आब एहि अवस्था मे अमर भऽ गेल छी। एकर एक प्रति राष्ट्रीय संग्रहालय मे सेहो राखल छैक। आब हमरा मृत्युक कोनो डर नहि अछि।

**आगन्तुक** (*लिखब बन्द करैत आ कागत कें पॉकेट मे रखैत*) बर बेस, एहि सँ बेसी हमरा दिमाग मे एखन नहि अँटत। की हमरा अपन अंतरिक्ष यानक एकटा नमूना दऽ सकैत छी ?

**वैज्ञानिक** *(अस्वीकारक मुद्रा बनबैत)* माफ करब मुदा एहि लेल उच्च स्तरीय अनुमतिक आवश्यकता छैक। संगहि अपनेक पूर्ण परिचय सेहो जरूरी होएत।

**आगन्तुक** *(परिचयक नाम पर कने घबराइत)* कोनो बात नहि। रहए दियौक। एतेक जानकारीक लेल बहुत धन्यवाद। चलैत छी। *(प्रस्थान)*

**वैज्ञानिक** *(दर्शक कें सम्बोधित करैत)* अहाँ सब चिन्हलिएनि ई के छलाह ? नहि ने ? अरे ओएह नारद बाबा, वेष बदलि कए आएल छलाह देवता सबहक दिस सँ धरती पर जासूसी करए लेल। हमरा खुफिया रिपोर्ट भेटि गेल छल तें विज्ञानक प्रगतिक बारे मे चुनि चुनि कए बात कहलिएनि। हमर बात सूनि कए केहन चिन्तित भऽ रहल छलाह से तऽ अपने सब देखिये लेलियैक। हमरा तऽ लागल जे बेसी खिस्सा कहबनि तऽ कतहु हॉर्ट अटैक ने भऽ जाइन। मुदा भागि गेलाह। देखियौ आगू की करैत छथि।

***वैज्ञानिक द्वारा लैपटॉप बन्द करबाक उपक्रम, प्रकाश शनैः शनैः बंद होइत अछि, नेपथ्य मे धड़-पकड़ के हल्ला, किछु लोक एम्हर ओम्हर दौड़ैत देखाइत अछि। दू बेर पिस्तौल चलबाक शब्द सूनऽ मे अबैत अछि। तखने घोषणा*** ___

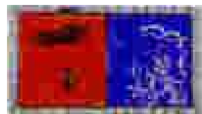
घबराउ नहि, एहि गोली सँ दूनू बाहुबली रमेश आ सुरेशक अन्त भेल। पुलिस द्वारा घेरल जेबाक बाद पकड़ेबाक डर सँ दूनू बाहुबली रमेश आ सुरेश अपने गोली सँ आत्महत्या कऽ लेलक। करीब बीस बरखक बाद राज्य मे शान्ति बहाल होएत। चलू महावीर मंदिर मे लड्डू चढ़बै लेल। सब जा रहल अछि।

(अगिला अंकमे जारी)

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

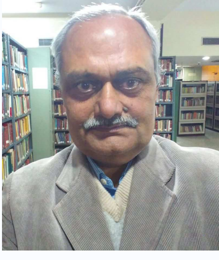


विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

**रबीन्द्र नारायण मिश्र- धारावाहिक उपन्यास-लजकोटर**

**लजकोटर**

(प्रवासीक जीवनपर आधारित)

**(९म खेप)**

-9-

माएक संगे हम अपन डेरा पहुँचलहुँ ।एकहि आङनमे एकपाँतिसँ दसटा कोठरी छल जाहिमे किरायेदारसभ रहैत छल । एकहिटा शौचालय-स्नानगृह छल जाहिमे बेराबेरी सभक काज चलैत छल । कोठलीसभक आगामे कनीटा खाली जगह रहैक जतए भानस बनैत छल । आङनमे लोकक मिस पड़ैत रहैथ छल। रच्छ ई छल जे लगीचेमे एकटा पार्क छल । जकरा ककरो मोन उबिआइत तँ ओहि पार्कमे चल जाइत छल । माएकँ आबिगेलासँ हमरा मोन हल्लुक लगैतछल मुदा ओकरा सदरिकाल गुम्मे देखिऐक । कखनो किछु नहि कहैत मुदा मोनमे प्रशन्नता नहि रहैत छलैक ।

एहिबेर दिल्ली अएलाक बाद कारखानाबला काज छुटि गेल। बहुतरास कर्मचारीसभकेँ हटा देने रहैक। हम अपनाभरि बहुत प्रयास केलहुँ जे थोड़बो दिन काज करए दिअए मुदा मालिक नहि मानलक । तखन किछु तँ करबेक छल । हनुमानमंदिरक आगा पटरीपर चाह-पानक दोकान खोलि लेलहुँ । भोरसँ रातिधरि दोकानपर रहए पड़ैत छल । क्रमश:दोकानमे बिक्री बढ़ए लगलैक। मुदा स्थानीय गुंडा सभ हफ्ता लैत छल । जतेक कमाइ होइक तकेर आधासँ बेसीओकरेसभमे चल जाइत छल ।

पुलिसिआ आतंकसँ बचबाक हेतु हम विजयकेँ कै बेर फोन करिऐक मुदा ओ फोन काटि दिअए,कहिओ गप्पे नहि करए। बुझेबे नहि करए जे बात की छैक? पटरीपर दोकान करब एतेक मोसकिल काज थिक से हमरा नहि बूझल छल ।दोसर कोनो व्योंत नहि छल,तँ सभ किछु बरदास करैत रहलहुँ ।

घरमे माएक हालत चिंताजनक भेल जाइत छल । ओकरा रहि-रहि कए गाम मोन पड़ैक,गामक मंदिर,वृह्मस्थान,तिथि-त्योहार सभबातक चर्चा करैत रहैत । कोना-कोना के-के झगड़ा केलक,कोना सोलहभेलैक, कोना के जहल चल गेल से सभ सुनबैत रहैत । असलमे दिन-राति ओकर माथमे गामे घुमैत रहैत छलैक,ओ करितै की?

क्रमशः ओकर हालत खराबे होइत गेलैक । एकदिन तँ बैसले-बैसल माथा घुमि गेलैक आ धराम दए खसलि । हम दोकानपर रही । अगल-बगलक लोक फोन केलक । दोड़ल डेरा पहुँचलहुँ ।दहिना जाँघक हड्डी टुटि गेल रहैक । उठा-पुठा कए अस्पताल लए गेलहुँ । भरिदिन अस्पतालक चक्कर लगबैत रहलहुँ।डाक्टरसभ किओ किछु किओ किछु राय दैत रहल । शल्य चिकित्सा करेबाक हेतु ने ओ अपने तैयार छल ने हमर मोन मानए मुदा डाक्टरक कहब जे शल्य चिकित्सा जरुरी छनि । हारि कए हम अपन सहमति दए देलिऐक ।शल्य चिकित्सामे की भेलैक की नहि ,ओकर हालत गड़बड़ाइते गेल आ दूदिनक बाद ओ अस्पतालेमे दम तोड़ि देलक।

माएक एहि तरहेँ गुजरि गेलासँ हमरा तँ लकबा मारि गेल। बहुत अफशोच भेल जे बेकारे एकरा अपना संगे अनलिऐक । गाममे कष्टे सही ,जीबि तँ रहल छल ।मुदा आब की? जीवनभरिक हेतु एकटा अपराधबोध हमरा मोनमे होइत रहत जे हमरे दुराग्रहक कारण ओकर ई हाल भेल । भावी प्रवाल होइत छैक । आब तँ सभसँ पहिने ओकर अंतिम संस्कारकओरिआन करबाक छल । से सभ जोगार भए गेलैक । यमुनाकातमे माएक अंतिम संस्कारसंपन्न भेल।

संस्कारक बाद श्राद्धक समस्या छल । दिल्लीमे कोनो व्यवस्था नहि छल । ओना गामोक हालत तँ सएह छल मुदा माए सभ दिन गाममे रहलथि । तँ सभक इएह विचार जे हुनकर श्राद्ध गाममे हेबाक चाही । ट्रेनमे टिकटक ओरिआन करबामे विजय बहुत मदति केलाह । अस्तु, उतरी पहिरने गरीबरथसँ गाम बिदा भेलहुँ ।

गाम पहुँचलाक बाद सभसँ पहिने हमरकाका भेंटलाह। एतेक अपनत्वक कहिओ उमीद नहि छल । हमरा अएबासँ पहिनहि ओसारापर हमर रहबाक व्यवस्था कए देने रहथि । चारिम दिन छल । महापात्र अएलाह आ सभटा कृयाकर्म नियमपूर्वक प्रारंभ भेल ।साँझमे काका कहलाह ____

" कोनो चिंता नहि करिअह । सभटा भए जेतैक । कलमबला खेत तोरेसभक छह । ओहीसँ काज चलि जेतैक । लिखापढ़ी बादोमे भए जेतैक । घरक बात छैक ।कनीमनी घटतैक तँ बादोमे दए देबह ,भौजीक काज नीकसँ भए जानि । फेर देखल जेतैक ।"

हम हुनकर बात सुनति रहि गेलहुँ । की जबाब दितिअनि? गामक लोकसभमे सबजाना भोजक प्रचार भए गेल । ओना आबलोककेँ भोजकप्रति पुरना जमाना जकाँ उत्साह नहि रहलैक।गाममे लोको नहि अछि । बेसी लोक बाहरे रहैत अछि।काका हमरा एकटा सादा कागजपर औंठा निसान लेलथि आ श्राद्धक चिंतासँ मुक्त कए देलाह।श्राद्ध नीकसँ संपन्न भए गेल । गामभरि एकादशा,द्वादशा दुनू दिनसबजाना भोज भेल। थैहि,थैहि भए गेल । तेरहम दिन माछ-भात भेल । तकरबाद भगवानक पूजा भेल । ओहीदिन काकाजी अपना ओहिठाम बजओलाह-" दिल्ली कहिआ जेबहक?"

"अखन तँ ओहिविषयमे किछु नहि सोचलिऐक अछि ।"

" कोनो बात नहि । पाँच-सात दिन बादे सही । असलमे तोहरबला घरारीमे मालजालक घर बनेबाक अछि । हमर ओलार बहुत फटकी छैक आ टुटिओ गेल छैक ।"

"की कहलिऐक?'

"एना अंठेलासँ काज चलतह?"

"आब ई घरारी हमर भेल । सभबात पहिने भए चुकल अछि ।"

" की गप्प करैत छी? हम तँ खेतक गप्प केने रही ।"

“खेतक दामसँ बेसी खर्चा कतए जेतैक, तूँही कहह?"

हम बुझि गेलहुँ जे ओबैमानीपर अड़ल छथि । हिनकासंगे गलथोथरी करब व्यर्थ अछि।

गाममे आब किछु बाँचलनहि छल,करबाक हेतु किछु नहि छल । अस्तु, दिल्ली लौटि गेलहुँ ।संयोगसँ तत्कालमे टिकटक जोगार भए गेल । रस्तामे कोनो दिक्कति नहि भेल । ट्रेन बहुत खालिए रहैक । दोसरदिन भेने दिल्ली पहुँचलहुँ । अपन डेरापर गेलहुँ । ओहिठामसँ चोट्टे विजयसँ भेंट करए हुनकर डेरापर पहुँचलहुँ । ओ अपने तँ नहि रहथि मुदा मालती भेटि गेलि । हमरा देखितहि हँसए लागलि ।

"की बात छैक, माथपर केस कटल अछि?"

"माए मरि गेलैक ।"

"से केना की भेलैक?"

"एहीठाम आएल छलि ।दुखित पड़ि गेल ।एतबा कहैत कहैत हमरा कनाए लागल । आगा नहि बाजि सकलहुँ ।"

मालती जलखैक ओरिआनमे लागि गेलीह । ताबे हम ओतहि बैसले रही कि विजय सेहो आबि गेलाह।

"गामसँ कहिआ अएलहुँ?"

"काल्हिए अएलहुँ अछि ।"

"ओ काज किछु चलि रहल अछि कि नहि?

"कहाँ किछु कए रहल छी।

"ठीक छैक, अहाँ काल्हिभोरे थानामे भेंट करू ।"

विजयक गप्पसँ बहुत प्रशन्नता भेल । ताबे मालती जलखै लए कए आबि गेलीह ।जलखै,चाह-पान सभ भेलैक ।मुदा मालती अपना बारे मे किछु नहि बजलीह । हमहुँ किछु नहि पुछलिऐक । भेल जे कहीं विजय बिगड़ि गेलाह तँ होइतो काज बिगड़ि जाएत ।

ओहिठामसँ निकलि बसस्टैंडपर ठाढ़भेल बसक प्रतीक्षा करैत रही कि किशुन देखाएल। ओहो कतहु जा रहल छल । कनी-कनी झकाइत छल । हम ओकरा देखि आबाज देलिऐक-"किशुन!किशुन! मुदा ओनहि सुनलक आ दौड़कए बसमे चढ़ि गेल ।ओकरासँ भेंट होइत-होइत रहि गेल । कोनो बात नहि । एतबा संतोख भेल जे ओ जीबि रहल अछि आ ठीक-ठाक अछि।आब ओ मंदिरेपर रहैत अछि कि कतहु आनठाम चल गेल से पता नहि चलि सकल ।

कनीके कालमे बस अएलैक आ हमहुँ ओहिमे चढ़ि अपन डेरा दिस बिदा भेलहुँ। बसमे जबरदस्त धक्कम-धुक्का छलैक । कहुनाकए आगादिस ससरलहुँ । किछुकालमे एकटा सीट खाली भेलैक । हम ओतए बैसि गेलहुँ ।सटले दोसर सीटपर एकटा गोरनार, बेस चुहिलगर छौंड़ी बैसलि छलि । ओकर पैघ-पैघ आँखि,भरल-भरल देह बेस आकर्षक छल । मोबाइलफोनपर मैथिलिएमे ककरोसँ गप्प कए रहल छलि । ई जानि बहुत प्रशन्नता भेल जे इहो मैथिले छथि । बस चलैत रहलैक । यात्रीसभ चढ़ैत-उतरैत रहल ।हम ओकरादिस तकैत रहलहुँ । ओहो गाहे-बगाहे हमरा दिस घुरैत रहैत छलि। मुदा ततबे । हमरा किछु पुछबाक साहस नहि होआए आ ओ किछु बाजए नहि । मुदा ओ छलि बेस रमनगर । बस हमर डेरासँ

एकस्टाप पहिनेधरि पहुँचि गेल छल ।भेल जे जँ आबो नहि बाजब तँ परिचयो नहि होएत ।आखिर अपना दिसक लोक छथि ,संयोगसँ भेटि गेल छथि तँ परिचय करबामे कोन हर्ज? सएह सोचि हम टोकारा देलिऐक-" अहाँक घर कतए अछि?"

"मधुबनी "

"हमहुँ ओमहरे क छी?

" एहिठाम की करैत छी?"

"किछु नहि । गाम चल गेल रही। माएक श्राद्ध कएक आबि रहल छी ।काज ताकि रहल छी । “

"ओ! केहन काज तकैत छी?"

"जएह भेटि जाए । एहिमे हमर कोनो पसिंद की भए सकैत अछि?"

"अहाँ काल्हि हमरा ओहिठाम आउ । हम अपन बाबूसँ गप्प करबनि ।" ओ अपन मोबाइल नंबर आ पता लिखा देलथि। हम बहुत खुश रही । एकरा एकटा चमत्कारे कहि सकैत छी जे दिल्लीसन जगहमे अपन लोक भेटि जाथि आ ओहो एहन मददिगार होथि ।बसस्टापआबि गेल छल ।उतरैत , उतरैत हम ओकर नाम पुछलिऐक । ओ बजलीह ‘‘लता’’। हम बससँ उतरि गेलहुँ ।बससँ उतरैत काल पलटिकए देखलिऐक । ओहो हमरे दिस ताकि रहल छलि । हम बससँ उतरि अपन डेरा पहुँचलहुँ । डेरा पहुँचतहि माए मोन पड़ि गेल । तरह-तरहक बातसभ मोनमे घुमैत रहल । बहुत मोसकिलसँ दूबजे रातिमे जा कए निन्न भेल।

*रबीन्द्र नारायण मिश्र, पिताक नाम : स्वर्गीय सूर्य नारायण मिश्र, माताक नाम : स्वर्गीया दयाकाशी देवी, बएस : ६६ बर्ख, पैतृक ग्राम : अड़ेर डीह, मातृक : सिन्घिआ ड्योढ़ी, वृति : भारत सरकारक उप सचिव (सेवा निवृत्त)/ स्पेशल मेट्रोपोलिटन मजिस्ट्रेट, दिल्ली(सेवा निवृत्त), शिक्षा : चन्द्रधारी मिथिला महाविद्यालयसँ बी.एस-सी. भौतिक विज्ञानमे प्रतिष्ठा : दिल्ली विश्वविद्यालयसँ विधि स्नातक*
*प्रकाशित कृति : मैथिलीमे:-*
*१. ‘भोरसँ साँझ धरि’ (आत्म कथा), २. ‘प्रसंगवश’ (निबंध), ३. ‘स्वर्ग एतहि अछि’ (यात्रा प्रसंग), ४. ‘फसाद’ (कथा संग्रह) ५. ‘नमस्तस्यै’ (उपन्यास) ६. विविध प्रसंग (निबंध ) ७.महराज(उपन्यास)*

*८.लजकोटर(उपन्यास)९.सीमाक ओहि पार(उपन्यास)१०.समाधान(निबंध संग्रह)*
*११.मातृभूमि(उपन्यास)१२.स्वप्नलोक(उपन्यास)१३.शंखनाद(उपन्यास)१४.इएह थिक जीवन(संस्मरण)*

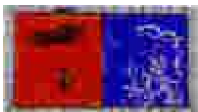
*In English:-*
*1.The Lost House (Collection of short stories), 2.Life is an art*
*हिन्दी में ___*
*१.न्याय की गुहार(उपन्यास)*
*(उपरोक्त पोथीसभ pothi.com, amazon.com आओर www.flipkart.com पर सँ कीनल जा सकैत अछि)*
*इमेल : mishrarn@gmail.com ब्लोग : mishrarn.blogspot.com*
*एमजोनक लेखक पृष्ठ : amazon.com/author/rnmishra*

**ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।**

**जगदीशप्रसाद मण्डल**

**आमक गाछी (धारावाहिक उपन्यास- दोसर खेप)**

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

2.

धीरेन्द्रक डेरासँ निकैल जगमोही सड़कपर आबि बैट्री इंजनबला रिक्सा पकैड़अपन डेरा विदा भेल। ऐठामसँ दू किलोमीटरपर जगमोहीक डेरा छइ। जहिना मौसम उतरने धरतीमे पड़ल बीज एकाएक जीवन धारण करैले क्रियागत होइए तहिना ने मनुखोक जीवनमे अछि। विद्यार्थी जीवनक अन्तिम छोड़पर जहिना जगमोही पहुँच चुकल अछि तहिना ने धीरेन्द्रो पहुँचले अछि। साल भरिक पछाइत तँ दुनूकेँ नवजीवन[i]मे प्रवेश करबेक छइ। ओना, धीरेन्द्र अपन लक्ष्य निर्धारित कऽ चुकल अछि जे बी.ए. केला पछाइत अपना ढंगसँ अपन जीवन निर्माण करब मुदा जगमोही अखन अनिसचितताक स्थितिमे अछि। ओना, उमेरक हिसाबसँ जगमोही बालिग भऽ चुकल अछि। नबालिगे धरि ने बाल-बच्चाक पूर्ण भार माता-पिताकेँ रहै छैन मुदा जखन बेटा-बेटी बालिग भऽ जाइए तखन तँ विचारणीय प्रश्न बीचमे आबिये जाइए।

रिक्सापर चढ़ि जगमोही धीरेन्द्रकेँ कहलक-

“फेर भेँट हेतइ।”

भेँटक घाँट करैत धीरेन्द्र बाजल-

“जरूर, जरूर भेँट हेतइ।”

ओना, इंजिनबला रिक्साक लेल दू किलोमीटरक दूरी बहुत नहियेँ भेल, तँए जगमोहीक मनमे कोनो ओहन प्रश्ने ने उठल जे भविसक विचार करैत, मुदा मनमे अपन विरहाइत भविस तँ नाचिये रहल छेलइ। डेराक आगूमे रिक्सा लगिते रिक्साबलाकेँ भाड़ा दैत जगमोही अपन डेराक कोठरीमे पहुँच,किताब रखि बेसुध भऽ ओछाइनपर ओँघरा गेल। जहिना समुद्रमे जुआरि उठैए तहिना जगमोहीक मन रूपी समुद्रमे जिनगीक जुआरि उठए लगल। एकसंग अनेको विचार जगमोहीक मनमे उठए लगल। बी.ए.क तेसर वर्षमे चारि मास बीत गेल, मात्र आठ मासमे कौलेजसँ निकैल जाएब। उन्नैस-बीस बर्खक उमेरो भइये गेल अछि, जइसँ जहिना माएकेँ बिआहक चिन्ता पकड़ने छैन तहिना पितोजी सेहो चिन्तिते रहै छैथ। दहेजक जे रूप समाजमे बनि गेल अछि तइसँ पितोजी आ माइयो अपन मनोनुकूल परिवारमे बिआह करा पौता कि नहि। एकटा ऑफिसक किरानीक ओकातिये केते भऽ सकैए। माल-जाल जकाँ खरीद-विकरीक बेवहार मनुक्खोक बनि गेल अछि..!

कोनो एक विषयक एक पहलूपर जगमोहीक निर्णय भइये ने पबैत कि धाँइ-दे दोसर उठि जाइत रहइ।अन्तमे, अपन विचारकेँ ठामेपर रोकि जगमोही ओछाइनसँ उठि, माए लग पहुँचल। सुवासिनियोँ बजारसँ सामान कीनि डेरा पहुँचले छेली कि बेटीपर नजैर पड़लैन। जहिना गुम्हराएल मेघ देख लोक मौसम बदलैक सम्भावना बुझए लगैए तहिना जगमोहीकेँ देख सुवासिनीकेँ भेलैन। मुदा केहनो रोग देहमे किए ने हुअए ओ तँ

बजला पछातिये नीकसँ बुझल जाएत। ओना, किछु बाहरी रोग देखलोसँ बुझल जाइते अछि मुदा भीतरिया रोगकेँतँ बुझेला पछातिये कियो बुझिसकैए।

अधखिलल फूल जकाँ जगमोही खिलखिलाइत माएकेँ कहलक-

“माए, मामागामक एकगोरे संगे-संग पढ़ै छैथ।”

नैहरक नाओं सुनिते सुवासिनीक मनमे जेना जलधर भऽ गेलैनतहिना बिहुसैत बजली- “कद-काठी केहेन अछि?”

‘कद-काठी’क पुछैकमाने सुवासिनीक मनमे छेलैन जे अखियाइस कऽ लड़काक परिचय बुझब। किएक तँ गामक जे नवतुरिया अछि ओ तँ सुवासिनीकेँ नैहर छोड़ला पछाइत जन्म लेलक मुदा चेहरो-मोहरोसँ तँ अनुमानित भाँज परिवारक लगिते अछि। मुदा लगले सुवासिनीक विचार बदैल आगू बढ़ि गेलैन। आगू बढ़िते सुवासिनी बजली-

“नामो-ठेकान पुछलहक?”

अपनाकेँ संयमित करैत जगमोही बाजल- “रस्ते-रस्ते भेँट भेला, तखन केना नाम-ठेकान पुछितिऐन! मुदा एते तँ बुझले अछि जे धीरेन्द्र नाम छिऐन।”

‘धीरेन्द्र’ सुनि सुवासिनी अपन नैहरक दियाद-वाद दिस नजैर खिड़बए लगली, मुदा केतौ थाह-पता नहि लगलैन। बजली-

“किछु गपो-सप्प भेलह?”

जगमोही-

“बहुत गप-सप्प तँ नहि भेल मुदा एते तँ ओहो मने-मन बुझबे केलैन जे हमरे गामक धीकधी छी।”

धीरेन्द्रक गाम प्रेमनगर सँ कोस भरि हटल जगमोहीक गाम रामपुर अछि। ओना, एक राज्य आ एक जिलाक गाम रहितो गाम-गाममे अन्तर सेहो अछिए। अन्तरक केतेको कारण अछि। जहिना दू गामक भौगोलिक बनाबट दू रंग रहने आर्थिक स्थितिमे अन्तर होइए तहिना राजनीतिक दृष्टिसँ सेहो होइते अछि। राजनीतिकविचारधारा सेहो भौगोलिके बनाबट जकाँ अनेको रंगक अछिए जइसँ समाजिक रूप-रेखा सेहो अलग होइते अछि।

डेरा अबिते रामलखन कपड़ा बदैल टंकीमे हाथ-पएर धोइ अपन बैसार रूममे पहुँचला। तैबीच जगमोही चाह बना नेने छल। ओना, ऑफिससँ एला पछाइत रामलखन अपन डेरामे तत्खनात् चाहेटा पीबै छैथ, किएक तँ ऑफिस छोड़ला पछाइत ऑफिसेक केन्टिनमे जलखै कऽ लइ छैथ। तेकर कारण अछि जे ऑफिसक

स्टाफकेँ सुविधानुसार जलखै-खेनाइ भेट जाइ छैन। आने दिन जकाँ पाँचो गोरे माने- रामलखन, सुवासिनी आ तीनू बहिन जगमोही, संगे-संग चाह पीबए लगल।

ऑफिससँ डेरा रामलखन अपन संगी- कन्हैयाक संग सभ दिन पएरे एबो करै छैथ आ जेबो करिते छैथ जइसँ रस्तामे अपन-अपन गाम-घरक संग अपन-अपन परिवारक सुख-दुखक गप-सप्प सेहो करिते छैथ...। ऑफिससँ निकलला पछाइत कन्हैया अपन परिवारक बात उठबैत बजला-

“रामलखन भाय, दरमाहाक पाइसँ परिवार चलाएब बोझ बनि रहल अछि। समयपर दरमाहा नइ भेटने सभ दिन संगी सबहक कर्जखौक बनले रहै छी।”

कन्हैयाक बात सुनि रामलखनोक मन ठमकलैन मुदा लगले मनमे उठि गेलैन जे सोझ-साझ बजने वा कनने थोड़े समस्या मेटाएत। तँए, जीवन दिस इशारा करैत रामलखन बजला-

“कन्हैया भाय, ईहो ने देखबै जे एक्के रेंकक कुरसीपर अहूँ छी आ रामानन्दो अछि,दुनू गोरेक दरमहोएक्के रंग अछि।मुदा रामानन्द केना एतेक हाइ स्तरक रहन-सहन बना नेने अछि!”

रामलखनक प्रश्नपर जाबे कन्हैया विचार करितैथ ताबे डेरा पहुँच गेला। होइतो अहिना छै जे सभ-दिनासंगीक बीच किछु प्रश्न जँ पछुआइयो गेल तँ ई आशा बनले रहैए जे औझुका छुटलाहा गप काल्हि पूरा लेब। ओना, गप-सप्पक क्रममे रामलखन परिवारिक जिनगीक बात उठा चुकल छला मुदा जखन अपन डेरा एला आ चाह हाथमे लेलैन तखन कन्हैयाक विचार अनायास मनमे उठलैन। उठिते जखन अपन परिवारक समस्या आ समाधानपर नजैर गेलैन तखन बुकौर लागए लगलैन। परिवारमे तीन-तीनटा बेटी अछि, दोसर कोनो ने आमदनी अछि आ ने कोनो आशा..! बेटा अछि नहि। गाममे जे पैत्रिक सम्पैत अछि ओ दू भाँइक भैयारीक अछि। तहूमे सरकारी नोकरी रहने समाजोक नजैरमे किछु-ने-किछुइज्जत बनियेँ गेल अछि। अखनो गाम-घरमे बेटा-बेटीक बीच पढ़ाइ-लिखाइक दूरी बनले अछि। तैठाम जखन जेठ बेटीकेँ बी.ए. तक पेढ़ेलौंतखन छोट दुनू बेटीक अधिकार सेहो बनियेँ जाइए। जँ से नहि करब तखन परिवारो आ समाजोमे दोखी बनबे करब आ जँ से करब तखन जहिना अखन मास पुरैत-पुरैत हाथ खाली भऽ जाइए, जइसँ किछु-ने-किछु पैंच-उधार भइये जाइए, तहिना ने आगूओ चलत। तहूँमे आब आधासँ बेसी समय नोकरीक समाप्ते भऽ गेल। अखन तक मात्र परिवार चलैत रहल अछि। अगुआएल काजमे मात्र जेठ बेटीकेँ कौलेजमे आ छोट दुनू बेटीकेँ हाइ-स्कूलमे पढ़बै छी। सालभरिक पछाइत जगमोही कौलेजसँ निकलत आ दुनू छोट बेटी एकाएकी कौलेज पहुँचत। तैसंग एका-एकी बिआहोक समस्या सिरचढ़ हेबे करत...।

परिवारक विचार रामलखनक मनकेँ तेना बोझिल बना देलकैन जे आन दिनक अपेक्षा मुँहक चुहचुही मन्हुआ गेलैन।मुदा सुवासिनीक मन ठीक विपरीत छल, नैहरक बात सुनितेहिनकर सुतल स्मृति जागि मुँहक



ISSN 2229-547X VIDEHA

चुहचुहीकेँ बढ़ा देलकैन जइसँ अपन नैहरक गप-सप्प करए चाहै छेली। अपन जगैत जिज्ञासा आ पतिक मन्हुआएल मनकेँ देख सुवासिनी बजली-

"मन किए खसल देखै छी?"

ओना, सुवासिनीक विचार रामलखनकेँ अनसोंहाँत लगलैन मुदा पत्नीकेँ अशिक्षित मानि अनसोंहाँतकेँ मनमे दाबि लेला। अनसोंहाँत ई लगलैन जे अपने परिवारक समस्याक समाधानक बाट जोहि रहल छी, जइसँ परिवार उठि कऽ ठाढ़ो हएत आ आगूओ बढ़त,मुदा तेकर ठीक विपरीत पत्नी बाजि रहल छैथ जे मन बड़ खसल देखै छी..!

परिवारक बीच रामलखन आगूक कोनो बात-विचार करबकेँ अखन नीक नहि बुझि रहल छला।नइ बुझैक कारण मन गवाही दऽ रहल छेलैन जे जहिना अपने पत्नीक संग परिवारकेँ उठि कऽ दौड़ैक विचार कहियो ने कऽ पबै छी तहिना ने आनो-आन अछि। रहबो केना ने करत, अखन जे परिवार सबहक धार बनि गेल अछि ओ यएह ने जे नीक-सँ-नीक आ अधला-सँ-अधला वृत्ति अपनाकऽ पुरुख कमा आनैथ आ महिला घरक भीतर खाइ-पीबैक ओरियान करती। जइसँ पुरुख जहिना परिवारक भीतरक जानकारीसँ अनाड़ी बनल रहै छैथ तहिना उपार्जनमे भागीदारी नइ भेने महिलो अनाड़ीएबनल रहै छैथ। प्रश्न अछि पुरुख-नारीक संयोग-सहयोगसँ परिवारकेँ आगूक दिशा दिस बढ़ाएब। खाएर...।

परिवारक बीच माने पति-पत्नीक बीचक जिनगीमे रामलखन जेतेक डुमकी लगबै छला तेतेक नव-नव विचारो जगै छेलैन आ दुनू परानीक बीचक जिनगीमे ओझरी सेहो लगि रहल छेलैन। जइसँ चेहराक रूप-रंग आरो बेदरंग बनल जा रहल छेलैन। रंगो तँ रंग छी किने जे बेदरंगो होइए, सदरंगो होइए आ कुदरंगो होइते अछि।

लगले रामलखनक मनमे उठलैन जे परिवारकेँ जानब आ जनैत रस्तासँ आगू बढ़ब बाल-बोधक खेल नहि छी, तँए नीक हएत जे अपने किए ने असगरे पहिने ढुड़िया पसाइरपरिवारकेँ नीक जकाँ ढुढ़ि ली।तइले यएह ने नीक हएत जे परिवारक सभ सदस्यकेँ अपना-अपना दिस माने अपन-अपन जीवनानुकूल दिस विचार घुमा दिऐन आ अपनो अपना दिस घुमि कऽ विचारी। तँए, नीक हएत जे पत्नीकेँ कहिऐन- 'अखन मन भारी लगैए तँए कनीकाल आराम करए दिअ, तैबीच अहूँ सभ अपन-अपन काज देखू।'

..विचारैक क्रममे तँ रामलखन विचारि लेला मुदा आगू किछु बजैसँ पहिने दोसर विचार मुँहकेँ रोकि दइ छेलैन। 'बाजी की नइ बाजी, बाजी तँ की बाजी आकि नइ बाजी, अही बीच रामलखनक मनओझरा गेलैन। ओझरा ई गेलैन जे जँ बाजि दिऐ जे 'मन भारी लगैए'आ जँ ओ सभ कोनो बिमारीक आगमन बुझि डॉक्टर-वैद करए लगत, तखन तँ अनेरे ने सभ अपना-अपनीकेँ तेतेक आहि-आलम करत जे जेहो कनी-मनी गुद्दी माथमे

बँचल अछि सेहो नोचा जाएत। तइसँ नीक जे किए ने कनी झूठे बाजि ऑफिसेक काजक नाओं लगा बाजी जे तेहेन फाइल अछि जे की लिखब से फुरबे ने करैए..!रामलखनक मन मानि गेलैन जे एतेक झूठ बजलासँ बेड़ा पार भऽ सकैए। बजला-

“तेहेन जुग-जमाना आबि गेल अछि जे ऑफिसक फाइल कि फाइल जकाँ रहल, ओ तँ फाइलोमे फाइल अछि। लगले अफसरक हुकुम अबैए जे पक्षमे लिखैक अछि आ प्राते भने आदेश बदैल विपक्षमे लिखैक भऽ जाइए। एके फाइलकेँ मास-मास दिन तक रगड़ैत रहै छी तैयो अधखिजुए रहैए..!”

ऑफिसक नाओं सुनि जहिना सुवासिनी तहिना तीनू बेटी सेहो रामलखनकेँ आराम करैक मोहल्लत दऽ देलकैन। ओना, जहिना कोर्टमे कोनो जमानत हाकिम लगले दए दइ छैथ,आ कोनोकेँ मासक-मास रगड़ला पछाइत देबो करै छैथ आ नहियोँ दइ छैथ, तेना रामलखनकेँ नहि भेलैन। तेकर कारण रामलखनक अपन बिसवासू विचारसँ बेसी कारगर सुवासिनीक मनमे नैहरक जिज्ञासा आ जगमोहीक मनमे धीरेन्द्रक जिज्ञासा छल। खाएर जे छलसे छल मुदा रामलखनकेँ सोचै-विचारैले जमानत तँ भइये गेलैन। ओना, पितासँ नुका जगमोही माएसँबात करए चाहिते छल। तेकर कारण तेकठसँ बाँचब रहइ। किएक तँ तेकठ विचार बेसी झंझटिया भेने काज नोकसान करबे करैए। गोटे-आधे काज सुधरैए नइ तँ बेसी दुरिये होइए। ऐठाम तेकठ भेल- पहिल सुवासिनीक नैहरक विचार, दोसर- जगमोहीक मातृकक विचार आ तेसर- रामलखनक सासुरक विचार।ओना, ऐठाम परिवारक विचार अछि मुदा से नहि, विचारोक रूपमे बेकतीगतो एहेन विचार होइते अछि जे रंग-बिरंगक विचार मनमे उठने,माने दोकठ, तेकठ, चौकठ भेने केतौ कियो निर्णये ने कए पबैए तँ केतौ गलतीए निर्णय कए लैत अछि। आ से एहेन कोनो अदने[ii] लोकटा-केँ होइए सेहो बात नहियेँ अछि। अदनाक कोन बात जे पदनोकेँ[iii] होइते अछि, जइसँ अधलासँ बेसी अधला होइक सम्भावना बनिते अछि। द्वापर युगमे जखन महाभारत शुरू होइक सम्भावना बनल, जइमे बड़का-बड़का योद्धा सभ दुनू दिस छला, एक पक्षमे कृष्णो छला। जइ पक्षमे कृष्ण छला तइमे तीनटा सेसर[iv] योद्धा रहैथ- अर्जुन, अभिमन्यु आ बर्बरी। गम्भीर रूपसँ जखन कृष्ण विचार केलैन तखन अर्जुन आ अभिमन्यु तँ एक पटरीपर बुझि पड़ैन मुदा बर्बरी कुछप बुझि पड़लैन जइसँ मनमे शंका उठलैन जे हो-न-हो एक दिस दुनू पक्षक बीच, माने कौरब आ पाण्डवक बीच युद्ध शुरू हुअए आ दोसर दिस अपने पक्षमे माने पाण्डव पक्षमे वैचारिक लड़ाइ उठि जाए,तखन हार छोड़ि जीतक आशा करबे मुरुखपना हएत किने। मुदा से बर्बरी मानबो करत तखन ने, आ जँ नइ मानए तखन? ओना, मानबो-मानबक परिवेश बनिते अछि जइ परिवेशक हवा किछु-ने-किछु सभकेँ प्रभावितो करिते अछि। खाएर.., अन्तमेरणकौशल कमिटीमे विचार कए बर्बरीकेँ लड़ाइसँ दूर रहैक विचार देल गेल। मुदा अपन जान अर्पित केनिहार बर्बरी छलाहे, ओहोएक शर्त्त लगा रणक्षेत्रसँ अलग रहैक विचार मानलकैन। ओ शर्त्त छल जे युद्धभूमिमे बर्बरी शामिल नइ हएत मुदा देखत अपना आँखिसँ..! तखन बर्बरीकेँ गरदैनसँ ऊपर काटि

रणभूमिक बगलमे जे पहाड़ छल ओइपर रखि देल गेल। जइसँ गरदैन कटल बर्बरीक आँखि महाभारतक सभ किछु देखलक।

धीरेन्द्रक चर्च सुनने सुवासिनीक मनमे नैहरक अपन बालपन मोनपड़ए लगलैन,जइसँ जगमोहीए जकाँ रूप बनि गेलैन। जिनगीक रूपो तँ जिनगीमे मनोरंजन करिते अछि। केतौ जुआनीक बीच हारल जीतल जुआनीक मनोरंजन बनैए तँ केतौ अस्सी बर्खक वृद्ध आठ बर्खक बेदरा बनि माइक शासक बनि शासनो करिते अछि जे हमरा फल्लां बौस खाइले नइ देमे तँ हम घरसँ भागि देशक सिपाही बनि बन्दूक चलबैले सीमापर चलि जेबौ...। दस बर्खसँ सुवासिनी नैहर नइ गेल छेली तँए नैहरक जिज्ञासा बढ़ब सोभाविके छेलैन। धीरेन्द्रसँ आगूक गप-सप्प करैक भार जगमोहीकेँ सुमझबैत सुवासिनी बजली-

“बुच्ची, बहुत दिन नैहर गेना भऽ गेल, माइयो-बाप नहियेँ रहला जे नैहर रहत, मुदा परिवारो आ गामोक समाज तँ नैहरेक भेला, तँए जाइक विचार मनमे होइए।”

ओना, जहिना-जहिना समाजिक परिवेश बनैए आ बदलैएतहिना-तहिना ओ हवा सभकेँ लगबो करैए। आ से सिर्फ प्रभाविते बेकतीकेँ लगैए से बात नहि, सभकेँ लगैए। तँए, परिवारमे तीनू बेटीक पालन-पोषण, पढ़ाइ-लिखाइ आ बिआह-दान करैक समस्या जहिना रामलखनकेँ छैन तहिना सुवासिनियोँकेँ छैन्हे। ओना, आन स्त्रीगण जकाँ सुवासिनी नहियेँ छैथ जे दुरगमनियाँ कनियाँ बनि जखन नैहरसँ निकलए लगली आ स्त्रीगण सभ जे दुनू परानीकेँ राजा-रानी बना विदा केलकैन, से अखनो अपनाकेँ बुझिते छैथ। सुवासिनी समझदार औरत छैथ, बेटा नहि रहितो बेटी सभकेँ अपन जिनगी जीबै-जोकर चेतनशील बनबै पाछू सभ दिन प्रयत्नशील रहली। अपन परिवारिक आर्थिको स्थितिकेँ नीक जकाँ बुझिये रहल छैथ, मुदा जिनगीक आगूक बाटपर नमहर खाधि सेहो देखिये पड़ि रहल छैन। परिवेशक बहैत हवामे सुगन्धक संग दुर्गन्धो तँ अछिए। ओ अछि जे बेटीकेँ जेतेक पढ़ाएब तेतेक बेसी खर्च बिआहोमे हेबे करत। जे कोंढ़ बनि समाजक करेजकेँ खोखैर-खोखैर खाइते अछि। की एकरा झुठलौल जा सकैए जे जइ बेटीकेँ पढ़बैमे माए-बाप अपन जी-जान लगा, अपन जीवनकेँ पछुअबैत बेटीकेँ नीक-सँ-नीक शिक्षा दइ छैथ,मुदा ओकरे जखन बिआह करैले समाजमे डेग बढ़बै छैथ तखनपहाड़बनि दान-दहेज हुनकर रस्तारोकै छैन की नहि? की समाजक लोक ऐ बातकेँ नहि बुझि रहल छैथ जे पढ़ल-लिखल सक्षम मनुखक आगमन परिवारमे भऽ रहल अछि, ऐठाम दान-दहेज केतेक महत् रखैए।मुदा परिवेश एहेन दूषित बनल अछि की नहि?

समाजक बीच बनल परिवेशकेँ समाजे बदैल सकैए, तँए ओहन समाज निरमा कऽ ओइ परिवेशकेँ रोकि कऽ सुधारए पड़त वा बदलए पड़त। ओहन समाज बनत केना? प्राय: सभ समाजक बीच एहेन एकोटा परिवार नहि अछि जे बेटा-बिआहे बेर राजा आ बेटी-बिआहे बेर अपनाकेँ भिखमंगा नहि कहै छैथ। ओना, बजैकाल बजबो करिते छैथ जे ‘दान-दहेज’ पाप छी। ऐ लेल जहिना माता-पिताकेँ संयुक्त मोर्चा परिवारिक रूपमे बनबैक

खगता छैनतहिना फुटा-फुटा दुनूकेँ अलग-अलग मोर्चा माने पुरुखक अलग आ महिलाक अलग बना अपनाकेँ ठाढ़ करए पड़तैन। तहिना सभ जनबो करै छी आ बजितो छीहे जे युवाशक्ति देशक भाग्य निर्माता होइ छैथ। जे खुद एहेन परिवेशक शिकार बनि चुकल छैथ। बनियेँ नहि चुकल छैथ, अबैबला पीढ़ी सेहो बनबे करत। ओना, अविकसित समाज रहने पहिनहिसँ अनमेल बिआह वैचारिक स्तरपर होइत आबि रहल अछि, मुदा आब जखन समाज आगू बढ़ल,तखनो जँ वएह विचारधारा बहैत रहततखन समाज समस्या मुक्त केना हएत? एक-एक जन जखन समस्या मुक्त हेता तखने ने देशक गति तेज हएत आ स्वतंत्रताक वास्तविक रूप परगट हएत।

धीरेन्द्रसँ गप-सप्प करैक अधिकार माइयक मुहसँ सुनिते रंग-रंगक रंगीन रोशनी जगमोहीक मनमे जागए लगल। ओना, सभ विचारकेँ मनेमे दाबि जगमोही दोसर दिनसँ कौलेजक रीडिंग रूममे एक घन्टा धीरेन्द्रक संग पढ़ैक विचार मनमे रोपि लेलक।

जहिना मिथिलाक सभ गाम अछि तहिना प्रेमनगर सेहो अछिए। आने गाम जकाँ प्रेमनगरमे सेहो साइयो देवी-देवताक पूजो होइते आबि रहल अछि आ मनतो अछिए। तहिना दर्जनो रंगक जातियो आ जाइतिक बीच फूट-फूट देवी-देवता सेहो अछिए। जइसँ रंग-रंगक बेवहारो आ विधि-विधान सेहो अछिए। सभ किछु रहितो जहिना परिवार-परिवारक बीच अपन-अपन बेवहार रहने कोनो-कोनो परिवार नीको अछि आ नीकक माइनसेहो अछिए तहिना धीरेन्द्रक परिवारक अपन खास बेवहारो आ विचारो अछिए। धीरेन्द्रक पिता जीबेन्द्र क विचार अखनो छैन्हे जे एकटा बेटा अछि, जँ तेकरो बिआहमे दान-दहेज लऽ बेच लेब, तखन अन्तिम संस्कारमे मुखाग्नि केकरासँ दियाएब? तैसंग अनका जकाँजीबेन्द्र ईहो नहियेँ मानै छैथ जे बेटा निमित्ते बिआहमे जेतेक बेसी नगद-नारायण गनाएब तेतेक बेसी इज्जतदार बनब। ओना, समाजमे किछु लोकक बीच जहिना एक दिस दहेज नहि लेबकेँ प्रतिष्ठा बुझल जाइए तहिना जेतेक अधिक लेब तेतेक नमहर प्रतिष्ठित बनैक विचार सेहो अछिए।

पिताक प्रभाव धीरेन्द्रपर सेहो भरपूर पड़ल अछिए। जइसँ बिआहमे दान-दहेजक विचारेधीरेन्द्रक मनसँ मेटा गेल अछि। जइ परिवारमे दान-दहेजक बेवहार अछि तइ परिवारक विचारो आ बेवहारोमे अन्तर ओइ परिवारसँ अछिए जइ परिवारमे दान-दहेजक चलैन नहिअछि। भलेँ एक-दोसरकेँ किए ने निच्चोँ देखबए आ नीच कहबो करए।

पाँच बजे तक कौलेजक रीडिंग रूम खुजल रहैए। अपन निर्धारित समय अनुकूल रहने धीरेन्द्र रीडिंग रूम पहुँच चुकल छल। किछुकालक पछाइत जगमोही सेहो पहुँचल। संजोग एहेन बनल जे रीडिंग रूममे दोसर कियो आन विद्यार्थी नहि छल। एक तँ सुनसान जगह, दोसर पहिल दिन जगमोहीक रहनेपूछ-आछ

करैक सम्भावना सेहो बनियेँ गेल छेलइ। तहूमे टटके काल्हि भेँटो-घाँट आ किछु गपो-सप्प भेले छेलै जइसँ विचारो तरगरे रहइ। धीरेन्द्र लग पहुँच जगमोही बाजल- ‘‘अहाँक चर्च माइयो लग केने छेलौं।’’

माइयक नाओं सुनिते धीरेन्द्र चौंकल। चौंकल ई जेजगमोहीसँ किछु गप-सप्प भेला पछाइत जे मनमे प्रेमासिक्त विचार अंकुरए लगल छल ओ मात्र संगी-साथीक बीचक नहि रहि परिवारिक रूपमे बदलैक बाट पकैड़ रहल अछि! ओना, बेकतीगत विचार आ परिवारिक विचारमे किछु-किछु अन्तर सेहो रहिते अछि। मुदा जहिना केतौ-केतौ अन्तर अछि तहिना ईहो तँ निर्विवाद सत्य अछिए जे नद-नालाक पानि मिलि जहिना नदीक रूप बनैए तहिना परिवारोजनक विचार एकत्रित भेला पछातिये ने परिवारक विचारधारा बनैए। ओना, परिवारक जे रूप-रेखा अखन समाजमे बनि गेल अछि ओ एहेन विचारसँ दूर भइये गेल अछि, तेकर कारण सदियोसँ अबैत गुलामीक जंजीर अछिए। गुलामीक जंजीर एहेन सूत्रवत् बनि गेल अछि जे परिवार हुअ आकि समाज,सभठामबेकतीगत विचार ऊपर उठि गेल अछि आ सामुहिक विचार दबि कऽ निच्चाँ उतैर गेल अछि। प्रश्न अछि जे ओ नीच-ऊँच केना एकरस भऽ एकरसतासँ चलत? परिवार हुअ कि समाज आकि समाजक बीच जे परिवार अछि सेजाधैरएकरस भऽ एकरसता नहि धड़ततधैर जिनगी बेठेकान चलबे करत, जइसँ जिनगीक सभ सीढ़ी बेठेकान भइये जाएत। जखन जिनगीक ठेकानेनहि रहत तखन मनुखक जिनगी केहेन हेबा चाही एकर कल्पनो तक असम्भवे रहत किने।

जगमोहीक बात सुनि धीरेन्द्र बाजल- ‘‘ओना, अखन हम नीक जकाँ नहि बुझि रहल छी मुदा...।’’

‘मुदा’क पछाइत धीरेन्द्रक मनमे उठल जे जँ अखन जगमोहीक माएकेँ बहिनमानि सम्बोधित करब तखन जगमोही स्वत: निच्चाँक खाड़ीमे उतैर जाएत। जखने निच्चाँक खाड़ीमे उतरत तखने दुनू गोरेक बीचक जे एकरूपताअछि ओ बाधित हेबे करत।

‘मुदा’क पछाइत धीरेन्द्रक चुप्पी देख जगमोही अपनविचारक खोंरना चलबैत बाजल-

‘‘मुदा की?’’

ओना, साएसँ ऊपरेकुरसी-टेबुल सजल अध्ययन कक्ष अछि,तँए नमगर-चौड़गर-पेटगर अछिए। जइसँ दू गोरेक बीचक बातक ध्वनि हेराएले रहत, तहूमे मात्र दुइए बेकती अछि। बाँकी जे तीन आदमी पुस्तकालयक कर्मचारी छैथोओ सभऑफिसेक काजमे लागल छैथ।

जगमोहीक प्रश्न सूचक बात सुनि धीरेन्द्र अपनाकेँ चौकन करैत अपनमनक विचारकेँ बदैल बाजल-

‘‘अहाँक डेट ऑफ वर्थ की अछि?’’

जगमोही बाजल-

‘‘एगारह फरवरीकेँ बीस बर्ख पुरि गेल आ अहाँक?’’

जगमोहीक प्रश्न सुनि धीरेन्द्र मुस्की दैत बाजल-

“हम हारलौं, अहाँ जीतलौं!”

धीरेन्द्रक मुहसँ ‘हारि-जीत’ सुनि जगमोही चौंकल। चौंकिते मनमे उठलै- अखन तँ परीक्षाक घड़ी पछुआएले अछि तैबीच कोन परीक्षा भऽ गेल जे दुनू गोरेक बीच हारि-जीतक निर्णय भऽ गेल!

धीरेन्द्र मनमे मुस्की भरैत जे विचारक सरोवरमे जगमोही वौआएल अछि। ओना, एकरा वौआएब नहि कहल जा सकैए। वौआइत तँ लोक ओतए अछि जेतए नाम-ठेकान रहितो जगह हेराएल रहैए। मुदा ऐठाम से नहि अछि। धीरेन्द्र जँ अपन जन्म तिथि खोलि निर्णय सुनौनेरहैत आ जगमोही नहि बुझैत तखन ने जगमोहीक वौआएब होइत, से तँ छिपा कऽ धीरेन्द्र अखन मनेमे रखने अछि।..जगमोही बाजल-

“आपमौजी जहिना दुनियाँ अछि तहिना दुनियाँक लोको तँ अछिए, अपन-अपन विचारे सभ दुनियाँ देखैए आ अपने-अपने विचारे बजबो करैए, जइसँ केतौ बजड़बो करैए आ केतौ बजाड़ितो अछिए।”

जहिना अनठेकानल वाण धीरेन्द्र चलौने छल तहिना जगमोही सेहो चला धीरेन्द्रक करेजकेँ बेध देलक। अपन वेधाइत विचारसँ प्रभावित होइत उनटा चालि पाछू मुहेँक डेग पकैड़ धीरेन्द्र बाजल-

“ऐबेर प्रेमनगरमे खूब आम फड़ल अछि, चलू सभकियो संगे आम खाइले।”

‘प्रेमनगरक आम’ सुनिते जगमोहीकेँएकाएक बारह बर्ख पहिलुका खेलहा आम मोन पड़लै,बाजल-

“नानाक गाछीक ओहन सिनुरिया आम खेने छी जेकर खोंइछा पानोसँ पातर आ सुआद कपूरोसँ नीक रहइ।”

धीरेन्द्रक आम जगमोहीक गुलाबखास भऽ गेल। धीरेन्द्र बाजल-

“कहने जे छेलौं जे अहाँ जीत गेलौं आ हम हारि गेलौंसे बुझलिऐ?”

जगमोही-

“नइ!”

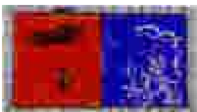
धीरेन्द्र-

“जहिना अहाँक जन्मतिथि एगारह फरबरी अछि तहिना हमर एगारह जनवरी अछि। अहाँसँ एक मास जेठ भेलौं ने?”

बिच्चेमे जगमोही मुड़ी डोलबैत बाजल- “हँ से तँ भेबे केलौं।”

जगमोहीक स्वीकृति सुनिते धीरेन्द्र धाँइ-दे बाजल- “एक मास जेठ रहितो हमहूँ ओतइ ने छी जेतए अहाँ!”

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

जगमोही-

“की मतलब?”

धीरेन्द्र- “मतलब यएह जे जेठ रहितो हमहूँ ओही क्लासमे पढ़ै छी किने। तँए कहलौं जे एकमास हमर हारल भेल अहाँक जीतल भेल।”

जहिना ताशक गेम-गेम खेलमे नहलापर दहला आ बीबीपर बादशाह फेक मारल जाइए तहिना धीरेन्द्रपर अपन विचार फेकैत जगमोही बाजल-

“एकर तँ दोसरो पक्ष अछिए किने। जहिना अहाँ अपनाकेँ हारल मानि रहल छी तहिना ने हमहूँ अहाँसँ एक मास हीनभेलौं आ अहाँहमरासँ श्रेष्ठ भेलौं।”

जगमोहीक विचार सुनि धीरेन्द्र ठमकल। ठमकल ई जे जगमोहियोक कहब अनर्गल नहियेँ अछि। ताशोमे तँ अहिना होइते छै जे केतौ दहलाक नहला मारैए तँ केतौ बीबीक अभावमे बादशाह बेमौत मरैए। मुदा प्रश्न तँ बीचमे उठिये जाइए जे जँ दुनू पक्षक तर्क अकाट्य हुअए तखन निर्णयक रस्ता की हएत?अपन ओझराएल मनक विचारक बनमे धीरेन्द्रकेँ एकटा ओहन वृक्ष देखाए पड़लै जे नम्हरो आ पुरानो अछि। बाजल-

“एकटा बात कहू ते जगमोही, अखन तकलोकक मनमे किए एहेन धारणा बनल अछि जे लड़का-लड़कीक वैवाहिक सम्बन्धमे लड़कीसँ बेसी उमेरगर लड़का हेबा चाही?देखै छी सालक-साल अधिक उमरदार लड़काक संग सम्बन्ध स्थापित होइत आबि रहल अछि। अहाँ एकरा की बुझै छी?”

धीरेन्द्रक विचार जगमोही नीक जकाँ नहि बुझि पएल तँए प्रश्नकेँ सूत्रखोल करैत बाजल-

“की मतलब?”

अपन विचारकेँ स्पष्ट करैत धीरेन्द्र बाजल-

“ओहुना गाम-समाजमे देखै छी जे कोनो परिवारमे पुरुख अधिक उमेर तक जीबै छैथ आ कोनो परिवारमे नारी अधिक उमेरगर भऽजीब रहल छैथ, तँए उमेरक हिसाबसँ दुनू एकरंगाहे भेल किने?”

जगमोही-

“हँ, से तँ भेबे कएल।”

धीरेन्द्र-

“तखन किए कम उमेरक लड़कीकेँ अधिक उमेरक लड़काक संग बिआह होइए?”

धीरेन्द्रक विचारमे जगमोही हेरा लागल मुदा एक क्लासक संगी रहने मनमे थोड़ेक ग्लानि तँ जगबे केलै जे धीरेन्द्रक प्रश्नक उत्तर नइ दए पाबि रहल छी। मुदा लगले मन कलैश उठलै। कलैशते मनमे भेलै जे

अखन दुइये गोरे ने छी, ओहुना दू गोरे जँ कोनो विचारक विनिमय इमानदारीसँ करए तँ निर्णयो इमनगर हेबे करत...। तैबीच धीरेन्द्रक मनमे सेहो उठलै जे अखन तक जहिना हम कोर्सक किताबमे अपन बुधिकेँ घेर रखने छी तहिना ने जगमोहीक सेहो घेराएले छइ। तैबीच एहेन चर्चे कोन अछि जेकरा जगमोहीक चूक मानल जाए?

विचारक बीच सिमानपर अबिते धीरेन्द्रक मन बिहुसल,बिहुसिते धीरेन्द्रक मुँहपरमहसूस कएल मुस्कान छिटकए लगलै।

धीरेन्द्रक मुस्की भरल मुस्कान देख जगमोही बाजल- "ऐबेर मातृकक आम खेबे करब।"

धीरेन्द्र-

"असगरे नहि, तीनू बहिनक संग मतो-पिताकेँ लऽ चलियौन।सभकियो संगे प्रेमनगरक आम खाइ, ई हमर विनम्रआग्रह।"

---

[i]परिवारिक जीवन

[ii]साधारण

[iii]पद प्राप्तिबला लोक

[iv]सिरगर

ऐ **रचनापर अपन मंतव्य** editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

**नन्द विलास राय**

**एमेली साहैब**

बेरुका उखड़ाहा। समय लगधक दू-अढ़ाइ बजैत। थोलबा काकाकेँ दुखनी काकी कहलकैन-

“अँइहै!बिरधापिलसीन केतेक दिनसँ नै भेटल गऽ। रानीगढ़ी परतीपर जे हाकिम सभ आएल छल गऽ आ ओकरा जे कागत-पत्तर देने रहिऐ तेकरो तीन माससँ ऊपरे भेल गऽ। जा कऽ मुखियाजी सँ पूछौ गऽ ने जे कहिया भेटतै बिरधा पिलसीन।”

तैपर थोलबा काका बजला-

“अच्छा! हम अखने जाइ छी मुखियाजी लग, पुछै छिऐन कहिया भेटत। मुखियोजी कि कोनो दूरमे छैथ, गामेक तँ छथिन मुखियाजी।”

थोलबा कक्काक उमेर लगधक 75-76 बर्ख। तनाहिये दुखनी काकीक उमेर 70-71 बर्ख हएत। दुनू गोरेकेँ वृद्धावस्था पेंशन भेटैत छैन।

छ: माससँ वृद्धावस्था पेंशनक भुगतान नै भेल हेन। सरकारी स्तरपर कागज-पत्तरक जाँचक लेल रानीगढ़ी परती- मझौराक पंचायत भवनपर शिविर लागल छल जइमे लाभुक सभसँ आधर कार्ड आ पासबुकक छाया प्रति मांगल गेल रहए। थोलबा काका आ दुखनी काकी दुनू परानी अपन-अपन आधार कार्ड आ बैंक-पासबुकक छायाप्रति शिविरमे पंचायत सचिवकेँ देने रहथिन। कागज-पत्तर देला चारि माससँ बेसी भऽ गेल मुदा अखन धरि पेंशनक भुगतान नै भेलैन।

थोलबा काका पढ़ल-लिखलक नाओंपर सोलह दूना आठ। एकदम भोला-भला। छह-पाँच किछ ने बुझैत सुधंग लोक। हुनका घरसँ दसे घरक बाद मुखियाजीक घर।

थोलबा काका मुखियाजीक दरबज्जा लग पहुँचला तँ दरबज्जाक आगाँ एकटा चरिचकिया गाड़ी लागल देखलखिन। दलानक भीतर किछु गोरेक बाजब सेहो सुनलखिन। ओ थकमका गेला। तखने मुखियाजीक बेटा अमित एकटा ट्रेमे पान-सुपारी, इलायची, जर्दा-पत्ती लऽ कऽ आँगनसँ निकलल।

थोलबा काकाकेँ ठाढ़ देख बाजल-

“मर्र!काका ठाढ़ किए छी। दलानपर चलू ने।”

तैपर थोलबा काका बजला-

“हौ बौआ, एहेन अगए-बगए लऽ कऽ दलानपर केना जाएब। चरिचकिया गाड़ी देखै छिऐ। केतए-कऽ पाहुनसभ छथुन?”

अमित बाजल-

“काका पहुन नै छैथ। विधायकजी छथिन।”

थोलबा काका बजला-

“विधायकजी?नै बुझलियह।”

अमित कहलकैन-

“विधायकजी नै बुझलिऐ,यौ एम.एल.ए. साहैब।”

थोलबा काका-

“अच्छा, एमेली साहैब!एमेली साहैब छथुन। हौ बौआ कहअ तँ भोँटक समय आबि गेल, कहिया छी भोँट?”

अमित बाजल-

“नै काका!अखन भोँटक समय नै आएल हेन।”

थोलबा काका मने-मन सोचए लगला। जखन भोँटक समय नै आएल अछि तखन एमेली साहैब केतए एला हेन? बजला-

“अच्छा बौआ, अखन जाइ छिअ, पछाइत आएब।”

ई कहैत थोलबा काका घरमुहाँभेला आ अमित पानक ट्रे लऽ दलानक भीतर गेल।

**ऐ रचनापर अपन मंतव्य** editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

**जगदीशप्रसाद मण्डल**

## हुसैत लोक

दोनवारी हाटसँ पियाजक बीआ लऽ घुमल रही कि रंगलाल भायकेँ तीन-चारि गोरेक संग लछमीपुर गामक चौकपर चाह पीबैत देखलयैन। चारि-पाँच गोरे हमहूँ सभ टेम्पूमे बैसल अबैत रही, चारि लग्गा पाछुए रही कि रंगलाल भाय हमरो देख लेलैन। एक तँ सासुरमे घरपर रहने सारि-सरहोजिक धक्का, दोसर सार सबहक धक्का चौकपर लगिये रहल छेलैन, मुदा देखते, चाहक दोकानपर सँ उठि हाथमे चाहक गिलास नेने बीच रस्तापर ठाढ़ भऽ बामा हाथे डरेबरकेँ इशारा करए लगला जे गाड़ी रोकू। अपने टेम्पूक पैछला सीटपर बैसल अपन पाँच किलो पियाजक बीआक हिसाब मिलबैत रही जे अपना ऐठाम पचास रूपैये किलो बीआ बीक रहल अछि। पाँच किलोक दाम भेल अढ़ाइ साए रूपैआ, तीस रूपैये किलो दोनवारी हाटपर देलक, जेकरदाम डेढ़ साए भेल। साए रूपैआ अपना ऐठामसँ कम भेल। लगले मन उनैट कहलक जे भरि दिन समैयो तँ नहियेँ बरदाइत आ चौदह साए टेम्पू भाड़ामे जे पौने दू साए रूपैआ हिस्सा लगल सेहो नहि लगैत। तखन लाभ की भेल? फेर लगले मन, लगले मन ऐ दुआरे जे मन तेहेन पीछड़ाह अछि जे जहिना लगले पकड़मे अबैए तहिना लगले छिछैलियो जाइए। मनकेँ पकैड़ कऽ जखन रखबै कि तरे-तर तेना छिछैल कऽ निकैल जाइए जे बुझबो ने करबै। तही काल टेम्पू रूकि गेल तँ पुछलिऐ-

“टेम्पू किए रूकल?”

तैबीच रंगलाल भाइक नजैर सेहो पड़ि गेलैन आ अपनो जे आगू तकलौं तँ रंगलाल भायकेँ देखलयैन। रंगलाल भाय सभकेँ सामूहिके आग्रह करैत बजला-

“सभ कियो उतैर कऽ चाह-पान कऽ लिअ, पछाइत जाएब।”

सबहक संग अपनो टेम्पूसँ उतैर चाहक दोकानपर एलौं। जहिना अप्पन नजैर रंगलाल भायपर छल तहिना रंगलालो भाइक नजैर हमरापर छेलैन। मुदा जहिना रंगलाल भायसासुरक समाजक अगुआ छला, अगुआ ऐ मानेमे जे गौंआँ-घुरूआकेँ देखते, चिन्ह-पहचीन भइये जाइए तैठाम गाम-समाजक तँ सभ चौकेपर बैसल नहि रहै छैथ, मुदा अनगौंआँ कुटुमकेँ आगत-भागत नइ भेने गामक हँसारत होइते अछि। ओ हँसारत बँचेबाक उपाइये की अछि, तँए अपना गामक समाजक अगुआ सेहो भेबे केला, तँए हुनके जुतिये-भाँतिये ने चलए पड़त। सएह केलौं। चुपचाप चाहबलाक ब्रेंचपर मन मारि कऽ माने पछुआ बनि बैस रहलौं। तइ बीच अपन मन कनी कुदैक गेल। कुदैक ई गेल जे जे काज केने, माने पियाजक बीआकीनने जा रहल छी, ओइ काजमे अपनो हूसबे केलौं।

पाँच किलो बीआ आठ धुर खेतमे रोपल जाएत। ओतबे पियाजक खेती अपने साले-साल करै छी। ओना, रकबामे आठे धुर चौमास अछि, मुदा तेते जोरगर बनौने छी जे आठे धुरमे पाँच मनसँ ऊपरे हएत जे कम नहि हएत, साले-साल पियाज होइते अछि। पियाजक उपजापर सँ नजैर ससैर अपन हूसल काजपर गेल। पाँच किलो बीआ कीनैमे जे भरि दिन बरदेबो केलौं आ तैपरसँ पचहत्तैर रूपैआ खरचो बेसी भेल, तैसंग अपने जे खेलौं-पीलौ से अलगे बेसी भेल। मुदा ई वेपारी सभ तँ दू-तीन क्वीन्टल करि कऽ बीआ कीनने अछि, जेकर प्रति किलोक हिसाबसँ बीस रूपैआक बचत होइ छै, दू क्वीन्टलमे चारि हाजरक लाभ होइ छै, ओकर जँ समयो बरदाएल तैयो लाभे भेल। अपने तँ घाटा भेबे कएल। तँए वेपारी (गौंआँ वेपारी) सबहक जीत आ अपन हार मन मानि रहल छल। यएह बात जँ पहिने मनमे आबि गेल रहैत तँ घाटा नहि होइत। मुदा आब तँ जे हेबाक छल ओ भइये गेल, तखन माथे धुनि कऽ की करब। शत-प्रतिशत मन कबुल कऽ लेलक जे जरूर हूसलौं। ओना, मनो तँ मन छी, लगले केना शत-प्रतिशत हारि मानि लेत। जँ हारए लागत तँ कनी करोटिया भऽ जाएत, सोल्होअना चीतसँ पट आकि पटेसँ चीत केना हएब मानि लेत।

अपन हार-जीतक बीच मन दौड़-बरहा करए लगल। लगले मनमे दोसर विचार उठि कऽ ठाढ़ भेल। ठाढ़ ई भेल जे अपने किसान छी कि वेपारी? जे वेपारी अछि ओ पूजीकेँ हारि-जीतक खेलौना बना खेलैए, मुदा अपने तँ किसान छी, जँ से सोचि खेती करब तखन खेती कएल पार लगत। किसानक लाभ तँ ओ भेल जे अपन खेती अपना ढंगे नीक जकाँ भऽ जाए। खेतमे उपज की भेल आ केते भेल,से की सोल्होअना अपने हाथमे अछि। रौदी-दाही, पानि-पाथर, झाँट-बिहाड़ि सभ किछु ने बीचमे बाधक अछि। हँ, समैयक हिसाबसँ माने जइ पूजीवादी समाजक बीच छी, तइमे लाभ-हानिक हिसाब तँ जोड़ए पड़त, मुदा जखन खेत जीवनक आधार अछि आ खेती जीविका, जइ बले जीब रहल छी, तँखन तँ जिनगीक आधारपर ने हानि-लाभक हिसाब करब। साइयो रंगक खेतो अछि आ साइयो रंगक उपजो तँ अछिए। जइसँ कोनोमे जँ घट्टो भेल तँ कोनो मे लाभे

तँ होइते अछि। तइमे खेतेक उपज से ने अपन सभ काजो चलैए। ई दीगर भेल जे नमहर बाधा भेने किसानक जिनगी संकटग्रस्त भइये गेल अछि,मुदा तइमे किसानक कोन दोख। देशेक ओहन अव्यवस्थित व्यवस्था खेतीक बनि गेल अछि जेकरा भरोसमंद नहियेँ कहि सकै छी। मुदा किछु अछि तैयो एते तँ अछिये जे देशक बहुसंख्य लोक खेतियेपर जीब रहला अछि। मन असथिर भऽ गेल। अपन पनचैती अपने कऽ लेलौं जे वेपारीक हिसाबसँ पिआजक बीआ कीनैमे घाटा भेल, मुदा किसानी जिनगीक हिसाबसँ घाटा नइ भेल। अपने किसान छी, वेपारी छी नहितखन हूसलौं केना। नइ हूसलौं।

तैबीच सभ कियो चाह पीब पान सेहो खा लेलौं। ओना, रंगलाल भाय अपन समाजिकतो निमाहैत अपन नजैर गौंए सभपर रखने छला, मुदा बुझि पड़ल, मनक भीतरसँ किछु भितरिया बात करए चाहि रहला अछि। जे सबहक बीच सम्भव नहि अछि। अपनो मन ई जरूर छल, किए तँ बुझल अछि जे रंगलाल भाय थाना-पुलिसक (कानूनक) डरे गामसँ पड़ाएल छैथ, जे बात अपने टा बुझल अछि। तँए मनमे बनल अछि जे किछु उपराग रंगलाल भायकेँ देब जरूरी अछि। ओना, मनमे ईहो उठि रहल छल जे हारल वा मारलकेँ आरो ऊपरसँ हराएब वा मारब नीक नहि, मुदा समयपर छोड़बो तँ उचित नहियेँ हएत।

पान खा जखन सभ टेम्पूमे बैसल आ अपने गाड़ीमे चढ़ए लगलौं कि पाछूसँ रंगलाल भाय कुरता पकैड़ इशारामे कहला-

“गौरीकान्त, तोरासँ कनी काज अछि।”

गाड़ीमे चढ़ैत रही, कहलयैन-

“केहेन काज अछि, बाजू।”

रंगलाल भाय बजला-

“कनी फुटमे चलह। ऐठाम कहब नीक नहि हएत।”

रंगलाल भाइक बात सुनि मनमे ठहैक गेल जे केसेक विषयमे किछु कहता। कहलयैन-

“चलू, मुदा बेसी देरी नइ लगाएब।”

रंगलाल भाय सोझ-सपट आदमी छैथ। ओना, एहेन लोक सभ गाममे प्राय: अधासँ बेसी रहै छैथ, मुदा समझदारीक अभावमे कोनो अपन विचार वा विचारधारा नहियेँ होइ छैन। केतौ परिवारिक सम्बन्धे तँ केतौ दियादीक सम्बन्धे, केतौ जातिक सम्बन्धे तँ केतौ टोलबैयाक सम्बन्धे किछु-ने-किछु गलती काजमे संग रहने सदिकाल हूसल काज करिते छैथ। ओना, रंगलाल भायकेँ एते बिसवास हमरापर जमले छैन जे गौरीकान्ते टा एहेन लोक समाजमे अछि जे मनसँ जँ चाहत तँ कुशक कलेप लगने बिना बँचा सकैए।

दुनू गोरे सड़कसँ हटि लग्गा चारियेक हटल जे पूवारी कात आमक गाछ अछि, तइ निच्चाँमे बैसलौं। बैसते जे रंगलाल भाइक मुँहपर नजैर देलिऐन कि देख पड़ल जे दुनू आँखि नोरसँ ढबकल छैन, जइसँ बोली नहि फुटि रहल छैन। मन दहलए लगल। दहलाइत-दहलाइत ओइ जड़िमे पहुँच गेल जइ दुआरे रंगलाल भाय अपन सभ कारोबार छोड़ि गामसँ नुका कऽ पड़ाएल सासुर धेने छैथ।रंगलाल भाइक चेहराक कुम्हलाएल रूप देख अपन मनकेँ मारैत बजलौं-

“भाय, वेपारी गौंआँ-घरूआक संग छी, गाड़ी भाड़ामे अछि, तइ संग कच्चा वेपारक सौदा छी, तँए बेसी समय नइ अछि। की कहै छी?”

रंगलाल भाय बजला-

“गौरी, तूँ छोट भाय छियऽ। अपन गलती जँ रहैत तँ तोरा कहितयऽ जे पचास जूता लोकक बीचमे मारह। मुदा..!”

मनमे जे किछु विचार घुमि रहल छल ओ जेना एक्केबेर सभटा मनसँ उड़िया कऽ अकासमे चलि गेल, तहिना भेल। बजलौं-

“रंगलाल भाय, चलू संगे गाम चलू।”

थानाक डरसँ डेराएल रंगलाल भाइक मन थरथराए लगलैन। जइसँ सुपुट बोल बनि नहि रहल छेलैन जे किछु बजितैथ। थरथराइत रंगलाल भाइक मन देख हमहीं बजलौं- “भाय, अपना सभ किछु छिऐ तैयो पुरुखे छिऐ ने। पुरुख जे जहलसँ डर करत तखन जीब कए दिन सकैए।”

हमर बात सुनि रंगलाल भाइक मनक मलिनता कनी कमलैन जइसँ हूबा जगलैन। बजला-

“गौरी, तूँ जे कहबह से करैले तैयार छी।”

रंगलाल भाइक बदलैत रूप देख कहलयैन-

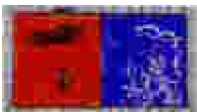
“अखन गौंओ सभ छैथ। जखने पाँच गोरेक बीच रहब तखने रस्तामे कियो किछु ने कहत। जखन गाम पहुँच जाएब तखन कोट-कचहरीक बात रहत, ओ बुझल जेतइ।”

रंगलाल भाय उठि कऽ ठाढ़ होइत टेम्पू-डरेबरकेँ, ओतैसँ माने आमक गाछक निच्चेसँ जे चारि लग्गा पूबारि कात छल, कहलखिन-

“डरेबर साहैब, जँए एतेकाल अँटकलौं तँए पाँच मिनट औरो अँटकू। हमहूँ चलब।”

दुनू गोरे गाछ लगसँ उठि दोकानक आगूमे एलौं। रंगलाल भाय पुन: आग्रह करैत सभकेँ माने टेम्पूमे बैसल गौंआँ सभकेँ कहलखिन-

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

"एकबेर आउरो चाह पीब लिअ।"

टेम्पूमे बैसल सभ वेपारी हाथक इशारा दैत बजला-

"नइ, अहीं जल्दी तैयार होउ।"

रंगलाल भाय अपन जेठ सारकेँ कहलैन-

"बौआ, अहाँ कनी घरपर सँ झोरा नेने आउ। हमहूँ गाम जाएब।"

गौंआँ सभकेँ देख वा सात-आठ दिन भेने माने रंगलाल भाय सात-आठ दिनसँ सासुरमे छैथ, नाकुर-नुकर केने बिना सार झोरा आनि कऽ दऽ देलकैन।

अपने लग पैछला सीटपर रंगलाल भायकेँ बैसौलिऐन। मन भेल जे सासुरमे रहैक गप-सप्प उठाबी, मुदा अपने मन रोकलक जे सभ रंगक लोक गाड़ीमे बैसल छैथतँए कोट-कचहारीक गप करब उचित नहि। गाड़ी आगू बढ़ल।

अपन गामक सीमानमेअबिते बजलौं-

"भाय, अखन अहाँ जाउ, कखनो निचेनमे आगूक गप करब।"

रंगलाल भाय थकथका गेला। अपना ऐठाम जेबाक डेगे ने उठि रहल छेलैन। अपनो मनमे भेल जे गामे छी, रंग-बिरंगक लोक गाममे अछि। जँ देखते कोनो लौकिया जा कऽ चौकीदारकेँ जानकारी दऽ देतैन तँ अनेरे सभ काज बिगैड़ जाएत। जहिना खेतक पानिक बँचाउ लेल लोक माइटिक मछार बना रोकैए तहिना अपनो मनमे भेल जे नीक हएत पहिने थाना जा बड़ाबाबूसँ किछु समय माँगि लेब जे अमुख तारीख तक रंगलाल भाय कोर्टमे उपस्थित भऽ जेता, तँए बीचक समय देल जाए। बजलौं-

"रंगलाल भाय, अहाँ ताबे एतै, हमरे ऐठाम रहू, अखन देखबे केलौं अछि जे एक तँ दस कोसक गाड़ी सफर भेल अछि तैपर भरि दिन दौड़-बरहा भेल अछि जइसँ मन असकताएलो अछि आ भरियाएलो अछिए। तँए पहिने नहा कऽकिछु खाएब, पछाइत बुझल जेतइ।"

रंगलाल भाय मानि गेला। मुदा रहला हमरे ऐठाम। नहेलौं। सूर्यास्तक समय सेहो भऽ गेल छल। ओना, पाँचे किलो मीटरपर थाना अछि। तहूमे भरि दिन ने रंग-बिरंगक काजक धुमसाही थानामे रहैए मुदा ओ दिन बीतैत कमि सेहो जाइत अछि। थाना जाइसँ पहिने, मनमे भेल जे बिना कोनो चर्च-बर्च केनहि जँ थानासँ तत्काल बचाबक उपाय कऽ देबैन तखन तँ रंगलाल भाय जहिना बेर-बेर गलती करैत आबि रहला अछि तहिना फेर करता। तँए सभ बात जँ, माने गलती भेल काजकेँ, मुँहपर कहि अपना मुहेँ गलती मना लेब तखन भविसमे गलती हेबाक सम्भावना कमि जाएत। सएह केलौं। थाना डेग उठबैसँ पहिने बजलौं-

"रंगलाल भाय, मोन अछि कि नहि जे भोँट लेलक कोइ आ अहूँ केसमे फँसि गेलौं?"

रंगलाल भाय जेना बिसैर गेल छला, किए तँ पनरह बरखपैछला घटना छल। पाछू उनैट-उनैट मोन पाड़ए लगला। मुदा मोन नहि पड़लैन।भेल ई छल जे राजनीतिक दल चुनाव लड़ल अपन-अपन सिमबॉलपरमुदा गाम-गाममे बनि गेल जाइतिक पार्टी। अपन जाइतिक उम्मीदवार सेहो मैदानमे रहैन। रंगलाल भायकेँ जाइतिक तेहेन-तेहेन मंत्र कानमे पड़ि गेलैन जे पक्का कार्यकर्ता बनि गेला। दू बजे दिनमे,चुनाव दिन,दू जाइतिक बीच मारि भऽ गेल। केस भेल। किछु गोरे पकड़ा कऽ जहलो गेल मुदा तइमे रंगलाल भाय बँचल रहला। मुदा केसमे नाम आबिये गेलैन। चुनावक प्रक्रिया सम्पन्न भेल। मुदा मुद्दालहक पकड़-धकड़ चलिये रहल छल। थानाक बड़ाबाबू इमानदार लोक। कहब जे पाइ-कौड़ीक कारोबार नइ करै छला से हुनक भितरिया कारोबार जे रहल होइन, मुदा आदमी चिन्हैक अद्भुत क्षमता छेलैन। बिसवासु लोक बुझै छला। रंगलाल भाइक चेहरा देख अपने बजला जे एहेन लोक जरूर फँसौआ छैथ। केससँ नाम काटि देलखिन। बिना कोनो परेशानीसँ जान बँचि गेलैन।

पैछला बात (केसक बात) मन नहि पड़ने रंगलाल भाइक नजैरमे अपने झूठा बनए लगलौं। मुदा एकेटा घटना थोड़े भेल अछि, तेसर घटना छी। पैछला केसक बात छोड़ि दोसर घटनाक चर्च करैत बजलौं-

“भऽ सकैए भाय, हमहीं बिसरैत होइ। अच्छा ई कहू जे रधिया आ रधबाबला मोन अछि कि नहि?”

रधिया आ रधबाक घटना ई अछि जे दुनू जनता कौलेजमे पढ़ै छल। दुनू दू जाइतिक। कौलेज कि हाइ स्कूलमे लड़का-लड़कीमे सम्बन्ध बढ़ैक हजारो कारणमे एकटा ईहो छी जे एक विषयक विद्यार्थी रहने सेहो सम्बन्ध बनैए। ओना, सम्बन्ध अनेको रंगक बनैए मुदा तइमे एकटा ईहो अछि जे दुनू गोरे संगी बनि जीवन बिताएब। ऐठाम संगीक माने पति-पत्नीक रूपसँ अछि, दोस्ती वा मैत्रीसँ नहि अछि। ओना, हाइये स्कूलसँ रधिया आ रधबाक बीच आकर्षण बनए लगल छल मुदा कौलेजमे अस्फुट रूप धारण कऽ लेलक। दुनू संगीत विषयक विद्यार्थी, एक गबै छलआदोसर ताल मिलबै छल, माने साज बजबै छल। एक-दोसराक बीच बिआह करैक विचार भेल। मुदा समाजिक बन्धनक डर, दुनूक बीच बाधा बनले छल। एक दिन दुनू गाम छोड़ि राता-राती पड़ा गेल। भोर होइत-होइत सौंसे गामक चर्चाक विषय दुनूक भागब बनि गेल। गोटी चलनिहार गाम-घरमे भरले अछि। अंगरेजी शासनक सम्बन्धमे कहल जाइए जे ‘फूट डालो शासन करो’क नीति ओकर छल। मुदा बात तेतबे नहि अछि। गाम-समाजक बीच एहेन विचार लोकक मनकेँ तेना पकड़ने अछि जे समाजकेँ सूत्रवद्ध हुऐ ने दऽ रहल अछि। कानून केहनो मोट-मोट किताबक किए ने हुअए जे ‘वयस्क भेला पछाइत माने अठारह बरख पुरला पछाइत, अपन-अपन विचारक मालिक सभ होइए, ऐ ले दोसरकेँ एतराज नइ हेबा चाही। मुदा की समाजोमे सएह अछि?

दुनू जाइतिक बीच कहा-कहीसँ शुरू भेल आ मारि-पीट भऽ गेल। ओइ मारि-पीटमे रंगलाल भाय सेहो रहैथ। लाठी लगने कपार सेहो फुटल रहैन। तँए अखनो ओहिना मोन छैन। रंगलाल भाय बजला-

“हँ, कि करितौं, घरक लोकसँ लऽ कऽ टोलबैया तक तेना कहए लगला जे जाइतिक पगड़ीक सबाल छी, एकरा नइ बँचाएब तखन जीवियेे कऽ की करब। तँए ओइमे चलि गेलौं।”

कहलयैन-

“महिना दिन जे माथमे पट्टी बन्हने रहलौं, से कियो बाँटि लेलक?”

एक तँ अपन हूसल काजक, दोसर मास दिन धरिक दवाइ-दारू, पथ-परहेजमे सेहो लगले छेलैन, तइपर सँ मास दिन अपने किछु कऽ नहि सकला, जे पछाइत बुझलैन। तँए मन रहबे करैन। ओना, केस दुनू दिससँ भेल छेलै, माने दुनू जाइतिक बीच, तँए थानो थोड़े अनठा देलक। जइसँ पकड़-धकड़ नहि भेल रहैन। मुदा जमानत बेरमे पाँच दिन जहल (कसटडी) मे जरूर रहैथ।

ओना, दुनू रधिया-रधबा कोर्टसँ बिआह कऽ लेलक मुदा तत्काल गाम नहि आएल। दुनूकेँ अपन हुनर रहबे करै, दू सालक पछाइत गाम आएल। ताबे गामक वातावरण सेहो शान्त भऽ गेल।

रंगलाल भाय बजला-

“गौरी, ओही बेर दुनू कान पकैड़ कऽ ऐँठ लेलौं जे एहेन-एहेन काजक भीर नइ जाएब।”

अपन गलती जखन रंगलाल भाय कबुल लेलैन तखन आगू किछु कहबकेँ उचित नहि बुझि बजलौं-

“ऐ बेर की केलिऐ?”

ऐ बेरक घटना सेहो गामेक छी। आपराधिक वृत्तिक लोक छठूलाल अछि। आपराधिक वृत्ति दू रंगक होइए। एकटा होइए जे एके तरहक अपराध जाबे जीलौं ताबे केलौं। माने जँ चोरी करै छी तँ चोरिये टा केलौं, वा पॉकेटमारी करै छी तँ पॉकेटमारियेटा केलौं। जेकरा एकचलिया अपराधी कहल जाइए।आ दोसर होइए सघन अपराधी। सघन अपराधी ओ भेल जे अनेको रंगक अपराध वृत्तिसँ जुड़ल रहैए। छठूलाल सेहो बहुचलिया अपराधी छीहे। जहिना बहुचलिया नशेरी होइए तहिना बहुचलिया अपराधी सेहो होइए। बहुचलियो नशेरी ओ भेल जे सभ तरहक नशापान करैए आ एक तरहक नशापान केनिहार एकचलिया नशेरी भेल।

ओना, गामक अधिकांश लोक छठूलालकेँ बुझै छैथ जे ओ (छठूलाल) समाजक अहितैशी लोक अछि मुदा छठूलालक चेहराक जे दोसर पक्ष अछि ओ अछि समाजक हितैशी लोकक, जे छठूलालक चेहराकेँ ओहिना झलमलेने अछि, जेनाविहारीलाल कहलैन- ‘छीपौ छवीली मुँह लसै, नील अंचल चीर, मनो कलानिधि झलमलै, कालिन्दीकेँ नीर।’तइ संग छठूलालमे अपन देहोक बल माने शारीरिक तागत छइहे, जइसँ सभ बुझैए जे असगर-दुसगरकेँ के कहए जे पाँचो आदमीकेँ असगरे छठूलाल चटनी बना कऽ खा लेत।

बजलौं-

“छठूलालक जमानतदार कोर्टमे किए बनलिये जे ओ वारन्ट भेलो पछाइत कोर्टमे हाजिर होइते ने अछि, आ अहाँ-ऊपर अनेरे वारन्ट भऽ गेल अछि..!”

कोर्ट-कचहरीक ओतबे बात रंगलाल बुझै छैथ, जेते बात केकरो मुहेँ जेतेक सुनने छैथ। तँए कानूनक मूल बातकेँ नहि बुझै छैथ। सोझमतिया लोक रंगलाल भाय छथिए जइसँ मन तँ पघिलए लगल मुदा गलतीक दण्ड मनसँ मेटाएल नहि छल, कनी तरैंग कऽ बजलौं-

“अपने करनीसँ बिपैत बेसाहि लेलौं हेन आ आब पड़ाएल घुरै छी।”

रंगलाल भाय बजला-

“गौरी, धरमागती कहै छिअ जे अपन मन नइ छल जे छठूलालक पीठपोहू होइ, मुदा घरवाली तेना केली जे की करितौं..!”

बजलौं-

“अखन, अहाँसाती वएह जेल जेती?”

रंगलाल भाय बजला-

“बौआ गौरी, घरवालीक अपने पिसियौत भाए छठूलाल छिऐन, अपनो सारे भेल। तँए मन डोलि गेल। ऐ बेर कहुना कऽ बँचा दाए। तोरे सोझामे पचीस बेर कान पकैड़ कऽ उठब-बैसब जे जिनगीमे फेर एहेन काज नइ करब।”

ओना, मनक बीख उतैर गेल छल मुदा ठोरपर तामस चढ़ले छल। बजा गेल-

“जहल जाइले तैयार छी?”

रंगलाल भाय बजला-

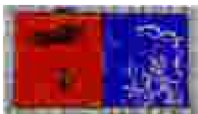
“जान बँचैले जे करए पड़त, सभले तैयार छी।”

बजलौं-

“काल्हि संगे कोर्ट चलब।”

**अपन मंतव्य** editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

**अमरेश कुमार लाभ**

**२ टा बीहनि कथा**

**१. लेबलीटिये बड्ड छन्हि**

— केओ लड़िका नीक सन नै अछि नजरि मे, यौ ?

— से की ? आइ काल्हि लड़िका कें के पुछै अइ, यौ ? लड़िका तँ ढ़ंगरिआएल अइ ? जे घर देखू , दू ___ चारि टा लड़िका अबस्से भेट जाएत।

— से तँ ठीके, मुदा ढ़ंग के भेटए तखन ने।

— लड़िका तँ एक सँ एक नजरि मे अछि। मुदा केहन लड़िका चाही, किनका लेल चाही, बाजबै किछ तखन ने, यौ।

— किनका लेल की, हमर अपने बच्चिया अछि। रूप __रंग मे केओ काटै बला नै।M.A. पास केने अछि। काज __धाज मे सेहो निपुण। जोग्य लड़िका जदि भेट जाइ त' पाइ सेहो गिनबै।

— एगो तँ बड्ड बेजोड़ लड़िका नजरि पड़ि रहल अछि, अहाँक बच्चिया जोग्य। एहि पोरकां साल नोकरी धरलक हेन, केंद्र सरकारक प्रथम वर्ग अधिकारी मे। पढ़ल __लिखल सेहो ओतबे। कोइ अवगुण नै। आउर तँ आउर माय __बाप कें बड्ड आज्ञाकारी।

— से त ठीक अइ। घर __परिवार केहन छन्हि ? के __के संगे रहै छन्हि ? किछ जानकारी अछि की ?

— हँ, यौ। किएक नै रहत ! बड्ड भरल __पुरल परिवार छन्हि। माय __बाप तँ छथिन्हें। लड़िका भाई ___ बहिन मे दोसर नमबर पर। बड़का भाई नै किछु क' पबिलै बियाह भ' गेल छैक, दोसर नमबर पर लड़िका अपने भेल, तेसर बहिन भेलैक जे अखनि कुमारे छै, आ चौथा भाई अखनि नौकरी के तैयारी मे लागल

अछि। हर दृष्टि सँ हमरा उपयुक्त लागि रहल अइ ई परिवार अहाँक कनियाँक बास्ते। कहियौ तँ बात चलबियै।

— की कहू ? लड़िका तँ हमरो बड्ड पसीन अछि। मुदा,लेबलीटिये (liabilities) बड्ड छन्हि !

## २. बेटी बचाबू

—कनिको नीक नैं हेतै ओ सरधुआ कैँ। डाक्टर अइ ओ, जरलाहा ? पाईयो ठगि लेलक आ सब उनटा।

— की भेलौक माय ? किएक एतेक तमसायल छें ?

— आँय रौ, तों एना पूछि रहल छें, जेना किछु जानिते नैं छें।

— कोनाक बुझबौ, किछु कहबें तखन ने ?

— बूझ त', ओ कनियाँ कैँ जीवने सँ ने खेलवार करलक ? ई तोहर तेसर संतान भेलौक। लोग बाग कहै जाय छैक कि बड़का आपरेसन सँ तीन सँ बेसी बच्चा नैं होइत छैक। अहि लेल ने कहने छलियौ जे पहिनहिंयें वो जाँच .... की कहै छै ......? जहिं मे बेटा हेतैक की बेटी पहिनहिंयें पता चलि जाय छैक करबा लेबा लेल। त' आब तोहिं बाज ? की फायदा भेल ? पाईये ने ठगलक ओ ? कहलक होएत बेटा आ भ' गेल बेटी।

— एहि में की नोकसान भ'गेलैक ? आइ काल्हि बेटा-बेटी में किछ फरक नैं।

— हमरा ज्यों पहिने पता चलि जतिएक जे बेटी हेतैक तखनि ............

— एहि लेल त' हम तोरा, बिनु जाँच करौने ओहिना कहि देने छलियौक।

- अमरेश कुमार लाभ , हरनीचक, अनीसाबाद , पटना ८०००२

अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

**कुसुम ठाकुर**

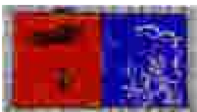
अलग राज्यक माँग कतेक सार्थक?

ओना तs हमर स्वभाव अछि हम नहि लोक के उपदेश दैत छियैक आ नहि अपन मोनक भावना लोकक सोझां मे प्रकट होमय दैत छियैक । हम सुनय सबकेर छियैक मुदा हमरा मोन मे जे ठीक बुझाइत अछि ओतबा धरि करैत छियैक। एकर परिणाम इ होइत अछि जे हमरा सलाह देबय वाला केर कमी नहि छैक। सब के होइत छैन्ह जे ओ जे कहताह कहतिह से हम अवश्य मानि लेबैन्ह।अपन अपन भावना केर हमरा पर थोपय के कोशिश बहुत लोक करय छथि। परोपदेश देनाइयो आसान होइत छैक । मुदा हमर भलाई केर विषय मे के सोचि रहल छथि इ ज्ञान तs हमरा अछि । मुदा दोसराक विचार सुनालाक किछु फायदा सेहो छैक। लोकक विचार सुनि अपन विचार व्यक्त करय मे आसानी होइत छैक आ आत्म विशवास सेहो बढैत छैक। एकटा कहबी छैक "कोठा चढ़ी चढ़ी देखा सब घर एकहि लेखा " सब ठाम कमो बेसी एके स्थिति छैक, मुदा दोसरा केर विषय मे कम बुझय मे, आ देरी सs बुझय मे आबैत छैक, अपन तs लोक के सबटा बुझल रहैत छैक। पारिवारिक हो सामाजिक हो वा देशक, सब ठाम आपस मे विचार मे मतान्तर होइत रहैत छैक जे कि मनुष्य मात्र के लेल स्वाभाविक छैक आ हेबाक सेहो चाहि । जखैन्ह दस लोकक विचार होइत छैक तs ओहि मे किछु नीक किछु अधलाह सेहो विचार सोंझा मे आबैत छैक। मुदा आजु काल्हि सब ठाम स्वार्थ सर्वोपरि भs जाइत छैक । लोक के लेल देश समाज सs ऊपर अपन स्वार्थ भs गेल छैक। संस्था व न्यास केर स्थापना होइत छैक समाज आ संस्कृति केर उत्थानक लेल । मुदा संस्थाक स्थापना भेलैक नहि कि ओहि संस्थाक मुखिया पद आ कार्यकारणी मे सम्मिलित होयबाक लेल राजनीति शुरू भs जाइत छैक । एकटा संस्था मे कैयैक टा गुट बनि जाइत छैक । आ ओहि मे सदस्य ततेक नहि व्यस्त भs जाइत छथि कि हुनका लोकनि के सामाजिक कार्य आ संस्कृति के विषय मे सोचबाक फुर्सते कहाँ रहैत छैन्ह । आ ताहू सs जौं बेसी भेलैक आ बुझि जाय छथि जे आब हुनक ओहि ठाम चलय वाला नहि छैन्ह तs एक टा नव संस्था केर स्थापना कs लैत छथि। सामाजिक कार्य केर नाम पर साल मे एकटा वा दू टा सांस्कृतिक कार्यक्रम कs लैत छथि आ बुझैत छथि समाज केर उद्धार कs रहल छथि । ओहि कार्यक्रम मे पैघ पैघ हस्ती , नेता के बजा अपन डंका बजा लैत छथि।बाकि साल भरि गुट बाजी आ साबित करय मे बिता दैत छथि जे हुनक कार्यकाल मे कार्यक्रम बेसी नीक भेलैक। हम मानय छियैक जे कार्यक्रम अपन संस्कृति केर आइना होइत छैक, मुदा ओ तs स्थानीय कलाकार के मौक़ा दs कs सेहो करवायल जा सकैत छैक। इ कोन समाजक उत्थान भेलैक जे लोक सs मांगि कs कोष जमा कैल जाय आ मात्र कार्यक्रम मे खर्च कs देल जाय। बहुतो एहेन बच्चा शहर वा गाम मे छथि जे मेधावी रहितो पाई के अभाव मे आगू नहि पढि पाबय छथि। दवाई केर अभाव मे कतेक लोकक जान नहि बचा पाबय वाला परिवारक मददि केनाई समाजक उद्धार नहि भेलैक? आय काल्हि तs लाखक लाख खर्च

करि कS एकटा कार्यक्रम कैल जाइत छैक। कहय लेल हम ओहि महान हस्ती केर पर्व मना रहल छी। कार्यक्रम करू मुदा कि अपन गाम शहर के भूखल के खाना खुआ तृप्त कS ओहि महान हस्ती के श्रद्धाँजलि नहि देल जा सकैत छैक। इ तS मात्र एक दू टा समाज के सहायतार्थ काज भेलैक ओहेन कैयैक टा सामाजिक काज छैक जे कैल जा सकय छैक । यदि सच मे लोक के अपन समाज आ संस्कृति सS लगाव छैन्ह तS जतेक कम संस्था रहतैक ततेक नीक काज आ समाजक उत्थान होयतैक। ओहि लेल मोन मे भावनाक काज छैक नहि कि दस टा संस्थाक । देश मे नित्य नव नव राज्यक माँग भS रहल अछि। ओहि मे मिथिलांचलक माँग सेहो छैक। हमरा सँ सेहो बहुत लोक पूछय छथि "अहाँ मिथिला राज्य अलग हेबाक के पक्ष मे छी कि नहि "? हम एकहि टा सवाल हुनका लोकनि सँ पूछय छियैह "कि राज्य अलग भेला सँ मिथिलाक उत्थान भS जेतैक "? इ सुनतहि सब के होइत छैन्ह हम मैथिल आ मिथिलाक शुभ चिन्तक नहीं छी। बुझाई छैन्ह जे अलग राज्य बनि गेला सँ मिथिलांचलक काया पलट भS जेतैक । एक गोटे जे अपना के मिथिला के लेल समर्पित कहय छथि, साफ़ कहलाह "मैथिल के मोन मे मिथिला के लेल जे प्रेम हेतैक से दोसरा के नहि" । हमर हुनका सँ एकटा प्रश्न छल "कि पहिने बिहार मे मैथिल मुख्य मंत्री, मंत्री नहि भेल छथि "? जवाब भेंटल " ओ सब मैथिल छलथि मिथिलाक नहि"। अलग राज्य भेलाक बाद जे कीयो मुख्य मंत्री होयताह ओ मिथिलाक होयताह आ मात्र मिथिला के लेल सोचताह । हमरा इ बुझय मे नहि आबैत अछि जे लोकक मानसिकता के कोना बदलल जा सकैत छैक ? एखैंह ओ दरभंगा के छथि , ओ सहरसा के . ....ओ मुंगेर के छथि ....कि अलग राज्य भेला सँ आदमी केर मानसिकता बदलि जेतैक .....कि दरभंगा , सहरसा आ कि मुंगेर वाला भेद भाव मोन मे नहि औतेक ? आ जौं इ भेद भावना रहतैक तS सम्पूर्ण राज्यक विकास कोनाक भS सकैत छैक ? कि मिथिलाक होइतो ओ सम्पूर्ण मिथिला केर विषय मे सोचताह ? छोट छोट राज्य नीक होइत छैक , ओकर पक्ष मे हमहू छी मुदा बिना राज्यक बंटवारा केने सेहो बहुत काज कैयल जा सकैत छैक, जौं करय चाहि तS । ओना सब अपन स्वार्थ सिद्धि मे लागल रहय छथि इ अलग गप्प छैक। कि नीक स्कूल कॉलेज कारखाना के लेल बिना राज्य अलग बनने प्रयास नहि कैयल जा सकैत छैक? कि मात्र मिथिला राज्य बनि गेला सँ मिथिलाक उद्धार भS जयतैक ? मिथिला राज्यक अलग हो ताहि आन्दोलन मे अनेको लोक सक्रीय छथि , मुदा हुनका लोकनि सS एकटा प्रश्न .......ओ सब आत्मा सS पुछथि कि ओ सब मात्र राज्य आ समाज के लेल सोचय छथि कि हुनका लोकनि के मोन मे लेस मात्र स्वार्थक भावना नहि छैन्ह ? कैयैक टा राज्य अलग भेलैक अछि मुदा बेसी केर स्थिति पहिने सS बेसी खराब भS गेल छैक, झारखण्ड ओकर उदाहरण अछि । खनिज संपदा सँ संपन्न राज्यक स्थिति बिहार सS अलग भेलाक बाद आओर खराब भS गेल छैक। एहि राज्य मे नौ साल के भीतर सात टा मुख्यमंत्री बनि चुकल छथि । लोक के उम्मीद छलैक जे १० साल के भीतर एहि राज्य केर उन्नति भS जयतैक। उन्नति भेलैक अछि, मुदा राज्य केर नहि नेता सब केर । चोर उचक्का खूनि सब नेता भS गेल छथि आ पैघ सS पैघ गाड़ी मे घुमि रहल छथि , देश आ जनता केर संपत्ति केर उपभोग कS रहल छथि इ कि उन्नति नहि छैक ?(विदेह पेटारसँ)

**अपन मंतव्य** editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

डॉ विनीत उत्पल

**लघु कथा- नागा फकीर**

*(डिस्क्लेमर: एहि खिस्साक सभटा पात्र आ तथ्य मनगढ़ंत अछि, समानता मात्र संयोग अछि-कथाकार)*

पता नहि जे कि फुरायल जे आइ ओकर पुरना फेसबुक पोस्ट पढ़य लगलौं-

*१४ नवम्बर: अंतर्राष्ट्रीय साहित्यिक संस्थाक युवा पुरस्कारक जूरी कोनो पोथीक मूल्यांकन नहि कऽ कय प्रतिभागीक उमरि देखैत अछि, जे अमुक लेखक कें अगिला बरख पुरस्कार देल जा सकैत अछि वा नहि।*

*०२ अक्तूबर: 'सगर राति दीप जरय' जाहि दिन सँ सोलकन लग गेल, बभना आ रारी कायस्थ सभ गुरमौटी देने अछि, जे ई की भेल? ताहि देखादेखी 'सगर दिन अन्हार रहय' शुरू कयल गेल।*

*३१ अक्तूबर: मैथिलीक सम्मानित सबसँ युवा कथाकार आब 'इस्स' आ 'भक्क' नामसँ खिस्साक पोथी लिखने छथि आ दुनू पोथी कें दुनियाक 'बेस्ट सेलर'क खिताब भेटल अछि आ दुनियाक चालीस भाषामे तकर अनुवाद भेल अछि।*

*२६ जनवरी: बिहारमे मद्यपान निषेधक कारण ओतयसँ सबसऽ बेसी साहित्यकार हर दू दिन पर कोनो ने कोनो कार्यक्रमक बहन्ने दिल्ली आबैत छथि आ सोमरसक पान राजधानीक बीयर बारमे करैत छथि।*

*३० जनवरी: मैथिली-अंगिका-वज्जिका-मगही-भोजपुरी अकादमीक उपाध्यक्षक आगू सभ भाषाक कतेक रास कवि अप्पन नाम लेल निहोरा करैत छथि, जे पिछला दू बरख सँ हमरा कविता पाठ लेल नै बजेलहुँ।*

*१५ अगस्त: घोर कलयुग, कतेक रास आपराधिक प्रवृत्तिक लोक आब साहित्यकार बनि गेल अछि आ राज्य आ केन्द्र सरकारक संग अंतरराष्ट्रीय संस्थाक बहुत रास समितिक सम्मानित सदस्य भऽ गेल अछि।*

बेसी पोस्ट तऽ ओकर फेसबुक वाल पर नहि छल, मुदा जे छल ओ साहित्यिक समाजक लेल बिख सँ कम नहि छल। हमरा सँ ओकर भेंट कहियो नहि छलै। ओकरा लऽ कऽ फेकुआ भाइ कहियो-कहियो हमरा लग चर्च करैत छला। ओ कहैत छला जे सत्ता आ साहित्यकेँ जँ बुझबाक अछि तँ ओकरासँ गप करू। ओकर फेसबुक पोस्ट पढ़ू। ओ अजुका 'राजकमल चौधरी' छिऐ, अजुका। सोशल मीडियाक 'नागार्जुन'। की कही, एक बेर ओकर फेसबुक वाल पर गेलो रही, मुदा ओकर पोस्ट हमरा पसीन नहि आयल, तें हम फेर दोबारा नहिये तँ ओकर फेसबुक वाल पर गेलहुँ आ नहिये ओकरा फेसबुकक मित्रताक निमंत्रण देलहुँ।

हमरा लागैत छल जे फेकुआ भाइक गप जँ सत्य अछि, तँ ओ बड़ तार्किक हएत। सत्ताक समीकरण बुझैत हएत। साहित्यक समझ जँ ओकर नीक छै तँ फेर कोनो साहित्यकार ओकरा मोजर किए नहि देलाह। ओकरा मोजर तँ ओना हमहूँ नहि देलहुँ। एहि दिल्लीमे के केकरा पुछैत छै। रोज बिहार-यूपी सँ अल्लू-प्याजक बोड़ा जेना लोक-बेद ट्रेन, बस आ फ्लाइटसँ आबैत छथि। किछु लोक दिल्लीमे संघर्ष करैत छथि तऽ कियो नोएडा आ गुरुग्रामक कोनो फैक्ट्रीमे काज करैत-करैत अपन जिनगी गुजारि दैत छथि। 'हाय पैसा-हाय पैसा'क चक्करमे साहित्य के पढ़त आ राजनीतिक गप के करत?

'धौ महराज, अहाँकेँ कहबाक तँ नहि चाही, मुदा खिस्सा सुना रहल छी आकि फालतू गप? कथाक बाटसँ नहि भटकू'।

'चलू भाइ, जे गलती-सलती भेल से माफ़ करब। आगू सँ हम एकर ख्याल राखब। एखन धरि जे गप कहलहुँ ओकरा बिसरि जाउ, माफ़ कऽ दिअ। एकरा सँ बेसी हम की कऽ सकैत छी'।

'भाइ, तऽ हम सब कतय रही'?

हँ, ख्याल आयल। किछु दिन पहिने फेकुआ भाइ मधुबनीक मानकी पोथी भंडारक दोकान पर भेटल छल। हुनकर मन कनी सुस्त देखलियनि तँ पुछने रहियनि-

'की भेल भाइ'?

पहिने तऽ कनि अनमनैलक, फेर बजलाह-

'ख्याल अछि अहाँकेँ? एकबेर हम दिल्लीमे एगो लोकक चर्च केने रही, सत्ता आ साहित्य पर जिनकर बड़ रुचि छनि आ ओ नीक जानकार छथि।'

'जी, जी', हम बजलहुँ।

'ओ पछिला कतेक माससँ नपत्ता अछि। नहिये ओकर दिल्लीमे कत्तौ पता लागल आ नहिये गामेमे। पुलिस लग रिपोर्ट लिखेलहुँ मुदा हाथमे किछु नहि आयल।'

'सार', जेहन नाम, तेहने करम।'

'फकीर रहय, फकीर। एकदम नागा'

'नहिये घरक चिंता, नहिये नौकरीक, बस चिंता तँ साहित्यक आ राजनीतिक। एना लागैत छल जे ओ नहिये तऽ ओ कोनो साहित्यकार अछि नहिये कोनो समीक्षक। बस महाभारतक अर्जुन जेना साहित्यक राजनीति पर ध्यान लगौने रहैत छल। ने कनियो टा इम्हर, ने उम्हर।

'कहू तँ भाइ, एना कत्तो लोक होइत छै।'

सत्य कही तऽ आइ हमरा बड़ अफ़सोस भेल जे ओकरा सँ भेंट कऽ लैतिऐ तऽ की भऽ जैतिऐ।

आब जतेक लोक, ओकर ओतेक खिस्सा। कियो कहय जे ओकरा दिल्लीमे रहय बला कोनो मौगीसँ प्रेम भऽ गेल छलै आ ओ मौगी ओकरा छोड़ि देलकै तऽ ओ बताह भऽ गेल। कियो कहय जे दिल्लीक कियो गोटे अप्पन संस्था चलाबैक लेल मधुबनीक 'अरेर' मे दू बीघा जमीन ओकरा रजिस्ट्री कऽ देने छल। ओ दिल्लीकेँ छोडिकऽ 'अरेर' मे रहय लागल छल आ अंतिम बेर कोनो 'राष्ट्रीय दल'क लोकल नेताक संग देर राति 'नागिन डांस पार्टी'मे 'देखल गेल छल। लोक तऽ ईहो कहैत छल जे कियो गोटे सहरसाक चैनपुरमे पुस्तकालय चलाबैक जिम्मेवारी ओकरा देने छल आ ओहि दिन भोरे-भोर दरवाजाक आगकू पोखरिमे जे ओ डुमकी लगौलक, आइ धरि ओकर लाश नपत्ता अछि। कियो कहलक जे ओ तऽ वयोवृद्ध हिन्दी कथाकार कृष्ण ठाकुरक संग पांडवनगरमे रहैत छल, कोनो कैसेट कंपनीमे काज करैत छल आ 'लाल पाइन' पीबैक लेल इंडिया हैबिटेट सेंटर जाइत छल। ताहिसँ ओकर लीवर ख़राब भऽ गेल आ ओ सुरपुर धाम कहिया नहि चल गेल। ताज्जुब तऽ तखन भेल जखन कियो कहलक जे ओ जनउ तोड़िकऽ इस्लामी प्रसिद्ध विद्वान अकबरूदीन खानक संग रोजा राखैत छल आ पाँचो टाइम नमाज पढ़ैत छल। '*सुब्हान्ल्लाहि वलहम्दु लिल्लाहि व ला इल्ललाहु वल्लाहु अकबर*' केर जाप सेहो करैत छल। कियो तऽ बाजल जे ओ हिन्दू सँ बौद्ध बनि गेल। हल्ला ईहो छल जे ओ नक्सली बनिकऽ छत्तीसगढ़-आंध्र प्रदेश बॉर्डर पर स्थानीय पुलिसक हाथ लागल आ ढेर भऽ गेल। हल्ला तऽ छल जे ओ कश्मीर सेहो गेल आ 'तैस-ए-मोहम्मद' मे शामिल भऽ गेल छल आ सेनाक हाथ मारल गेल।

पूरा खिस्सा तऽ मधेपुरा जिलाक बराही गामक प्रकांड संस्कृत पंडितजी अस्सी बरखक अरुणाभ बाबूसँ पता लागल।

जँ विश्वास करी तँ पंडितजी अरुणाभ सत्य गप कहने छलाह। ओहि दिन तऽ गाम आयल छल ओ। घड़ी-पावैन मे। गामक भगवती थान पर दू दिनक बड़का मेला लागल छल। एहि पावैनमे साँपक विषकँ उतारैक लेल लोक सिद्धि प्राप्त करैत छल आ ओहि बेर ओ सेहो मंतरिया बनि गेल छल। नागा तऽ घुमिते छल। माथमे केस छलै, मुदा सबटा पाकल। आँखि लग झुर्री सेहो लखाह दैत छल। ओहि समयमे ओ सदिखन महिषी बला राजकमल चौधरीक एकटा पाँति दोहराबैत छल,

*'समय एकटा आन्हर साँप/ समय एकटा आन्हर रस्ता/ आ व्यक्ति अजगरक पेटमे छटपटाइत पक्षी।'*

मुदा लोककँ बुझयमे नहि आबैत छल जे ओकर मनमे की डाकै छै। घड़ी मेलाक दू दिन बादक गप छिऐ। ओ उदाकिशुनगंज कोर्टसँ घुरल छल। लोक कहैत छल जे जखन कहियो ओ गाम आबैत छल तऽ कोर्टमे मुक्तारीक काज सेहो करैत छल। साँझ खन दीप-बातीक काल ओ साइकिल पर चढ़ि कऽ घुरि रहल छल जे उदा पुल पर गामक रोहिता यादव भेट गेलै। ओ माल-जाल संग बाधसँ घुरि रहल छल। एकटा महीसक पीठ पर बैसल तमाकू चुना रहल छल।

ओ रोहिताकँ टोकलक-

'की रे रोहिता, की हाल?।'

'रे बभना, ठीक सँ बोल। चिन्हय नै छँ हमरा?'

'हे रे सार, हम की कहलियौ तोरा, जे एत्ते बमकै छँ।'

एतबी कालमे नम्हर सींग बला महीसकँ रोहिता यादव ओकरा दिस हुलकाय देलक। ओ सौंसे देह साइकिलक संग नहर दिस गिरल। नहरमे राति पाइन छोड़ल गेल छल। एक मरदसँ उपर पाइन छल। साइकिल तऽ एक दिस अटकि गेल मुदा ओ डूमय लागल। नहरक दुनु दिस लोक जमा भऽ गेल आ हो-हल्ला हुअए लागल। रोहिता भीड़ देखि अपन माल-जाल संग ठामसँ भागल। नहरमे पाइनक धार एतेक तेज छल जे ओकरा सम्हरहि कऽ मौका नहि भेटलै। सौ हाथ पाइनमे बहैक बाद ओकर देह एकटा बाँसमे अटकि गेलै। गामक लोक बेहोशी हालतमे ओकरा नहरसँ खींचि कँ बाहर निकाललक। कहुनो कऽ कय साइकिलकँ सेहो

निकालल गेल। ताधरि बभना टोल आ देवहैर टोलमे एहि लऽ कऽ हल्ला भऽ गेल छल जे रोहिता यादव कोनो बाभनकेँ नहरमे ठेल देने छै।

बराही गाममे दू टोल छल। एकटा 'ब्राहमण टोल', जेकरा आन टोलक लोक 'बभन टोली' कहैत छल आ दोसर 'देवहैर टोली', जे असलमे 'देवहर टोल' छल। देवहैर टोलमे पुरना लोक अप्पन नामक पाछू 'देवहर' लिखैत छल। बादमे सभ अप्पन टाइटिल 'देवहर'केँ बदलिकऽ 'यादव' राखि लेलक आ नाम कहैत काल अप्पन नामसँ बेसी 'यादव' पर जोर दैत छल। तखन बाभन सभ ओहि टोलकेँ 'ग्वरटोली' कहिकऽ बजाबय लागल छल।

*(ई खिस्सा ओहि कालक अछि जखन पूरा देश मंडल आ कमंडलमे जरि रहल छल। चूँकि बराही आ पास-पड़ोसमे कोनो मुस्लिम बस्ती नहि छल, तें सांप्रदायिक सौहार्द्र ओतुक्का समाजक लेल कोनो गप नहि छल। मुदा बिहारमे लालू यादवक मुख्यमंत्री बनलाक बाद समाजक मुख्य धारासँ फराक रहय बला लोक सजग भेल छल। फेर जाहि मंडल कमीशनक रिपोर्टकेँ विश्वनाथ प्रसाद सिंह लागू केने छल, ओहि मंडल कमीशनक अध्यक्ष बी. पी. मंडल मधेपुरा जिलाक छल।)*

ओहि साँझक बाद तऽ दुनू टोलक लोक एक-दोसरा कें देखहि नहि चाहैत छल। ब्राहमण टोलक चिड़ियो-चुनमुन, कुकुरो-बिलाय ओम्हर नहि जाइत छल। मनुखसँ बेसी वफादारी तऽ माल-जालमे पाओल जाइत अछि। तीन-चारि मास बीतल छल। ठार आबि गेल छल। एक राति दू-टा कुकुर मांगन भैयाक बँसबिट्टीमे आपसमे फरिआबय लागल। ओ दुनुटा जतेक जोरसँ एक-दोसरा पर भुकलक जे द्वार पर चचरी पर सुतल बड़का बाबा कें भलै जे अजुका राति आर-पारक राति होयत। अप्पन चचरीसँ बौकू कक्का कें शोर पारलखिन। अन्हरिया राति, हाथकेँ हाथ नहि सुझैत छल। मेघ चारू कातसँ घेरने छल। शीतलहरी सेहो अलगे।

मुदा कक्काक आवाज सुनि बौकू कक्का निन्दौसँ उठल आ तीर-फट्टा सीधे हाथमे लेने मांगन भैयाक बँसबिट्टी दिस दौड़ल। बौकू कक्का एतेक जोरसँ चिकरलक जे सौंसे बभनटोलीक लोक जागि गेल। मारि तिरपित जेकरा जे भेटल, हाथमे लेने ओहि दिस दौगल। बँसबिट्टीसँ आठे-दस कदम बौकू भाय पाछू छलाह, तखने लोकक शोर सुनि, एक कऽ पाछाँ एक दुनु कुकुड़ हुनका बगलसँ एना दौगल जे एकटा कुकुर बौकू कक्काक धोतीमे ओझरा गेल। कक्का धरफरीमे बुझि नहि सकल जे ई कोनो कुकुड़ छै आकि मनुख। बौकू कक्का सौंसे चिंतांग धरती पर गिर पड़लाह। गिरल देहसँ दोसरो कुकुर भिर गेल। हुनकर मुँहसँ एतेक जोरसँ 'बाप रौ बाप' निकलल, लागल जे आइ ग्वरटोलीक यादव हुनको निशाना बना देलक। वातावरण किछु काल धरि स्तब्ध रहल।

लोककेँ बुझयमे नहि आयल जे की भेल। ताधरि मांगन भैया सेहो बड़का टॉर्च लऽ कऽ आबि गेल। टॉर्चक इजोतमे पता लागल जे सबटा किरदानी कुकुरक छल।

गाममे दुनू जातिक बीच मनमुटाव बरक़रार छल। आन लोक सेहो एकर फायदा उठा रहल छल। गामक लोक कहैत अछि जे ओ एहन विकराल समय छल जे कल्लू यादवक नामसँ मधेपुराक धरती कांपैत छल। एक बेर एहन आयल जखन एक हफ्ता भरि कल्लू यादव गैंग मधेपुरामे लोकक देहकँ उघारि-उघारि जनउ ताकैत छल आ जनउ पहिरय बला लोक कँ 'गर्दनिया पासपोर्ट' दऽ कऽ जुत्ता-चप्पल-लाठी सँ धुनैत करुण यादव मुखियाकँ बजौने छल। ओ पुछने छल जे बराही गामक बाभन कँ की करल जाय?

अरुण मुखिया सीधे मुँह कहि देने छलाह कल्लू यादव कँ-

'भाय, बराही पंचायतक मुखिया हम छी। हम सभ जाति सौ बरखसँ बेसीसँ संगे रहि रहल छी। दू भैयारीमे एहिना झगडा-झंझटि होइत रहैत छै। बाभन आ देवहैर एक्के छिऐ। ताहि सँ हुनका सबकँ तंग करैक आवश्यकता नहि'।

भीड़सँ कियो कहनो छल-

'एक बेर कहो ने मुखियाजी, एखने राति भरि में सबटा बभनाकँ घर जरा देते हैं।'

लोक अखनो कहैत अछि जे ओहि अन्हरिया ठार रातिमे मुखियाजी गांधीजी जेना खुट्टा गाड़िकँ ठाढ़ रहल आ केकरो हिम्मत नहि भेल जे गामक बाभन टोल दिस एक्को डेग आगू दैतिऐ। एकरे फल छल जे करुण मुखिया चालीस बरख धरि बराही पंचायतक निर्विरोध मुखिया चुनल गेल आ राज केलक।

मुखियाजी कल्लू यादवकँ ओहि राति बुझा तऽ देलक आ गामक सीमान सँ भगा तऽ देलक मुदा दुनू जातिमे विश्वास नहि आनि सकल। कतेक बेर भगवती थान पर पंचायत बजाओल गेल, मुदा वएह ढाकक तीन पात। एक साँझ कहानीक पात्र 'ओकरा' आ रोहिता यादवमे सीधा लड़ाइ भऽ गेल। रवि दिन छल। उदामे साप्ताहिक हटिया लागैत छल। ओकरा माछ खाइक मन छलै। एक तऽ ओ माछ खाइ नहि छल मुदा खाइ छल तँ सवा किलो सँ एक कनमा कम माछ कीनैत नहि छल।

संजोगसँ रेहू माछ एक्के गोटेक लग छलै, सेहो एक किलो पचास ग्राम। पचहत्तर ग्राम माछक कमी सँ ओकरा तामस आबि गेलै। संजोग जे तखने रोहिता सेहो माछ लेल पहुँचल।

'हे रे। एक किलो माछ तौल दही।'



ISSN 2229-547X VIDEHA

'मालिक, आब तऽ ई माछ बिक गेल।'

'ओ की छियौ'।

'नहि मालिक। सवा किलो मे पचहत्तर ग्राम कम अछि, तैँ बहस भऽ रहल अछि। ई साहब कीन लेलक।'

'हे रे धीचोदा। हमारा देभी की नै। देखभँय तू। चिन्है छी की नै?'

'जी मालिक, चिन्हैत छी।।।'

ओकर गप ख़तमो नाहि भेल छल ताधरि रोहिता ओकरा दू थाप खींच देलक आ माछक टोकरी उठाकऽ चलि देलक। कहानीक पात्र 'ओकरा' ई बर्दास्त नहि भेल। ओ सेहो पाँजर कसलक आ रोहिताकेँ उठायकेँ पटकि देलक। उदा नहर बला घटना दिनसँ रोहिताक खून खौलले छल। रोहिता माथे भरे जमीन पर खसल। संयोगे या दुर्योगे कही, जाहि ठाम रोहिता खसल, ओहि ठाम एकटा नोकी बला पाथर छल। शोणित ओकर माथसँ बोकरय लागल। रोहिताक भीषणकाय देह जमीन पर गिरल, से गिरले रहि गेल। रोहिता यादवक प्राण जाइत देखि "ओ" भक्क भऽ गेल। ओकरा मुँहसँ 'इस्स' टा निकलल। दू सेकेँडक लेल ओकरो देह स्टेच्यू बनि गेल छल।

सम्पूर्ण हटियामे हो-हल्ला हुअए लागल।

भीड़ 'मारो मादरचो... बभना कैँ।'

'हे रे बहिनचो... बभना, ग्वारक राजमे ग्वारकेँ मारि देभी।'

'के छिऐ रे... '।

जाधरि ओतय लोक जुटिकऽ ओकरा मारतिऐ, ताधरि ओ अचानकसँ भीड़मे भीड़क हिस्सा बनि गेल। केकरो पता नहि चलल जे ओ कतय गेल।

मुदा ओ माछ नहि छोड़लक। सभटा माछ लऽ कऽ भागि गेल।

जखन पुलिस इन्क्वायरी लेल पहुँचल तऽ किशुनगंज थानाक इंस्पेक्टर रामबाबू सिंह एक-एक गोटासँ पूछताछ केलक। दूटा बाभन टोलक छौड़ा समरनत्था आ मुनितबाकेँ ओहि हटियामे पुलिस लाठी सँ जतेक मारि मारलक, से कहि नहि सकैत छी। दुनू दू दिन पहिने दिल्लीसँ गाम आयल छल। दुनू

अपराधी तऽ नहि छल, मुदा गाम आबैत छल तऽ पंचायतमे छिटपुट मारि-पीट कऽ लैत छल। मुदा, 'ओकरा' नहिये तँ पुलिस पकड़ि सकलै आ नहिये ओकर कोनो थाह ककरो लागलै।

ओहि साँझ एकटा आओर गप भेल।

पुलिस इन्क्वायरीक बाद नहरक काते-कात माछबला जखन घर जा रहल छल तऽ कियो साइकिलबला छौड़ा अन्हारमे ओकरा एक-एक सौ टाकाक दूटा नोट देलक आ कहलक-

'हे हौ। जे तोहर माछ लऽ कऽ भागले छल ने, वएह ई टाका देने छौ।'

एतबे कहि कऽ ओ साइकिल बला छौड़ा फिरंट भऽ गेल।

गामक चार-चौहद्दीमे 'ओकरा' खोजल गेल। पुलिस आ सी.आइ.डी. लगातार ओकर घर पर 'रेड' केलक, मुदा 'ओकर' पता नहि लागल। बराही गामक ब्राहमण टोलक लोक बड चिंतित भेल, मुदा हाथमे शून्य।

ओना अहि घटनाक बाद आ बाभन टोलक दुनू छौड़ाक पुलिसक लाठी लगलाक बाद एतबे टा भेल जे दुनू टोलक लोक मामिलाकेँ शांत करयमे लागि गेल। रोहिताक स्त्री सेहो कोनो मोकदमा दर्ज करहिसँ मना कऽ देलक। लोक कहैत अछि जे रोहिताक स्त्री सेहो ओकरासँ तंग आबि गेल छल। रोहिता सभ दिन कत्तोसँ मारि-पीट कऽ आबैत छल। बिहारमे जहियासँ मद्य प्रतिबंधित भेल, तहियासँ ओ देशी ठर्रा या ताड़ी पीबिकेँ रातिमे घर घुरैत छल आ स्त्रीसँ मारि-पीट करैत छल। दुनूक ब्याहक बरख भेल छलै आ अखैन धरि कोनो संतान नहि भेल छलै। पुलिस जखन रोहिताकेँ पकड़ि कऽ लऽ जाइत छल तऽ ओकर स्त्रीकेँ सेहो लऽ गेल। भरि राति रोहिता हाजतमे आ ओकर स्त्री प्राणक डरसँ ओइ पुलिसक सिपाहीक बाँहिमे बंद रहल। रोहिताक स्त्रीक नाक-नक्श, ओठ, मांसल देह आ सुडौल उन्नत वक्ष कोनो विश्वामित्रक तपस्या भंग करहि लेल काफी छल। भोर धरि ओकर देह टूटि गेलै आ तकर बाद थानाक सिपाही दुनू प्राणीकेँ छोड़ि देलक। 'गोंद' सँ चिप-चिप करैत भरि नुआ पहिनने ओ रोहिताक संग गाम आयल। एहन तरहक गप कतेक दिन नुकाओल रहतिऐ। एक कानसँ दोसर कान जाइत-जाइत भरि गाममे गप हुअए लागल जे हर दू दिन बाद पुलिस रोहिता केँ बिन कारणो किए पकड़ि कऽ लऽ जाइत छै। नशा रोहिताकेँ एहन बना देने छल जे काज तऽ ओ सभटा करैत छल, मुदा स्त्रीक संग की भऽ रहल छलै, ओकरा एकर परवाहि नहि छलै।

लोक कहैत अछि जे किछु दिनक गहमा-गहमीक बाद बराहीक दुनू टोलक वैमनस्यता ख़तम भऽ गेल। नहिये रोहिता यादव रहल आ नहिये कहानीक पात्र 'ओकरा'। लोक कहैत अछि जे एहि घटनाक बादो पुलिसक सिपाही रोहिताक स्त्री केँ पूछताछक लेल बजाबैत छल आ भोर भेने पहुँचा दैत छल। रोहिताकेँ

मरलाक छह मास बाद ओकरा गर्भ सेहो रहि गेलै, जाहिसँ तंग आबिकऽ एक राति थानामे ओ अपन इहलीला समाप्त कऽ लेलक। पुलिस बला सेहो ओकर लाशकेँ केकरो हाथ नहि लागय देलक आ हरैली धारमे एहन नपत्ता कऽ देलक जे आइ धरि ओकर लाशक कोनो थाह नहि लागल अछि।

पिछला बेर जेखन अप्पन गाम गेलहुँ तखन गामक लोक सँ मालूम भेल जे कहानीक पात्र 'ओकरा' बारे मे बीस बरख बादो पता नहि चलल। कियो कहैत अछि जे ओ कोलकाता गेल छल अप्पन केस सुलझाबय लेल। जज शत्रुघ्न झा लग। कियो कहैत अछि जे ओ दिल्ली गेल छल इलाजक लेल एम्सक डॉक्टर ईश्वरशंकर लग। किछु दिन ओतय कोनो ड्रामा कंपनीमे काज केलक आ थियेटर कंपनी स्थापित केलक। कियो कहैत अछि जे ओ मुंबइ सेहो गेल छल। एक बेर कियो कहलक जे ओ बेंगलुरुमे एकटा कंपनीमे मैनेजर बनि गेल छल आ कतेक कर्मचारीकेँ मैथिलीमे कविता लिखय लेल सिखा देलक। ओहिमे एकटा ऑफिसर आ ओकर कनियाक कविताक धूम सभ दिस मचल अछि। कियो कहैत अछि जे ओ पोथी प्रकाशनसँ सेहो जुडल आ 'पुरनांत प्रकाशन' खोलि कऽ प्रकाशन जगतमे धूम मचा देलक। एकर कतेक रास लेखककेँ साहित्यक नोबेल पुरस्कार कतेक बरख भेटल।

जेना मैथिलीक प्रख्यात साहित्यकार जीवकांत नव लेखनक प्रसंगमे लिखने छलाह जे मैथिली नवलेखन बेकार युवक सभक 'स्टेपिंग स्टोन' थिक, ओ कोनो व्यक्तिक सम्पूर्ण जीवनक मिशन नहि थीक, ताहिना एहि कहानीक पात्र 'ओकरा' केँ सेहो गाममे रहबाक कोनो प्रयोजन नहि छलै। लोक कहैत अछि जे ओ घुमक्कड़ छल। पहिलुक बेर गाममे एहि तरहे समाजक रंगमे फँसल छल।

ओहि दिन दिल्लीक मंडी हॉउस मे मैथिली नाटक 'ओरिजनल कामशास्त्र' देखिकऽ निकलले रही जे प्रकाश भाइसँ भेंट भऽ गेल। वएह प्रकाश भाइ जे कहियो गाममे गीत गाबैत छल आ दिल्लीमे बड़का वकील भऽ गेल छल। कहानीक पात्र 'ओकरा' बारेमे चर्चा भेल तऽ ओ फेकुआ भाइक चर्च केलखिन। 'भक्क' सँ हमर नीन टूटल। फेकुआ भाइ ई की कहैत छलथि जे जहिना नाम, तहिना करम, फकीर रहय, एकदम नागा। आब हमर दिमाग जागल। चूँकि हमरा ओकरामे कोनो दिलचस्पी नहि छल, तें हम फेकुआ भाइक गपकेँ सुनिकऽ कानमे तूर-तेल दऽ कऽ सुति जाइत छलहुँ।

अहाँकेँ नै लागैत अछि जे कहानीक जे मुख्य पात्र अछि ओ देश-दुनियामे यात्री जेना भटकैत अछि, ओहिना जहिना मिथिलाक लोक देशक कोना-कोनामे भटकैत अछि। कखनो महाराष्ट्रसँ, कखनो गुजरातसँ, कखनो दिल्लीसँ भगाओल जाइत अछि। अहाँकेँ नहि लागैत अछि जे ओ नवयुवक आन कियो नहि, हम आ अहाँ छी,

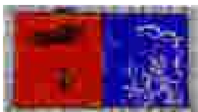
जे झट्ठोकेँ आन-शानमे केकरोसँ लड़ैत छी आ 'माछ'क भोज लेल छुछुआयल जेना केकरोसँ मांगि लैत छी आ कियो खुआबैत अछि तऽ खा लैत छी, की?

**-डॉ विनीत उत्पल-सी-३२, मंडावली ऊँचे पर, आई. पी. एक्सटेंशन, नई दिल्ली-११००९२.**

**अपन मंतव्य** editorial।staff।videha@gmail।com **पर पठाउ।**



विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

गजेन्द्र ठाकुर

# मिथिलाक इतिहास
# भाग २

## गजेन्द्र ठाकुर

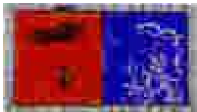
### मिथिलाक समानान्तर इतिहास



मिथिलाक इतिहास भाग-२ 


विदेह आर्काइव इम्प्रिंट

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

१

मिथिलामे बाहरी लोकक आगमन आ मिथिलासँ दूर देशमे पलायन, ई दुनू घटना निरंतर होइत रहल अछि। मुदा आइ कालिक पलायन एहि अर्थें विकट रूप लऽ लेने अछि कारण विगत तीस सालक अवधिमे भेल पलायन मिथिला गामकेँ खाली कऽ देलक।
1981 ई. मे पटनापर बनल महात्मा गाँधी सेतु आ पटना दरभंगा डीलक्स कोच सभक पाँती मिथिलावासीक हेँजक हेँज बाहर बहरएबामे योगदान केलक। तत्कालीन सरकार सभक राजनैतिक आर्थिक शैक्षिक सामाजिक आ सांस्कृतिक एहि सभ क्षेत्रमे विफलता एकटा आधार तँ बनबे कएल, स्वतंत्रताक बादक तीस साल बिहार स्थित मिथिला आ नेपाल स्थित मैथिली भाषी क्षेत्रक बीचमे एकटा विभाजक रेखा सेहो खींचि देलका। 1960 ई. मे बनल कमला बान्ह आ एखन धरि अपूर्ण कोसी परोयोजना मिथिलाक ग्रामीण आर्थिक आधारकेँ तोड़ि कऽ राखि देलक। प्राचीन कालक पलायन आ आइ काल्हिक पलायन मध्य एकटा मूल अंतर सेहो अछि। मिथिलाक मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण काएस्थ अपन विद्वत्ताक प्रदर्शन, पठन पाठन आ दोसर राजाक दरबारमे जीविकोपार्जन निमित्त प्राचीन कालहि सँ जाइत छलाह, तँ गएर मैथिल ब्राह्मण कर्ण कायस्थ जाति वाणिज्य, अंगरक्षक आदिक कार्य लेल दूर देशक यात्रा करैत छ्लाह। प्राचीन कालमे मोरंग आ पछाति भदोही मिथिलाक बोनिहारक श्रम किनबाक केन्द्र बनल, मुदा एहिमे मोरंग नेपालक मिथिलाञ्चलमे पड़ैत अछि मुदा एकरा प्रवास एहि लेल कहल जाए लागल कारण ओतुक्का शासक गएर मैथिल गोरखा भऽ गेल छलाह।

पलायनक विभिन्न स्वरूपः- पलायन एकटा ऐतिहासिक प्रक्रियाक अंग अछि। अहाँक क्षेत्रक भौगोलिक स्थिति कोन देशमे अहाँकेँ पटकि देने अछि ताहिपर सेहो। से मोरंग लग रहलोसँ भारतक मिथिलाञ्चलक वासीक लेल पछाति कम लोकप्रिय भेल कारण ओ दोसर देशमे अवस्थित भेलाक कारण विभिन्न कारणसँ पलायनक लेल अनुपयुक्त भऽ गेल। कोलकाता स्वतंत्रताक बाद निकटवर्त्ती मेट्रो नगर रहए से लोक ओहि नगरमे खूब पलायन केलन्हि मुदा जखन विभिन्न राजनैतिक आर्थिक नीतिक संकीर्णताक कारणसँ बंगालक उद्योग धंधा चौपट भऽ गेल, शैक्षिक केन्द्रक रूपमे ओकर महत्व कम भेल तखन पलायनक केन्द्र मुम्बइ आ दिल्ली भऽ गेल। बोनिहार आब भदोही आ मोरंग नञि वरन पंजाब हरियाणा आ पश्चिमी उत्तरप्रदेश जाइत छथि आ बनिजार बाहरसँ मिथिलामे भरि गेल छथि। दरभंगा राजक गलत आर्थिक नीतिक कारण आरा छपराक लोक सभ भूमि आ कामतक अधिपति कोना भऽ गेलाह से जगदीश प्रसाद मण्डल जीक साहित्यमे पूर्ण रूपसँ देखार भेल अछि। 1936-37मे बर्मासँ सेहो भोजपुर बक्सरक लोक पूर्णियाँ, अररियामे भागि कऽ एलाह, डुमराँवक हरि बाबू हिनका सभकेँ बर्मामे बसेने छलाह आ बर्माक भारतसँ अलग भेलाक बाद ई लोकनि शरणार्थी बनि एहि क्षेत्रमे आबि गेलाह। कतेको बर्मा टोल एहि क्षेत्र सभमे अहाँकेँ भेटि जाएत। एहि क्षेत्रमे कृषि वाणिज्यपर

हिनको सभक दखल भेलन्हि। मिथिलामे भेल पलायनमे 1971 ई. मे बांग्लादेशक निर्माणक लगाति ओतुक्का हिन्दूक किशनगंजमे आ बादमे ओतुक्का मुस्लिमक पूर्णियाँ किशनगंजमे आगमन भेल। बाहर भेल पलायनक विरूद्ध भीतर आएल ई पलायन मिथिलाक बोली वाणी सभ वस्तुकेँ प्रभावित कएलक। जाति धर्म आधारित विवाह मुस्लिम, राजपूत आ भूमिहार मध्य मिथिलाक भौगोलिक परिधिसँ बाहर हुअए लागल ताहिसँ सेहो बोली वाणीक अंतर दृष्टिगोचर भेल।

पलायन नीक आकि अधलाहः- पलायन जे बाहर जाइ वला आ भीतर आबै वला दुनू तरहक अछि कें अहाँ कोनो तरहेँ नहि रोकि सकै छी। मुदा एक खादी मध्य भेल ई विकट पलायन मूल मैथिल बोली वाणीक पलायन विकट समस्याकेँ जन्म देलक। भुखमरी जे वादि-अकाल आनलक, तकरासँ तँ मुक्ति भेटल मुदा सांस्कृतिक अकाल सेहो ई आनलक। गामपर बोझ घटल, लोककेँ बटाइ लेल जमीन नै भेटै छलै, आब से बै छै, मुदा तकर विपरीत मिथिलाक भीतर शैक्षिक केन्द्रक पूर्ण समापन भऽ गेल, बाहरी बनिजार एतुक्का आर्थिक बाजारपर कब्जा कऽ लेलन्हि। विशालकाय सड़क परियोजना, आ सूचना प्रौद्योगिकी, टेलीविजन, अखबार, पत्रिका आदि ततेक पूँजी केन्द्रित भऽ गेल जे ई स्थानीय वणिकक औकातिक बाहरक वस्तु भऽ गेल। क्षेत्रक राज्य सभा आ विधान परिषदमे जखन बाहरी पूँजीपति प्रवेश कऽ गेल छथि तखन आर कथूक चर्च की करी?

पलायनक निदानः- हा पलायन केने काज नै चलत। जेना इस्त्रायलक प्रवासी ओकर शक्ति सिद्ध भेल छथि तहिना मैथिल प्रवासी सेहो मिथिलाक लेल ओतुक्का भाषा संस्कृति साहित्य आ अर्थनीतिक लेल सहायक सिद्ध हेताह मिथिला राज्यक मांगमे बीचक स्थिति जेना बिहारक अंतर्गत मैथिली भाषी क्षेत्रमे प्राथमिक शिक्षाक माध्यम मैथिली हो, मैथिलीक रेडियो स्टेशन, टी.वी, चैनल लेल कम लाइसेंस फीस राखल जाए, इ मैथिली पत्र पत्रिकाकेँ सरकारी विज्ञापन भेटए आदि मांग आदि सेहो धोंसियेबाक चाही। राज्य जहिया भेटत तहिया भेटत उपरका 2-3 बिन्दु जे भेटि जाएत तँ एकटा उपलब्धि होएत आ लोकमे तखने जागृति आएत तखने ओ मिथिला राज्य एकर आर्थिक शैक्षिक राजनैतिक स्थितिपर ओ विचार कऽ सकताह आ आंदोलनक भाग बनि सकताह।

२

मिथिलाक धरती बाढ़िक विभीषिकासँ जुझैत रहल अछि। कुशेश्वरस्थान दिसुका क्षेत्र तँ बिन बाढ़िक, बरखाक समयमये डूमल रहैत अछि। मुदा ई स्थिति १९७८-७९ केर बादक छी। पहिने ओ क्षेत्र पूर्ण रूपसँ उपजाऊ

छल, मुदा भारतमे तटबन्धक अनियन्त्रित निर्माणक संग पानिक जमाव ओतए शुरू भए गेल। मुदा ओहि क्षेत्रक बाढ़िक कोनो समाचार कहियो नहि अबैत अछि, कहियो अबितो रहए तँ मात्र ई दुष्प्रचार जे ई सभटा पानि नेपालसँ छोड़ल गेल पानिक जमाव अछि। कुशेश्वरस्थान दिसुका लोक एहि नव संकटसँ लड़बाक कला सीखि गेलाह। हमरा मोन अछि ओ दृश्य जखन कुशेश्वरस्थानसँ महिषी उग्रतारास्थान जएबाक लेल हमरा बाढ़िक समयमे अएबाक लेल कहल गेल छल कारण ओहि समयमे नाओसँ गेनाइ सरल अछि, ई कहल गेल। रुख समयमे खत्ता-चभच्चामे नाओ नहि चलि पबैत अछि आ सड़कक हाल तँ पुछू जुनि। फसिलक स्वरूपमे परिवर्तन भेल, मत्स्य-पालन जेना तेना कऽ कए ई क्षेत्र जबरदस्तीक एकटा जीवन-कला सिखलक। कौशिकी महारानीक २००८ ई.क प्रकोप ओहि दुष्प्रचारकेँ खतम कए पाओत आकि नहि से नहि जानि ! पहिने हमरा सभ ई देखी जे कोशी आ गंडकपर जे दू टा बैराज नेपालमे अछि ओकर नियन्त्रण ककरा लग अछि। ई नियन्त्रण अछि बिहार सरकारक जल संसाधन विभागक लग आ एतए बिहार सरकारक अभियन्तागणक नियन्त्रण छन्हि। पानि छोड़बाक निर्णय बिहार सरकारक जल संसाधन विभागक हाथमे अछि। नेपालक हाथमे पानि छोड़बाक अधिकार तखन अएत जखन ओतुक्का आन धार पर बान्ह/ छहर बनत, मुदा से ५० सालसँ ऊपर भेलाक बादो दुनू देशक बीचमे कोनो सहमतिक अछैत सम्भव नहि भए सकल। किएक? सामयिक घटनाक्रम- कोशीपर भीमनगर बैरेज, कुशहा, नेपालमे अछि। १९५८ मे बनल एहि छहरक जीवन ३० बरख निर्धारित छल, जे १९८८ मे बीति गेल। दुनू देशक बीचमे कोनो सहमति किएक नहि बनि पाओल ? छहरक बीचमे जे रेत जमा भए जाइत अछि, तकरा सभ साल हटाओल जाइत अछि। कारण ई नहि कएलासँ ओकर बीचमे ऊंचाई बढ़ैत जएत, तखन सभ साल बान्हक ऊँचाई बढ़ाबए पड़त। एहि साल ई कार्य समयसँ किएक नहि शुरू भेल? फेर शुरू भेल बरखा, १८ अगस्तकेँ कोशी बान्हमे २ मीटर दरारि आबि गेल। १९८७ ई.क बाढ़ि हम आँखिसँ देखने छी। झंझारपुर बान्ह लग पानि झझा देलक, ओवरफ्लो भए गेल एक ठामसँ, आ आँखिक सोझाँ हम देखलहुँ जे कोना तकर बाद १ मीटरक कटाव किलोमीटरमे बदलि जाइत अछि। २७-२८ अगस्त २००८ धरि भीमनगर बैरेजक ई कटाव २ किलोमीटर भए चुकल छल। आ ई कारण भेल कोशीक अपन मुख्य धारसँ हटि कए एकटा नव धार पकड़बाक आ नेपालक मिथिलांचलक संग बिहारक मिथिलांचलकेँ तहस नहस करबाक। नासाक ८ अगस्त २००८ आ २४ अगस्त २००८ केर चित्र कौशिकीक नव आ पुरान धारक बीच २०० किलोमीटरक दूरी देखा रहल छल। भीमनगर बैरेज आब कोशीक एकटा सहायक धारक ऊपर बनल बैरेज बनि गेल रहए।

*राष्ट्रीय आपदा:* जाहि राज्यमे आपदा अबैत अछि, से केन्द्रसँ सहायताक आग्रह करैत अछि। केन्द्रीय मंत्रीक टीम ओहि राज्यक दौड़ा करैत अछि आ अपन रिपोर्ट दैत अछि जाहिपर केन्द्रीय मंत्रीक एकटा दोसर टीम निर्णय करैत अछि, आ ओ टीम निर्णय करैत अछि जे ई आपदा राष्ट्रीय आपदा अछि वा नहि। बिहारक

राजनीतिज्ञ अपन पचास सालक विफलता बिसरि जखन एक दोसराक ऊपर आक्षेपमे लागल छलाह, मनमोहन सिंह मंत्रीक प्रधानक रूपमे दौड़ा कए एकरा राष्ट्रीय आपदा घोषित कएलन्हि। कारण ई लेवल-३ केर आपदा अछि आ ई सम्बन्धित राज्यक लेल असगरे - नहि तँ वित्तक लिहाजसँ आ नहिए राहतक व्यवस्थाक सक्षमताक हिसाबसँ- पार पाएब संभव नहि अछि। आब राष्ट्रीय आकस्मिक आपदा कोषसँ सहायता देल जा रहल अछि, किसानक ऋण-माफी सेहो सम्भव अछि।

*उपाय की होअए ?* कुशेश्वर स्थानक आपदा सभ-साल अबैछ, से सभ ओकरा बिसरिए जेकाँ गेलाह। मुदा आब की होअए ? दामोदर घाटीक आ मयूरक्षी परियोजना जेकाँ कार्य कोशी, कमला, भुतही बलान, गंडक, बूढ़ी गंडक आ बागमतीपर किएक सम्भव नहि भेल ? विश्वेश्वरैय्याक वृन्दावन डैम किएक सफल अछि ? नेपाल सरकारपर दोषारोपण कए हमरा सभ कहिया धरि जनताकेँ ठकैत रहब ? एकर एकमात्र उपाए अछि बड़का यंत्रसँ कमला-बलान आदिक ऊपर जे माटिक बान्ह बान्हल गेल अछि तकरा तोड़ि कए हटाएब आ कच्चा नहरिक बदला पक्का नहरिक निर्माण। नेपाल सरकारसँ वार्ता आ त्वरित समाधन। आ जा धरि ई नहि होइत अछि तावत जे अल्पकालिक उपाय अछि से करब, जेना बरखा आबएसँ पहिने बान्हक बीचक रेतकेँ हटाएब, बरखाक अएबाक बाट तकबाक बदला किछु पहिनहि बान्हक मरम्मतिक कार्य करब, आ एहि सभमे राजनीतिक महत्वाकांक्षाकेँ दूर राखब। कोशीकेँ पुरान पथपर अनबाक हेतु कैकटा बान्ह बनाबए पड़त आ ओ सभ एकर समाधान कहिओ नहि बनि सकत।

कमला धार

नहरिसँ लाभ हानि- एक तँ कच्ची नहरि आ ताहूपर मूलभूत डिजाइनक समस्या, एकटा उदाहरण पर्याप्त होएत जेना-तेना बनाओल परियोजना सभक। कमलाक धारसँ निकालल पछबारी कातक मुख्य नहरि जयनगरसँ उमराँव- पूर्वसँ पछबारी दिशामे अछि। मुदा ओतए धरतीक ढ़लान उत्तरसँ दक्षिण दिशामे अछि। बरखाक समयमे एकर परिणाम की होएत आकि की होइत अछि ? ई बान्ह बनि जाइत अछि आ एकर उत्तरमे पानि थकमका जाइत अछि। सभ साल एहि नहर रूपी बान्हसँ पटौनी होअए वा नहि एकर उतरबरिया कातक फसिल निश्चित रूपेण डुमबे टा करैत अछि। फलना बाबूक जमीन नहरिमे नञि चलि जाए, से नहरिक दिशा बदलि देल जाइत अछि !

कमला नदीपर १९६० ई. मे जयनगरसँ झंझारपुर धरि छहरक निर्माण भेल आ एहिसँ सम्पूर्ण क्षेत्रक विनाशलीलाक प्रारम्भ सेहो भए गेल। झंझारपुरसँ आगाँक क्षेत्रक की हाल भेल से तँ हम कुशेश्वरक वर्णन कए दए चुकल छी। मधेपुर, घनश्यामपुर, सिंघिया एहि सभक खिस्सा कुशेश्वरसँ भिन्न नहि अछि। कमला-बलानक दुनू छहरक बीच जेना-जेना रेत भरैत गेल, ताहि कारणेँ एहि तटबन्धक निर्माणक बीस सालक भीतर सभ किछु तहस-नहस भए गेल। कमला धार जे बलानमे पिपराघाट लग १९५४ मे- मिलि गेलीह, हिमालयसँ बहि

कए कोनो पैघ लक्कड़क अवरोधक कारण। आब हाल ई अछि जे दस घण्टामे पानिक जलस्तर एहि धारमे २ मीटरसँ बेशी धरि बढ़ि जाइत अछि। १९६५ ई.सँ बान्ह/ छहरक बीचमे रेत एतेक भरि गेल जे एकर ऊँचाइ बढ़ेबाक आवश्यकता भए गेल आ ई माँग शुरू भए गेल जे बान्ह/ छहरकेँ तोड़ि देल जाए !

*कोशी:* कोशीक पानि माउन्ट एवेरेस्ट, कंचनजंघा आ गौरी-शंकर शिखर आ मकालू पर्वतश्रृंखलासँ अबैत अछि। नेपालमे सप्तकोशीमे, जाहिमे इन्द्रावती, सुनकोसी (भोट कोसी), तांबा कोसी, लिक्षु कोसी, दूध कोसी, अरुण कोसी आ तामर कोसी सम्मिलित अछि।

एहिमे इन्द्रावती, सुनकोसी, तांबा कोसी, लिक्षु कोसी आ दूध कोसी मिलि कए सुनकोसीक निर्माण करैत अछि आ ई मोटा-मोटी पच्छिमसँ पूर्व दिशामे बहैत अछि, एकर शाखा सभ मोटा-मोटी उत्तरसँ दक्षिण दिशामे बहैत अछि। ई पाँचू धार गौरी शंकर शिखर आ मकालू पर्वतश्रृंखलाक पानि अनैत अछि।

अरुणकोसी माउन्ट एवेरेस्ट (सगरमाथा) क्षेत्रसँ पानि ग्रहण करैत अछि। ई धार मोटा-मोटी उत्तर-दक्षिण दिशामे बहैत अछि।

तामर कोसी मोटा-मोटी पूबसँ पच्छिम दिशामे बहैत अछि आ अपन पानि कंचनजंघा पर्वत श्रृंखलासँ पबैत अछि।

आब ई तीनू शाखा सुनकोसी, अरुणकोसी आ तामरकोसी धनकुट्टा जिल्लाक त्रिवेणी स्थानपर मिलि सप्तकोसी बनि जाइत छथि। एतएसँ १० किलोमीटर बाद चतरा स्थान अबैत अछि जतए महाकोसी, सप्तकोसी वा कोसी मैदानी धरातलपर अबैत छथि। आब उत्तर दक्षिणमे चलैत प्रायः ५० किलोमीटर नेपालमे रहला उत्तर कोसी हनुमाननगर- भीमनगर लग भारतमे प्रवेश करैत छथि आ कनेक दक्षिण-पच्छिम रुखि केलाक बाद दक्षिण-पूर्व आ पच्छिम-पूर्व दिशा लैत अछि आ भारतमे लगभग १३० किमी. चललाक बाद कुरसेला लग गंगामे मिलि जाइत छथि। कोसीमे बागमती आ कमलाक धार सेहो सहरसा- दरभंगा- पूर्णिया जिलाक संगमपर मिलि जाइत अछि।

कोसीपर पहिल बान्ह १२म शताब्दीमे लक्ष्मण द्वितीय द्वारा बनाओल वीर-बाँध छल जकर अवशेष भीमनगरक दक्षिणमे एखनो अछि।

भीमनगर लग बैराजक निर्माणक संगे पूर्वी कोसी तटबन्ध सेहो बनि गेल आ पूर्वी कोसी नहरि सेहो। कुँअर सेन आयोग १९६६ ई. मे कोसी नियन्त्रणक लेल भीमनगरसँ २३ किमी. नीचाँ डगमारा बैराजक योजनाक प्रस्ताव देलक जे वाद-विवाद आ राजनीतिमे ओझरा गेल। एहि बैराजसँ दू फायदा छल। एक तँ भीमनगर बैरेजक जीवन-कालावधि समाप्त भेलापर ई बैरेज काज अबितए, दोसर एहिसँ उत्तर-प्रदेशसँ असम धरि जल परिवहन विकसित भऽ जाइत जाहिसँ उत्तर बिहारकेँ बड़ फाएदा होइतए। मुदा एहि बैरेज निर्माण

लेल पाइ आवंटन केन्द्रीय सिंचाई मंत्री डॉ के.एल.राव नहि देलखिन्ह। पश्चिमी कोसी नहरि एकर विकल्प रूपमे जेना तेना मन्थर गति सँ शुरू भेल मुदा एखनो धरि ओहिमे काज भइये रहल अछि।
कोसी लेल किछु नहि भऽ सकल। विचार आएल तँ योजना अस्वीकृत भए गेल। जतेक दिनमे कार्य पूरा हेबाक छल ततेक दिन विवाद होइत रहल, डगमारा बैराजक योजनाक बदलामे सस्ता योजनाकेँ स्वीकृति भेटल मुदा सेहो पूर्ण हेबाक बाटे ताकि रहल अछि !
*विश्वेश्वरैय्या पड़ैत छथि मोन :* हैदराबादसँ ८२ माइल दूर मूसी आ ईसी धारपर बान्ह बनाओल गेल आ नगरसँ ६.५ माइलक दूरीपर मूसी धारक उपधारा बनाओल गेल। संगहि धारक दुनू दिस नगरमे तटबन्ध बनाओल गेल। कृष्णराज सागर बान्ह, हुनकर प्रस्तावित १३० फुट ऊँच बनेबाक योजना मैसूर राज्य द्वारा अंग्रेजकेँ पठाओल गेल तँ वायसराय हार्डिंज ओकरा घटा कए ८० फीट कए देलन्हि। विश्वेश्वरैय्या निचुलका भागक चौड़ाई बढ़ा कए ई कमी पूरा कए लेलन्हि। बीचेमे बाढ़ि आबि गेल तँ अतिरिक्त मजदूर लगा कए आ मलेरियाग्रस्त आ आन रोगग्रस्त मजदूरक इलाज लए डॉक्टर बहाली कए, रातिमे वाशिंगटन लैम्प लगा कए आ व्यक्तिगत निगरानी द्वारा समयक क्षतिपूर्ति केलन्हि। देशभक्त तेहन छलाह जे सीमेन्ट आयात नहि केलन्हि वरन् बालु, कैल्सियम, पाथर आ पाकल ईटाक बुकनी मिला कए निर्मित सुरखीसँ , एहि बान्हक निर्माण कएलन्हि। बान्ह निर्माणसँ पहिनहि द्विस्तरीय नहरिक निर्माण कए लेल गेल।
*दिल्ली अछि दूर एखनो ! :* प्रधानमंत्री आपदा कोष आ मुख्यमंत्री आपदा कोषक अतिरिक्त स्वयंसेवी संगठन सभक कोषमे सेहो दिल्लीवासी अपन अनुदान दए सकैत छथि।
मुदा दीर्घ सूत्री काज होएत, निम्न बिन्दुपर दिल्लीमे केन्द्र सरकारपर दवाब बनाएब।
१. स्कूल कॉलेजमे गर्मी तातिलक बदलामे बाढ़िक समए छुट्टी देबामे कोन हर्ज अछि, ई निर्णय कोन तरहेँ कठिन अछि? सी.बी एस.ई आ आइ.सी.एस.ई. तँ छोड़ू बिहार बोर्ड धरि ई नहि कए सकल अछि। दिल्लीवासी सी.बी एस.ई आ आइ.सी.एस.ई.सँ एहि तरहक कार्यान्वयन कराबथि तँ लाजे बिहार बोर्ड ओकरा लागू कए देत।
२. भारतमे डगमारा बैराजक योजनाक प्रारम्भ कएल जाए, कारण भीमनगर बैरेज अपन जीवन-कालावधि पूर्ण कए लेने अछि। एहिमे फन्ड, रेलवे आ सड़क दुनू मंत्रालयसँ लेल जाए कारण एहिपर रेल आ सड़क सेहो बनि सकैछ/ आ बनबाक चाही।
३. बैरेज बनबाक कालवधियेमे पक्की नहरि धरातलक स्लोपक अनुसारे बनाओल जाए।
४. कच्ची बान्ह सभकेँ तोड़ि कए हटा देल जाए आ पक्की बान्हकेँ मोटोरेबल बनाओल जाए, बान्हक दुनू कात पर्याप्त गाछ-वृक्ष लगाओल जाए।

५. बिहारमे सड़क परियोजना जेना स्वप्नक सत्य होअए जेना देखा पड़ि रहल अछि, तहिना सभ विघ्न-बाधा हटा कए, युद्ध-स्तरपर एहि सभपर काज शुरू कएल जाए।
उपरोक्त बिन्दु सभपर दिल्लीमे लॉबी बना कए केन्द्र सरकारपर/ मंत्रालयपर दवाब बनाएब तखने बिहार अपन नव छवि बना सकत। १२म शताब्दीमे शुरू कएल बान्ह तखने पूर्ण होएत आ धारसभ मनुक्खक सेविका बनि सकत।

३

सर्वहारा मैथिल संस्कृति एकटा विप्लवक दौरसँ चलि रहल अछि। माइग्रेशन एकटा नीक गप होइत अछि मुदा जाहि संस्कृतिमे एक पीढ़ीमे गामक गाम सुन्न भऽ गेल ओहिमे माइग्रेशन एकटा अभिशाप बनि आएल अछि। मैथिल संस्कृतिक बीस प्रतिशत भाग नेपालमे आ अस्सी प्रतिशत भाग भारतमे पड़ैत अछि। आ एहि माइग्रेसनसँ एतए आर्थिक, सामाजिक, राजनैतिक आ सांस्कृतिक संकट उत्पन्न भऽ गेल अछि।
कारण: १९६७ ई. क अकाल आ तकर बादक कएक सालक शिथिल प्रशासन आ फेर १९८७ ई.क बाढ़ि आ तकर बादक कएक सालक शिथिल प्रशासन ई सभ मिलि कऽ एकटा आर्थिक संकट उत्पन्न कएल जाहिसँ माइग्रेशन अपन विकट रूपमे सोझाँ आएल आ एकटा सांस्कृतिक संकट उत्पन्न भेल। आर्थिक स्थिति खराप भेने जातिगत कट्टरता बढ़िते अछि।आ एहि संकट लेल आ एकरासँ निकलबाक लेल मिथिलाक संस्कृतिमे बहुत रास सहायक आ विरोधी तत्व सेहो उपलब्ध अछि। एतुक्का भाषाक कोमल आरोह-अवरोह, एतुक्का सर्वहारा वर्गक सर्वगुणसंपन्नता, संगहि एतुक्का रहन-सहन आ संस्कृतिक कट्टरता, ई सभटा मिथिलाक इतिहासक अंग अछि। एहिमे राजनीति, दिनचर्या, सामाजिक मान्यता, आर्थिक स्थिति, नैतिकता, धर्म, दर्शन आ साहित्य सेहो सम्मिलित अछि । एतए विद्यापति सन लोक भेलाह जे समाजक विभिन्न वर्गकेँ समेटि कऽ राखलन्हि तँ संगहि एतए कट्टर तत्व सेहो रहल।
शिक्षा, जाति-पाति आ स्त्रीक दशा: जातिक भीतरक स्तरीकरण, दू जातिक बीचमे मतभेद, बहु-विवाह, बाल-विवाह, बिकौआ विवाह। बाल-विवाहक विरोध आ विधवा विवाहक पक्षमे कोनो सांकेतिक आन्दोलन धरि नहि भेल। शूद्र कवि ऐलूष वैदिक ऋचा लिखलन्हि तँ ओ समाज एतेक सुदृढ़ छल जे शुद्रक गण द्वारा एलेक्जेन्डरकेँ कड़गर विरोध सहए पड़लैक। मिथिलाक सन्दर्भमे सेहो जखन अपन शिल्पी लोकनि आ सभटा तथाकथित समाजक निम्न स्तरक लोक जखन सुदृढ़ छल तखन जनकक नामकरण जन सँ भेल आ फेर सिमरौनागढ़, पजेबागढ़, बलिराजपुर किला, असुरगढ़ किला, जयनगर किला, नन्दनगढ़, कटरागढ़, नौलागढ़, मंगलगढ़, कीचकगढ़, बेनूगढ़, वरिजनगढ़, आदिक एकटा शृंखला मिथिलाक स्थापत्य कलाक रूपमे उद्घाटित भेल। आ ई किला सभ शत्रुकेँ मथए बला मिथिलाक नामकरणक अनुरूप रहल। बौद्ध खोह, ताराक मूर्ति

आदि शिल्पी कलाक अन्य रूपक चर्चक रूपमे सेहो उपस्थित अछि। मुदा जे ई कट्टरता बढ़ैत गेल तँ आइ मिथिलामे स्थापत्यक नामपर उपलब्धि सेहो शून्य भऽ गेल। आर्थिक स्थिति एहन भऽ गेल जे एक साँझ उपास रहए लागल। माइग्रेशन भुखमरी रोकलक मुदा किछु मूल्यपर। तहिना मैत्रेयीसन विदुषी सहस्त्राब्दी भरि विलुप्त रहलीह से जातिगत कट्टरता (जाति मध्य आन्तरिक अतरीकरण आ दू जाति मध्य- दुनु प्रकारक) कारणसँ। शिक्षाक ह्रास तँ तेहेन भेल जे षड दर्शनमे चारि टा दर्शन मिथिलासँ निकलल मुदा आइ गामक गाम मैट्रिक परीक्षामे पास नहि केनिहारसँ भरल अछि।

बाढ़ि आ अर्थव्यवस्था: मिथिलाक धरती बाढ़िक विभीषिकासँ सेहो जुझैत रहल अछि। कुशेश्वरस्थान दिसुका क्षेत्र तँ बिन बाढ़िक, बरखाक समयमये डूमल रहैत अछि। मुदा ई स्थिति १९७८-७९ क बादक छी। पहिने ओ क्षेत्र पूर्ण रूपसँ उपजाऊ छल, मुदा भारतमे तटबन्धक अनियन्त्रित निर्माणक संग पानिक जमाव ओतए शुरू भऽ गेल। मुदा ओहि क्षेत्रक बाढ़िक कोनो समाचार कहियो नहि अबैत अछि, कहियो अबितो रहए तँ मात्र ई दुष्प्रचार जे ई सभटा पानि नेपालसँ छोड़ल गेल पानिक जमाव अछि। कुशेश्वरस्थान दिसुका लोक एहि नव संकटसँ लड़बाक कला सीखि गेलाह। हमरा मोन अछि ओ दृश्य जखन कुशेश्वरस्थानसँ महिषी उग्रतारास्थान जएबाक लेल हमरा बाढ़िक समयमे अएबाक लेल कहल गेल छल कारण ओहि समयमे नाओसँ गेनाइ सरल अछि, ई कहल गेल। रुख समयमे खत्ता-चभच्चामे नाओ नहि चलि पबैत अछि आ सड़कक हाल तँ पुछू जुनि। फसिलक स्वरूपमे परिवर्तन भेल, मत्स्य-पालन जेना तेना कऽ कए ई क्षेत्र जबरदस्तीक एकटा जीवन-कला सिखलक। कौशिकी महारानीक २००८ ई.क प्रकोप सोझाँ आएल। कोशी आ गंडकपर जे दू टा बैराज नेपालमे अछि ओकर नियन्त्रण बिहार सरकारक जल संसाधन विभागक लग अछि आ एतए बिहार सरकारक अभियन्तागणक नियन्त्रण छन्हि। पानि छोड़बाक निर्णय बिहार सरकारक जल संसाधन विभागक हाथमे अछि। नेपालक हाथमे पानि छोड़बाक अधिकार तखन अएत जखन ओतुक्का आन धार पर बान्ह/ छहर बनत, मुदा से ५० सालसँ ऊपर भेलाक बादो दुनू देशक बीचमे कोनो सहमतिक अछैत सम्भव नहि भए सकल। कोशीपर भीमनगर बैरेज कुशहा, नेपालमे अछि। १९५८ मे बनल एहि छहरक जीवन ३० बरख निर्धारित छल, जे १९८८ मे बीति गेल। दुनू देशक बीचमे कोनो सहमति किएक नहि बनि पाओल ? छहरक बीचमे जे रेत जमा भऽ जाइत अछि, तकरा सभ साल हटाओल जाइत अछि। कारण ई नहि कएलासँ ओकर बीचमे ऊंचाई बढ़ैत जाएत, तखन सभ साल बान्हक ऊँचाई बढ़ाबए पड़त। कोशी अपन मुख्य धारसँ हटि कए एकटा नव धार पकड़ैत अछि आ नेपालक मिथिलांचलक संग बिहारक मिथिलांचलकेँ तहस नहस करैत अछि।

मैथिली भाषा: मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थक आधारपर मैथिली सेवी संस्था सभ जे विद्यापति पर्व आ संस्थाक निर्माण, पुरस्कार वितरण कए रहल छथि ओहिमे गएर मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थक प्रवेश

सीमित अछि मुदा एम्हर ओ बढ़ि रहल अछि। आ ई मैथिलीक लेल एकटा शुभ लक्षण अछि। साहित्यमे सेहो गएर मैथिल ब्राह्मण आ कर्ण कायस्थ लेखक आ पाठक बढ़ल छथि। मीडिया आ शिक्षा व्यवस्था एहि आधुनिक इन्फॉरमेशन सोसाइटीमे अपन हस्तक्षेपसँ मैथिली भाषा आ मैथिल संस्कृति लेल एकटा प्रहार सन अछि मुदा सौभाग्य मिथिला सन टी.वी. चैनल आ नेपालक कान्तिपुर एफ.एम., जानकी एफ.एम. आ रेडियो मिथिला सन रेडियो स्टेशन एहि प्रहारकेँ सीमित रूपमे रोकलक अछि। बाल साहित्यक निर्माण सेहो बढ़ल अछि। अन्तर्जाल सेहो एकभगाह मैथिली साहित्यमे हस्तक्षेप कएलक अछि।
उपाय की होअए ? स्थानिक विशेषताक आधारपर स्त्री-शिक्षा, संगणक शिक्षा आ व्यवसाय आधारित शिक्षा देल जाए। प्राथमिक शिक्षाक माध्यम मिथिला भरिमे मैथिली भाषा द्वारा देल जाए। बाढिक समस्याक समाधान होअए। दामोदर घाटीक आ मयूरक्षी परियोजना जेकाँ कार्य कोशी, कमला, भुतही बलान, गंडक, बूढ़ी गंडक आ बागमतीपर किएक सम्भव नहि भेल ? विश्वेश्वरैय्याक वृन्दावन डैम किएक सफल अछि ? नेपाल सरकारपर दोषारोपण कए हमरा सभ कहिया धरि जनताकेँ ठकैत रहब ? एकर एकमात्र उपाए अछि बड़का यंत्रसँ कमला-बलान आदिक ऊपर जे माटिक बान्ह बान्हल गेल अछि तकरा तोड़ि कए हटाएब आ कच्चा नहरिक बदला पक्का नहरिक निर्माण। नेपाल सरकारसँ वार्ता आ त्वरित समाधन। आ जा धरि ई नहि होइत अछि तावत जे अल्पकालिक उपाय अछि से करब, जेना बरखा आबएसँ पहिने बान्हक बीचक रेतकेँ हटाएब, बरखाक अएबाक बाट तकबाक बदला किछु पहिनहि बान्हक मरम्मतिक कार्य करब, आ एहि सभमे राजनीतिक महत्वाकांक्षाकेँ दूर राखब। कमला नदीपर १९६० ई. मे जयनगरसँ झंझारपुर धरि छहरक निर्माण भेल आ एहिसँ सम्पूर्ण क्षेत्रक विनाशलीलाक प्रारम्भ सेहो भए गेल। झंझारपुरसँ आगाँक क्षेत्रक की हाल भेल से तँ हम कुशेश्वरक वर्णन कए दए चुकल छी। मधेपुर, घनश्यामपुर, सिंघिया एहि सभक खिस्सा कुशेश्वरसँ भिन्न नहि अछि। कमला-बलानक दुनू छहरक बीच जेना-जेना रेत भरैत गेल, ताहि कारणेँ एहि तटबन्धक निर्माणक बीस सालक भीतर सभ किछु तहस-नहस भऽ गेल। कमला धारक हाल ई अछि जे दस घण्टामे पानिक जलस्तर एहि धारमे २ मीटरसँ बेशी धरि बढ़ि जाइत अछि। १९६५ ई.सँ बान्ह/ छहरक बीचमे रेत एतेक भरि गेल जे एकर ऊँचाइ बढ़ेबाक आवश्यकता भए गेल आ ई माँग शुरू भए गेल जे बान्ह/ छहरकेँ तोड़ि देल जाए ! एतए विश्वेश्वरैय्या मोन पड़ैत छथि। हैदराबादसँ ८२ माइल दूर मूसी आ ईसी धारपर बान्ह बनाओल गेल आ नगरसँ ६.५ माइलक दूरीपर मूसी धारक उपधारा बनाओल गेल। संगहि धारक दुनू दिस नगरमे तटबन्ध बनाओल गेल। कृष्णराज सागर बान्ह, हुनकर प्रस्तावित १३० फुट ऊँच बनेबाक योजना मैसूर राज्य द्वारा अंग्रेजकेँ पठाओल गेल तँ वायसराय हार्डिंज ओकरा घटा कए ८० फीट कए देलन्हि। विश्वेश्वरैय्या निचुलका भागक चौड़ाई बढ़ा कए ई कमी पूरा कए लेलन्हि। बीचेमे बाढ़ि आबि गेल तँ अतिरिक्त मजदूर लगा कए आ मलेरियाग्रस्त आ आन रोगग्रस्त मजदूरक इलाज लए डॉक्टर बहाली कए, रातिमे वाशिंगटन लैम्प लगा कए आ

व्यक्तिगत निगरानी द्वारा समयक क्षतिपूर्ति केलन्हि। देशभक्त तेहन छलाह जे सीमेन्ट आयात नहि केलन्हि वरन् बालु, कैल्सियम, पाथर आ पाकल ईटाक बुकनी मिला कए निर्मित सुरखीसँ , एहि बान्हक निर्माण कएलन्हि। बान्ह निर्माणसँ पहिनहि द्विस्तरीय नहरिक निर्माण कए लेल गेल।
दिल्ली अछि दूर एखनो ! निम्न बिन्दुपर दिल्लीमे केन्द्र सरकारपर दवाब बनाएब। स्कूल कॉलेजमे गर्मी तातिलक बदलामे बाढ़िक समए छुट्टी देबामे कोन हर्ज अछि, ई निर्णय कोन तरहेँ कठिन अछि? सी.बी एस.ई आ आइ.सी.एस.ई. तँ छोड़ू बिहार बोर्ड धरि ई नहि कए सकल अछि। स्थानिक विशेषताक आधारपर स्त्री-शिक्षा, संगणक शिक्षा आ व्यवसाय आधारित शिक्षा आ प्राथमिक शिक्षाक माध्यम मिथिला भरिमे मैथिली भाषा द्वारा देल जाए। बैरेज बनबाक कालवधियेमे पक्की नहरि धरातलक स्लोपक अनुसारे बनाओल जाए। कच्ची बान्ह सभकेँ तोड़ि कए हटा देल जाए आ पक्की बान्हकेँ मोटोरेबल बनाओल जाए, बान्हक दुनू कात पर्याप्त गाछ-वृक्ष लगाओल जाए। बिहारमे सड़क परियोजना जेना स्वप्नक सत्य होअए जेना देखा पड़ि रहल अछि, तहिना सभ विघ्न-बाधा हटा कए, युद्ध-स्तरपर एहि सभपर काज शुरू कएल जाए।

४

विदेशी पूँजीक भारतमे सोझ निवेश दोसर देशक फर्मसँ मिलि कऽ वा ओकर सम्पत्ति वा ओकर स्टॉक कीनि कऽ होइत अछि। ओ ऐ लेल स्वॉट अनेलिसिस करै छथि आ अपन प्रवेशक लेल अपन कम दाममे उत्पादन आ सेहो तीव्र गतिसँ कएक तरहक उपाय द्वारा करबाक क्षमताकेँ देखैत करै छथि। कोन देशमे विदेशी पूँजी निवेश होएत से किछु गपपर निर्भर करैत अछि। चीनमे भारतक बनिस्पत बेशी विदेशी पूँजी आओत कारण भारतमे कार्य करबा लेल ढेर रास लोकतंत्रीय प्रक्रिया सभ छै जे उत्पाद केर दाम बढ़बैत छै। ई एना बूझि सकै छी जापान आ स्विटजरलैण्ड आदि देशमे विदेशी पूँजी कम आएल बनिस्पत स्पेनक। आ ऐ तरहेँ तुलना करी तँ नेपालमे भारतक अपेक्षा तुलनात्मक पूँजी निवेश बेशी आओत। मैथिली आ आन भाषामे विदेशी पूँजी निवेशक आगमनक सम्भावना देखी तँ तुलनात्मक रूपमे मैथिलीमे बेशी पूँजी आओत, नेपाली वा हिन्दीक तुलनामे। आ मैथिलीक सन्दर्भमे नेपालक मैथिलीक भविष्य भारतक मैथिलीक भविष्यक तुलनामे बेशी नीक बूझि पड़त जँ विदेशी पूँजीक गप आओत।

मुदा विदेशी पूँजी मात्र प्रबन्धन वा अर्थशास्त्रक उपरोक्त सैद्धांतिक प्रतिफल टा नै अछि। एतए हम राजनैतिक स्थिरता आ सामाजिक संकट दुनूकेँ सोझाँ पबै छी। भारतक भयंकर लाइसेंस फीस जेना सूचना आ प्रौद्योगिकीक क्षेत्रमे मैथिलीक दुर्दशाक लेल जिम्मेद्दारी लेलक से नेपालमे नै अछि। से ओतए रेडियो आ टी.वी.पर मैथिली नीक दशामे अछि। मुदा राजनैतिक अस्थिरता कखनो काल नेपालमे पूँजी निवेशमे बाधक

भऽ जाइए। तहिना नेपालक मैथिलीक सामाजिक आधार विस्तृत अछि मुदा भारतक तेहन नै अछि। से भारतमे मैथिलीक लेल पूँजी निवेशक ई ऋणात्मक गुणक अछि।
जेना ऊपर कहने छी जे कोनो विदेशी पूँजी निवेश होएत तँ पाइ लगेनहार पहिने स्वॉट एनेलिसिस करत।
मैथिलीक सन्दर्भमे स्वॉट एनेलिसिस:-
मैथिलीक स्वॉट Strenghth- Weakness- Opportunity- Threat (SWOT) एनेलेसिस (हमर गुरुजी चमू कृष्ण शास्त्री जीक ऐमे बड़ पैघ योगदान छन्हि।)

मैनेजमेन्टमे एकटा विषए छैक स्वॉट अनेलिसिस। मैथिलीकेँ ऐ कसौटीपर कसै छी।

S- Strenghth- शक्ति, सामर्थ्य, बल
मैथिली लेल हृदएमे अग्नि छन्हि, से सभक हृदएमे, परस्पर एक दोसराक विरोधी किएक ने होथु। जनक बीचमे ऐ भाषाक आरोह, अवरोह आ भाषिक वैशिट्यकेँ लऽ कऽ आदर अछि आ ऐ मे मैथिली नै बजनिहार भाषाविद् सम्मिलित छथि। आध्यात्मिक आ सांस्कृतिक महत्वक कारण सेहो मैथिली महत्वपूर्ण अछि। ऐ भाषामे एकटा आन्तरिक शक्ति छै। बहुत रास संस्था, जइमे किछु जातिवादी आ सांप्रदायिक संस्था सेहो सम्मिलित अछि, एकर विकास लेल तत्पर अछि। ऐ भाषाक जननिहार भारत आ नेपाल दू देशमे तँ रहिते छथि आब आन-आन देश-प्रदेशमे सेहो पसरल छथि।

W- Weakness- न्यूनता, दुर्बलता, मूर्खता
प्रशंसा परम्परा जइमे दोसराक निन्दा सेहो ऐमे सम्मिलित अछि, एकरे अन्तर्गत अबैत अछि- माने आत्मप्रशंसाक।
परस्पर प्रशंसा सेहो ऐमे शामिल अछि। सरकारपर आलम्बन, प्राथमिकताक अज्ञान- जकर कारणसँ महाकवि बनबा/ बनेबा लेल कवि समीक्षक जान अरोपने छथि- जखन भाषा मरि रहल अछि। कार्ययोजनाक स्पष्ट अभाव अछि आ जेना-तेना किछु मैथिली लेल कऽ देबा लेल सभ व्यग्र छथि, कऽ रहल छथि। स्वयं मैथिली नै बाजि बाल-बच्चाकेँ मैथिलीसँ दूर रखबाक जेना अभियान चलल अछि आ ऐमे मीडिया, कार्टून आ शिक्षा-प्रणालीक संग एक्के खाढ़ीमे भेल अत्यधिक प्रवास अपन योगदान देलक अछि। मैथिलीक कार्यकर्ता लोकनिक कएक ध्रुवमे बँटल रहबाक कारण समर्थनपरक लॉबिइंग कर्ताक अभाव अछि। मैथिलीकेँ ऐमे की लाभक बदला अपन/ अप्पन लोकक की लाभ ऐ लेल लोक बेशी चिन्तित छथि। मैथिली छात्रक संख्याक अभाव। उत्पाद उत्तम रहला उत्तर सेहो विक्रयकौशलक आवश्यकता होइत छै। मैथिलीमे उत्तम उत्पादक अभाव तँ

अछिए, विक्रयकौशलक सेहो अभाव अछि।

O- Opportunity- अवसर, योग, अवकाश

विशिष्ट विषयक लेखनक अभाव, मात्र कथा-कविताक सम्बल। मैथिलीमे चित्र-शृंखला, चित्रकथा, विज्ञान, समाज विज्ञान, आध्यात्म, भौतिक, रसायन, जीव, स्वास्थ्य आदिक पोथीक अभाव अछि। ताड़ग्रन्थक संगणकक उपयोग कऽ प्रकाशन नै भऽ रहल अछि। छात्र शक्तिक प्रयोग न्यून अछि। संध्या विद्यालय आ चित्रकला-संगीतक माध्यमसँ शिक्षा नै देल जा रहल अछि। दूरस्थ शिक्षाक माध्यमसँ/ अन्तर्जालक माध्यमसँ मैथिलीक पढ़ाइक अत्यधिक आवश्यकता अछि। मैथिलीमे अनुवाद आ वर्तमान विषय सभपर पुस्तक लेखन आ अप्रकाशित ताड़ ग्रन्थ सभक प्रकाशनक आवश्यकता अछि। मैथिलीक माध्यमसँ प्रारम्भिक शिक्षाक आवश्यकता अछि। प्रवासी मैथिल लेल भाषा पाठन-लेखन-सम्पादन पाठ्यक्रमक आवश्यकता अछि।

T- Threat- भीषिका, समभाव्यविपद्

हताशा, आत्महीनता, शिक्षासँ निष्कासन, पारम्परिक पाठशालामे शिक्षाक माध्यमक रूपमे मैथिलीक अभाव, विरल शास्त्रज्ञ, ताड़पत्रक उपेक्षा आ विदेशमे बिक्री, भाषा शैथिल्य, सांस्कृतिक प्रदूषण आ परिणामस्वरूप भाषा प्रदूषण, मुख्यधारासँ दूर भेनाइ आ मात्र दू जातिक भाषा भेनाइ, शिक्षक मध्य ज्ञान स्तरक ह्रास, राजनैतिक स्वार्थवश मैथिलीक विरोध ई सभ विपदा हमरा सभक सोझाँ अछि।

ई सभटा ऊपरवर्णित बिन्दु प्रबन्धन-विज्ञानक कार्ययोजनाक विषय अछि आ भाषणक नै कार्यक आवश्यकता अछि। सम्भाषण, मैथिली माध्यमसँ पाठन, नव सर्वांगीन साहित्यक निर्माण लेल सभकेँ एकमुखी, एक स्तरीय आ एक यत्नसँ प्रयास करए पड़त। धनक अभाव तखने होइत अछि जखन सरकारी सहायतापर आस लगेने रहब। सार्वजनिक सहायताक अवलम्ब धरू, दाताक अभाव नै स्वीकारकर्ताक अभाव अछि।

यूनेस्को कहैत अछि जे भारत विश्वक ६ठम सभसँ पैघ पुस्तक प्रकाशक अछि जतए अंग्रेजी लगा कऽ २५ मान्यताप्राप्त भाषामे पोथी प्रकाशन होइ छै। अंग्रेजीक पोथी प्रकाशनमे भारत संयुक्त राज्य अमेरिका आ ग्रेट ब्रिटेनक बाद तेसर स्थानपर अछि। मुदा चौबीस मुख्य भाषामे सँ यूनेस्कोक अनुसार पुस्तक प्रकाशन लेल मात्र १८ भाषा महत्वपूर्ण अछि आ ऐ १८ भाषामे मैथिली नै अछि। मैथिली ऐ १८ मे नै अछि। फेडरेशन ऑफ इण्डियन पब्लिशर्सक अनुसार मोटामोटी भारतमे १६००० प्रकाशक छथि जे सालमे ७०००० पोथी प्रकाशित करै छथि। ऐमे २१,००० पोथी अंग्रेजीमे छपैए आ तहूसँ बेशी पोथी हिन्दीमे छपैए। भारतमे

साक्षरताक स्थिति जेना-जेना नीक हेतै, तेना-तेना पोथी पढ़ैबलाक संख्यामे सेहो वृद्धि हेतैक। नेपालमे मुख्यतः नेपालीक पोथी छापल जाइत अछि। भारत आ नेपाल दुनू ठाम मैथिली पोथीक प्रकाशन गुण आ संख्या दुनूमे पछुआएल अछि।

सरकारी संस्थाक संग विदेशी निवेशकक सहयोग: आब प्रकाशन उद्योगसँ आगाँ बढ़ी आ सूचना-प्रसार माध्यमक आन क्षेत्र जेना टी.वी., रेडियो आ ऑनलाइन भाषाइ उपकरणपर आउ। एतऽ विदेशी निवेशक हमरा सभ लेल डॉक्यूमेन्टरी, मनोरंजन आ भाषाइ उपकरणक निर्माणमे सहयोग दऽ सकै छथि। सरकार मान्यताप्राप्त भाषा लेल बिना बजारकेँ ध्यानमे रखने खास कऽ मैथिली सहित ओइ छह भाषाकेँ ध्यानमे राखैत काज करए तँ बजारक दृष्टिसँ जे सांस्कृतिक ह्रास सूचना-प्रौद्योगिकी मध्य देखबामे आबि रहल अछि से मैथिलीमे नै आओत। अरबी भाषाकेँ फंडक कोनो कमी नै छै मुदा ओ भाष किए मरि रहल अछि, जखन ओकरा पक्षमे सरकारी कामकाज छै, मस्जिद छै, शिक्षा पद्धति छै। लेबनान, जोर्डन आ इजिप्टक अतिरिक्त सउदी अरब आ आन गल्फ देशक एकरा संरक्षण छै। मुदा पाइ एकरा लेल आफत बनल छै। सभ शेख विदेशसँ पढ़ि कऽ अबैत छथि आ मिश्रित अरबी बजै छथि आ तकरा फैशन मानल जा रहल छै। जै अरबीमे कुराण लिखल गेल आ आइ काल्हिक शैक्षिक "आधुनिक मानकीकृत अरबी- मॉडर्न स्टैण्डर्ड अरेबिक- (एम.एस.ए.)" मे बड्ड पैघ भेद आबि गेल छै। ई "आधुनिक मानकीकृत अरबी" बाजै जाए बला अरबीसँ फराक भऽ गेल अछि आ एकर काज मात्र सभ अरब देशक बीच सूत्रबद्ध करबा धरि सीमित भऽ गेल छै, जइसँ सभ एक दोसराकेँ बुझि पाबए। मुदा यएह "आधुनिक मानकीकृत अरबी" दृश्य-श्रव्य-प्रिंटमे अछि जे ककरो मातृभाष नै छिऐ वरन व्याकरण पढ़ि कऽ सीखल जाइ छै। विदेशी निवेशककेँ जे सरकार मैथिली लेल मनोरंजक कार्यक्रमकेँ मैथिलीमे डब करबाक लेल सहायता करए तँ कार्टून चैनल सभक कार्यक्रम आ धारावाहिक सभ मैथिलीमे प्रसारित भऽ सकत भने ओकरा विज्ञापन भेटौ वा नै। आ एक बेर जे ई पहिया घुमत तँ मैथिली जीबि उठत। आ ई पहिया तखने घुमत जखन मधुबनी-दरभंगा-सहरसा-सुपौलक ब्राह्मण-कायस्थ-सवर्ण मैथिलीकेँ जीबि उठऽ देताह, अपन ऋणात्मक ऊर्जाकेँ विराम देताह, समाजक सभ वर्ग जे मैथिलीसँ जुड़ि रहल अछि ओइमे बाधा देबाक बदला सहयोग करताह। समाजक राक्षसी प्रतिभायुक्त ई सर्वहारा वर्ग मैथिलीक रक्षा लेल समर्पित हसेरी बनत तखने ई भाषा आब बचत।

मुख्य विदेशी निवेशक: अखन धरि हार्पर कॉलिन्स, पेंगुइन, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस, मैकमिलन, रैंडम हाउस, पिकाडोर, हैचेट आ रुटलेज हावर्ड बिजनेस पब्लिशिंग अपन शाखा वा भारतीय सहयोगीक माध्यमसँ भाषायी क्षेत्रमे निवेश केने अछि। मुदा से निवेश अंग्रेजी धरि सीमित भऽ गेल अछि। भारतमे प्रकाशन उद्योगमे विदेशी खिलाड़ी अएलाक बाद एकटा पेंगुइन हिन्दीकेँ छोड़ि देल जाए तँ विदेशी निवेश भारतीय भाषामे लगभग नगण्य अछि। एकर कारण सेहो स्पष्ट अछि। भारतीय भाषाक प्रकाशक सरकारी खरीदपर निर्भर



ISSN 2229-547X VIDEHA

छथि आ गएर सरकारी खरीदमे ओ टेक्स्टबुक छपाइपर जोर दै छथि। विदेशी निवेशक सरकारी खरीद आ टेक्स्टबुक छपाइक आधारपर अपन नीति निर्धारित नै करै छथि। मैथिलीक लेल ई वरदान होइतए मुदा जे भविष्यक साक्षरता वृद्धिक अनुमान लैयो कऽ चली तँ नव साक्षर मैथिली पढ़ताह तकर आशा वर्तमान शिक्षा प्रणालीमे मैथिलीक कतिआएल स्थितिकेँ देखैत असम्भवे बुझा पड़ैत अछि, आ मैथिलीमे ने सरकारी लाइब्रेरीक खरीदक आशा छै आ ने टेक्स्ट बुक छपाइक। पाठकक संख्या तखन इन्टरनेटपर बढ़ाबए पड़त, आ जे पाठक कहियो सरकारी शिक्षा प्रणालीमे मैथिली नै पढ़ि सकल छथि तिनका प्रारम्भमे मंगनीमे डाउनलोडक सुविधा देबऽ पड़त। मैथिलीसँ अंग्रेजी आ संस्कृत आ तकर माध्यमसँ आन भाषामे अनुवाद द्वारा सरकारी आ संस्थागत पुरस्कार पद्धति द्वारा कतिआएल पोथी सभकेँ सोझाँ आनए पड़त जइसँ मैथिली साहित्यक उत्कृष्टता विदेशी निवेशकक सोझाँ आबए। आ ओम्हर सरकारी स्कूलक अतिरिक्त पब्लिक स्कूल सभमे सेहो मैथिलीक पढाइ हुअए तइ लेल समर्पित हसेरी तैयार करए पड़त। एक दोसरापर प्रत्यारोप लगेलाक बदला (कायस्थ आ ब्राह्मण द्वारा एक दोसरापर, मधुबनी-सहरसा-मधेपुरा-समस्तीपुर-बेगुसराय, पूर्णियांक लोक द्वारा एक दोसरापर आरोप-प्रत्यारोप जे मैथिलीक दुर्दशा लेल हम नै ओ जिम्मेवार छथि- तइसँ हटि कऽ) एकमुखी, एक स्तरीय आ एक यत्नसँ प्रयास करए पड़त। आ जनताकेँ जोड़ए पड़त। हा पुरस्कार केलाक बदला जन साहित्यकारकेँ चिन्हबापर, जन नेताकेँ चिन्हबापर, जन विक्रेताकेँ चिन्हबापर अपन जान-जी लगाबऽ पड़त। विदेशी निवेशसँ छोड़ू भारतीय प्रकाशक जे कहियो ऐ क्षेत्रमे आबऽ चाहलक वा सरकारी खरीदक मशीनरी जे कोनो मैथिलीक पोथी कीनऽ चाहलक वा अनुवाद लेल कोनो स्वयंसेवी संस्था मैथिली पोथी सभक चयन करऽ चाहलक तखनो मैथिली साहित्यक पुरोधा लोकनि द्वारा, जे सलाहकार बनलाह, द्वारा भ्रमित सूची देल गेल, कतेक रास मिथिलाक्षरक पाण्डुलिपि देशक बाहर टपा देल गेल आ मारते रास लोक द्वारा ढेर रास बखेरा ठाढ़ कएल गेल। से सभ कियो भागि गेलाह, बाहरियो आ मैथिली सेवी सेहो। सरकारी खरीद गुणक आधारपर नै भेल, पैरवी-पैगाम आ ढेर रास आन गुणकक आधारपर भेल। विदेशी निवेशकक लग ई सभ ऋणात्मक पक्ष लऽ कऽ हमरा सभ कोना जा सकब।

विदेशी निवेशसँ मैथिलीपर अप्रत्यक्ष प्रभाव: मैथिलीपर विदेशी निवेशक अप्रत्यक्ष प्रभावक रूपमे मैथिली बाजैबलाक संख्याक घटोत्तरी आ मैथिलीक शब्दावलीक ह्रासकेँ राखल जाइत अछि। ओना ई सभ भारत आ नेपालमे पैघ नग्रक अनियन्त्रित विकास आ छोट नग्रक बिना अपन आर्थिक आधारक मात्र जमीनक खरीद-बिक्रीक कारणसँ विस्तारक कारण बेसी भेल अछि। मैथिली भाषीक एके खाढ़ीमे जतेक पड़ाइन भेल अछि से आन वर्गमे तीन-चारि खाढ़ीमे भेल (जेना तमिल वा बांग्लाभाषीकेँ लऽ सकै छी।)। मुदा आनो भाषा-भाषीमे विदेश पड़ाइनसँ भाषाक लोप भेल अछि मुदा संस्कृतिक लोप नै तँ आन वर्गमे भेल अछि आ ने मैथिलीभाषी

वर्गमे। मैथिली भाषीकेँ लऽ कऽ दिल्लीमे ई कहबी भऽ गेल अछि जे आन वर्ग पाँच साल दिल्लीमे रहलापर पंजाबी बाजऽ लगै छथि आ हुनकर घरक स्त्रीगण करवा-चौथ करऽ लगै छथि मुदा मैथिलीभाषी नै तँ पंजाबी सिखै छथि आ ने हुनकर घरक स्त्रीगण करवा-चौथ करै छथि। हँ जखन अहाँ पत्नीसँ मैथिलीमे नै बजबै आ बच्चाकेँ गामक दर्शनो नै करऽ देबै तँ ओ मैथिली बाजब छोड़बे करत। विदेशी निवेश जाइ तरहेँ हिन्दी आ अंग्रेजी कार्टून चैनलमे भेल अछि, ओइसँ मैथिलीटा नै पंजाबीपर सेहो संकट आबि गेल अछि। मुदा ई एकटा फेज छिऐ, आ ई फेज बीस बर्खमे खतम भऽ जाएत। जे परिवार ऐ बीस बर्खमे मैथिली बाजब छोड़ि देताह हुनका हम मैथिली दिस सोझ रूपमे नै घुरा सकब। मुदा सांस्कृतिक सन्निकटताक कारणसँ मैथिलीक परियोजना, अनुवाद, ऑडियो-वीडियो आ संचार परियोजनाकेँ ओ समर्थन करबे करताह, तकरा सम्मान देबे करताह। आ ई अप्रत्यक्ष रूपमे मैथिलि लेल वरदान सिद्ध हएत। आ एकटा पुनर्जागरणक काल अखन चलि रहल अछि तकर पुनरावृत्ति बीस बर्ख बाद हएत। मैथिली युद्धसँ बहार भऽ जीवित निकलत आ सुदृढ़ हएत। विदेशी निवेशककेँ मैथिलीमे निवेश केलासँ लाभ: विदेशी निवेशक कल्याणकारी कार्य सेहो करै छथि। हुनका मैथिलीक विशेषता बुझाबए पड़त। विश्व प्रसिद्ध वायोलिन वादक स्व. येहुदी मेनुहिन मैथिलीकेँ संसारक सभसँ लयात्मक आ मधुर भाषा कहने छलाह। विदेशी निवेशकक किछु निवेश यूनेस्कोक भाषा सम्बन्धी नीतिक आधारपर सेहो करैत अछि। आ ई कल्याणकारी निवेश लाभपर आधारित नै होइत अछि, सरकारी खरीदपर आधारित नै होइत अछि, विज्ञापनपर आधारित नै होइत अछि। अन्तर्राष्ट्रीय सर्टिफिकेशनपर आधारित गएर सरकारी संस्था सभक माध्यमसँ मैथिलीमे शैक्षिक पोथी आ मनोरंजन आ स्वास्थ्य आधारित फिल्म डोक्यूमेन्टरीक मैथिली भाषी क्षेत्रमे ग्राम पंचायतक स्कूल सभक माध्यमसँ कएल जाए तँ मैथिली भाषी लोकक हीन भावनामे कमी आओत आ भाषायी क्रान्तिक संगे आर्थिक क्रान्ति सेहो आएत।

(अनुवर्तते)

**अपन मंतव्य** editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**





ISSN 2229-547X VIDEHA

**डॉ आभा झा**

**बौक**

किछु नञि बजै छथि जया, वाक् हरण भ' गेलनि।ई वैह जया छथि,जनिक उपस्थिति मात्र सँ वातावरण उल्लसित भ' जाइत छल,सौंसे चहल-पहल भ' जाइत छल। केहनो गंभीर माहौल कें ओ अपन विनोदी स्वभाव सँ हल्लुक बना दैत छलीह। मात्र घरहिं मे नञि,कालेजो मे अपन मेधा आ वाक्चातुर्य सँ सभहक प्रिय छलीह।निर्द्वन्द्व बाल्यकाल, निर्बन्ध युवावस्था, आँखि मे भविष्यक स्वर्णिम स्वप्न,ओहि स्वप्नकें पूर्ण करबा लेल अनुरूप प्रयत्न! माता-पिताक स्नेह आ विश्वासक छत्रछाया मे जया बढ़ैत गेलीह,अपन व्यक्तित्व

गढ़ैत रहलीह आ एही तरहें एकटा मल्टीनेशनल कंपनी में एक्जीक्यूटिव मैनेजरक पद पाबि कने थमलीह।

साल दू साल बितला पर माता पिता दिस सँ विवाहक लेल दबाव पड़' ' लगलनि-"क्यो पसिन्न अछि त' बाजू, नञि त' हम वर ताकै छी"।

कने विचारलनि त' अपन मित्रमंडली मे क्यो एहन नञि बुझेलनि जे विवाह लेल गंभीर हो,अपन दिमाग पर विशेष जोर नञि द' ओ माता-पिताक पाला मे गेन फेकि देलखिन।एहि तरहें कैप्टन अशोक हुनका जिनगी मे एलखिन।

जीवन जेना आर रमणगर भ' गेलनि।क्षण-क्षण माधुर्यक वर्षा होमैत रहलै आ ज़रा ओहि मे भिजैत रहलीह।दू बरख मे अभिनव कोरा मे आबि गेलनि।आब त' दिन पांखि लगैत उड़' लगलनि।ओ त' रच्छ छलनि जे सासु आबि गेल छलखिन, तैं नोकरी करब पार लगै छलनि।

मुदा विधाता कैँ हुनकर सुख नीक नञि लगलनि, जीवन भरि संग देबाक वचन द' हाथ पकड़' बला अशोक मात्र चारिए बरख मे संग छोड़ि देलखिन।अभिनवक मुंह देखि सहि लेलनि ई कठोर आघात जया। मुदा अशोकक जिनगी मे सासुर मे प्रिय रहलि जया अचानक अप्रिय भ' गेलीह!अनेक तरहक बंधन परिवार दिस सँ थोपल जाइ लगलनि!हुनकर करेजक टुकड़ा अभिनव सेहो उपेक्षित होमय लगलनि! विधाताक कठोर डांग हिम्मत सँ सहै बाली जया लोकक बदलैत नजरि देखि हतबुद्धि छलीह! कारण छल अशोकक ओ मकान आ सेना दिस सँ भेटय बला फण्ड!किछु दिन जेना- तेना बर्दाश्त केलनि, मुदा विवश भय पुनः माता- पिताक देहरि पर आबि गेलीह!

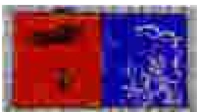
आर्थिक कष्ट त' नञि भेलनि कहियो,कारण अपन नीक नोकरी त' छलन्हिये,संगे माता -पिताक सभ संपतियोक ई एसकरि उत्तराधिकारिणी छलीह, मुदा संमंधक आधारहीनता हिनका हिला क' राखि देलकनि।बाजब- भूकब आब काजे धरि रहलनि, स्वभावक ओ जीवंतता तिरोहित भ' गेलनि।तैंयो जया जया छलीह,न अपन नोकरीक प्रतिबद्धता अनदेखार केलनि,न माता पिताक सेवा ,न अभिनवक पालन- पोषण मे कोनो तरहक त्रुटि!

समय बितैत रहल,अभिनव आइ पूर्ण युवक छथि, शिक्षित, संस्कारी ! एकटा प्रतिष्ठित कंपनी मे कार्यरत छथि।विवाहक लेल ओ अपनहिं सहकर्मिणी पसिन्न केलनि।

आब जया कने आश्वस्तिक सांस लेलनि,अपन कर्तव्यपूर्णताक अनुभूति भेलनि,भगवानक धन्यवाद केलनि,।सभ ठीक-ठाक जकाँ बुझाइत छलनि कि अभिनव आ मधुक समंध खराप होइत होइत एत' धरि पहुंचि गेलनि कि एक दिन मधु दहेजक मांग आ प्रताड़नाक आरोप मे पति आ सासुक विरुद्ध अभियोग दर्ज करा एलीह।एकर बादक न्यायालयीय कार्रवाई आ सामाजिक प्रताड़ना एतेक पैघ मानसिक आघात देलकनि जया कैँ कि ओ परास्त भ' गेलीह,सभटा जिजीविषा सूखि गेलनि,आब बांचल छथि मात्र एकटा सुखायल गाछ,शब्दहीन,भावहीन प्रेतक छाया!

**ऐ रचनापर अपन मंतव्य** editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

**कीर्तिनाथ झा**

**लघुकथा-नपुंसक**

1

नीकवा बेजाय, गाममें लोक कें गप्प चाहियैक. मुदा, लोककें रस गप्पमें नहिं अबैत छैक, रस अबैत छैक कुचेष्टामें. कारण, सब सुखी हो ताहिसँ मन शांत जरूर हयत, मुदा, शोणितमें जं हिमोग्लोबिन बढ़ेबाक अछि तं गप्पमें रस लियअ, गप्प में रस दिऔक. अनकरकुचेष्टा जकरा नीक नहिं लगनि से कीर्तन में जा कय बैसथु ! देखैत नहिं छियैक, शहरक देखाउस पर आप गामो सबमें बुढ़ा लोकनि योगासनक बाद अनेरे-अनेरे हँसबाक नाटक करै छथि. कबै झाक कहब छनि, कुचेष्टासँ लोक के हंसबाक अवसर भेटैत छैक, देह में स्फूर्ति अबैत छैक.नहिं तं अपन काज आ बेगरतासँ ककरा फ़ुरसति.

तें, फलां ठाकुरक घर में जखन पौत्रक जन्म भेलनि, तं, गाममेंघूड़ लग, ब्रह्मबाबाक स्थानपर, दछिनबारि टोलक मण्डपपर, पोखरिक मोहारपर लोक कें अनेरे मुसुकी छुटय लगलैक.प्रतिष्ठित लोकनि कुच्चड लोकनिकें कात-करोट ल' जा कय कहथिन, 'एहन गप्प बजबो जुनि करी'.

मुदा कबै झा एहि अनुशासनसँ मुक्त छथि.महिसबारि आ अनुशासन, एक ईर आ दोसर बीर घाट ! कबैकेंजखन ई खबरि भेटलनि, तं, अकस्मात् हुनका मुंहसँ बहरा गेलनि, धन्यभाग! दोहाई हमर गाओं !! जं गौआंकएकबाल रहलैक तं एहि गाओंमें केओ नपुंसक निर्वंश नहिं रहत !महिसबार सब एहि पर पिहकारी मारलक: 'भाई, एहि गाम में कबै झाक जोड़ा नहिं. गप्पी सबहक ई सरदार जं कर्णपुर छोडि देथि तं एतुका लोक बौक भ' जायत. कबै झा जे बाहबाही तकैत छलाह से तं भेटि गेलनि, मुदा, तमाकूक अमल जोर मारने रहनि. खौंझाइत कहलखिन, मर बहिं, फुसिएक थोपड़ी पाड़ैत रहबें,कि एक जूम तमाकुओदेबही. सरकार सब किछु पर टैक्स लगा देलक, गप्पहुसँ गेलहुं. आ महिसबार सब एकबेर फेर ठहक्का मारलक. कबै झागदगद भ गेलाह. आ महिसबार सब लोट-पोट भ गेल.

2

रामलखनएहि बेर बहुत दिनक बाद गाम अयलाह-ए.गाम में बहुतो किछु बदलल-बदललगैत छनि. एहि गाम में ने आब कबै झा छथि आ ने आब रहरहाँ लोक एतय महिस पोसैत अछि.पहिनेगाय-महिसपोसलासँ अर्थ व्यवस्था पर जे असर होइत छल होइक, नेना-भुटका पर एकर दुष्प्रभाव ककरोसँ छिपल नहिं रहैक. दरबज्जा पर माल महिस रहतैक तं गरीब-गुरुबा-किसानक धिया पुता माल-महिस के सम्हारत, कि स्कूल जायत ! आब ताहि में परिवर्तन भेलैये. रामलखन ताहिसँ संतुष्ट छथि. रामलखन अपन जीवनक पहिल सोलह वर्ष एही गाम में बितौनेछथि. हुनका एतुका एक-एक गाछी कलम, बाध-बोन,आरि-धूर,पोखरि-झाँखरि, फील्ड, चौबटिया-चौक आ टोल-मोहल्ला सब किछु हाथक तरहत्थीक रेखा-जकां चिन्हल छलनि. तें, आइ अहल भोरे रामलखन दलान परसँभोरुका टहलान पर निकललाह. एहि टहलानमें ओ गामकें अखियासैत अजुका गाम कें अपन स्मरण गाम सं मनहिं-मन मिलान क रहल छथि; आइ जखन गामक उत्तर,भरल नासीमें उज्जर-उज्जर, भकरार भेंटक फूलक गलीचा देखलनि तं हिनका विश्वास भ' गेलनि,हं, ई अपने गाम थिक. मोने छनि, मैट्रिक पास कय जहियारामलखनपढ़बाले पटनाचल गेल छलाहतखनेहिनक अनेक बाल-सखा सब स्कूल जायब छोडि गिरहस्ती सम्हारि नेने रहथिन. कतेको गोटे हर-फारआ हरक लागन ध' नेने छल आ कतेको महाजनीसँ ल' कय मोटा धरि उघबाले शहरक बाट ध' नेने छल.आब गाम बदलि चुकल अछि. हर-फार कहिया ने निपत्ता भ' गेल, भले जिद्दमें नथुनी कामति आ कारी राउत एक-एक टा बड़द राखि गाममेंभजैती शब्दकें जियाकय रखने छथि.यद्यपि,एतय आब बरहीक दरबज्जा पर ने भाथि छनि आ ने ओतय भोरुका पहर हर-फारक मरम्मतिले पसार लगैतछैक. एतुका लोक आब हांसू-खुरपी-पिटबैलेवा चौकठि-केबाड़-खिड़की आ चौकी-तख्तपोश बनबैले, लकड़ी चिरबैले ठाकुरकद्वारि पर आयब बन्न क' चुकल अछि. ठाकुरक पांच टा बेटा सेहो पांच ठाम पसरि गेल छथिन.टोल परहक इनार भत्थन भ' चुकल अछि; हं, एहि बेरुका गर्मी में जखन गामक सब चापाकल सुखा गेल रहैक तं लोककें पंथक पाकडि, इनारसब, अवश्य मन पडलैक. गामकछोट-पैघ,गोड़पन्द्रहेक,पोखरिक गन्हाइत पानिमें आबमनुखक कोन कथा,लोक महिसोके नहिं नहबैत अछि. मुदा, खुशीक गप्प ईजे गाम में आब खढ़घरक स्थान पक्का घर ल' लेने अछि. जतय कतहु खढ़क आफूसक घर बंचल छैहो, खढ़क चार पर कुम्हड़-कदीमाक लत्तीक बीच चकमक करैत टाटा-स्काई आ एयरटेलक टीवी ऐन्टेना रामलखनकेंगामकसमृद्धि आ जीवनमेंग्रामीण लोकनिक बदलैत प्राथमिकताकद्योतक बूझि पड़लनि.अस्तु,गामक सम्पन्नताकें देखि रामलखनकें संतोष सेहोहोइत छनि, आ ओ गामक जिजीविषासँ आश्वस्त सेहोहोइत छथि.

एहिना भोरुका झलफलीमें रामलखन गामक प्रगति आ परिवर्तन कें अखियासैत आगू बढ़िते जाइत रहथि,कि हिनका दूरसँअबैत एक टा पुरुषकछवि पर नजरि पड़लनि. करीब छौ फीट नमती, पैघ पेट. बामाहाथकलाठीपर भर दैत नहु-नहु अबैत मध्यवयसाहुक छवि रामलखन कें चिन्हार-सन लगलनि. व्यक्ति जेना-जेना लग अबैत

गेलाह, छविस्पष्ट होइत गेलैक आ रामलखनकें अपन चिरपरिचित बालसखाकें देखि सुखद आश्चर्य भेलनि. सोचलनि, एतेक दिनक पछातियो केओ अपन संगी तं भेटल. ओहो व्यक्ति दूरेसँ देखैत:

- रामलखन?

-के, रघुवीर?लग अबिते दुनू गोटे एक दोसराक हाथकेंअपन-अपन हाथमें लैत, एक दोसराकें भरि पांज कय पकड़लनि. मनहिं-मन रामलखनकें मन पड़य लगलनि कोना ई लोकनि दुर्गाक मन्दिरक आगूक पोखरिक मोहार पर, मंदिरकपाछूक नासी, आ लगक कलमबाग सबमे भरि-भरि दुपहरिया बौआइत रहथि. आमक पातकघिरनीकें तेजसँ घुमबैलेगर्मीमासक धुक्कड़ में निच्छोह दौगैत रहथि. एतेक दिनुक पछाति अनायास भेंट. दुनू गोटेकें प्रकृतिस्थ हेबामें कनेक समय लगलनि. सत्ते, रघुबीरकें देखि तुरते चिन्हबामेंपुरानो परिचित लोककेंकनेक समय अवश्य लगितैक.किन्तु, रामलखन लगभग ओहने छथि. केवलचानि परहक केश उडि गेलनि-ए आ आँखिपर चश्मा चढ़ि गेल छनि. मुदा, रामलखनरघुवीरकें देखि क्षुब्ध छलाह.

-एना?

-'आब एहिना.' तटस्थ भावें अनायास रघुवीरकमुँहसँ बहरयलनि.संगहिं,विवशताकमुसुकीक क्षीण रेखामुँहक एहि कोरसँ दोसर कोर धरि पसरि गेलनि. मुदा, रामलखनकें किछु बुझबामें नहिं अयलनि. असल में स्वस्थ सबल शरीर में जखन अनायास अवघात होइत छैक, तं, अचानक आकस्मिताक मारि पर लोककें अपनहुँ विश्वास नहिं होइत छैक. तकर उपर,पछाति, परिवार आ सर-समाजक निरंतर सहान्नुभूति आ सहाराक आग्रह मनुक्खक मनोबलकें फोकिला करय लगैत छैक. जे मनुक्ख अपन असक्तता भारसँ उबरय जनैत अछि, से देहक चोटकें फुर्तीसँ निजबैत जीवनक गतिकें पुनः पकडि लैत अछि. जकर चोट संघातिक होइत छैक वा जे चोटसँसहजहिं हारि मानि लैछ, बिछाओन ध' लैत अछि. रघुवीर अपन असक्तताकें हरा चुकल छथि. मुदा, जखन दू टा सुपरिचित व्यक्तिक लम्बा अंतरालक बाद भेंट होइछ, एक दोसराक बदलल मनोवृत्तिकें बूझब सहज नहिं. कारण, शरीर-जकां मनुखक मोन सेहो निरंतर बदलैत रहैत छैक.डाक्टरदीपक चोपड़ा-सन गुरु तं एतेक धरि कहैत छथि, जे प्रति क्षण बहराइत शारीरिक उत्सर्जनक कारण परमाणुक दृष्टिएँ मनुक्खएक रहिते नहिं अछि ! ओ निरंतर बदलैत रहैत अछि. तथापि, रामलखन के रघुवीरकटेढ़, झुलैत दाहिना गट्टा हठात् विचलित क' देलकनि. पूछि देलखिन, आ ई गट्टा ?

परिचित लोक आ अपरिचित. दोस्तवा दुश्मन. नित्तह संगी वा अनेक वर्षक बाद भेंट. जंदुखाइत घाव पर ककरो हाथ पड़उक, मनुक्खक प्रतिक्रिया एके हेतैक: लोक हाथ छिपि लेत, कुहरि उठत वा अनायास रोष प्रकट भ जेतैक. आइओसएह भेलैक.

-अहीं लोकनिक देनछी, डाक्टर साहेब ! किन्तु, स्वाभाविके, रामलखन कें बाल-सखाक ई पीड़ा जनित व्यंग - सोझे बुझबामें नहिं अयलनि.

-माने?

- छोडू. जे भेलैक से भेलैक. तखन पुछै छी तं सुनिए लियअ.आब तं पांच वर्ष भ' गेलैक. छठिक भोरुका अर्घ्यकदिन.झलफल रहैक, पोखरिक घाटपर दाहिने हाथक भरे खसि पड़लहुँ. गट्टा शुद्ध क' टूटि गेल. दरभंगागेलहुँ. डाक्टर पलस्तर केलनि. दर्द कम भ' गेल गाम चल एलहुँ. छौ हप्ताक बाद जखन पलस्तर कटल, तं, हमरा तं बुझू दांती लागि गेल. पहुंचा एक दिस आ गट्टासँ नीचा हाथ दोसर दिस. झुलैत! डाक्टरकें बड़ड गारि पढ़लिऐक. मोन तं भेल कपार फोडि दिऐक. मुदा, लाचार रही. पछाति कतेक गोटे कहलक दिल्ली जाउ. बेटा भोपालसँ आयल तं फज्झति करय लागल. कहलक, अहाँकें की लगैएदरभंगाकहियो बदलतैक ! आब अपनों बूझैत छियैक, हमर पहुंचाक दुनू हड्डी टूटल छल. आइ काल्हि हड्डीक भीतर लोहाक छड़ द' कय हड्डी जोडि दैत छैक. मुदा, से तं डाक्टर हमरा कहैत, ने. हमरा टाका तं लगबे कयल. पहिने पूछै, गुरुकें कोदो द' कय पढ़ने छह! हम की बुझय गेलिऐक, आब टाकाखर्चकय सेहो लोक डाक्टरीक डिग्री पबैए आ लोककें ठकि कय हमरे-जकां लहैब करैए. मुदा, हमरा भय भ' गेल. देरी भ' गेल रहै. हम दिल्ली नहिं गेलहुं. आब एहिना काज चलबैछी.

रामलखन क्षुब्ध भ' गेलाह.मुदा, ओहि दिन गप्प ओत्तहि ठमकि गेलैक. दोसर दिन रामलखन टहलय ले बहरयलाह तं रघुवीर फेर भेटि गेलखिन. दुनू गोटे टहलैत कमलाक कात धरि गेलाह आ वापसी में दुनू गोटे रघुवीरहिंक दरबज्जा पर बैसि गेलाह. रघुवीर कहय लगलखिन, जखन नौकरीमें रही, देह में एको रत्ती चर्बी नहिं छल. आब बैसल ठाम खाइत छी. वयस से बढ़ले जा रहल अछि. एहिकज्जी डांड ल' कय ने धफडि क' चलि सकैत छी आ ने टूटल हाथ ल' कय योग क' सकैत छी. तखन भोर-सांझ धीरे-धीरे भरि गाम घूमि अबैत छी. दस गोटेसँ भेंटो-घांट भ गेल आ देह में कनेक हवा-पानि सेहो लागि गेल.यौ, डाक्टर साहेब, गाम पर बैसल-बैसल तं भूखो बिला जाइछ. रामलखन सहमति में मूड़ी डोलौलनि.

एतेक वर्षक अवधि आ ओतबे वर्षक बिछुका अपरिचय. लोक गप्पो की करतैक. बहुत दिन धरि जखन लोकक धिया-पुतासेहोदूर रहय लगैत छैक तं ओकरो सबसँ माय-बापक गप्प 'ठीक  छी किने ?' आ' हं, सब ठीक' धरि सीमित भ'जाइत  छैक. कारण, दूर-दूर में रहैत लोकक हालत ठीक रहौ, तं, आ बेजाय रहौ, तं, व्यवस्था तं अपनहिं करय पड़तैक.अस्तु, किछु कालक मौन केर बाद रामलखने पुछलखिन, ' अहाँक दरबज्जा पर आब लोकक अवर्यात नहिं देखैत छियैक ?'

-ककरा देखबैक ? माल-जाल, हर-फार सब उठि गेल. खेती बदलि गेल. बदलि की गेल, समाप्ते भ' गेल. जकरा जतय द्वारा लगलैक, चल गेल. हमरो धिया-पुता सब बाहरे रहैए. भैयाकजेठका बेटा गामे में ग्रिल बनबैये.

हम अपने गाम छोडबासँ पहिने स्कूल जाइत अबैत मैट्रिक तं पास भइए गेल रही. तखनहोम गार्ड केर ट्रेनिंग नेने रही. फल ई भेल जे पढ़ब लिखबतं सीखि लेलहुं, किन्तु,कमरसारि, हर-फार आ खेती-किसानी छूटि गेल छल. की करितहुँ? दू नाओ पर पयर देब ने भ' सकल, ने तकर इच्छा छल. मुदा, बाबूमैट्रिकसँ आगू पढ़यबासँ पहिनहिहाथ झीकिचुकल छलाह. हुनका तं ओहुना हमरा पर सब दिन भेंडा-महिसिक कानिरहनि. हम तं कहियो किछु नहिं कहलियनि. मुदा, ओ हमरा देखय नहिं चाहथि.किएक से हुनकर धर्म बूझनु. ओईरहस्य तं अपन संगहिं नेने चल गेलाह. हं, तं कहैत जे रही. हम जहिया होम गार्डक ट्रेनिंग ल' कयगाम आपस भेल रही,ओही बीचे टोल परसँ कतेक गोटे नागपुर जाइत छल. पुबारि टोलक देबू ठीकेदारक संग काज करैत रहथि. कहलनि, चलह. कोनो ने कोनो द्वारा लागिए जेतह. बाबूकें कहलियनि, तंगारिक तर क' देलनि. कहय लगलाह, 'बुझही आब. अपने केलहा. कोनो जोकरक नहिं रहलें. हमरा संगे जं किछु सिखने रहितें, तं, अपन दरबज्जा पर बैसल-बैसल काज करितें. लोगतोरेतकैत एत्तहि अबितौ. जो नागपुरमें बौआक ठीकेदारी में माथपर ईटा आ बालु उघिहें.'बाबूकेंअपन कमाई पर बड़ गौरव. चारि टोलक गाम में एकटा पसारी. अपना कमाईसँ पांच बीघा जमीन किनने रहथि. एक बीघामें आमक कलम रोपने रहथि. कहथिन, जे,'एहि कलमे-गाछीक जं ताकुत करबें तं आम तं सब मिलि कय आम तं खेबे करबें,पांच भाईक बीचो नकदीओ ले'कहियोककरो आगू हाथ नहिं पसारय पड़तौक.'मुदा, हम मन बना नेने रही. हम पैर छुलियनि, ब्रह्म बाबा के गोड़ लगलहुं आ सबहक संग लागिनागपुरक बाट धेलहुँ.

बाबू कोनो बेजाय नहिं कहने छलाह. ओतय जा कयशुरूमें कतेक ने पापड़ बेलल. मुदा, बिनु परिश्रमे कोन काज होइत छैक. देह स्वस्थ छल. कोनोतेहन लुतुक नहिं रहय. ब्रह्म बाबाकएकबाल वर्षक भीतरे कोल इंडिया में सिक्योरिटी विभाग में भरती भ' गेलहु' कहैत रघुवीर दुनू हाथ जोड़ि उत्तर दिस तकैत दुनू हाथ माथमेंलगौलनि आएकटा दीर्घ निश्वास छोड़लनि.

-वाह!

- सबटा मैया आ ब्रह्मबाबाक कृपा. हमरा नोकरी लागि गेल आ सबहक जीवन बदलि गेलैक. रिटायर भ' क गाम में छी. अहाँ लोकनिक दया सं पांच बीघा जमीन, घर, हाथ पर पेंशनक चारि गो टाका, आ सुरतियाक ई बोलेरो- अपन द्वारिक एक कात टटघरक गराजदिस आंगुर देखबैत- सबटा नोकरिए प्रताप छी. नहिं तं

गाममेंपचास घर बाभनगिरहत आ हमरा लोकनि पांच भाई.फीघर जं वर्षमें एक-एक मन धान भेटबे करितैक, तं, आइ ककर गुज़र होइतैक. ताबते एकटा युवक एकटा थारी में दू कप चाह ल' कय दुनू गोटेक आगू में राखि देलखिन आ रामलखन कें पयर छूबि प्रणाम केलखिन.

- ई बालक ?

- हमर पौत्र. भोपाल में काज करइए.

रघुवीरक पौत्र सूरज, सॉफ्टवेयरइंजिनियर छथि. मुदा, दूनू बाल-सखाकेंगप्पमेंव्यस्त देखि चाह ओतय राखि सूरज आपस चल गेलाह आ दुनू मित्र पुनः गप्पक सूत्र पकडि लेलनि.

-अहाँसमय पर सही बाट पकडि लेल. फल तं आँखिक सोझाँ अछिए.

- हं. आब तं गाम में एहने केओ हयत जकर धियापुता स्कूल नहिं जाइत हेतैक. मुदा, दोसर इहो देखैत छियैकतहिया जेकेओ शहर धेलकतकरधिया-पुता अन्न-वस्त्र ले बेलल्ला नहिं भेलैक. सबहक देह पर कपड़ा छैक, माथ पर पक्का घर छैक. आब तं सरकारों बहुत काज केलकैए,तखन मनुखक जीवन में खगता आ खाहिसकएत्ता छै, कहैत रघुवीर उगैत सूर्य दिस ताकय लगलाह. कहलखिन, 'इएह दिनकर दीनानाथ सबहक घर में इजोत करैत छथिन. ब्रह्मे बाबा गामक रक्षा करैत छथिन. हम पूरा नौकरीगढ़चिरौली, मध्य प्रदेश में कयल. पछातिछौंड़ा सब नागपुर में पढ़ैत छल; कनिया तं कहियो गाम नहिं छोड़लनि. धिया-पुता सब कहैत जाइ छल, 'एत्तहिनागपुरमेंघर बना लितहुँ'. मुदा, कमला माई आ गामक मोह एतय ल' अनलक. नहिं तं अहूँसँ कहियो भेंट होइत. ओकरा सबकें हम कहलियैक, हमरा जतेक भेल, कय जाइत गेलियह. आब तं सब अपन-अपन डारि धरह, खोंताबान्हह, आ हम गाम आबि गेलहुँ.'

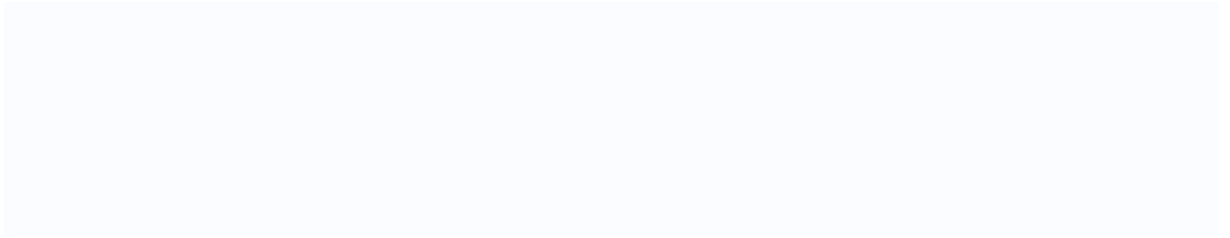
गप्पमें समय कोना बीतल जाइत छल, रामलखनकें अनुमानों नहिं भेलनि. मुदा, हुनकर शंकाक समाधान एखनो बांकीए रहनि. कहलखिन, आइ आब हम चलब रघुवीर. कएक टा काज बांकी अछि. मुदा, एकटाजिज्ञासा रहिए गेल. अहांकहाथ तं टूटि गेल से तं बुझलियैक, मुदा, हाथक छड़ी. नंगराइत चलैत छह!

एतय धरि रघुवीर अपनाकें नियंत्रणमें रखने छलाह. मुदा, रामलखनक ई प्रश्न एकाएक रघुवीरक ह्रदयक कपाट खोलि देलकनि. कहलखिन, 'रामलखन आब पुछलहु, तं एक छन बैसिए जाउ.फेर कहिया भेंट हयत. आ हम ककरा ईगप्प कहबैक. अहाँ नेनपन संगी छी. नारायण पछिला वर्ष गुजरिए गेल, दुखिया बिछाओनधेने अछि', आ रघुवीर शुरू भ' गेलाह.

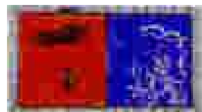
-रामलखन अहाँ जखन गाम में रही तहियाककोनोगप्प अहाँसं छिपल नहिं. हं, अहाँ पहिने निकलि गेलहुँ. हमरा गामसँ बहरयबामें समय लागल. कहबे केलहुँ, लटैत-बुडइत हमहूँ मैट्रिक पास भेले रही.तकर बादक गप्प बुझबे केलियैक. जहिनाकोल इंडियाक सिक्योरिटी विभागक नौकरी हमरा ले भगवानक वरदान सं कम नहिं छल, तहिना ओएह नौकरी हमरा पैदार सेहो बना देलक. मुदा, प्रत्येकघटना-दुर्घटनामें सबटा खराबे नहिं होइत छैक. हमरो संगे तहिना भेल. ओही दुर्घटनासँ हमरा मुक्ति सेहो भेटि गेल !' रघुवीरवाइ में तेना बजैत चल जाइत छलाह जे रामलखनकें हुनका रोकबाक इच्छा नहिं भेलनि.

रघुवीर फेर शुरू भ गेलाह. ' नौकरीकपन्द्रह वर्ष तं सब किछु खूब नीक जकां चलल. तखन एक राति एकाएक सब किछु बदलि गेलैक.' कहैत रघुवीरक चेहरा एकाएकमोर्चापर तैनात सैनिक-जकां कठोर आ दृढ़ भ' एलनि. '15 दिसम्बर 2001क राति. बज्र अन्हार. पानि पडैत रहैक, किआतंकी सब खदान तोडबाक गोला-बारूद भंडार पर एकाएक धावा क' देलकैक. हमड्यूटी पर रही. सब गोटे मीलि कय मोर्चा सम्हारि लेलियैक;हमगार्ड कमांडर रही. हम एक गोटेकें जखने भंडार दिस दौगैत देखलियैक, गोली चला देलियैक.ओ ओत्तहि ढेर भ' गेलैक.ओम्हरोसँ फयरिंग शुरू भ' गेलैक. मुदा, हम मोर्चा सम्हारि लेने रही.संयोगसँ आतंकवादी सबहकपहिल गोली हमरे जांघमें लागल. हम खसलहुँ, मुदा, अढ़ में रही. मोर्चा नहिं छोडलियैक. एकटाहमलावर तं पहिनहिढेर भइए गेल रहैक. सबहकप्रयाससँआतंकी हमलाविफल भ' गेलैक. मुदा,केस-फौजदारीक लम्बा चक्कर चललैक. ओहि दिन ड्यूटी-इन्चार्ज तं हमही रहियैक.'एतय आबि कय एकाएक रघुवीर फेर एक बेर लम्बा निःश्वास छोडलनि आ हुनकर चेहरा पर एकाएक विजेता सैनिकक भाव आबि गेलनि आ चेहरा चेहरा चमकि उठलनि, आ ओअकस्मात बाजि उठलाह, ' डाक्टर साहेब,मोने तं हयत, गौआं सब नपुंसक कहि कय हमर केहनमखौल करैत छल ! हम से दाग धो देलियैक !! प्रशासनक सहयोग आ महावीर जीकएकबाल,हम बरी तं भेबे केलहुं, आबगाओं में हमरा सोझाँ ककरो नजरि उठेबाक हिम्मतो नहिं होइत छनि!अवाक्रामलखन, रघुवीरक चेहरापर आयल विजेताक भावकें अनेक क्षण धरि देखिते रहि गेलाह. तावत् सूर्य सेहो ऊपर आबि गेल छलाह.

**अपन मंतव्य** editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**



विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

**दीपा झा**

**धिया- पूता आ डिजिटल कैदखाना**

डिजिटल संसार, एहन संसार जतऽ सभ तरहक सुविधा एक क्लिक मे भेट जाइ छै। एहन तकनीक जे बहुते काज आसान आओर उत्तम तरीका सँ कऽ दइ छै। की वास्तव मे ? की कोनो एहन संसार जे चौकोर स्क्रीनमे समा जाइ छै , किन्तु स्क्रीनक परे असीमित क्षितिज धरि पहुंचा दइ छै, सरिपहुँ उत्तम होइ छै ?

ऑन-लाइन शिक्षण एकटा एहने पद्धति छै जे बिद्यार्थी आ शिक्षककेँ एक -दोसरक निकट आनि दइ छै। ई पद्धति जे सभक लेल एकटा सुविधाजनक उपाय जकाँ प्रारंभ भेल छल से कोविड महामारी दुआरे अचानक सऽ शिक्षणक आवश्यक स्तम्भ भऽ गेलै। आइ सौंसे संसारमे बिद्यार्थी सभ ऑन-लाइन तरीका सँ औपचारिक शिक्षा प्राप्त कऽ रहल अछि। जइ धिया -पूताकेँ स्कूल मे सम्हारनाइ कठिन भऽ जाइ छलै , आइ ओ चंचल नेना- भुटका सभ डिजिटल उत्थान सँ पूर्णतः वश मे आबि गेल अछि। ओक्कर सभक किलकारी, शैतानी, हो-हल्ला - जे बढ़ऽ काल के सोभा -सुंदर होइ छै , से गुम भ गेल छै। ओहन हंसी , ओ मुहफट्ट भऽ गेनाइ , ओ कक्षा मे नुका जेनाइ- एहन सभ टा लीला पर अनचोक्के रोक लागि गेल छै।

कतेक गोटाकेँ तँ निश्चिते कनेक्टिविटीक दिक्कत छै, आ ओइ बिद्यार्थी सभ केँ भागीदारीक मौका नहि भेट रहल छै। शिक्षाक अर्थ होइ छै वाद-विवाद, बात-विमर्श, आओर आपसी सौहार्द- जे ऑन-लाइन शिक्षा अप्पन सीमित क्षेत्रमे नहि उपलब्ध कऽ सकैत छै। ई प्रणाली एकटा मूक, आओर असमर्थ पीढ़ी देखतै जे ने अपनाले किछु बाजि सकतै ने अप्पन कुशल-क्षेम सही तरह सँ बुझि सकतै। डिजिटल उपाय जाधरि उपाय भरि रहय सएह बढियाँ - ओक्कर नियम भऽ गेनाइ नुकसानदायक हेतै।

*नीतू कुमारी- मैथिली चित्रकथा*

*प्रीति ठाकुर-विद्यापतिक पुरुष परीक्षा*

*प्रीति ठाकुर-मिथिलाक लोकदेवता*

*प्रीति ठाकुर-गोनू झा आ आन मैथिली चित्रकथा*
*प्रीति ठाकुर-मैथिली चित्रकथा*

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

***देवांशु वत्स- नताशा***

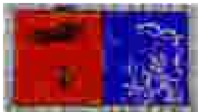
मैथिलीक ढेर रास बाल साहित्य आ आन साहित्य, संगे मिथिला आ मैथिलीपर मैथिली आ अंग्रेजीमे ढेर रास पोथी फ्री डाउनलोड लेल नीचाँक लिंकपर उपलब्ध अछि।

http://videha.co.in/new_page_15.htm

https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/

**अपन मंतव्य** editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

**उमेश मण्डल**

**लोक-नाट्य-वाद्य मण्डली- संकलन**

**नाच पाटी- मिथिला नाट्यकला परिषद- पकड़िया**

कम्पनी- श्री राम लखन साहु पे. स्व. खुशीलाल साहु

पता, गाम- पकड़िया, पोस्ट- रतनसारा, अनुमंडल- फुलपरास (मधुबनी)

मैनेजर- श्री ठकाई यादव पे. स्व. फुसन यादव

पता, गाम- मुसहरनियाँ, पोस्ट- रतनसारा, अनुमंडल- फुलपरास (मधुबनी)

**नाच-** (1) अल्हा रूदल (2) लछिया रानी (3) शीत वसंत (4) गुगली घटमा (5) राजा कुँवर वृजभान

**अभिनय कर्त्ताक नाओं/पता-**

श्री भोगी लाल दास- स्व- भायलाल दास लछमिनियाँ (मधुबनी)

श्री रामचन्द्र शर्मा- श्री जंगल शर्मा नेमुआ (मधुबनी)

श्री नथुनी शर्मा- श्री वनमाली शर्मा नेमुआ (मधुबनी)

श्री सुन्दर मुखिया- श्री नागेश्वर मुखिया हरियाही (सुपौल)

श्री वासदेव सदाय- स्व. कुजाय सदाय सखुआ (निर्मली)

श्री नारायण सदाय- श्री गंगा सदाय बेलही (सुपौल)

मो. जाहिद उर्फ राजा मो. डोमी नदाफ सुदै द्वारम (मधुबनी)

श्री रंजीत राम श्री लखन राम खुटौना (मधुबनी)

**वाद्य एवं वादक नाओं/पता-**

आर्गन- श्री छेदी पंडित स्व. चन्द्र पंडित बरहारा (सुपौल)

नाल- श्री परमेश्वर भारती स्व. जगरूप भारती मुसहरनियाँ (मधुबनी)

काँरनेट- श्री चन्दर राम श्री जीतन राम लछमिनियाँ (मधुबनी)

नडेरा- श्री लाल राम स्व. फुसन राम लछमिनियाँ (मधुबनी)

ढोलक- श्री कलानंद राम स्व. खट्टर राम लछमिनियाँ (मधुबनी)

ड्रमसेट- श्री भोलट दास श्री योगेन्द्र दास निर्मली (सुपौल)

**आन सहयोगी-**

श्री योगेन्द्र यादव श्री ठकाई यादव मुसहरनियाँ

घुरन दास श्री भायलाल दास (ताँति) लछमिनियाँ

दिनेश राम श्री सीताराम राम लछमिनियाँ

**नाच पाटी- श्री श्री 108 श्री भगवती नाचपार्टी- सिमराहा सप्तरी**

कम्पनी- श्री रामचन्द्र मण्डल पे. श्री वृजलाल मण्डल

पता, गाम- सिमराहा, पोस्ट- बरसाइन, जिला- सप्तरी (नेपाल)

मैनेजर- श्री राम सुन्दर राम पे. श्री सुवी राम

पता, गाम- दउरी, पोस्ट- बरसाइन, जिला- सप्तरी (नेपाल)

**नाच-** (1) अल्हा रूदल (2) लछिया रानी

**अभिनय कर्त्ताक नाओं/पता-**

श्री शैनी पासवान श्री दुखी पासवान खड़कपुर (बरसाइन)

श्री लक्ष्मण राम श्री कैलू राम दउरी (बरसाइन)

श्री बेचू राम श्री श्रीप्रसाद राम दउरी (बरसाइन)

श्री सत्य नारायण राम- श्री नथुनी राम दउरी (बरसाइन)

श्री देव नारायण यादव- श्री नथुनी यादव दउरी (बरसाइन)

श्री परमेश्वर मण्डल- श्री तेजी मण्डल सिमराहा (बरसाइन)

श्री रघु मण्डल- स्व. थारू मण्डल सिमराहा (बरसाइन)

श्री चरित्तर मण्डल- स्व. कारी मण्डल सिमराहा (बरसाइन)

श्री जोगी मण्डल- श्री बच्चाई मण्डल सिमराहा (बरसाइन)

श्री बेचू राम श्री प्रसाद राम दउरी (सप्तरी)

**वाद्य एवं वादक नाओं/पता-**

कॉरनेट- श्री देव नारायण राम स्व. नाथो राम दउरी (बरसाइन)

कॉरनेट- श्री दुखी राम स्व. कारी राम खड़कपुर (बरसाइन)

ढोलक- श्री नशीवलाल राम श्री कैलू राम दउरी (बरसाइन)

नडेरा- श्री राम प्रसाद राम श्री सुवी राम दउरी (बरसाइन)

हारमोनियम- श्री चरित्तर मण्डल श्री कारी मण्डल दउरी (बरसाइन)

**आन सहयोगी-**

शिव नारायण दास श्री ठकाइ दास दउरी (बरसाइन)

**कोसी नाट्य कला परिषद- सिमराहा-सुपौल**

**कम्पनी-** श्री गया प्रसाद मण्डल पे. श्री राम नारायण मण्डल

पता, गाम- सिमराहा, पोस्ट- नौआबाखैर, भाया- थरबिटिया, जिला- सुपौल

**मैनेजर-** श्री दया नन्द मण्डल पे. श्री राम लखन मण्डल

पता, गाम- सिमराहा, पोस्ट- नौआबाखैर, भाया- थरबिटिया, जिला- सुपौल।

**नाच-** (1) अल्हा रूदल (2) सती लछिया

**अभिनय कर्त्ताक नाओं/पता-**

श्री अरूण कुमार मण्डल श्री नथु मण्डल सिमराहा (सुपौल)

श्री रून्दी पासवान स्व. बहादुर पासवान परसा माधो (सुपौल)

श्री राम प्रसाद शर्मा स्व. बिलट शर्मा परसाहा (सुपौल)

श्री देवराज शर्मा स्व. तपेश्वर शर्मा सिमराहा (सुपौल)

श्री चन्द्र नारायण मण्डल स्व. रघुनाथ मण्डल सिमराहा (सुपौल)

श्री दुखी पासवान श्री बेचन पासवान परसा माधो (सुपौल)

श्री विजय कुमार राय श्री राम स्वरूप राय सिमराहा (सुपौल)

श्री बेचन शर्मा स्व. रामसुन्दर शर्मा परसाहा (सुपौल)

**वाद्य एवं वादक नाओं/पता-**

हारमोनियम- श्री सत्य नारायण मण्डल स्व. खुशीलाल मण्डल सिमराहा (सुपौल)

ढोलक- श्री गणेश राम श्री विन्देश्वर राम एकडारा, थरविटिया (सुपौल)

कॉँरनेट- श्री शिव नारायण सदा स्व. ............. एकडारा, थरविटिया (सुपौल)

नडेरा-डिग्री- श्री गुनेश्वर राम श्री ............... परसाहा, नौआ बाखैर (सुपौल)

झाइल- श्री हरिनारायण पासवान स्व. नकछेदी पासवान सिमराहा (सुपौल)

झाइल- श्री तेज नारायण मण्डल स्व. खुशीलाल मण्डल सिमराहा, नौआबाखैर (सुपौल)

भड़िया- श्री लालदेव मण्डल श्री बच्चा मण्डल सिमराहा, नौआबाखैर (सुपौल)

जोकर- श्री सीताराम राम ................. परसाहा, नौआ बाखैर (सुपौल)

**अन्य सहयोगी-**

श्री सुभाष कुमार राय श्री कन्हैया लाल राय बौराहा, थरविटिया (सुपौल)

**रामलीला नाट्य कला परिषद- रसुआर जिला-सुपौल**

**कम्पनी-** श्री झोटन मण्डल पे. स्व. नथुनी मण्डल

पता, गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, अनुमण्डल- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

**मैनेजर-** श्री त्रिलोक नाथ झा पे. स्व. रामेश्वर झा

पता, गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, अनुमण्डल- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

**नाच-** (1) अल्हा रूदल (2) सती लछिया (3) राजा सलहेश (4) विद्यापति (5) धुलक फूल (6) सुल्ताना डाकू (7) राजा हरिषचन्द्र (8) कृष्ण लीला (9) रामायण

**अभिनय कर्त्ताक नाओं/पता-**

श्री रामू मण्डल स्व. गोपी मण्डल रसुआर (सुपौल)

स्व. राज कुमार ठाकुर श्री रामजी ठाकुर रसुआर (सुपौल)

श्री धनिक लाल मण्डल स्व. रामजी मण्डल रसुआर (सुपौल)

श्री देव नारायण मण्डल स्व. बलदेव मण्डल रसुआर (सुपौल)

स्व. भोला झा स्व. जयदेव झा रसुआर (सुपौल)

स्व. जिलेब मण्डल स्व. नथुनी मण्डल रसुआर (सुपौल)



ISSN 2229-547X VIDEHA

श्री शैनी मण्डल स्व. लालजी मण्डल रसुआर (सुपौल)

श्री सीताराम मण्डल स्व. रूपलाल मण्डल रसुआर (सुपौल)

**वाद्य एवं वादक नाओं/पता-**

हारमोनियम- श्री त्रिलोक नाथ झा पे. स्व. रामेश्वर झा रसुआर (सुपौल)

ढोलक- स्व. रामगुलाम मण्डल स्व. संती मण्डल रसुआर (सुपौल)

नडेरा-डिग्री- श्री झड़ीलाल राम स्व. हिया लाल राम रसुआर (सुपौल)

झाइल- देवीलाल मण्डल स्व. खुशीलाल मण्डल रसुआर (सुपौल)

झालड़ श्री किशोरी मण्डल स्व. नेवैत मण्डल रसुआर (सुपौल)

डिग्री सदैबला- स्व. रामकिशुन मण्डल स्व. शक्ति मण्डल रसुआर (सुपौल)

भड़िया- श्री नारायण मुखिया स्व............... रसुआर (सुपौल)

जोकर- श्री सीताराम राम .................. परसाहा, नौआ बाखैर (सुपौल)

डान्सर- श्री छोटेलाल मण्डल श्री बुधु मण्डल रसुआर (सुपौल)

जोकर- श्री रामअधिन मण्डल स्व. धनिक लाल मण्डल रसुआर (सुपौल)

**इटहरी नाच कला परिषद- इटहरी जिला-सुपौल**

**कम्पनी-** श्री जगदीश साहु पे. स्व. गंगा प्रसाद साहु

पता, गाम- इटहरी, पोस्ट- निर्मली, भाया- निर्मली, अनुमण्डल- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

**मैनेजर-** श्री रामविलास साहु पे. स्व. भोला साहु

पता, गाम- इटहरी, पोस्ट- निर्मली, भाया- निर्मली, अनुमण्डल- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

**नाच-** (1) कुमर वृजभान (2) राजा नल (3) राजा सलहेश (4) गुगली घटमा (5) शीत-वसंत

**अभिनय कर्त्ताक नाओं/पता-**

नायक- रामविलास साहु स्व. भोला साहु इटहरी (सुपौल)

नारी पात्र- बैजू सदाय स्व. सोती सदाय इटहरी (सुपौल)

नारी पात्र- अशोक सिंह श्री बलराम सिंह इटहरी (सुपौल)

मुख्य खलनायक- दुखी मण्डल स्व. श्रीलाल मण्डल इटहरी (सुपौल)

जोकर- विजय साहु स्व. केसो साहु इटहरी (सुपौल)

नारी पात्र- रघुनाथ सदाय स्व. मोती सदाय इटहरी (सुपौल)

अभिनय- सुकुमार मण्डल .................. मुसहरनियाँ-रतसारा (मधुबनी)

अभिनय- रामअधिन मण्डल स्व. धनिकलाल मण्डल मुंगराहा (सुपौल)

अभिनय- हरि नारायण मण्डल ..... छजना (मधुबनी)

अभिनय- राम बहादुर मुखिया स्व. बच्चा मुखिया ननपट्टी फुलपरास (मधुबनी)

अभिनय- श्री साधु दास स्व. .............. पिपराही-वनगामा (मधुबनी)

**वाद्य एवं वादक नाओं/पता-**

हारमोनियम- श्री जगदीश साहु स्व. गंगा प्रसाद साहु इटहरी (सुपौल)

ढोलक- श्री जुगल साफी स्व. दाहुर साफी इटहरी (सुपौल)

नडेरा-डिग्री- श्री रामकिसुन सदाय स्व. सोती सदाय इटहरी (सुपौल)

झाइल- श्री सुकदेव साफी ..... इटहरी (सुपौल)

झाइल- श्री रामेश्वर साहु स्व. मुकुन्द साहु इटहरी (सुपौल)

डिग्री सदैबला- श्री रामकिशुन सदाय ................... इटहरी (सुपौल)

भड़िया- झड़ी लाल सदाय श्री सरयुग सदाय इटहरी (सुपौल)

ढोलकिया-2 रामाशीष यादव .............. ननपट्टी-फुलपरास (मधुबनी)

हारमोनियम-2 श्री तनुकलाल मण्डल ................ हरियाही-निर्मली (सुपौल)

**आदर्श वाल-कला निकेतन- निर्मली-पुनर्वास (जिला-सुपौल)**

**कम्पनी**- श्री राम शरण कामत पे. स्व. शिवधर कामत

पता, गाम- सुरयाही, भाया- मुजियासी, अनुमण्डल- फुलपरास, जिला- मधुबनी (बिहार)

**मैनेजर**- श्री अशोक सिंह पे. स्व. वलराम सिंह

पता, गाम- इटहरी-पुरर्वास, पोस्ट- निर्मली, भाया- निर्मली, अनुमण्डल- निर्मली, जिला- सुपौल (बिहार)

**मंचन**- (1) काँच ताग (2) आन्हर कानून (3) लोहा सिंह (4) माइक कलेजा (5) चुड़ी आ सिनूर

**अभिनय कर्त्ताक नाओं/पता-**

नायक- हेम नारायण साहु स्व. लक्ष्मी साहु इटहरी (सुपौल)

नारी पात्र- राम विलास साफी स्व. शोभित लाल साफी इटहरी (सुपौल)

नारी पात्र- अशोक सिंह श्री बलराम सिंह इटहरी (सुपौल)

नारी पात्र- हरि नारायण साहु श्री मिश्री लाल साहु इटहरी (सुपौल)

नारी पात्र हरि नारायण साहु श्री लक्ष्मी साहु इटहरी (सुपौल)

अभिनय- राम सागर साफी श्री शोभित साफी इटहरी (सुपौल)

अभिनय- सत्य नारायण साहु श्री लक्ष्मी साहु इटहरी (सुपौल)

अभिनय- जगत नारायण साहु श्री लक्ष्मी साहु इटहरी (सुपौल)

अभिनय- रोहित साहु श्री राम लखन साहु इटहरी (सुपौल)

अभिनय- हीरा लाल साहु स्व. सुकदेव साहु इटहरी (सुपौल)

अभिनय- जिरा लाल साहु स्व. सुकदेव साहु इटहरी (सुपौल)

अभिनय- रामावतार यादव श्री नुजाइ यादव इटहरी (सुपौल)

अभिनय- गंगा पासवान स्व. कुसुमलाल पासवान इटहरी (सुपौल)

अभिनय- रामचन्द्र यादव स्व. सुखी यादव इटहरी (सुपौल)

अभिनय- शत्रुध्न साहु स्व............. इटहरी (सुपौल)

गायक- मदन प्रसाद साहु स्व. गंगा प्रसाद साहु इटहरी (सुपौल)

**वाद्य एवं वादक नाओं/पता-**

हारमोनियम- जगत नारायण साहु श्री लक्ष्मी साहु इटहरी (सुपौल)

ठेकैता- राम विलास साफी स्व. शोभित लाल साफी इटहरी (सुपौल)

ठेकैता- श्री शिबू साफी .................. इटहरी (सुपौल)

झाइल- श्री राम नारायण साहु स्व. बच्चा लाल साहु लक्ष्मीपुर-धबही (मधुबनी)

हारमोनियम-2 अशोक सिंह श्री बलराम सिंह इटहरी (सुपौल)

**कला निकेतन नाचपाटी- लक्ष्मिनियाँ (जिला-मधुबनी)**

(1945-1965)

**कम्पनी-** श्री झमेली साहु पे. स्व. मंगल साहु

पता, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, अनुमण्डल- फुलपरास, जिला- मधुबनी (बिहार)

**मैनेजर-** स्व. महेश्वरी पाठक पे. स्व. कारी पाठक

पता, गाम- मझोरा, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, अनुमण्डल- फुलपरास, जिला- मधुबनी (बिहार)



ISSN 2229-547X VIDEHA

**नाचक मंचन-** (1) जंगली वादशाह (2) वंश-उजारन (3) विदेशिया (4) शीत-वशंत (5) लोड़िक मनियार (6) राजा नल

**अभिनय कर्त्ताक नाओं/पता-**

| | | | |
|---|---|---|---|
| नारी पात्र- | स्व. अचकी गोसाँइ | ................... | लक्ष्मिनियाँ (मधुबनी) |
| नारी पात्र- | स्व. बहुरी मण्डल | स्व. सुनर मण्डल | लक्ष्मिनियाँ (मधुबनी) |
| पुरुष पात्र- | श्री रामदास साफी | स्व. सुवंश साफी | लक्ष्मिनियाँ (मधुबनी) |
| पुरुष पात्र- | स्व. घौली साफी | स्व. सुनर साफी | लक्ष्मिनियाँ (मधुबनी) |
| पुरुष पात्र | स्व. वसुदेव ठाकुर(उर्फ बतहु ठाकुर) | स्व. कैलू ठाकुर | लक्ष्मिनियाँ (मधुबनी) |
| जोकर- | स्व. खट्टर मुखिया | .................... | लक्ष्मिनियाँ (मधुबनी) |
| अभिनय- | स्व. दुखाय साहु | .................... | लक्ष्मिनियाँ (मधुबनी) |
| नारी पात्र- | स्व. रतन मण्डल | .................... | मझौरा (मधुबनी) |
| अभिनय- | स्व. बिलम साफी | स्व. रूपा साफी | लक्ष्मिनियाँ (मधुबनी) |

**वाद्य एवं वादक नाओं/पता-**

| | | | |
|---|---|---|---|
| हारमोनियम- | स्व. तुलसी मण्डल | ................... | मझौरा (मधुबनी) |
| ठेकैता- | स्व. रघुनाथ ठाकुर | ................... | छजना (मधुबनी) |
| नागार्ची- | स्व. फुसन राम | स्व. कंचन राम | लक्ष्मिनियाँ (मधुबनी) |
| झाइल करताल- | स्व. बच्चा मण्डल | स्व. पंची मण्डल | लक्ष्मिनियाँ (मधुबनी) |
| डिगरी सेद्दा- | स्व. अशर्फी गोसाँइ | ................... | लक्ष्मिनियाँ (मधुबनी) |
| भड़िया- | स्व. अशर्फी गोसाँइ | ................... | लक्ष्मिनियाँ (मधुबनी) |

**अन्य सहयोगी-**

स्व. नेबाजी साहु स्व. भैरव साहु लक्ष्मिनियाँ (मधुबनी)

(संकलन सहयोग- रामविलास साहु, लक्ष्मिनियाँ, मधुबनी)

**आदर्श नाचपाटी- लक्ष्मिनियाँ (जिला-मधुबनी)**

(1968-1977)

**कम्पनी-** स्व. गर्भू गोसाँइ

पता, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, अनुमण्डल- फुलपरास, जिला- मधुबनी (बिहार)

**मैनेजर-** स्व. नेबाजी साहु पे. स्व. भैरव साहु

पता, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, अनुमण्डल- फुलपरास, जिला- मधुबनी (बिहार)

**नाचक मंचन-** (1) बापक हत्या (2) दमाद वध (3) निसाद वध (4) वंस-उजारन (5) गोपीचन (6) शंकर शोसिला (7) उतिम चन।

**अभिनय कर्त्ताक नाओं/पता-**

पुरुष पात्र- स्व. बहुरी मण्डल स्व. सुनर मण्डल लक्ष्मिनियाँ (मधुबनी)

पुरुष पात्र- श्री राम अधिन दास स्व. जहुरी दास लक्ष्मिनियाँ (मधुबनी)

पुरुष पात्र- स्व. झोली दास स्व. धुत्तर दास लक्ष्मिनियाँ (मधुबनी)

नारी पात्र- श्री नथुनी दास स्व. सोनाइ दास लक्ष्मिनियाँ (मधुबनी)

नारी पात्र स्व. रघुनी दास स्व. सुनर दास लक्ष्मिनियाँ (मधुबनी)

अभिनय- श्री शिव नारायण मंडल ..................... लक्ष्मिनियाँ (मधुबनी)

अभिनय- स्व. डुब्बी मुखिया ..................... लक्ष्मिनियाँ (मधुबनी)

**वाद्य एवं वादक नाओं/पता-**

हारमोनियम- स्व. बहुरी मण्डल स्व. सुनर मण्डल लक्ष्मिनियाँ (मधुबनी)

ठेकैता- स्व. श्री लाल गोसाँइ स्व. बुधु गोसाँइ लक्ष्मिनियाँ (मधुबनी)

नागार्ची- स्व. रामेश्वर राम स्व. नेबी राम मझौरा (मधुबनी)

झाइल करताल- स्व. बच्चा मण्डल स्व. पंची मण्डल लक्ष्मिनियाँ (मधुबनी)

डिगरी सेद्दा- स्व. चमकलाल गोसाँइ ................... लक्ष्मिनियाँ (मधुबनी)

भड़िया- स्व. सुनर दास ................... लक्ष्मिनियाँ (मधुबनी)

(संकलन सहयोग- रामविलास साहु, लक्ष्मिनियाँ, मधुबनी)

**लक्ष्मिनियाँ नाचपाटी- लक्ष्मिनियाँ (जिला-मधुबनी)**

(1970-1982)

**कम्पनी-** श्री राजेन्द्र प्रसाद साहु पे. स्व. सुन्दर लाल साहु

पता, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, अनुमण्डल- फुलपरास, जिला- मधुबनी (बिहार)

**मैनेजर-** स्व. बहुरी मण्डल पे. स्व. सुनर मण्डल

पता, गाम- लक्ष्मिनियाँ, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, अनुमण्डल- फुलपरास, जिला- मधुबनी (बिहार)

**नाचक मंचन-** (1) कुमर वृजभान (2) लछिया रानी (3) सुन्दर वनक सुन्दर फूल (4) अल्हा-रूदल (5) विजय सिंह (6) गुगली घटमा।

**अभिनय कर्त्ताक नाओं/पता-**

पुरुष पात्र- श्री सीताराम राम स्व. जंगल मोची लक्ष्मिनियाँ (मधुबनी)

पुरुष पात्र- स्व. रसिक लाल गोसाँइ स्व. बुधु गोसाँइ लक्ष्मिनियाँ (मधुबनी)



ISSN 2229-547X VIDEHA

पुरुष पात्र- श्री गोसाँइ मुखिया स्व. डुब्बी मुखिया लक्ष्मिनियाँ (मधुबनी)

नारी पात्र- श्री मलभोगी दास स्व. भायलाल दास लक्ष्मिनियाँ (मधुबनी)

नारी पात्र श्री कल्लर राम स्व. खट्टर राम लक्ष्मिनियाँ (मधुबनी)

अभिनय- श्री मूसन साहु स्व. अशर्फी साहु लक्ष्मिनियाँ (मधुबनी)

नारी पात्र- श्री राम खेलावन राम स्व. फूसन राम लक्ष्मिनियाँ (मधुबनी)

**वाद्य एवं वादक नाओं/पता-**

हारमोनियम- श्री राम शरण साहु स्व. हिरो साहु लक्ष्मिनियाँ (मधुबनी)

ठेकैता- स्व. लक्ष्मण राम स्व. जीतन राम लक्ष्मिनियाँ (मधुबनी)

नागार्ची- स्व. फूसन राम स्व. कंचन राम लक्ष्मिनियाँ (मधुबनी)

झाइल करताल- श्री शिव नारायण मण्डल (गामक भगिनमान) लक्ष्मिनियाँ (मधुबनी)

डिगरी सेद्दा- कपिलेश्वर राम स्व. सगम राम करहरी, फूलपरास (मधुबनी)

भड़िया- स्व. निरसन राम स्व. कंचन राम लक्ष्मिनियाँ (मधुबनी)

काँरनेटिया- श्री चन्दर राम स्व. जीतन राम लक्ष्मिनियाँ (मधुबनी)

(संकलन सहयोग- रामविलास साहु, लक्ष्मिनियाँ, मधुबनी)

**कला नाचपाटी- छजना (जिला-मधुबनी)**

(1945-1980)

**कम्पनी**- श्री लालदेव मण्डल पे. स्व. चतुरी मण्डल

पता, गाम- छजना, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, अनुमण्डल- फुलपरास, जिला- मधुबनी (बिहार)

**मैनेजर**- श्री राम प्रसाद राम पे. स्व. गंगाय राम

पता, गाम- छजना, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, अनुमण्डल- फुलपरास, जिला- मधुबनी (बिहार)

**नाचक मंचन-** (1) बिहुला शती (2) लछिया रानी (3) सुन्दर वनक सुन्दर फूल (4) पिता हत्या (5) दमाद वध (6) वंश-उजारन (7) कुमर वृजभान (8) विदेशिया (9) जंगली वादसाह (10) रास लिला।

**अभिनय कर्त्ताक नाऔं/पता-**

नारी पात्र- श्री कारी मण्डल स्व. नंदी मण्डल छजना (मधुबनी)

नारी पात्र- श्री हरि मण्डल स्व. नंदी मण्डल छजना (मधुबनी)

पुरुष पात्र- श्री बच्ची लाल चौपाल स्व. दसाँइ चौपाल छजना (मधुबनी)

नारी/पुरुष पात्र- श्री छुतहरू चौपाल स्व. सुनर खतबे छजना (मधुबनी)

पुरुष पात्र स्व. नथुनी मण्डल स्व. रामफल मण्डल छजना (मधुबनी)

अभिनय- श्री झोली चौपाल स्व. ननधर चौपाल छजना (मधुबनी)

अभिनय- श्री छोटकनि चौपाल स्व. बौकू चौपाल छजना (मधुबनी)

नारी/पुरुष पात्र- श्री रामजस राम स्व. उचित राम छजना (मधुबनी)

नारी पात्र- श्री हरिहर राम स्व. दसाँइ राम छजना (मधुबनी)

पुरुष पात्र- श्री रामकिसुन मुखिया स्व. सहदेव मुखिया छजना (मधुबनी)

पुरुष पात्र श्री दुर्गा नंद ठाकुर स्व. नेंगर ठाकुर छजना (मधुबनी)

अभिनय- श्री मटन चौपाल स्व. सेमु चौपाल छजना (मधुबनी)

नृत- श्री शिव नारायण चौपाल श्री छोटकनि चौपाल छजना (मधुबनी)

**वाद्य एवं वादक नाऔं/पता-**

हारमोनियम- श्री राम प्रसाद चौपाल स्व. बिहारी छजना (मधुबनी)

ढोलकिया- श्री जनकधारी चौपाल स्व. खुशीलाल चौपाल छजना (मधुबनी)

नागार्ची- श्री छोटकनि राम स्व. सुनर राम छजना (मधुबनी)

झाइल करताल- श्री नथुनी चौपाल स्व. मधुकर चौपाल छजना (मधुबनी)

डिगरी सेद्दा- स्व. रोगहा चौपाल स्व. तेतर चौपाल छजना (मधुबनी)

भड़िया- श्री सुनर चौपाल स्व. नथुनी चौपाल छजना (मधुबनी)

काँरनेटिया- श्री राम प्रसाद राम स्व. मंगल राम लक्ष्मिनियाँ (मधुबनी)

अन्य सहयोगी-

श्री बालेश्वर ठाकुर स्व. लखन ठाकुर छजना (मधुबनी)

श्री रामविलास मुखिया स्व. बलदेव मुखिया छजना (मधुबनी)

श्री बिसो मण्डल स्व. अजोधी मण्डल छजना (मधुबनी)

(संकलन सहयोग- रामविलास साहु, लक्ष्मिनियाँ, मधुबनी)

**गिरधारी नाचपाटी- छजना (जिला-मधुबनी)**

(1956-2008)

**कम्पनी**- स्व. गिरधारी साहु

**वर्त्तमान कम्पनी**- जलेश्वर दास पे. स्व. खटर दास

पता, गाम- छजना, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, अनुमण्डल- फुलपरास, जिला- मधुबनी (बिहार)

**मैनेजर**- जलेश्वर दास पे. स्व. खटर दास

पता, गाम- छजना, पोस्ट- छजना, भाया- नरहिया, अनुमण्डल- फुलपरास, जिला- मधुबनी (बिहार)

**नाचक मंचन-** (1) बिहुला शती (2) गोपी चन्द (3) अल्हा-रूदल (4) गुगली घटमा (5) रूणा-झुणा (6) सामा-चकेबा (7) पिता हत्या (8) दमाद वध (9) कबिर लिला (10) कलयुग प्रेम (9अम एवं 10सम वर्त्तमानमे जारी)

**अभिनय कर्त्ताक नाओं/पता-**

नारी पात्र- श्री गोसाँइ मण्डल .................. धबौली, वनगामा (मधुबनी)

नारी पात्र- श्री राजेश्वर यादव स्व. तनुक लाल यादव बेरयाही (मधुबनी)

पुरुष पात्र- श्री हरिहर चौपाल स्व. मोहन चौपाल छजना (मधुबनी)

नारी/पुरुष पात्र- श्री रघुनाथ चौपाल स्व. मुंगालाल चौपाल छजना (मधुबनी)

पुरुष पात्र श्री कुसुमलाल चौपाल स्व. नथुनी चौपाल छजना (मधुबनी)

अभिनय- श्री शिवजी चौपाल स्व. फुसियाही चौपाल छजना (मधुबनी)

नृत- श्री राजेन्द्र चौपाल स्व. धीरज चौपाल बिक्रम शेर,अंधरामठ (मधुबनी)

नारी/पुरुष पात्र- श्री नेहाली चौपाल स्व. जहुरी चौपाल छजना (मधुबनी)

नारी पात्र- श्री संतलाल साहु स्व. दसाँइ साहु छजना (मधुबनी)

अभिनय- श्री कपिलेश्वर राम स्व. नेबी राम मझौरा (मधुबनी)

अभिनय स्व. राम प्रसाद चौपाल स्व. बिहारी चौपाल छजना (मधुबनी)

अभिनय- श्री धर्मी मण्डल स्व. ................ रतन सारा (मधुबनी)

अभिनय- श्री यशोलाल यादव .................... बेरियाही (मधुबनी)

**वाद्य एवं वादक नाओं/पता-**

हारमोनियम- स्व. ठीठर मण्डल स्व. ...... रतनसारा (मधुबनी)

ढोलकिया- स्व. भुटाइ चौपाल स्व. फेकन चौपाल छजना (मधुबनी)

नागार्ची- स्व. रामेश्वर राम स्व. नेबी छजना (मधुबनी)

झाइल करताल- श्री नथुनी चौपाल स्व. मधुकर चौपाल छजना (मधुबनी)

डिगरी सेद्दा- स्व. रोगहु चौपाल स्व. तेतर चौपाल छजना (मधुबनी)

भड़िया- स्व. नथुनी चौपाल स्व. चुमन चौपाल छजना (मधुबनी)

काँरनेटिया- श्री जालेश्वर दास स्व. खट्टर चौपाल छजना (मधुबनी)

**अन्य सहयोगी-**

श्री गंगाय साहु स्व. दुखाय साहु छजना (मधुबनी)

स्व. गोविन्द लाल साहु स्व. झगरू साहु छजना (मधुबनी)

श्री लोदाय चौपाल स्व. गुणेश्वर चौपाल छजना (मधुबनी)

श्री भुगती चौपाल स्व. बलदेव चौपाल छजना (मधुबनी)

(संकलन सहयोग- रामविलास साहु, लक्ष्मिनियाँ, मधुबनी)

मिथिलाक लोक संगीत/ लोक कला
भगैत गबैया-
(धर्मराज, ज्योतिश महराज, अंदू मालि, उदय साहु, हरिया डोम, बेनी, शती अवला, कारूबाबा इत्यादि भगैत निम्नलिखित 'रसुआर-भगैत पार्टी' 1980 ई.सँ गबै छथि।)
श्री शम्भु प्रसाद मण्डल
सुपुत्र स्व. लखन मण्डल
भगैत गायन सह खजरी वादन
उमेर- 42 साल
1980 ई.सँ भगैत गबै छथि।
पता- गाम- बढियाघाट/रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल।
श्री गंगाराम मण्डल
सुपुत्र श्री अशर्फी मण्डल-

झालि वादक

उमेर- 40

1980 ई.सँ झालि बजबै छथि।

पता- गाम- बढियाघाट/रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल।

श्री जनक मण्डल

सुपुत्र स्व. उचित मण्डल

उमेर- 60

रमझालि/ कठझालि/ करताल वादक

1975 ई.सँ रमझालि बजबै छथि।

पता- गाम- बढियाघाट/रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल।

श्री रविन्द्र मण्डल

सुपुत्र श्री खट्टर मण्डल

उमेर- 32

नाल वादक

पता- गाम- बढियाघाट/रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल।

श्री परमेश्वर मण्डल

सुपुत्र स्व. बिहारी मण्डल

उमेर- 41

ग्रुमबाजा/ गुमगुमियाँ

1980 ई.सँ गुमगुमियाँ बजबै छथि।

पता- गाम- बढियाघाट/रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल।

श्री महेन्द्र प्रसाद मण्डल

सुपुत्र स्व. छेदी मण्डल

उमेर- 48

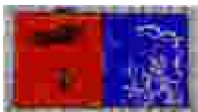
कठझालि वादक

बचपनसँ गेबो करै छथि आ रमझालि/कठझालि बजेबो करै छथि।

पता- गाम- रसुआर, पोस्ट- मुंगराहा, भाया- निर्मली, जिला- सुपौल।

**अपन मंतव्य** editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

**प्रियंवदा तारा झा**

**वापसी**

मानसी भोरेसऽ तैयारीमे लागल छथि। भानस भातसऽ फरागति पाबि घऽर दिस ताकि स्वगते बजलीह, सब ठीके छैक ,आब कनी बिलमिकऽ तैयार भऽ जाइत छी।

बहुत समयसऽ अही दिनक प्रतीक्षा छलैन्ह, आइ मानस अप्पन परिवारक संग आबि रहल छथि। मानस हुनक अंश , जिनका शिक्षा-दीक्षाक लेल मानसी अप्पन ज़िनगी होमकऽ देने छलीह। ओ ख्याति प्राप्त सफल डाक्टर आइ विदेशक सुख-सुविधा छाड़ि अप्पन धरतीपर घुरि रहल छथि। भावावेश सऽ भरि उठलीह मानसी।

भरोस नै छलैन्ह जे बेटाके अहि गप्प लऽ तैयार कऽ सकब। ओतऽ पुतहुक समझदारी जे ई संभव भेल। सत्ते , मुक्ता बड़ड बुझनुक छथि। कतऽ हमरा ई चिन्ता छल जे ओ बेटाके हमरा सऽ दूर करतीह , मुदा ओ तऽ हमर निधिके हमरा लग आनि देलथि। भगवती , एहन पुतहु सबके देथुन्ह।

मोन पड़ै छैन्ह मानसीके अप्पन आशंका , पैघ घऽरक बेटी हमरा सन सामान्य परिवारमे कोना एडजस्ट करतीह? आब घऽरोमे अपमान सहऽ पड़तैक ? भीतर सऽ बड़ड डेराइत-डेराइत बेटाके इच्छा देखैत तैयार भेल रहथि ओ विवाह लेल।

आ जखन मानसके अमेरिका जयबाक मौका भेटलैन्हि तऽ हहरि गेल छलीह ओ। कतेक कहलखिन्ह , एत्तहु तऽ सब किछु छै , अही ठाम काज करू नऽ। बेर-बेर कहला सऽ खौंझा उठल छलाह मानव , तों कियैक नै बूझै छही , हमर कैरियरक सवाल छै। तकर बाद चुप भऽ गेल छलीह मानसी।

अमेरिका जयबासऽ किछु दिन पहिने मुक्ता रातिमे सासुके कहलखिन्ह , मां हम अहांक मनोस्थिति बूझि रहल छी। अहां चिन्ता नहिं करु , हम मानस के लऽ कऽ निश्चय वापस आयब , अहां बस अप्पन ध्यान राखब। आ भारी मोनसऽ विदा कऽ देने रहथिन्ह मानसी बेटा ,पुतहुके।

कोना कऽ ई पांच वर्ष कटलैन्हि मानसी वैह जनैत छथि। अप्पन आशंका , ताहिपर सऽ लोक सबहक गप्प , भरि ज़िन्दगी बेटा छोड़िकऽ क्यो सुझलैन्हिनै , आब लियऽ ,असकरि छोड़िकऽ पड़ैलैन्ह विदेश। मानसी सब सुनियो कऽ अनठा दैत छलीह , की करितथि आर ? मानस , मुक्तासऽ गप्प होइन्ह तऽ बेटासऽ बेशी आश्वस्ति भेटैन्ह , पुतहु बुझाबैन- अहां बस किछु दिन आर धैर्य राखू।

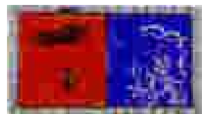
मानसी अतीतके पन्ना सबमे ओझरायले छलीह कि मुकुल बाबू बाहरसऽ बजैत ऐलखिन्ह , धुर अहां आइयो अहिना बैसल रहब की ? जल्दी उठू , परिछू पुतहुके , अहांके बेटा संग अहांक पोतियोके वापस आनने छथि।

हंहं , नेने अबैत छी , आइ हमर तपस्या पूर्ण भेल , बजैत हड़बड़ाइत बहरैली। एतेक दिनक बाद सबके देखि, आंखिसऽ गंगा जमुना बहऽ लगलैन्ह , मुदा आइ ई नोर छलैन्ह खुशीके। गदगद स्वरमे बजलीह , मुक्ता अहां मानसो सऽ बेशी प्रिय छी हमरा।

**अपन मंतव्य** editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**



विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

**आशीष अनचिन्हार**

**सपना आ भ्रम**

*(ई लघुकथा हमर पहिल प्रकाशित लघुकथा अछि जे कि 2007मे विद्यापति सेवा संस्थानक स्मारिकामे प्रकाशित भेल छल। विदेहक पाठक एवं आन माध्यमक नव पाठक लेल हम एकरा एहिठाम दऽ रहल छी।-आशीष अनचिन्हार)*

**घटनासँ पूर्वक गप्प :**

सपना देखैत लोक सावधान भऽ जाउ। बड़ड दिन धरि अहाँ सभ सपना देखलहुँ, किछु दिन बिनु स्वपन देखने रहू।

"की कहलहुँ ? सपना देखबाक हिस्सक लागि गेल अछि हमरा सभकेँ। हँ से त' सत्ते कहलहुँ - अहाँ, आ से हमहूँ बूझि रहल छी।"

"फेर की कहलहुँ। सपना देखब आवश्यक छैक जिनगीक लेल। ई के कहलक अहाँकेँ? बेस मानलहुँ हम जे सपना देखब आवश्यक छैक, मुदा कनेक ई अहाँ फरिछाउ -जे की केवल सपने देखब आवश्यक छैक ओकर क्रियान्व्यन किछु नहि।"

"की भेल औ, चुप्प छी किएक किछु बाजू ने।"

"ओह बुझाइत अछि जे फेर अहाँ सभ सूति रहलहुँ घोर निन्नमे सपना देखबाक लेल, खाली आ खाली सपना देखबाक लेल।"

सूतब एक रंगक गप्प भेल। सपना देखब दोसर रंगक आ सपना देखि ओकरा क्रियान्व्यन करब तेसर रंगक गप्प भेल। मुदा ई तीनू एक दोसरसँ संबंधित अछि प्रजातंत्रक नेता जकाँ। एह कड़ी महँक जँ कोनो कड़ी टूटि गेल तँ सभटा खेल खतम आ पैसा हजम ।

“आ भ्रम की छैक।"

"अच्छा, अच्छा उठि गेलहुँ की ?"

"हँ कनेक आँखि लागि गेल छल"

"हँ से तँ लगबे करत हिस्सक अछि ने। मुदा हम एहि प्रसंगकँ छोड़ि अहाँक प्रश्नपर आबी से उत्तम। ओना अहाँक प्रश्नक उत्तर जतेक कठिन ततबे सरल। आब अहाँ ई उदाहरण नहि देब जे संसारे भ्रम थिक। ई गप्प हमरो बूझल अछि। मुदा एहि बाटे जाएब हमरा अभीष्ट नहि।"

"हँ तँ अहाँ हमरासँ की पुछने छलहुँ, इएह ने जे भ्रम की थिक। अच्छा एकटा गप्प कहूँ, अहाँ सभ त निश्चित रूपँ मैथिली साहित्यक प्रेमी हएब। हएबे करब। जकरा पाबि कऽ अनेरे पुरस्कार ओ सम्मान भेटैत हो ओकरासँ प्रेम नहि करक तँ करबैक केकरासँ। हँ तँ जखन अहाँ लोकनि साहित्यक प्रेमी छी तँ किछु ने किछु कहबी जनिते हएबैक। आब अहाँ सभ मोने-मोन

कहब जे ईहो कोनो पुछबाक गप्प छैक। मुदा हम जनैत छिऐक जे गप्प छैक। आब जखन गप्प कहबीपर एलैक अछि तखन अहाँ सभकँ तँ एकटा कहबी मोने हएत ने औ? कोन, जनैत छियैक ? वएह जाहिमे कहल गेल छैक जे अपने सूतल छी आ विआह होइत अछि।" आब अहाँ सभ किछु-किछु बुझए लागल हएबैक।

"की कहलहुँ, एखनो धरि नहि बुझलिअइ। ठीक छैक तखन हमरा दोसरो कहबी कहए पड़त।"

"जेना"

"जेना की ओ कहबी छैक-अपने नहाइत छी आ कीदन दहाइत अछि।" आबो बुझलिअइ यौ? की बजलहुँ, एखनो धरि बुझाएल ई गप्प। अरौ बाप रौ बाप। आब हम कोना बुझाएब अहाँ सभकँ। अच्छा, कोनो गप्प नहि, एहि बेर हम तेरहम विद्याक प्रयोग कए रहल छी।"

"अर्थात्।"

“अर्थात् जे आब हम सोझे-सोझ गप्पकेँ खोलि कऽ कहब।"

"कहू"

"हँ, सुनल जाए। मनुख जा धरि सपना देखैत अछि ता धरि तँ ठीक आ आवश्यको छैक, मुदा जहाँसँ मनुख सपनामे क्रियान्वित काज के वास्तविक जीवनमे सत्त बूझि लैत छथिन्ह ओही ठामसँ भ्रम शुरू भए जाइत छैक। एकरे जँ दोसर तरहें एना कही जे-सपना देखब जरूरी छैक मुदा सपनामे भेल काज के वास्तविक जीवनमे बिनु हाथ-पएर डोलेने सत्त मानब भ्रम थिक। आब तँ बुझिए गेल हेएबैक जे सपना कि थिक आ भ्रम की।"

"आबो बुझलिअइ औ"

"की भेल औ"

"ओह फेर सूति रहलिअइ की ? जाउ, सूतू ग।"

**घटनाक गप्प :**

पुरबा बहैए

मच्छर कटैए निन्न नहि अबैए

कनियाँ मोन पड़ैए...

टेपसँ मधुर गीत बहार भए रहल छल आ एम्हर बाबू साहेब अपन मित्र दिलीपकेँ रातुक सपनाक संबंधमे सुना रहल छलाह। बाबू साहेब दिलीप के कहलखिन्ह-"बुझलह रातुक सपनामे तों हमरासँ प्रश्नपर प्रश्न करैत चल गेलह आ हम जबाबपर जबाब दैत।"

दिलीप अविश्वासक भावसँ साहेब दिस तकलक आ पुछि देलकै-"कहक तँ जे हम तोरासँ की-की पुछलिअह आ तो हमरा की-की जबाब देलह। बाबू साहेब जाँघपर हाथ मारैत बजलाह-"एहीठाम तँ मारि खा गेलहुँ। एखन धरि मोन नहि पड़ल अछि। भोरेसँ मोन पाड़ि रहल छी। दिलीप हँसि देलथि। बाबू साहेब थोड़ेक रुष्ट होइत पुछलखिन्ह-की विश्वास नहि होइत छह ? दिलीप पूर्ववत भावसँ उत्तर देलखिन्ह "सपनों सभ कोनो विश्वास करबाक वस्तु होइत छैक। प्रत्येक दिन-रातिमे प्रत्येक मनुष्य नहि जानि कतेक सपना देखैत हेतैक। के गनती राखता हँ जँ ओ वास्तविक जीवनमे सत्त हुअए तखन ने ओकरा सत्त मानल जाए।" बाबू साहेबक

मुँह अप्पन सन भए गेलन्हि, मदा कनेकबे देर धरि। किछु देर घरि ओ किछु बिचारत दिलीपसँ जिज्ञासा केलखिन्ह अच्छा मीत एकटा गप्प कहअ जे वस्तु सच का आकर छाँह?

आ दिलीप अकबका गेलाह अनचोकेमे एहन प्रश्न सुनि कऽ। किछु ने फुरेलन्हि उत्तरमे। सोचमे डूबि गेलाह। मुदा कतेक देर धरि, किछु ने किछु त उत्तर देबहे पड़तनि। किछु विचारैत ओ गंभीर स्वरमे बजलाह-"दुनू सत्त।"

बाबू साहेब फेर पुछलखिन्ह "कोना"

दिलीप फरिछबैत कहलखिन्ह- "ई गप्प तँ निश्चित छैक जे वस्तु सच थिक आ वस्तुएसँ त छाँह होइत छैक, तँइ वस्तुक संगे-संग छाँहो सत्त।"

बस आब की छल बाबू साहेब खुश होइत पुछि देलखिन्ह "अच्छा मुदा ई कहह जे वस्तु सत्त छैक तँइ ओकरासँ उत्पन्न छाँह सेहो सत्त भए गेल। मुदा तोरे कथनानुसार सपना फूसि आ ओकर सकार रूप सत्त, एहन दोहरा भाव किएक जखन की मूल प्रश्न एकै छैक। जेना वस्तु ओ ओकर छाँह एक दोसरसँ संबंधित छैक तेनाहिते संपना आ ओकर सकार रूप एक दोसरसँ संबंधित छैक।" दिलीपपर ई दोसर बेर बज्जर खसलैन्ह। ओ बिनु पपनी खसेने बाबू साहेब दिस देखए लगलाह आ बाबू साहेब दिलीपक आँखिमे।

**घटनाक पछातिक गप्प :**

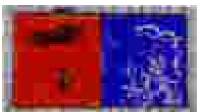
एहि कथामे ने किछु सार छैक ने रस से हम मानैत छी। मुदा कनेक काल लेल हम अथवा अहीं जँ दिलीप भऽ जाइ तँ बाबू साहेब के हेताह ? के जोखिम उठा सकैत छथि बाबू साहेब

बनबाक लेल ? ई प्रश्न जतबे अनिर्णायक छल ततबे एखनो अछि आ आँगा रहत की नहि रहत से हम नहि कहि सकी, कारण हम कोनो भविष्यवक्ता नहि छी।

मुदा प्रश्न तँ सोझामे ठाढ़ अछि। जे व्यक्ति केकरो एक पक्ष के सत्त मानैत छथिन्ह त ओकर दोसर पक्ष के फूसि किएक ? जखन की दूनू पक्ष एक दोसरसँ संबंधित छैक। अविभाज्य छैक। प्रश्न तँ उठबे करतैक, आखिर किनको लेल ब्रह्म किएक सत्त आ माया किएक फूसि ? प्रश्न बहुत रास आबि सकैत अछि। बड़ जोरसँ रोकलाक पछातिओ। आ जे मायाकँ सत्त मानत छथिन्ह से ब्रम्हकँ फूसि किएक ?

प्रश्नक काज छैक बढ़नाइ बढ़बे करतैक, खाली हम अहाँ एक दोसरक मुँह देखैत रहबैक। अच्छा ई कहू जे - प्रकृतिक उद्दीपन सत्त की आत्माक द्वन्द सत्त की इन्द्रियक दमन सत्त। सत्त की छैक।

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

प्रश्न बढ़ले जा रहल अछि।

राम सत्त की रावण ? केओ कहताह राम केओ रावण। मुदा की रामक बिनु रावणक आ रावणक बिनु रामक अस्तित्व संभव छैक। ई प्रश्न सभ भूतकालक थिक से अहाँ कहि सकैत छियै संगहि-संग अहाँ हमरा भूतजीवीक उपमा सेहो दए देब, तँइ आब हम वर्तमान कालमे प्रवेश करब।

आब अहीं कहू जे एहि मेंसँ सत्त की छैक अमेरिकाक दादागीरी, पाकिस्तानक आतंकवादी, इरानक स्वाभिमान, चीनक कूटनीति की भारतक शान्ति। सत्त की छैक एहिमेसँ। अहाँ कहबे करब जे अमेरिकाक दादागिरी आ पाकिस्तानक आतंकवादी फूसि आ भारतक शान्ति सत्त। मुदा ई भावना भने अहाँक देश-प्रेमक परिचायक हुअए। मुदा एकरा निरपेक्ष नहि कहल जा सकैए। अंततः शान्ति की छै। आतंक एवं दादागिरीक दमनक पश्चात् जे आनंद बुझाइत छैक ओकरे नाम हम अहाँ शान्ति देने छियै ने। आब अहीं सभ सोचिऔ कनेक जे जँ आतंक नहि हेतैक तँ शान्तिक उत्स हेतैक कतएसँ आ जँ कहींसँ उत्स भइओ गेलैक तँ, हेतैक केकरा लेल। तँइ आतंको सत्त आ शान्तियो सत्त।

"अपनेक कहक अभिप्राय ?"

"अच्छा उठि गेलहुँ। बड़ड देरक पछाति निन्न टूटल अहाँक ?"

"हँ, फेर कनेक आँखि लागि गेल छल!"

"अच्छा "

"हँ त हम अपनेक अभिप्राय पुछैत छलहुँ"

"अभिप्राय ? हँ तँ हमर कहक अभिप्राय जे संसारमे सभ सत्त थिक"

"अच्छा मानू जे सभ सत्त थिक तँ फूसि की थिक। की पृथ्वी फूसि विहीन अछि"

"नहि-नहि, इहो कहब निरपेक्ष नहि हएत जे पृथ्वीविहीन अछि"

"अँए की बजलहुँ, एखने कहैत छलियै जे पृथ्वीपर सभ सत्ते अछि आ एखने कहलिअइ जे पृथ्वी फूसिविहीन नहि छैक। एना दुचित्तापन किएक ?"

"सरकार ई दुचित्तापन नहि थिक। हम जे पहिने कहलहुँ सेहो सत्त आ एखन जे कहलहुँ सेहो सत्त"

"फेर अहाँ गप्पकेँ घुरछिया देलियै" "नहि सरकार गप्प तँ एकदम सोझ छैक, खाली हमर अहाँक मोन बौआ रहल अछि"

"ई अहाँ की सभ बाजि रहल छी से नहि जानि"

"जानए के प्रयासो तँ करियौ"

"तखन अहीं कहू".

"की"

"इएह जे अहाँक दूनू गप्प कोना सत्त"

"हम कहैत छलहुँ जे शान्तियो सत्त आ आतंको सत्त सएह ने"

"हुँ"

"अच्छा आब एकटा गप्प सूनू मानू जे एकटा आतंकवादी आतंकक प्रसार कएलक आ नुका गेल। तकरा पछाति शासक ओकरा ताकि-हेरि कऽ समुचित दंड देलक। आब एहि गप्पकेँ नीक जकाँ बुझियौ आतंकवादी जे आतंक प्रसार कएलक ई भेल आतंकवादीक सत्त आ शासन ओकरा दंड देलक। ई भेल शासनक सत्त। मुदा की देखैत छिऐक हम-अहाँ सभ। आतंकवादी अपन सत्त देखा चल जाइत अछि आ शासन चुप्प रहैत अछि। इएह चुप्पी तँ फूसि थिक, भ्रम थिक। रावण सीताहरण कए लैत अछि आ आबक राम रामेश्वरक स्थापना कए घूरि अबैत छथि, इएह घूरि जेनाइ तँ फूसि थिक, भ्रम थिक। शासनक सत्त तखने रहतैक जखन की ओ आतंकीकेँ दंड देत। रामक सत्त तखने जखन की ओ रावण के परास्त कए सकथि। मुदा से नहि भए रहल आ ई जे नहि भए रहल सएह तँ फूसि आ भ्रम भेल। आ इएह फूसि इएह भ्रम चारू दिस पसरि रहल अछि। इएह आँगन, दुआरि, चौकठि, बड़ेरी, मोन, आत्मा सन के गछारने अछि। आ हम-अहाँ इएह फूसि इएह भ्रमक दुनियाँमे बौआ रहल छी, एहि छोड़सँ ओहि छोड़, एहि आरसँ ओहि पार धरि हाथमे एकटा टूटल छौकी लेने।

**अपन मंतव्य** editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

आनन्द कुमार झा

**मैथिलीक वर्तमान रंगमंच , धर्मिता आ स्वतन्त्रता**

जखन हमर चिन्तन मैथिली रंगमंचक स्वतन्त्रता दिस जाइत अछि तँ हम पबैत छी - बेसी नाटककार रंगमंचक पक्ष राखए लगैत छथि । जखन की हुनका अपन नाट्य लेखन आ ताहिमे आबि रहल अवरोधक तत्वकेँ उजागर करबाक चाहिअनि । से ओ जानि - बुझिकेँ तकरा झाँपैत रहैत छथि । से मात्र अहि दुआरे जे हुनक नाटक रंगमंच पर प्रदर्शन हुअएह । हुनका एकरती चिन्ता नहि रहलन्हि आकि रहैत छन्हि जे हम एक साहित्यकार छी । हमर सफलता नीक साहित्य लेखनमे अछि । हम पहिनहुँ कहलहुँ अछि जे रंगमंच स्वतन्त्र विधा छी । ओकरोमे जहिना साहित्यमे विभिन्न विधा नाटक , कथा , उपन्यास , कविता सभ अछि । तहिना रंगमंचोक अनेक विधा छैक , जेना - नाटक , नृत्य , गायन , बाजन , एकल अभिनय इत्यादि । आब एतए प्रश्न उठैत अछि आ चिन्तन करैक अछि । जे हमरा लोकनि मैथिली भाषामे जखन जखन रंगमंचक चर्चा करैत छी तँ मात्र नाटकक विमर्श ठार कएल जाइत अछि । से किएक एना जानि बुझिकेँ कएल जाइत अछि ? से अहि दुआरे जे ओहिमे साहित्य पक्षक लोकक बोलबाला रहैत अछि । रंगमंचीय विभिन्न विधाक विशेषज्ञ लोकनिकेँ कतियाएल जाइत रहलाह अछि । ओ दहोदिसिआ जे साहित्योमे अपन स्थान सुरक्षित कएने रहए चाहैत छथि आ रंगमंचहुँ पर सफलताक सिरही चढए चाहैत छथि । मुदा से सम्भव नहि छैक ओ कतहुँ भएकेँ नहि रहैत छथि । मुदा अहि खेलमे सभसँ बेसी नुकसान जँ ककरो होइत अछि तँ ओ छी मैथिलीक रंगमंच । जतए नाटककार तँ ओतबहि रहैत छथि मुदा कलाकार स्थापित नहि भए पबैत छथि । कलाकारक फेर बदल होइत रहैत अछि ओकरा अपनहि मंच पर कतियाएल जएबाक अनुभव अवश्य होइत रहैत हेतैक । अन्ततोगत्वा ओ निरीह कलाकार हारि - थाकिकेँ रोटिओ जुड़बैक योग्य ओ नहि रहि पबैत छथि तहन विधा छोड़ि परा जाइत छथि । आहाँ गौड़ कएकेँ देखिऔक मैथिली रंगमंचक कलाकार ओतबहि गोटए सुरक्षित स्थान कए सकलाह अछि जे कोनो ने कोनो मंचसँ जुड़ल छथि मैथिलीमे एखनधरि बहुत कमे आदर्श कलाकार बनि सकलाह अछि ( हम तँ कहब नहि बनि सकलाह अछि ।) जिनका सम्पूर्ण मिथिलाक लोक चिन्हैत हेतनि आकि स्वीकार करैत होएतनि । सम्पूर्ण मंच पर ओ अभिनय करताह से सपना सपनहि रहि जाइत छन्हि । अन्तमे जखन पीढ़ी परिवर्तन होइत अछि तँ नाटकक कालजयी होएबाक चर्चा तँ होइत अछि मुदा ओहिमे अपन खून-पसीना सुखेनिहार कलाकारक नामो - पता हरा दैत अछि । ई केहेन रंगमंचक स्वतंत्रता । विद्यापतिक नाटकक चर्चा तँ गुमानसँ करैत छी । फेर ओकर

मंचन सभमे अभिनय केनिहार कलाकार लोकनिक नाम - गाम किएक बिला गेल । की एकर दायित्व रंगकर्मी, रंगमंचीय सत्ता भोगनाहर लोकनिक नहि बनैत अछि ।

**अपन मंतव्य** editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**




**मुन्नाजी**

**बीहनि कथा-- मानकीकरण ओ तुलनात्मक पक्ष**

मैथिली कथा साहित्य मूलत: संस्कृत भाषा साहित्य सं अनुदित भ'अपन पएर पसारने छल।एकर बीजारोपन चन्दा झा द्वारा विद्यापतिक 'पुरूष परीक्षा' सं भेल छल।कालान्तर मे मैथिली कथाकार बाङला कथा माध्यमे पाश्चात्य कथासाहित्य सं परिचित भेला।तत्पश्चात मैथिली कथा लेखनक कथ्य,शिल्प आ विषय परिमार्जित भ' मैथिली कथा साहित्य के नव दृष्टि देलक आ ओ संस्कृतक शब्द ,कथा/गल्प नामे लिखाइत रहल।पछाति प्रो. रमानाथ झा सदृश्य विद्वान/आलोचक ,अंग्रेजीक प्रभावे एकरा अंग्रेजी मे Short Story आ ओकर अनुवाद ' लघुकथा कहि संबोधित केलनि।तहिया सं इ कथा/ गल्प ,रचना त' ओही नामे होइत रहल मुदा विधागत ' लघुकथा ' (Short Story) विधाक अन्तर्गत मूल्यांकित होइत रहल।आ ताहि परिणामे मैथिलीक सब संग्रह पर अंग्रेजी मे Collection of Short Story अनिवार्य रूपें लिखल भेटत।

तकर पछाति मैथिली साहित्यक इतिहासकार लोकनि सेहो कथा/गल्प नामक रचना कें लघुकथा विधाक श्रेणी मे राखि व्याख्या . करैत रहलाह।" संप्रति गल्प वा लघुकथा,उपन्यास सं अधिक लोकप्रिय भेल जा रहल ऐछ।तकर प्रबल कारण पाठक वर्ग मे क्रय शक्तिक क्षीणता वा पलखतिक अभाव, से नै जानि।" --डॉ. जयकान्त मिश्र-मैथिली साहित्यक इतिहास(प्रकाशक- साहित्य अकादमी)ऐ फरिछओठक पछाति अंग्रेजी साहित्यक विधाक पृष्ठभूमि मे ओहि विधा परिवारक अंग भ' स्थापित भेल। आगू ओकरा आओर फरिछबैत दुर्गानाथ झा श्रीश लिखै छथि--" आइ मैथिली साहित्यक एक मात्र उपलब्धि थिक लघुकथा(Short Story) पूर्वक कथाकार लोकनि गल्प आ उपन्यासक बीच शिल्पगत अन्तर नै बुझैत छलाह।मुदा आब इ स्पष्ट ऐछ।जाहि सं लघुकथा(कथा/गल्प नामे) विधागत स्वतंत्र परिचिति बना पओलक ऐछ।"--मैथिली साहित्यक इतिहास- दुर्गानाथ झा श्रीश।"

हमरा मैथिली प्रतिष्ठा वर्गक छात्र रहने मैथिली साहित्यक इतिहासक अध्ययनक अनिवार्यता छल। एहि अध्ययनक क्रमे मैथिली कथा के विधागत ' लघुकथा( Short Story)बुझबाक अवगति भेल। हम आश्चर्य चकित रही अग्रज सबहक हिन्दी लघुकथा विधाक मैथिली अवतरणक रूपें अंधानुकरण पर, ई की ?पहिने सं जे विधा विद्यमान आ स्थापित ऐछ(कथा/गल्प नामे) ' लघुकथा(Short Story)।तहन ओइ विधाक दोहरीकरणक की खगता ?माने पिता आ पुत्रक एकहि नामे पुकार ! जहन की दुनूक चरित्र,प्रकृति आ क्रियाकलाप एक दोसराक विपरीत। फेर नकल वा मिझ्झरक अज्ञानता किएक ? ओही अज्ञानता वा अंधानुकरण सं पार पएबाक आ विधाक शुन्यता के भरवाक लेल अवतरित भेल बीहनि कथा विधा (1995)।

सहयात्री मंच ,लोहना (मधुबनी)द्वारा भेल साहित्यिक बैसार मे सामूहिक रूपें सर्वसम्मति सं एहि विधाक अवतरण भेल छल। ऐ विधाक नाम की राखल जए ताहि पर बहसक पछाति श्री राज द्वारा ताकल नाम-" बीहनिकथा" पर सर्व सम्मति सं स्वीकृति द'आगू बढ़ाओल गेल।आ तहिया सं मैथिली कथा साहित्यक दू गोट विधा-पहिल,लघुकथा(Short Story)आ दोसर " बीहनि कथा(Seed Story)चलन सारि मे रहि गेल।

25 बरख सं कछुआ चालि सं चलैत बीहनि कथा विधा साहित्यिक छद्म खरहा सं टपि अपना के विजेता कहेबाक पात्रता आब हासिल क' लेने ऐछ।जन्मक पछाति ठेहुनिया मे कतेको के सैद्धांतिक पटकनिया दैत डेगा डेगी बढ़' लागल। तकर पछाति एकरा दबेवा/माटि मे गोड़बा लेल किछु तथाकथित/स्वघोषित विद्वान सक्रिय भ' गेला। फलत:एकर चालि बाधित होइत ठमकि सन गेल। सोझां मे ' एकला चलो रे' के उघैत करीब एक दशकक यात्रा एकरा हेरेबा लेल वेश रहल।2010 मे पुन: इ कान्ह उठेलक।आ ताहि मे पछिला सं जेरगर समूह नव आँखि-पाँखिक संग अंगेज पुन: सोझां आनि थिर केलनि।' विदेह , इ पाक्षिक' बनल राजपथ आ सारथी भेलाह संपादक-.गजेन्द्र ठाकुर आ सहायक संपादक-उमेश मण्डल। ऐ एक दशकक भीठ पड़ल साहित्यिक जमीन पर श्री राजक ' बीहनि कथाक साहित्यक बीराड़क बीहनि सं रोपनि भेल।तकरा हरियरी अनलनि गाम-घर, पत्रिकाक संपादक - श:री रामभरोस कापड़ि भ्रमर।आ ऐ तरहें श्री राज भेलाह' वात्सल्य ' बीहनि कथा(2003)सं एकर पहिल प्रकाशनक स्वामी।

**बीहनि आ कथा शब्दक उत्पत्ति**

------------------- -------------------

संस्कृतक ' ब्रीही ' शब्दक अर्थ होइछ बीज आ मैथिली मे बीहनि/बीहन/बीहैन सेहो ओही शब्दक मूलार्थ मे निहित।--प. भवनाथ झा



ISSN 2229-547X VIDEHA

कथा-संस्कृतक कथ् धातु सं बनल।जकर तात्पर्य होइछ- कहब वा वर्णन करब।

**बीहनि कथाक अर्थ आ परिभाषा**

---------------------------------------

बीज/बीजम संस्कृत शब्द थिक।यथा-यज बीजै:सहस्त्राक्ष -महाभारत

कथा सेहो संस्कृत शब्द थिक।यथा-कथासरित्सागर ।

कथाक मूलत: छ तत्त्व संग निर्मित होइछ।

01-कथावस्तु-कथाक संरचनात्मक रूप कथानक अथवा कथावस्तु कहाइछ।एकरा मे चारि प्रमुख स्थिति होइछ-आरम्भ, आरोह,चरम आओर अवरोह।

02-चरित्र चित्रण-उपपस्थित पात्रक गुण-दोषक वर्णन।रिजर्व चित्रण कहाइछ।

03-संवाद-पात्रक मनोदशाक वर्णन में प्रयुक्त शब्द।

04-देश काल-स्थितिक वास्तविक विवेचना लेल तैयार वातावरण।

05-उद्देश्य-कथा सृजन में उदघाटित मूल वा सार्थक पक्ष।

06-शैली-प्रस्तुतिकरणक कलात्मक विश्लेषण।

अर्थात् बीहनि कथा पूर्णत: संस्कृत शब्दक उत्पत्ति थिक। जेना- लघुकथा

मुदा साहित्यिक विधाक रूपें जाँची त' इ विधा मूलत:स्वतंत्र आ पूर्ण रूपे मैथिली साहित्य मात्रक विधा थिक।आयातित/ नकल नै।

बीहनि माने बीज/बीया।जाहि मे विकास करबाक गुण निहित होइछ।मुदा ओ अविकसित रहैत ऐछ।समय अएला पर विकसित होइत ऐछ।ओकरा मे एक सं अनेक होएबाक गुण रहबाक चाही।बीहनि कथा-एहेन कथा,जे अनेक कथा(कथा/उपन्यास)के जन्म देबाक क्षमता राखए ओ बीहनि कथा भेल/हएत।अन्यथा नै।

तें बीहनि कथा मे निष्कर्ष नै हेबाक चाही।---डॉ. भवनाथ झा

बीहनि कथा विधाक नामकरण कर्ता श्री राजक मतानुसार--

बीहनि कथा,ओइ बीयाक समान ऐछ जकरा मे झमटगर/पूर्ण गाछक संभावना हो।मुदा ओ गाछ पीपर/पाकैड़ नै,पौध रूप मे हो।परञ्च बोनसाइ नै।

पौध रूप सं तात्पर्य जे कथ्य/शिल्पें गसल मुदा शब्दक संख्ये सए सं डेढ़ सए धरि हुअए। मुदा बन्हन मे बान्हल नै। रचनान्त निकसगर ( निस्तार देने) नै हुअए। निष्कर्ष पाठक पर।

बीहनि कथाक चर्चित आ लोक प्रिय कथाकार, संपादक आदरणीय घनश्याम घनेरो ऐ विधा के परिभाषित करैत कहै छथि---

कोना बुझबै जे इ रचना बीहनि कथा भेलै:--

(क)शब्दक मानक औसत सव सौ हो

(ख) विषय मारक ,आ सोचबा पर विवश करैत हो।

(ग) कथ्य एहेन,जेना लगैत हो कथा/उपन्यास वा कोनो गद्यक सार हो।

(घ) कथा मे निष्कर्ष नै हो।

कथा साहित्यक सशक्त हस्ताक्षर श्री राजकुमार मिश्र जीक विचारें---

(क) आकारगत छोट सं छोट हो

(ख) कथ्ये फरिछएल आ गसल हो

(ग) संपूर्ण गद्यक संभावना निहित हो

(घ) ऐ सं इतर, अव्यवस्थित रचना फोंक हएत। ओ बीहनि कथा नै।

**बीहनि कथा विधाक मानकीकरणक आधारभूत इकाइ**

गद्य साहित्य, मूलत: कथा विधाक मानकता तयकरणक आधार अंग्रेजी साहित्य ऐछ।अंग्रेजी साहित्यक अनुसार विश्व भरिक कथा ,अंग्रेजीक Flash fictionक अन्तर्गत निहित ऐछ।इ फ्लैश फिक्सन छ: खण्ड मे विभाजित ऐछ जकर तेसर खण्ड टेलब्रा(Tellbra )क अन्तर्गत मैथिलीक बीहनि कथा विधाक नियामकता सन्निहित ऐछ।

फ्लैश फिक्सन(टेलब्रा)पर आधारित बीहनि कथा मापनक महत्वपूर्ण बिन्दू :-

01-कथ्य/शिल्पें पुष्ट जाहि कथाक न्यूनतम शब्द स. 20 आ अधिकतम 150 हो।

02-कथा साहित्यिक मानकताट परिपालक हो।यथा कोनो संस्मरण वा शब्द संग्रह मात्र बीहनि कथाक श्रेणी मे नै राखि सकैछ।

03-कथा,एकटा बीजक कथाक प्रतिदर्श हो।अर्थात एहेन कथा जाहि सं कथा/उपन्यास आदिक सर्जनाक संभावना प्रबल हो।

04कथा, निकस पर जा स्थिर नै हो। अन्त खूजल मुदा भावपूर्ण हो।

05-संपूर्ण कथा कोनो संदेशप्रद वा सकारात्म्क उद्देश्यक हो।शब्दक स्थूलकाय मात्र नै।

उपरोक्त मानकता पर ठाढ़ रचना बीहनि कथा विधाक रचनाक रूपें अपन जग्गह पेबा मे सक्षम भ' पाओत।तकर पहिल मूल्यांकन लेखकक,पछाति संपादक ओ आलोचकक हाथ ऐछ।

"कोनो नव सफलता हासिल करवा लेल पुरान मे पैस' पड़त।,खंघार'पड़त।तहन परिमार्जित फल सोझां आओत।जे भविष्यक नव बात गढ़ि मोकाम धरि ल' जएबा मे सक्षम बना पाओत।'

एहि तरहें मैथिलीक लघुकथा विधा(कथा/गल्प)नामे लिखाइतक पछाइत बीहनि कथा विधा वैश्विक कथा मापदण्डें एकटा नव प्रतिमान गढ़ि,मैथिली साहित्य मे मैथिलीक अपन एक मात्र विधाक रूप मे स्थापित भेल।इ कोनो आन आयातित/नकल,विधाक विधान्तरण वा नामान्तरण नै।स्वयं मे मानक स्वतंत्र विधा हेबाक परिचिति कायम केलक।

एहि प्रकारें मैथिली कथा साहित्यक दू टा स्वतंत्र विधा अपन अस्तित्व कायम क' रखने ऐछ।पहिल-लघुकथा (Short story)जे कथा/गल्प नामे लिखाइछ।ठीक ओहिना जेना कि अंग्रेजीक Poetry,मैथिली मे 'काव्य'



ISSN 2229-547X VIDEHA

नामक विधान्तर्गत-गीत,गजल,,कविता, हाइकु,क्षणिका आदि स्वतंत्र नामे/क्रियाकलापें/चारित्रिक गुणे अपन- अपन परिचिति बनौने ऐछ।मुदा विधागत सबटा काव्य परिवारक अंश वा अंग थिक।

**दोसर-बीहनि कथा(Seed Story)**

उपरोक्त दुनू विधा मध्यआओर कोनो वैध/अवैध विधाक लेल जग्गह वाँचल नै ऐछ। मुदा लघुकथा नामे बलधकेली मे हिन्दी लघुकथा विधाक नकल मैथिली अवतरण के घोसियेबाक असफल प्रयास ठाम ठीम क' मैथिली साहित्य के उकरू बनेबाक षडयंत्र जारी ऐछ।इ भ्रम वा द्वन्द ऐ द्वारे भेल जे किछु मैथिली रचनाकार लघु कथा माने आकारे छोट कथा बूझि नकल करैत रहलाह।ध्यातव्य महत्वपूर्ण बात जे लघुकथा एकटा शब्द मात्र नै,ओहि नामक एकटा स्वतंत्र विधा थिख।जे मैथिली मे अदौ काल सं कथा/गल्प नामे लीखाइत पहिने सं स्थापित ऐछ।आब तहन विचार करी मैथिली सं इतर हिन्दी भाषा साहित्यक अपन विधा " लघुकथा "क मैथिली अंधानुकरण पर।

कोनो व्यक्ति,विषय,बौस्तक गुणक अनुसरण/अनुकरण बेजए नै।मुदा अंधानुकरण कतेक उचित ?

मैथिली साहित्य मे विद्यमान " बीहनि कथा " विधा सं इतर सब विधा कोनो ने कोनो अन्य भाषाक विधा सं आयातित ऐछ।मुदा जत' सं आयातित भेल,ओइ मे आ मैथिली मे अपन मानकता वा प्रामाणिकता सिद्ध केने ऐछ। हिन्दीक लघुकथा विधा जे स्वयं मे आइयो मानक वा प्रामाणिक सिद्ध नै भ' पावि घड़ीक पेण्डूलम जकां डोलि रहल ऐछ।ओइ मे आइयो कते शब्दक वा कोन रचना ओइ विधाट रचना ऐछ की नै,तै पर मंथन चलिये रहल ऐछ।एते दशकक लेखनक पछातियो मूल्यांकन मे लघुकथाक जग्गह लघुकहानी सं जोइर व्याख्या होइछ।जतेक मुड़ी ततेक पीरी बला गप्प।एहेन अव्यवस्थित विषय/बौस्तक अंधानुकरण ,हास्यास्पद आ कि उठल्लूपन ? "अपने आँखिगर रहैत, अन्हरा के सहारे बाट ताकब कतेक उत्कीर्णा बला बात।"

हिन्दी लघुकथा विधाक अंधानुकरणक प्रबल पक्ष रहल हएत,हमर सबहक सामान्य शिक्षाक हिन्दी माध्यम।हम सब एकेडमिक शिक्षा ग्रहण सामान्यतया हिन्दी भाषा माध्यमे केलहुँ।किताब,पत्र/पत्रिका क पाठनक भाषा हिन्दी रहलाक कारणे हिन्दी साहित्यक विषय-वस्तु पर निर्भर स्वाभाविक छल।तें हिन्दी साहित्यक संतान(विधा)कें पोसपूतक रूप मेअवैध रूपें अंगेज लेब अस्वाभाविक नै।ओही देखाँउसे वा नकल क'मैथिली मे लघुकथा संग्रह नामे 1972 मे आयल पहिल पोथी-" जे की ने से "--डॉ. हँसराजक।आ ,1975 मे तत्कालीन नवतुरिया कथाकार डॉ. अमरनाथक " क्षणिका "।दुनू पोथीक रचनाकार(आमुख मे)ऐ संग्रहक एको टा रचना ,कोनो पत्र/पत्रिका मे प्रकाशित नै हेबाट बात स्वीकारने छथि।ऐ सं इ स्प्ष्ट ऐछ जे मैथिली मे एकर कोनो अस्तित्व नै रहै।इ तहिया के घटना/बात छैक जहिया मैथिली सं इतर अन्य भाषा मे कथ्य/शिल्पें मजगूत मुदा

आकारगत छोट रचनाक एकटा स्वतंत्र विधाकरूपें/नामे सृजन भ' रहल छलै।यथा-संस्कृत -लघ्वी,हिन्दी-लघुकथा,पंजाबी-मिन्नी कहाणी/कथावां,उर्दु-अफसांचे,ओड़िया-क्षुद्रकथा......आदि।

मैथिली मे हिन्दी विधाक अंधानुकरण क शुभारंभ क' किछु मैथिली कथाकार स्वघोषित विद्वान हेबाक दंभ पोसलनि।तकर करीब पचीस बरख धरि अंधानुकरणित लेखन सेहो सुषुप्त वा शुन्य रहल।पुन: 1997 मे लघुकथा संग्रह नामे दू गोट पोथी,शिलालेख-तारानन्द वियोगी आ खण्ड-खण्ड जिनगी -प्रदीप बिहारीक आयल।से ताहि अवस्था मे जाहि सं दू वर्ष पहिने(1995 मे)मैथिलीक अपन एक मात्र विधा बीहनि कथा अवतरित भ' चूकल छल।ऐ विगत पचीस वर्षक नमहर अन्तराल मे अंधानुकरणित हिन्दी लघुकथा विधाक मैथिली अवतरण पर मैथिली मे कोनो मानकता तय नै भेल छल।(आइ एकैसम सदीक दोसर दशक धरि नै भेल)।जेना पहिने मिथिला मे सत्यनारायण भगवानक पूजन पर सुनता उपासक चलनि छल।तहिना मैथिली रचनाकार लघु कथा शब्द सुनि मात्र लघु कथा लिखबाक नकल करय लगलाह।जहन की हिन्दी मे लघु कथा शब्द मात्र नै,ओहि भाषाक एकटा स्वतंत्र विधा ऐछ।आ मैथिली मे कथा/गल्प नामे लिखाइत लघुकथा विधा पहिने सं विद्यमान छल।आब नकल क' लिखल जाइ बला रचना-जे बीस शब्द सं आठ सौ धरिक ऐछ।तखन प्रश्न उठैत जे कतेक लघु,ककरा सं लघु ?ऐ पर प्रकाशित कोनो तय मानकता नै छल(ऐछियो नै)जाहि सं इ सुनिश्चित कएल जए सकए जे कोन रचना लघुकथा विधान्तर्गत स्वीकार वा अस्वीकार कएल जा सकए।प्रसिद्ध कथाकार ओ इतिहासकार डॉ. मायानन्द मिश्र एकरा नकारैत लिखने छथि--" मैथिली मे लघुकथा नामे एक अन्य कथा लेखनक विकास भेल ऐछ जे समकालीन कथा/गल्प नै,अपितु चुटुक्काक निकट ऐछ।"--मैथिली कथाक विकास(संपादक- बासुकीनाथ झा)साहित्य अकादमी -2003

आधार हीन लेखने मठोमाठ हेबाक/कहेबाक परम्पराक निवहता मे किछु रचनाकार लीन रहलाह।जहन कि बेसुरा तान सं प्रसिद्धि पेनिहार गायक जकां बिना मानकताक लेखन मे लीन रहनिहार अपना के प्रयोगवादी आ प्रतिष्ठित बुझनिहारक रचना आ ओ तथाकथित विधा स्वय: खारिज ऐछ।ताहि लेल अदखोइ-वदखोइ आ माथा पच्चीक खगते कोन?

हिन्दी विधाक मैथिली अवतरण लघुकथा नामक रचना आइ धरि बसात मे बौआइत ऐछ।जमीन पर अनबाक कहियो कोनो निश्तुकी प्रयास नै भेल।ओ तथाकथित विधा/रचना स्वत: खारिज होइत चेतना शुन्य भ' गेल।किएक त' जहन जमीन पर उतरबाक प्रयास केलक तहन आधारहीन हेबाक कारणे सूपक भाटा सन ओँघराइत रहल किएक त' स्थिरताक आधार पहिने सं नदारद!किछु स्वघोषित वा परपोषित विद्वान सब--" डाँरि पारि के ओकरा लक्ष्मण रेखा बुझ' लगलखिन,मुदा डाँरि सोझ भेल की वक्र तकरा सं दूर धरि सरोकार नै।"प्रसिद्ध रंगकर्मी श्री कुणाल ,कथा प्रसंग लिखल अपन आलेखक अन्तिम अनुच्छेद मे लिखै छथि--"आब



ISSN 2229-547X VIDEHA

मैथिली मे लघुकथा नामे किछु रचना सेहो देखाइछ,जे मैथिली साहित्य मे आधार हीन ऐछ।तें ओकर चर्च करब व्यर्थ सन।"--अंतिका-रजतजयन्ती अंक(2008)संपादक- अनलकान्त।

**लघुकथा नामित रचनाक भविष्य ?**

जेना अंग्रेज़ी मे पोएट्री,मैथिली मे " काव्य ' विधा ऐछ।आ ऐ काव्य विधान्तर्गत--गीत,कविता ,गजल,क्षणिका, हाइकु आदि स्वतंत्र नामे आ स्वतंत्र अस्तित्वे छैक।मुदा विधागत सब एकहि परिवार "काव्य "क अंग छै।तहिना अंग्रेजी क शॉर्ट स्टोरी विधा छै ,आ कथा/गल्प ओकर अंग।

मैथिली मे लघुकथा सं इतर दोसर कथा विधा छै " बीहनि कथा "(Seed Story),हिन्दीक अंधानुकरणे लघुकथा नामे सृजित रचना बीहनि कथा विधान्तर्गत ग्राह्य ऐछ।परञ्च बीहनि कथाक तय मानकता पर ठाढ़ होइ बला रचना मात्र।से ओ लघु कथा नामे होइ वा बीहनि कथा नामे।

बानगी स्वरूप देखल जए **डॉ. सत्येन्द्र झा** जीक लघुकथा नामे दू टा रचना-

**इसकूल--**

ओहि गाम मे एकटा दोकान नै छलै।तीन किलोमीटर जाय पड़ै छलै छोटो छीन चीज किनबा लेल।जे कियो कहियो  दोकान फोलबाक साहस केलक ओकरा दोकान मे दोसरे -तेसरे राति चोरि भ' जाय आ तकर बाद दोकान बन्न भ' जाय।चोरवा गामक नाम सं परोपट्टा मे जानल जाइत छल ओ गाम।मुदा नरेशक साहस कहू वा दु:साहस ओ बाहर सं आबि दोकान फोललक ओहि गाम मे।घर मे पिता आ पत्नी विरोध कयलनि मुदा ओ ककरो नै सुनलक।दोकानक स्टाफक रूप मे सभ सँ सेसर चोर के रखलक।ओ चोर सेहो निश्चिंत छल जे जखने बेशी समान जमा होयत कि चोराक सभ किछु ल' जायब। ।नरेश तीन सए टाका ओहि चोरकैं दै छल।शहर सँ समान अनबाक हेतु नरेश ओही चोरबाकैं पठबै छल। क्रमशः चोरवा कोन समान मे कते लाभ होइत छल सेहो धरि बुझय लागल।

आइ ओहि दोकान मे समान भरल छल।आजुके राति चोरबा अपन संगी सभहक संग चोरिक योजना बनौलक।जखन दोकान बन्नक' नरेश चलि गेल तँ चोरबा अपन संगी सभहक संग दोकान मे घुसल।बोरा मे समान सब कसय लागल।एकटा संगी पुछलकै -" कते दामक समान हाथ लागल ?"

दोसर चोर कहलकै-"पांच हजार सँ कम के नै हेतै।"

"मुदा एहि पांच हजार मे तँ मालिक के पांच सयसँ बेशीक फयदा नै हेतै।साढ़े चारि हजार तँ मूलधन छै।"--चोरबा बाजल---फेर ओहिमे हमरो तीन सय के हिस्सा हेतै।" चोरबाक मोन तीत भ' गेलै।ओ अपन मित्र चोर सभके बुझबय लागल--चोरि त' तखने जायज होइछ जखन हमर हक छीनि क्यो अपन घर भरय,मुदा नरेश बाबू तँ ओतबे कमाइ छथि जतेक उचित अछि।ओ नाजायज लाभ कहाँ लै छथि ?"

चोरबा चोरि करबाक विचार बदलि लेने छल।संगी सभ ओकर निर्णय पर सहमति व्यक्त कयलक।बोरा खोलि चोरबा सभ सामान कें पहिने जकाँ सैंतय लागल।नरेश एकटा कोन मे ठाढ़ भ' ई सभ देखैत रहल।ओकरा बचझना गेलै जे ओ कोनो दोकान नहि,एकटा इसकूल खोलने हो।

**विश्लेषण**--उपरोक्त रचना शब्द संख्ये नमहर ऐछ!माने टेलब्राक निर्धारित शब्द संख्या-150 सँ उपर।

कथ्य-प्रेरक,पंचतंत्रक कथा समकक्ष।प्रारम्भिक लेखनक करीब बाझल।

शैली- कथा बला,सेहो पूर्ण नै।छेंट सन।

तें बीहनिकथाक परिधि सं बाहर ऐछ।

**दोसर बानगी**

----------------

**मौअति**

ओ ईमानदार छल।तेँ लोकसभ ओकरा मारय छल।लोकसभ कहलकै- तोरा कुकुरक मौअति मारबौ।ओ चुप्प छल,मुदा प्रसन्न।कारण- ओ मनुक्खक मौअति नहि मरय चाहैत छल।

विश्लेषण-इ रचना निर्धारित शब्द संख्या मे बान्हल ऐछ।

मुदा कथ्य - भाषण वा आदेशक हिस्सा मात्र।

शैलीगत-निष्कर्ष पर पहुँचा देल गेल छैक।

तें इहो बीहनिकथाक हद मे नै रहि रहल।

उपरोक्त दुनू रचना- **सत्येन्द्र कुमार झाक** लघुकथा संग्रह-अहींकेँ कहै छी(2007)।पृष्ठ- 30/31 सँ उद्धृत।

आब अही लेखकक इ तेसर कथा क बानगी नीचाँ ऐछ जे हुनकर नवका संग्रह-"जँ अहाँ सुनितहुँ"(2020) सँ ऐछ ।

**भेटब डूबब**

" अहाँक जीवन मे सभ सँ नीक की लगैत अछि ?"

"अहाँके भेटब...."

"आ अहू सँ नीक.....?"

" हमरा हेरा जएब...?"

उपरोक्त रचना लिखल त' गेल ऐछ लघुकथा नामे मुदा बीहनिकथाक मानकताक करीब ऐछ।

यथा-निर्धारित शब्द संख्या(अधिकतम-150)क भीतर

कथ्य आ शिल्पें गसल। निस्तार विहीन।

तें इ रचना पूर्णत: बीहनि कथा विधाक अंग मानल जा सकैए।शेष निंघेस सदृश्य।ठीक ओहिना जेना कोनो एक कक्षा मे पढ़ैत सब विद्यार्थी परीक्षा समय समान प्रश्न हल करैछ।परिणाम मे न्यूनतम अंक 30% प्राप्ति बला विद्यार्थी मात्र सफल आ शेष असफल घोषित होइत ऐछ।

आब एहने बानगी बीहनि कथा नामे लिखल रचना सँ....

**डागदर साहेब-- मिथिलेश सिन्हा**

बड़ड दिन सँ पत्नी कहैत छलीह जे,हमरा पर किछु धियाने नै दैत छी।खाली मोबाइल मे खुटूर-पुटूर करैत कविता-कहानी रचैत रहैत छी.....जखन बेमारी बढ़त,पलंग पकड़ि लेब...तखन सबटा कविगिरि घुसरि जएत।

एहेन धमकी पर के नहि डरतै यौ?पत्नी कैँ होमियोपैथिक दवाई पर पूर्ण विश्वास छैन्ह।पिछला मंगल दिन शहरक बड़ड पुरान एगो बंगाली डागडर ठाम हुनका ल' गेलहुँ।



ISSN 2229-547X VIDEHA

सांझुक बेर,लगभग आठ-नौ गोट रोगी बैसल छलाह।डागदर साहेब बयस सँ लगभग अस्सी-पचासीक हेताह।एकटा रोगी पर आधा घंटा पूछताछ करैत,अपन डींग डांग सँ रोगी आओर परिजनकेँ अपन बड़प्पनक खिस्सा कहैत समय आगाँ खींचि रहल छलाह।हमर नम्बर दोसरे छल,मुदा घंटा भरि डागदर साहेब लागल रहलाह।

अगल-बगल मे बैसल आन रोगी अकछय लागल।आब हमर नम्बर आएल।

" किनको देखाना हाय ?"

" जी,हमर पत्नी केँ...।"

" हूँ,इधर आइए"

" हम हरि बाबूक बालक थिकहुँ.."

"ओहो,तुम इंजीनियर का बेटा है ।

ओ हमसे ही अपना इलाज कराता था..कैसा है ओ..?"--आन रोगी दीसन तकैत बजलाह।

" जी,ओ मरि गेलाह..."

" ओ गॉड...,तोमहारा माई कैसा है?"

"जी,ओहो मरि गेलीह...।"

हमर जवाब सुनि क' बेंच पर बैसल आन मरीज,बहन्ना बना ससरय लागल....।---डागडर साहेब,आश्चर्यचकित भाव सँ खन हमरा,खन रोगी सबकेँ ससरैत देखय लगलाह।

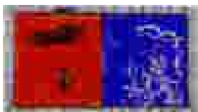
**विश्लेषण:-**

उपरोक्त रचना बीहनि कथाक मानक शब्द स. सँ बाहर ऐछ।

कथा मे उप कथाक समावेश।

कथ्य-शिल्पें कथाक छेंट सन लघु कथा।

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

----मिथिलांगन,अंक-38-39

**निर्वहन--कल्पना झा**

--माय गे! दादी त' हाथे सँ लपे लप तिल-चाउर परसै छलीह,मुदा तों त' चम्मच सँ परसै छें ?

--धुर्र ! ताहि सँ की हेतैक ?

--नहि हेतैक की...?हमरो सबकेँ नीक रस्ता भेटल।

--से की ?

--"इएह जे ' निर्वहन 'मे सेहो 'चम्मच ' लगाओल जा सकैछ।

मिथिलांगन---36-37

**विश्लेषण:-**

इ रचना कथ्य-शिल्प आ शब्द स.मादे पूर्ण मुदा कथा सारक संग बन्न भेल।माने निकस पर कसैत।तें इहो कथा विधागत झूस ऐछ।

**बेटा निगम- घनश्याम घनेरो**

लावारिस लहास पुछलकै :

-- बेटा! नगर निगम?

-- हम तोहर बेटा नहि, कर्मचारी छी।

-- हमरा लेखा तोहीं बेटा।

-- ठिक्के! लोक कें लोक सँ मतलब नहि रहलै तँ...

-- पहिने हमरा घिसिएबह आ की कुकूर कँ?

-- तोरा।

-- पहिने हमरे किए?

-- एत्तेक मनुक्खता अखन छैक, तैं!

-- मनुक्खक लहास कें बादमे आ कुकूर पहिने कहिया सँ घिसिएल जेतै?

-- ई काज हमर अगिला पीढ़ी करत।

घिसिया क' ठेलापर चढ़बैत काल लहासक आँखि कुकूर दिस छलैक।

इ रचना ऐ विधाक सब मानकता यथा- निर्धारित शब्दक भीतर।फरीछएल कथ्य आ गसल शिल्प मे निस्तार रहित पूर्ण ऐछ!

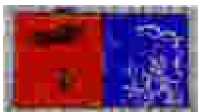
अन्तत:मैथिली साहित्यक दू भाग भेल -लघुकथा (SHORT STORY)आ बीहनि कथा ,(SEED STORY )इ दुनू निर्धारित रूपें निरन्तरता बनौने रहत।शेष फोंक मात्र।

--"पहिने बीहनि कथा,सीढ़ी दर सीढ़ी चढ़ैत रहल।

आ आब................पीढ़ी दर पीढ़ी बढ़ैत रहत।

**अपन मंतव्य** editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

**नारी शब्दक विवेचना**

:: डॉ. अपर्णा

नारी- नारी शब्द नृ अथवा नरसँ बनल अछि। (नृ+अस+दीप= नारी। यास्क नारीकेँ 'नृतू'सँ मानलनि अछि। एहि विशेषणक आधारपर स्त्रीकेँ नारी कहल गेल अछि, मुदा ऋग्वेदमे 'नृ'क प्रयोग वीरताक काज करब दान देब तथा नेतृत्व करबाक अर्थमे भेल अछि आ नर शब्दक प्रयोग सेहो वीर दाता तथा नेताक अर्थमे प्रयुक्त भेल अछि। स्त्रीक नारी नाम सेहो एहि विशेषताक कारण पड़ल होएत। ब्राह्मण ग्रन्थमे कतहु कतहु 'नारी:'पाठ भेटैत अछि मुदा सायणृक मतसँ नारिक भाव नरक उपकारकसँ अछि।[i]

**वामा-** स्त्री सौन्दर्यताक कारणेँ वाम कहबैत अछि। 'वयति सौन्दर्यम'। प्रतिकूल बात कहलासँ सेहो 'वामा'कहबैत अछि। जेना- हक बदल। नहीं, वामाक दुर्गनाम सेहो अछि।[ii]

**अवला-**'अवला शब्द नारीक शारीरिक संरचनाक ध्यानमे राखि प्रयोग कएल गेल अछि। कारण पुरुष जकाँ स्त्रीमे बल नहि होइत अछि। यद्यपति नारीक मानसिक उड़ानकेँ लोहा वैदिक ऋषि सेहो मानैत छलाह आ ओकरा वशमे करब असाध्य मानैत छलाह।[iii]

**सुन्दरी-** सु+उन्द= गिल्लकरब+डीप= सौन्दर्यवती नारी एहि हेतु कहल जाइत अछि जे जकरा देखलासँ मात्र पुरुषक हृदय गिल्ल भऽजाइत अछि। चित्त द्रवित भऽ उठैत अछि अथवा 'सुष्ठानुन्दयति इति नैरुक्ता:।[iv]

वस्तुत: 'सुन्दरी'शब्द ऋग्वेदक 'सुनरी'शब्दक विकसित रूप प्रतीत होइत अछि। ऋग्वेदमे उमाक लेल 'सूनरी'शब्दक प्रयोग भेल अछि।[v]'सुनरी'क तात्पर्य-शोभाशाली सुन्दी।

**प्रमदा-** प्रमदक भाव होइत अछि हर्षा 'प्रमद समदौ हर्ष च।' अतवएब हर्षित, पुलकित स्वभाव होवाक कारणे सेहो स्त्रीकेँ 'प्रमदा' कहल गेल अछि। अपन हाव-भावसँ पुरुषकेँ उत्तेजित कऽ देब नैसिर्गक विशेषता होएवाक कारणेँ ओ प्रमदा कहवैत अछि।

**ललना-** ई शब्द सेहो स्त्रीक एक मनोवैज्ञानिक पक्षकेँ प्रकट करैत अछि। ओ मान करबाक प्रिय होइत छथि- रूसैत छथि। अतएव मानिनी छथि। मानिनीक एकगोट आरो पक्ष होइत अछि- ओ अछि स्वाभिमान आत्म-सम्मानक भावना। ओकर सौन्दर्य गुण, कार्य आदि कोनोक प्रतिकूल आलोचना ओकरा वाण जकाँ बेध दैत अछि तेँ ओ मानिनी भेल।

**महिला-** पूज्या होएवाक कारणेँ स्त्रीक नाम महिला पड़ल। मह्+इलत+आ= महिला। मह्क अर्थ होइत अछि पूजा। उपर्युक्त शब्दक व्युत्पत्ति नारीक सामान्य स्वरूपक अभिव्यंजना करैत अछि। नारी सम्बन्ध विशेषक द्योतक शब्दक परिचय अधोलिखित अछि-

**दूहिता-** यास्कक अनुसार दुहिता शब्दक व्युत्पत्ति- 'दुहिता दुर्हिती, दूरेहिता'।[vi] दुर्गाचार्य एकरा स्पष्ट करैत लिखैत छथि दुहिता कारण ओ जतय कतहु देल जाइत छथि ओकर स्वागत नहि होइत अछि, ओ सर्वत्र दुत्कारल जाइत छथि।[vii] अथवा बेटीकेँ दूर चलि गेलापर पिताकेँ चैन भेटैत अछि। यास्क दुहिता शब्दकेँ 'दूह' धातुसँ सेहो बनौलनि अछि आ पिताकेँ प्रसन्न कए सदिखन किछु ने किछु धन लैत रहैत छथि तेँ दुहिता भेला। वस्तुत: दुहितृ शब्द दुह्-दुहना धातुसँ बनल अछि, सम्भवत: प्राचीनकालमे कन्या अपन पिताक घर गाय दुहल करैत छलीह। फलत: हुनक नाम दुहिता पड़ल।

**जाया-** स्त्री 'पत्नी' रूपक लेल जाया शब्दक प्रयोग कएल गेल। ऐतरेय ब्रह्मणमे जायाक व्युत्पति एहि प्रकारेँ कयल गेल अछि 'तंज्जया जाया भवति यदस्यां जायते पुन:'। जाया एहि हेतु अछि जे पुरुष स्वयं ओहिमे पुत्रक रूपमे जन्म लैत अछि। ऋग्वेदमे जायाक प्रति अत्यन्त मधुर उद्‌गार व्यक्त कयल गेल अछि।

**माता-** वैयाकरण मातृ शब्दकेँ मान+तृणसँ बनवैत छथि। आ मातृ शब्दक अर्थ 'आदरणीय' अछि। यास्कक मतसँ मातृक भाव 'निर्मातृ' निर्माण करयवाला जननी सेहो अछि। मुदा 'आदि युगसँ लय आइ धरि मानव जकरा असीम श्रद्धा प्रकट करैत अछि आ जाहिसँ अजस्त्र अक्षय स्नेह पबैत रहैत अछि, ओ मात्र जन्मदात्री नहि, ओ एहिसँ बहुत पैघ अछि। ओकर स्थान स्वर्गसँ सेहो उच्च आ गुरुसँ अधिक पूज्य होइत अछि। माय सदैव माय होइत अछि।

वेदमे सेहो नारीक लेल कुलयानी, सम्राज्ञी कल्याणी पुरन्धि, कुलपा आदि शब्दक प्रचुर प्रयोग भेटैत अछि। इन्द्राणी, उषा, अदिति, इला, श्रद्धासिनी, वाली, भारती, पृश्नि, वरूणानि, आख्यानि वाक, दयावा पृथ्वी, राका आदि रूपमे वैदिक संहिताक नारीक दृष्टि पथमे अवतरित होइत छथि। स्त्रीक हेतु एक स्थानपर कहल गेल

अछि। 'शुद्धा:'पूसा योषितो यज्ञिया इमा:'तथा हुनका पुरुषक हेतु अश्व, गायक हेतु शिव होयवाक बात कहल गेल अछि। सहोत्तरंस्म पुरानारी, समनं चावगच्छति'अर्थात् पहिले स्त्री यज्ञ आयुद्धमे जाइत छलीह। हुनक पुत्र शत्रुहण छथि। एक गोट स्थानपर स्त्री कहैत छथि हमरासँ अधिक केओ सौभाग्यशालिनी नहि छथि वैदिक अक्ष सूक्तमे एकगोट जुआरीकेँ ओकर सासु डटैत अछि आ पत्नी रोकैत अछि। वेद कहैत अछि 'अनवया पतिजुष्टेवनारी'अर्थात् सच्चरित्रस्त्री पतिकेँ प्रिय होइत छथि। अर्थवेद कहैत छथि 'जायापत्नेमधुमतीवाचंवदति'।

वेदमे स्त्रीकेँ ब्रह्म सेहो कहल गेल अछि। तैँ वरदा वेदमाताकेँ वेदमे स्तुति कयल गेल अछि। आचार्य प्रियव्रत तँ सरस्वतीकेँ शिक्षाविभागक मंत्री कहलनि अछि। संहितामे वर्णित नारीक एहि उत्कृष्ट रूपक छाया हमरा सहितेतर वैदिक साहित्य (ब्राह्मण एवं उपनिषद्) मे प्रचुरतासँ उपलब्ध अछि।

ब्राह्मण साहित्यमे पत्नी तथा स्त्री विषयक अनेक सन्दर्भ प्राप्त होइत अछि जाहिसँ नारीलोकनिक गरिमा परिलक्षित होइत अछि। नारीकेँ सावित्रीक संज्ञासँ समलिंगीकृत कयल गेल अछि। स्त्री सावित्री (जैठव्रा., 4/27/17)। गृहपरिवारमे ओकर प्रधानताकेँ स्वीकार कयल गेल अछि। ऐतरेय ब्राह्मण जायाकेँ गाईपत्य अग्निकरुपमे स्वीकार करैत अछि- 'जाया गार्हपत्योग्नि:'। (ए.ब्रा, 8/24) पत्नी पतिक अर्द्धांगिनी मानल गेल अछि।

संहिता एवं ब्राह्मण साहित्यक विपरीत उपनिषदकालीन नारीलोकनिक समुन्नत अवस्थाक परिचय भेटैत अछि।

केनोपनिषद् मे हेमवती उमाक आध्यात्मिक ज्ञान, ब्राह्मवादिनी, वाचकनवी गंर्गी आ मैत्रेयीक वर्णण ओकर आघ्यात्मिक ज्ञानक पराकाष्ठाकेँ सन्दर्भशित करैत अछि। मैत्रेयीक ई कथन जे 'येनाहंनामृतास्याम किंकुर्याम्'हुनक ज्ञान पराकाष्ठाक दिग्दर्शन करैत अछि। एहि काल पिता सेहो पंडितापुत्रीक इच्छा करैत छलाह।

उपनिषद् साहित्यमे स्त्रीलोकनिक मातृत्व पक्षकेँ सेहो चित्रित कयल गेल अछि। ऐतरेय उपनिषद् मे गर्भ धारण करयवाली स्त्री व्यावयित्री एवं भावियितव्या कहल गेल अछि। एहिकालमे स्त्रीकेँ यद्यपि छायाधिकारक स्पष्ट रूपसँ वर्णन नहि कयल गेल अछि, मुदा वृहदारण्यक उपनिषद् मे सन्यास गमन करैत याज्ञवल्कय द्वारा अपन भार्याकेँ वित्त विवरण करब हुनक पतिक सम्पतिमे अधिकार होयवाक प्रमाण प्रस्तुत करैत अछि। स्वैनिणी नारीक उदाहरण हमरा छन्दोग्यमे (4/42/2) देखल जाइत अछि।

सूत्र साहित्यकेँ अवलोकन कयला पर एहि युगमे स्त्री लोकनिक स्थान प्रत्येक दृष्टिसँ समुन्नत अवस्थाकेँ प्राप्त दृष्टिगत होइत अछि। आ विद्या सम्पन्न होइत छलीह तथा विद्यालयमे उपाध्याय। आ

आचार्यहुपर प्रतिष्ठित होइत छलीह। मैत्रेयी, बहवा, प्राचितेयी, गार्गी, वाचकनवी, सुलभा आदि ऋषिकाकँ रूपमे उल्लिखित छथि। गोभिल गृहसूत्रमे स्त्रीलोकनिक उपनयन संस्कारक सेहो निर्देश अछि (2/1/19)

एतएव सूत्रकालमे स्त्री शिक्षा सुव्यवस्थित रूपमे छल।

- सम्पर्क-

बालूघाट, बाँध रोड, मुजफ्फरपुर

---

[i]आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन' कविनवतिका, मैथिली मन्दिर, राजकुमारगंज, दरंभंगा, 1984

[ii]कर्णामृत (जुलाई-सितम्बर, स्मृति विशेषांक), 2000, कोलकाता

[iii]सम्पादक विजयनाथ ठाकुर, जयन्ती, पृ- 131, चेतना समिति, पटना, नवम्बर- 2004

[iv]तत्रैव

[v]लालदास- रमेश्वर चरित मिथिला रामायण (बालकाण्ड), पृ- 4, पंचायत प्रेस, लहेरियासराय, दरभंगा, सम्वत 2011

[vi]लालदास, रमेश्वर चरित मिथिला रामायण (पुष्करकाण्ड), पृ- 437, साहित्य अकादेमी, नई दिल्ली, 1999

[vii]डॉ. मुरलीधर झा- चन्दा झा ओ लालदास रामायण तुलनात्मक अध्ययन, पृ- 174, मिथिला रिसर्च सोसाइटी, लहेरियासराय, दरभंगा, 2006

**अपन मंतव्य** editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

**लालदासक 'कौशल्या'**

::  **डॉ. अपर्णा**

कौशल्या एक आदर्श राजमहिषी तथा जननीक रूपमे चित्रित भेल छथि। कौशल्या हेतु राम, लक्ष्मण, भरत तथा शत्रुघ्नमे कोनोटा अन्तर नहि बुझल जाइछ। राम हुनके पुत्र थिक। ओ सौतिनि लोकनिकेँ छोट बहिनिक दृष्टियेँ देखैत छथि।

हिनक सर्वप्रथम उल्लेख वाल्मीकि रामायणमे पुत्र-प्रेमक आकांक्षिणीक रूपमे भेटैत अछि। वाल्मीकिक परम्परामे रचित काव्य एवं नाटक सभमे कौशल्या सर्वत्र अग्र महिषीक रूपमे चित्रित छथि, मात्र आनन्द रामायणमे दशरथ एवं कौशल्याक विवाहक वर्णन विस्तारसँ भेल अछि। गुण भद्रकृत उत्तर-पुराणमे कौशल्याक मायक नाम सुवाला तथा पुष्पदत्त 'पड़मचरित' मे कौशल्याक दोसर नाम अपराजिता देल गेल अछि। राम कथामे अवतारक प्रभावक फलस्वरूप पुराणमे कश्यप आ अदितिकेँ दशरथ आ कौशल्याक रूपमे अवतारक वर्णन भेल अछि।[i]

लालदास रामक वन गमनक समयमे कौशल्याक मातृ हृदयक सफल चित्रण कयलनि अछि-

हम नहि विपिन जाय सतदेव।

अहा अपयश जग मे बरुलेव।।

नृपतिक हाथ देव वरु प्राण।

त्यागव नहि अहँ सन सन्तान।।

मुदा रामक वन गमनक उपरान्त भरतकेँ अयोध्या पहुँचलापर कौशल्याक मतृत्व ओ पत्नीत्वमे अत्यधिक संघर्षक स्थिति देखि पड़ैत अछि। रामक वन गमनक काल कौशल्याक मातृत्व उमड़ि पड़ैछ।

कौशल्या मूर्छित खसलीह।

शोकाकुल कानय लगलीह।।

व्याकुल पीटथि हृदय कपार।

कहथि कतय छथि प्राणाधार।।

एक बेरि सुतमुख देथु देखाय।

तखन प्राण तन रहिओ कि जाय।।[ii]

राम वनसँ आपस नहि अयलाह से समाचार सुनि कौशल्या शोकाकुल भऽ उठैछ।

कौशल्या सुनलनि परिणाम।

फिरि नहि अयला वन सौं राम।।

लगली पीटय हृदय कपार।

हाय वत्स की कयल विचार।

हमरा त्यागल ककर भरोस।

मरब आइ करितहि आक्रोश।।

हायबध दैलहु बड़ धन्ध।

कयल देल हमर दुहू दृग अन्ध।

अह बिनु हमर रहत नहि प्राण।

लगयिछ आँगन भवन भयान।।

स्त्रीधर्मक रक्षा करैत कौशल्या राजा दशरथसँ कहि उठैत छथि जे रामक वन गमनमे विधिक विधान अछि अपनेक कोन दोष नहि। कविक शब्दमे-

अछि चिन्ता सौं चित्त अचयन।

तैं कहलहु हम अनुचित वचन।।

चलयित कहलनि राम बुझाय।

किछु जनि कही पिता का माय।।

हमर सिनेहो अनुचित बात।

कहब तँ बड़ दु:ख पओता तात।।

एहि प्रकारक कहि बारम्बार।

वनगेला रघुनाथ उदार।।



ISSN 2229-547X VIDEHA

से सुत ममते गेलहुँ भुलाय।

कहलहुँ पति रूषि वचन बजाय।।

कयो नहि हमर सनि अछि अधलाहि।

पतिकाॅ कटु कहयित नहि आहि।।

सुन प्रणेश अहूँक नहि दोष।

कयल विधाता ई सभ रोष।

एहि प्रकारेँ देखैत छी जे लालदास कौशल्याक पत्नीत्वक मर्यादाकेँ संरक्षित कयलनि अदि मुदा हुनक विविध उत्कट वचन नारीत्वक मर्यादायक अनुकूल बुझना जाइछ।

राजा दशरथक मृत्युक पश्चात कौशल्याक कारूणिक दशा द्रवित भऽ उठैछ-

‘पति संग हमहु अनल समाय।

रहब सुखी भल सुरपुर जाय।।

सुनिसुनि कौशल्याक विलाप।

सभजनकेँ बाढ़ल बड़ताप।।

मनमे सभकेँ भेल सन्देह।

हिना प्राण रहत नहि देह।। अर्ते

कौशल्या काॅ दुखित ओहि देखल सकल समाज।

अन्त:पुर लय जाय पुनि बोधल कति ऋषि राज।।[iii]

नारी जीवनक पैघ उद्देश्य कुशलकरय वाली आ कुशल मानावय वाली जाधरि नारी सभक कुशल करब, कुशलक कामनाभावना नहि नहि राखत ताधरि ओ पूर्ण नहि कहा सकैत अछि। कौशल्या सातो गुण प्रधान नारी छलीह। मातृत्वक गम्भीरता, विश्वासक अडिगता, ममता तथा कुशल भावनापर कोना बाधा नहि आवय देलनि। जखन कैकई रामकेँ वन पठेवाक आदेश कौशल्या सुनलनि तँ मातृत्व आ कल्याणक भावनाक संघर्षमे हुनक अवस्थाक वर्णन गौस्वामीजी मात्र एक पांतिमे सुन्दर ढंगसँ कयलनि अछि-

‘सुनि प्रसंग रहि मूक जिमि वरनि नही जाई।’

कौशल्याक अवस्था गीताक साम्ययोगकेँ स्मरण करबैत अछि। कौशल्याक व्यापक रूपक दर्शनक प्रसंग मानसकार लिखैत छथि-

"व्यापक ब्रह्मा निरंजन निर्गुन विगत विनोद।
सो अज प्रेम भगति वस, कौशल्या को गोद।।"[iv]

प्रभुक व्यापक रूपक दर्शन होइत अछि साधककेँ-

"देखरावा मातहि निज अद्भुत रूप अखंड।
रोमरोम प्रतिलागे कोटि कोटि ब्रह्मांड।।"[v]

एहि व्यापक रूपक दर्शन रामायणमे मात्र कौशल्याजीकेँ भेलनि।

सम्पर्क-

बालूघाट, बाँध रोड, मुजफ्फरपुर

---

[i]रामचरित मानस (अयोध्याकाण्ड)

[ii]रमेश्वरचरित मिथिला रामायण (बालकाण्ड)

[iii]रमेश्वरचरित मिथिला रामायण (सा.अ.) पृ.- 166

[iv]रमेश्वरचरित मिथिला रामायण (अयोध्याकाण्ड)

[v]रमेश्वरचरित मिथिला रामायण (अरण्यकाण्ड) पृ.- 133

**अपन मंतव्य** editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

## रमेश्वर चरित मिथिला रामायणमे पुष्कर काण्डक विशेषता



:: डॉ. अपर्णा

कविवर लालदासक प्रशस्तिमे आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन'कवि-नवतिकामे कहने छलाह-

"रमा रहित रामक अयन

नहि अशक्ति पुरुषत्व।

लालदास रचि 'रमेश्वरचरित',

बुझऔल तत्त्व।।"

आ दामोदर लाल 'विशारद'लिखैत छथि-

"लाल मधुप लखि लाल भव, किंशुक पर जनु मूल।

वैदेही पद कमल मधु, सेव सकल सुख मूल।।"[i]

रामायण रचनाक परम्परामे केओ एहन नहि होएत जे लालदासक नाम नहि जनैत हो वा रामायणक पद नहि सुनने हो।

देवी कामाख्याक प्रेरणासँ महाशक्ति जाग्रत भूमिमे एकर लेखन ग्रन्थरत्नकेँ विशिष्ट अर्थवत्ता दैत अछि। फलत: रामेश्वर चरित मिथिला रामायणक रचनाक उद्देश्य अछि सीता-चरित्रक सर्वोत्तर्ष महालक्ष्मी, महासरस्वती आ महाकालीक समवेत रूपमे आदिशक्ति ध्वजोत्तोलन। महाकाली आ रणचण्डी दुर्गाक सीताक चरितक प्रतिष्ठापन ओज आ गर्वक प्रतीक नारी शक्तिक आह्वान। शक्ति-शक्तिमानक समरसेतुमे जीवनक चरितार्थ निहित अछि। बिनु शक्तिक योग ब्रह्मा, विष्णु महेश शव छथि, बुढ़ियाक फुसि थिकाह। एकर प्रतिपादन-सम्पादन रामायणक अन्तिम काण्ड पुष्पकरकाण्डसँ भए जाइत अछि।

लालदासक सर्वश्रेष्ठ अवदान थिक जे नारीक अस्मिता-मनस्विता उद्बोधक अछि।[ii]

वीरांगनाक रूपमे सीताक अवतरण पुष्करकाण्डक भेँट थिक। सीताक चरित्रक सर्वातिशयता पुष्करकाण्डक अग्रणी भूमिका अछि। रामक रामत्व सीताक बिना शून्य अछि। सीता-परित्यागक मार्मिक अंशकेँ छोड़ब लालदासक बुद्धिमता थिक।

रमेश्वर चरित मिथिला रामायण रामक लोक नायत्वमे सीताक असीम सामर्थ्य आकलित करैत अछि। वैष्मतपर शाक्त मतक उत्कर्ष प्रदर्शित करैत अछि। एतय सभ किछु शक्तिक दृष्टिए देखल गेल अछि। सीता साक्षात योगमाया थिकीह जनिक भू-भागपर सृष्टिक जय ओ क्षय नचैत अछि।[iii]

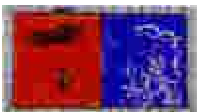
मूल प्रकृति लक्ष्मी जनिक, सीता रूप प्रधान।

तनिक नाम जपि पाबि नर, दुहु लोकक कल्याण।।

पुष्करकाण्डमे देखाओल गेल अछि जे रामक पराक्रम ओ विजयक सभटा श्रेय सीताकेँ छलनि, राम तँ निमित्त मात्र छलाह। जहीनि महाभारतमे देखाओल गेल अछि जे अर्जुनक विजयक श्रेय कृष्णकेँ छलनि, कृष्ण विहीन होइते अर्जुनक सभटा शौर्य निष्प्रभ भए जाइत अछि। तहिना लालदास देखओलनि अछि जे सीताक सहाय्यसँ विहीन रहने सहस्त्रमुख रावणक सम्मुख प्रभावहीन भए गेल छलाह। हुनक समस्त सैन्य ओकर वयव्यस्त्रसँ उधिया गेल छल। मुदा सीताक हेतु ओकर बध करब कठिन नहि छल। पुष्करकाण्डक आरम्भमे रामक सिंहासनारोहणक पश्चात् एक दिन जखन ऋषि महर्षि लोकनि रामक अभिनन्दन करबाक क्रममे रामवण वधक प्रशंसा करैत छथि तँ सीताकेँ हँसी लागि जाइत छनि। ई देखि राम जखन जिज्ञासा करैत छथि तँ हुनका सीतासँ ज्ञात होइत छनि जे श्वेत द्वीपपर एखनहुँ सहस्त्रमुख रावण वर्त्तमान अछि। सीताक मुखसँ ई सन्दर्भ सुनि रामकेँ बड़ क्षोभ होइत छनि। तत्क्षण चारू भाई मिलि श्वेत द्वीप दिस प्रस्थान करैत छथि। मार्गमे वायुक तेहन प्रचण्ड प्रवाह बसि रहल छल जे ओकर झोंकमे चारू भाई उधियाइत-उधिआइत पुन: अवध फेका जाइत छथि। तदुपरान्त सीता हुनका लोकनिक संग पुष्पक विमानपर चढ़ि सैन्य सहित प्रस्थान करैत छथि। सीताक प्रभावसँ सभ केओ श्वेत द्वीप पहुँचैत छथि। युद्धमे राम सहित सभ सैन्य संज्ञाहीन भए जाइत छथि। वशिष्ठ मुनिक कहलाक पश्चात् सीताकेँ बड़ रोष होइत छनि तथा ओ अपन सामान्य स्वरूप त्यागि कालीक रूप धारण कए शत्रुक संहार करय लगैत छथि। थोड़बे कालमे सहस्त्रमुख रामवणकेँ वध कऽ दैत छथि मुदा हुनक उग्ररूप रामकथामे 'सहस्त्र स्कन्ध रावणक वध-कथा उपलब्ध अछि।

लालदास वैष्णव मतक प्रतिपादनक संगहि शाक्त सम्प्रदायक भावनाक अनुकूल वस्तु-विन्यास कयलनि अछि। भारतीय संस्कृतिक अनुरूप आदर्श पारिवारिक जीवन तथा भक्तिपक्षक अनुरूप आत्मनिवेदन ओ समर्पण भावक रामयण वस्तु-विधान दृष्टिगोचर होइछ।■

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

सम्पर्क-

बालूघाट, बाँध रोड, मुजफ्फरपुर

---

[i]आचार्य सुरेन्द्र झा 'सुमन' कविनवतिका, मैथिली मन्दिर, राजकुमारगंज, दरभंगा, 1984

[ii]कर्णामृत (जुलाई-सितम्बर, स्मृति विशेषांक) 2000, कोलकाता

[iii]सम्पादक विजयनाथ ठाकुर 'जयन्ती', पृ.- 131, चेतना समिति, पटना, नवम्बर- 2004

**अपन मंतव्य** editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

## लालदासक रामायणमे विधि-व्यवहारक वर्णन



:: डॉ. अपर्णा

भावपक्षीकेँ कल्पनाक पाँखि भेटलासँ साहित्यमे उड़वाक सामर्थ्य आबि जाइत छैक। कल्पनाक कमनीयता भावक सौन्दर्यकेँ अभिवृद्धि कए दैत अछि। इएह कारण अछि जे अभिव्यक्तिकेँ प्राणवान वोधगम्य चमत्कारी एवं अर्थसमृद्ध बनएवाक हेतु अन्य अनेक 'साधन'क आवश्यकता पड़ैत छैक। भाव तत्व एवं विचार तत्वकेँ आकर प्रदान करएवला कल्पना तत्त्व होइत अछि। कल्पना सएह कोनो भाव एवं विचारकेँ अभिव्यजना दैत अछि।[1]

रमेश्वर चरित मिथिला रामायणमे मिथिलाक विधिव्यवहारक वर्णनसँ तात्पर्य ई अछि जे एहि रामायणक रचनाक्रममे मिथिलाक जीवनक केहन वर्णन कएने छथि। वालकाण्डमे लक्ष्मी अवतारक वर्णनक क्रममे पावन देश मिथिलाक वर्णन करैत कविवर कहैत छथि-

''सुरसरिधार उत्तरकूल

सुरमुनिसेक्ति भूमि अतूल।।

देवभूमि पर्वत हिमवान

तोहिसौं दक्षिण धर्म निधान।।

मिथिला नामक पावन देश

जहाँ राजर्षि क्ज्ञथि मिथिलेश।।

जन्मभूमि नैहर सीताक

जतय स्वयं शिव रूप पिनाक।

शक्ति पीठ उत्तम असथान

उग्रभूमि सभ भाँति महान।।

प्रियनिवास महि हरि लक्ष्मीक

तपथि जनक ऋषि तह वाल्मीकि

याज्ञवल्क्य गौतम हिमदाव

सिद्ध भेला मिथिलाक प्रभाव

शुक्राचार्य जनकक सतसंग

सिखलनि ज्ञान जतय भलरंग।।

मुनि मण्डलीक सुसिद्ध स्थान

यज्ञभूमि दायक कल्याण।।

सुरगन्धव यज्ञ समुदाय

नरतन मिथिला वसथि सदाय।’’[2]

अभिप्राय जे वर्णाश्रम धर्मक प्रधानता छल सभ वर्ग धर्मावलम्बी छल। पुरुष वर्ग कर्त्तव्यनिष्ठ ओ महिला वर्ग सुशीला, सुलक्षणा ओ सुदृदय रहथि। सुख-सम्पदा ओ शान्ति सर्वत्र विद्यमान छल।[3]

विधि-व्यवहार वर्णनक दृष्टिसँ लालदासक रामायण अन्य रामायणक अपेक्षा कृर्त विशद कहल जा सकैत अछि। रामक जन्म ओ विविध संस्कार एहन अवसर सभ अछि जकर नीक जकाँ वर्ण लालदास कएने छथि। रामक जन्मक अवसरपर सोहर, सीताक गिरिजा पूजन तथा वाम अंग फड़कला सँ शुभ सूचनाक रूढ़िक वर्णन मिथिलाक व्यवहार पक्षक अन्यनिर्दशन अछि। मिथिलाक लोकाचारक विषयक विविध पक्षक नियोजित ओ उत्कृष्ट वर्ण भेल अछि। खास कए कविवर सीता रामक विवाह क्रममे मिथिलाक लोक व्यवहार कैं अत्यन्त स्फुट कएलनि अछि। वरियाती-सरियाती, जनवास- परिछन, कुशलाचार (पएर धोएवाक) विधि, गोत्रादया अग्नि स्थापन पाणिग्रहण, गीत-नृत्यादिक वर्णन भेल अछि। कविवरक रामायणमे मैथिल विपटाक कला प्रदर्शनक वर्णन अत्यन्त मनोहर भेल अछि-

‘‘मैथिल विपटा लगवय ताल

कहय कृपण वड़ अवध भुआल।।

चारि वेरिवैतहु जें भोज

पवितहुहान होइत नरि ओज।।

खर्चक डरे अवध महराज

कयल एकहि वेरि चारू काज।।

अपने लेताह चारि दहेज

याचक नर्तक पुरलक भोज।।''[4]

डहकन महुअक कोवर घरक उतरा-चौरी दहेज आदिक वर्णन सेहो हिनक लोक व्यवहार पक्षक ज्ञान तथा मैथिल रीति नीतिक प्रति गौरवमय आसक्तिक परिचय केलनि अछि।

देखू एक गोट वर्णन-

''कौतुक भवन गेला श्री राम।

अभिलिह नगरक नागरि वाम।।

कुच उत्तंग, अंगअभिराम

वयस किशोर विवशकृत काम।।''

परिधन भूषन-वसन लालाम।

वुझि पड़ सभजनि अमरक वाम।।

चन्द्रवदनि गजराज प्रचार

सभ मातलि यौवन मदभार।।

हास्य कला मय निपुण सुधीर

वैसलिह सभ जनि रामक तीर।।

लगलिह कहय कथापूत व्यंग्य

रस वश पुलकि उठय सभ अंग।।

विधिकरि लयलिह महुअक खीर

देल परसि लेलनि रघुवीर।।

जौं जौं भोजन रघुवर करथि

सखि मिलि हँसि करथि कतुकहथि।।

अहँक वंश केर अद्भुत कर्म

सुनल पुरुष कै प्रेसवक धर्म।।

पुनि सुनलहुँ पायसकेँ खाय



ISSN 2229-547X VIDEHA

लै अछि नारि पुत्र जनमाय।।

राम अहाँ जनु पायस रवार

वैदेहीक उपहास वचाउ।[5]

एहि प्रकारेँ रमेश्वर चरित मिथिला रामायणमे विधि-वयवहारक वर्णन अप्रतीम भेल अछि। कविवर लाल दासकेँ जेना वर्णन करबमे मोननहि अधाइत छलनि। वर्णनक विन्यासमे लाल दास समस्त अवसरकेँ पूर्णतया उपयोग करबाक प्रयत्न कयलनि अछि।[6]एहिठाम हम सलीपुलक न्यायसँ किछु विवेचना कएल अछि।

■

**सम्पर्क-**

बालूघाट, बाँध रोड, मुजफ्फरपुर

---

[1]जयनाथ नलिन विद्यापति एक तुलनात्मक समीक्षा पृ.- 233, रघुवीर शरण वंशल, 24 दरियागंज दिल्ली- 6, 1961 ई.

[2]लालदास- रमेश्वर चरित मिथिला रामायण, वालकाण्ड, पंचायत प्रेस, लहेरियासराय, सम्वत 2011

[3]चेतना समिति पटना- जयन्ती पृ- 124, संसकरण 2004

[4]लाल दास- रमेश्वर चरित मिथिला रामायण, पृ.- 95 साहित्य अकादेमी नई दिल्ली, 1999

[5]लाल दास- रमेश्वर चरित मिथिला रामायण, वालकाण्ड, पंचायत प्रेस, लहेरियासराय, सम्वत 1911

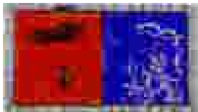
[6]डॉ. मुरलीधर झा- चन्दा झा ओ लाल दास रामायण तुलनात्मक अध्ययन पृ.- 200, मिथिला रिसर्च सोसाइटी- लहेरियासराय, 2007

**अपन मंतव्य** editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

## ३. पद्य



विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

आशीष अनचिन्हार

२ टा गजल

१

चानन टिक्का आर मसुआइ
अजगुत खेला भाइ रे भाइ

दुनियाँ माने अतबे बूझू
झूर झमेला लाइ लपटाइ

ई सभ भेलै लेकिन फेरो
की सभ हेतै दाइ गे दाइ

सुख के माने तिलबा हेतै
दुख के माने लाइ चुड़लाइ

हुनके जकाँ हम हाथ जोड़ल
हुनके जकाँ हमहूँ नितराइ

सभ पाँतिमे 22-22-22 मात्राक्रम अछि। दू अलग-अलग लघुकेँ दीर्घ मानबाक छूट लेल गेल अछि। ई बहरे मीर अछि।

२

ईहो निकलत ओहो निकलत
जहरो निकलत अमृतो निकलत

अइ रंग बिरंगक दुनियाँमे
करियो निकलत उजरो निकलत

आँगनमे एहने फरमान
बुढ़ियो निकलत बुढ़बो निकलत

कहियो आधुनिकताक लिस्टसँ
गामो निकलत शहरो निकलत

कहियो ने कहियो पिंजड़ासँ
सुग्गो निकलत मैनो निकलत

सभ पाँतिमे 22-22-22-22 मात्राक्रम अछि। दू अलग-अलग लघुकेँ दीर्घ मानबाक छूट लेल गेल अछि। ई बहरे मीर अछि।

**ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।**

ज्ञानवर्द्धन कण्ठ

३ टा कविता

१

**हमर मुनियाँ सुतैये टुनमुनियाँ**

हमर मुनियाँ सुतैये टुनमुनियाँ
कि निनियाँ आबह ने!

मेघ पर सवार भ' क' अबिहह हे निनियाँ
मुनियाँ लय अनिहह तों नवकी झुनझुनियाँ
कोरमे ल' क' मुनियाँकेँ निनियाँ
तों झूला झुलाबह ने!

मुनियें सँ शोभा आ मुनियें सँ शान छै
मुनियें हमर जान-प्राण, राग-तान छै
हमर मुनियाँकेँ कानेमे निनियाँ
मधुर गीत गाबह ने!

आसक जहाज सँ अकास उड़इ मुनियाँ
तोरे संगे घूमइ सगर देश-दुनियाँ
चान-तारा सँ साजल-सँवारल
तों सपना सजाबह ने!

**२**

**भगवान अहाँ सँ की बाजी**

भगवान अहाँ सँ की बाजी,
कोन बात अहाँ जे नहि जानी!
सभ जैव-अजैव अहींक रचना,
एहि सृष्टिक एक अहीं स्वामी!

कण-कणमे व्याप अहीं केर छै,
क्षण-क्षण हम जाप अहींक करी!
धड़कनमे नाम अहींक प्रभु,
प्रति श्वासमे वास अहींक मानी!

जे किछु छी,जे किछु संग हमर,
से सभटा देल अहीं केर छी!
नहि हम्मर किछु,नहि हम किछु छी,
एकमात्र अहीं अंतर्यामी!

सभ भावमे अहींक प्रभाव प्रभु,
नहि अहाँक अछैत अभाव कोनो!
जिनगी देनिहार अहीं भगवन,
जिनगी केर बादो अहीं जानी!

**३**

**सम्हरिक' रस्ता चलिहह हौ!**

बटोही पग-पग भेटतह काँट
सम्हरिक' रस्ता चलिहह हौ!

रौदे घामेघाम त' कखनो

जाड़े कँपतह गात हौ।
अन्हड़ बरखा-बुन्नी कहियो
पाथर खसतह माथ हौ।
सभटा सहि-सहि चल' पड़तह
छोड़िहह नहि तों आस,
सम्हरिक' रस्ता चलिहह हौ!

नहि केओ तोहर अपन एतय छह
नहि केओ तोहर आन हौ।
सभ केओ तोरे सनक मोसाफिर
नहि केकरो इ गाम हौ।
नहि किछु अरजल संगे जयतह
जयबह खाली हाथ,
सम्हरिक' रस्ता चलिहह हौ!

लोभ क्रोध मत्सर माया सँ
छाड़ल आँखिक पर्दा हौ।
देखह कोना काया तोहर
भेलह गर्दा-गर्दा हौ।
कानह नहि, अपने तों अकानह
कण-कण प्रभु केर वास,
सम्हरिक' रस्ता चलिहह हौ!

**ऐ रचनापर अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।**

**डॉ आभा झा**

**चेतना**

के अछि जड़ वा के चेतन अछि,स्थूल भेद वा सूक्ष्म चिन्तना

केलहुँ नञि साक्षात् तथ्य जँ, नञि ओ,कहि जुनि करू वञ्चना।

संभव अछि,जे हमर दृष्टि सँ वञ्चित,ओ साकार सत्य हो

हो अगम्य ,दुर्लभ ,परंच, ओ ईशक हो रमणीय सर्जना।।

ज्ञानक अछि आकाश अनन्ते,स्वल्प समय,क्षमता से न्यूने

किंतु करू चिंतन गभीर भय,की असली,की कविक कल्पना?

पानिक लहरि चंचला,पाछां ओकर व्यर्थ श्रम ,मिथ्या लौल

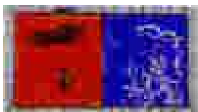
विद्यमान विद्युत् जे ओहि मे,प्राप्ति ओकर महनीय साधना।।

तत्त्वक द्रष्टा ऋषिक कथन सुनि जे अदृश्य,ओहि जलधि डूम दिय'

पैसि अतल,मुक्ता मणि अभिनव सँ समृद्ध करू अपन चेतना।।

**ऐ रचनापर अपन मंतव्य** editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

 **नबोनारायण मिश्र**

**नवगीत**

सभ ठाम चोरे-चोर, ई मानि कऽ चलू
नेता अफसर घुसखोर, ई मानि कऽ चलू

जिनगीक बाट मे कतेको काँट जे गड़ल
सड़ल-गलल-निंघेस हमर फाँट मे पड़ल
व्यर्थे बहैब नोर, ई मानि कऽ चलू
नेता अफसर घुसखोर, ई मानि कऽ चलू

हम छी अपन समाज आ परिवार सँ हारल
लटकल जेना बबूर पर केओ बेल के मारल
बितैछ कलयुग घोर ई मानि कऽ चलू
नेता अफसर घुसखोर, ई मानि कऽ चलू

महगी अकाश लोक उपासे मरैत छै
गोदान मे गहूम उदामे सड़ैत छै
हेतैक निश्चित भोर, ई मानि कऽ चलू
नेता अफसर घुसखोर, ई मानि कऽ चलू
(ई रचना मिथिला दर्शनक अंक Nov-Dec-2010 मे गजल कहि कऽ छपल अछि मुदा वस्तुतः ई गीत-नवगीतक श्रेणीमे अबैए।)

**अपन मंतव्य** editorial.staff.videha@gmail.com **पर पठाउ।**

...................................................................................................................

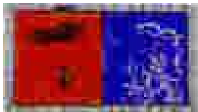
**संघ लोक सेवा आयोग/ बिहार लोक सेवा आयोगक परीक्षा लेल मैथिली (अनिवार्य आ ऐच्छिक) आ आन ऐच्छिक विषय आ सामान्य ज्ञान (अंग्रेजी माध्यम) हेतु सामिग्री**

[STUDY MATERIALS FOR UPSC (UNION PUBLIC SERVICE COMMISSION) & BPSC (BIHAR PUBLIC SERVICE COMMISSION) EXAMS- MAITHILI (COMPULSORY & OPTIONAL) AND OTHER OPTIONALS AND GENERAL STUDIES (ENGLISH MEDIUM)]

*Videha e-Learning*




विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

पेटार (रिसोर्स सेन्टर)

शब्द-व्याकरण-इतिहास

MAITHILI IDIOMS & PHRASES मैथिली मुहावरा एवम् लोकोक्ति प्रकाश- रमाकान्त मिश्र मिहिर (खाँटी प्रवाहयुक्त मैथिली लिखबामे सहायक)

डॉ. ललिता झा- मैथिलीक भोजन सम्बन्धी शब्दावली (खाँटी प्रवाहयुक्त मैथिली लिखबामे सहायक)

मैथिली शब्द संचय MAITHILI DICTIONARY- RAMDEO JHA (खाँटी प्रवाहयुक्त मैथिली लिखबामे सहायक)

ENGLISH MAITHILI COMPUTER DICTIONARY

MAITHILI ENGLISH DICTIONARY

अणिमा सिंह -Shishu_Geet_Khel_Anima_Singh

डॉ. रमण झा

मैथिली काव्यमे अलङ्कार   अलङ्कार-भास्कर

आनन्द मिश्र (सौजन्य श्री रमानन्द झा "रमण")- मिथिला भाषाक सुबोध व्याकरण

BHOLALAL DAS मैथिली सुबोध व्याकरण- भोला लाल दास

राधाकृष्ण चौधरी- A Survey of Maithili Literature

..........................................................................................................

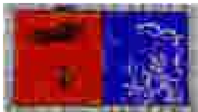
मूलपाठ

तिरहुता लिपिक उद्भव ओ विकास (यू.पी.एस.सी. सिलेबस)

राजेश्वर झा- मिथिलाक्षरक उद्भव ओ विकास (मैथिली साहित्य संस्थान आर्काइव)

Surendra Jha Suman दत्त-वती (मूल)- श्री सुरेन्द्र झा सुमन (यू.पी.एस.सी. सिलेबस)

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

प्रबन्ध संग्रह- रमानाथ झा (बी.पी.एस.सी. सिलेबस) CIIL SITE

.......................................................................................................

समीक्षा

सुभाष चन्द्र यादव-राजकमल चौधरी: मोनोग्राफ

शिव कुमार झा "टिल्लू" अंशु-समालोचना

डॉ बचेश्वर झा- B_JHA_Nibhand_Nikunj.pdf

डॉ. देवशंकर नवीन- Adhunik_Sahityak_Paridrishya

डॉ. रमण झा- भिन्न-अभिन्न

प्रेमशंकर सिंह- मैथिली भाषा साहित्य:बीसम शताब्दी (आलोचना)

डॉ. रमानन्द झा 'रमण'

हिआओल

अखियासल CIIL SITE

दुर्गानन्द मण्डल-चक्षु

RAMDEO JHA दत्त-वतीक वस्तु कौशल- डॉ. श्रीरामदेवझा

SHAILENDRA MOHAN JHA परिचय निचय- डॉ शैलेन्द्र मोहन झा

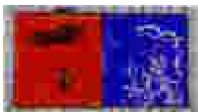
.......................................................................................................

अतिरिक्त पाठ

पहिने मिथिला मैथिलीक सामान्य जानकारी लेल एहि पोथी कें पढ़ू:-

राधाकृष्ण चौधरी- मिथिलाक इतिहास

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

फेर एहि मनलग्गू फाइल सभकेँ सेहो पढ़ू:-

केदारनाथ चौधरी

चमेलीरानी    माहुर    करार

कुमार पवन

पइठ (मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ कथा) (साभार अंतिका)    डायरीक खाली पन्ना (साभार अंतिका)

योगेन्द्र पाठक वियोगी- विज्ञानक बतकही

रामलोचन ठाकुर- मैथिली लोककथा

SAHITYA AKADEMI

http://sahitya-akademi.gov.in/publications/e-books.jsp

http://sahitya-akademi.gov.in/general/Digitalbooks.jsp

CIIL

http://corpora.ciil.org/maisam.htm

अखियासल (रमानन्द झा रमण)

http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MAI1.pdf

जुआयल कनकनी- महेन्द्र

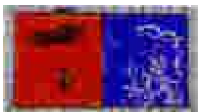
http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MAI2.pdf

प्रबन्ध संग्रह- रमानाथ झा (बी.पी.एस.सी. सिलेबस)

http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MAI3.pdf

सृजन केर दीप पर्व- सं केदार कानन आ अरविन्द ठाकुर

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MAI4.pdf

मैथिली गद्य संग्रह- सं शैलेन्द्र मोहन झा

http://corpora.ciil.org/pdf/maidhilipdf/MAI5.pdf

JNU

http://sanskrit.jnu.ac.in/maithili/index.jsp

http://sanskrit.jnu.ac.in/student_projects/lexicon.jsp?lexicon=maithili

ARCHIVE.ORG

https://archive.org/details/%40vijay_deo_jha?&sort=-publicdate&page=2

VIDEHA MAITHILI BOOKS/ PICTURE-AUDIO-VIDEO ARCHIVE

http://videha.co.in/new_page_15.htm

https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/

ALL INDIA RADIO DOORDARSHAN आकाशवाणी दूरदर्शन

http://prasarbharati.gov.in/

http://newsonair.com/

https://doordarshan.gov.in/

आकाशवाणी मैथिली पोडकास्ट http://prasarbharati.gov.in/podcast.php?filterlang=Maithili&from=1947-08-15&fromwp=2020-08-29&to=2050-12-31&search=GO

आकाशवाणी पटना/ दरभंगा मैथिली रेजनल न्यूज टेक्स्ट डाउनलोड-1 http://newsonair.com/RNU-NSD-Audio-Archive-Search.aspx

आकाशवाणी पटना/ दरभंगा मैथिली रेजनल न्यूज टेक्स्ट डाउनलोड-2 http://newsonair.com/Regional-Text.aspx

आकाशवाणी दरभंगा http://prasarbharati.gov.in/playersource.php?channel=282

आकाशवाणी दरभंगा यू ट्यूब चैनल https://www.youtube.com/channel/UCGdNveEFmv4pPolWiTEMxVA

आकाशवाणी भागलपुर http://prasarbharati.gov.in/playersource.php?channel=359

आकाशवाणी पूर्णियाँ http://prasarbharati.gov.in/playersource.php?channel=256

आकाशवाणी पटना http://prasarbharati.gov.in/playersource.php?channel=122

IGNCA

http://ignca.nic.in/coilnet/mithila.htm

http://ignca.nic.in/coilnet/kalyani.htm (MAITHILI ENGLISH DICTIONARY)

http://tdil.mit.gov.in/CoilNet/IGNCA/mithila.htm

MITHILA DARSHAN

https://mithiladarshan.com/ (online pdf of Maithili journal)

I LOVE MITHILA

https://www.ilovemithila.com/ (online maithili journal)

मैथिली साहित्य संस्थान

https://www.maithilisahityasansthan.org/

https://www.maithilisahityasansthan.org/resources (online pdf of Reasearch Papers/ books)

......................................................................................................................

VIDEHA e-LEARNING YOUTUBE CHANNEL

https://www.youtube.com/channel/UC4abVKqMj2pDWIAkXiOHp7A

(अनुवर्तते)

-गजेन्द्र ठाकुर

विदेहक किछु विशेषांक:-

१) हाइकू विशेषांक १२ म अंक, १५ जून २००८

Videha_15_06_2008.pdf Videha_15_06_2008_Tirhuta.pdf 12.pdf

२) गजल विशेषांक २१ म अंक, १ नवम्बर २००८

Videha_01_11_2008.pdf Videha_01_11_2008_Tirhuta.pdf 21.pdf

३) विहनि कथा विशेषांक ६७ म अंक, १ अक्टूबर २०१०

Videha_01_10_2010 Videha_01_10_2010_Tirhuta 67

४) बाल साहित्य विशेषांक ७० म अंक, १५ नवम्बर २०१०

Videha_15_11_2010 Videha_15_11_2010_Tirhuta 70

५) नाटक विशेषांक ७२ म अंक १५ दिसम्बर२०१०

Videha_15_12_2010 Videha_15_12_2010_Tirhuta 72

६) नारी विशेषांक ७७म अंक ०१ मार्च २०११

Videha_01_03_2011 Videha_01_03_2011_Tirhuta 77

७) अनुवाद विशेषांक (गद्य-पद्य भारती) ९७म अंक

Videha_01_01_2012 Videha_01_01_2012_Tirhuta 97

८) बाल गजल विशेषांक विदेहक अंक १११ म अंक, १ अगस्त २०१२

Videha_01_08_2012 Videha_01_08_2012_Tirhuta 111

९) भक्ति गजल विशेषांक १२६ म अंक, १५ मार्च २०१३

Videha_15_03_2013 Videha_15_03_2013_Tirhuta 126

१०) गजल आलोचना-समालोचना-समीक्षा विशेषांक १४२ म, अंक १५ नवम्बर २०१३

Videha_15_11_2013 Videha_15_11_2013_Tirhuta 142

११) काशीकांत मिश्र मधुप विशेषांक १६९ म अंक १ जनवरी २०१५

Videha_01_01_2015

१२) अरविन्द ठाकुर विशेषांक १८९ म अंक १ नवम्बर २०१५

Videha_01_11_2015

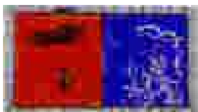
१३) जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिल विशेषांक १९१ म अंक १ दिसम्बर २०१५

Videha_01_12_2015

१४) विदेह सम्मान विशेषाक- २००म अक १५ अप्रैल २०१६/ २०५ म अक १ जुलाई २०१६

Videha_15_04_2016

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

Videha_01_07_2016

**१५) मैथिली सी.डी./ अल्बम गीत संगीत विशेषांक- २१७ म अंक ०१ जनवरी २०१७**

Videha_01_01_2017

**लेखकसं आमंत्रित रचनापर आमंत्रित आलोचकक टिप्पणीक शृंखला**

**१. कामिनीक पांच टा कविता आ ओइपर मधुकान्त झाक टिप्पणी**

विदेहक दू सए नौम अंक Videha_01_09_2016

**एडिटर्स चोइस सीरीज**

**एडिटर्स चोइस सीरीज-१**

विदेहक १२३ म (०१ फरबरी २०१३) अंकमे बलात्कारपर मैथिलीमे पहिल कविता प्रकाशित भेल छल। ई दिसम्बर २०१२ क दिल्लीक निर्भया बलात्कार काण्डक बादक समय छल। ओना ई अनूदित रचना छल, तेलुगुमे पसुपुलेटी गीताक एहि कविताक हिन्दी अनुवाद केने छलीह आर. शांता सुन्दरी आ हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद केने छलाह विनीत उत्पल। हमर जानकारीमे एहिसँ बेशी सिहराबैबला कविता कोनो भाषामे नहि रचल गेल अछि। सात सालक बादो ई समस्या ओहने अछि। ई कविता सभकेँ पढ़बाक चाही, खास कऽ सभ बेटीक बापकेँ, सभ बहिनक भाएकेँ आ सभ पत्नीक पतिकेँ। आ विचारबाक चाही जे हम सभ अपना बच्चा सभ लेल केहन समाज बनेने छी।

एडिटर्स चोइस सीरीज-१ (डाउनलोड लिंक)

**एडिटर्स चोइस सीरीज-२**

विदेहक ५०-१०० म अंकक बीच ब्रेस्ट कैसरक समस्यापर विदेह मे मीना झा केर एकटा लघु कथा प्रकाशित भेल। ई मैथिलीक पहिल कथा छल जे ब्रेस्ट कैसर पर लिखल गेल। हिन्दीमे सेहो ताधरि एहि विषयपर कथा नहि लिखल गेल छल, कारण एहि कथाक ई-प्रकाशित भेलाक १-२ सालक बाद हिन्दीमे दू गोटेमे घोंघाउज भऽ रहल छल कि पहिल हम आकि हम, मुदा दुनूक तिथि मैथिलीक कथाक परवर्ती छल। बादमे ई विदेह लघु कथामे सेहो संकलित भेल।

**एडिटर्स चोइस सीरीज-२** (डाउनलोड लिंक)

**एडिटर्स चोइस सीरीज-३**

विदेहक ५०-१०० म अंकक बीच जगदीश चन्द्र ठाकुर अनिलक किछु बाल कविता प्रकाशित भेल। बादमे हुनकर ३ टा बाल कविता विदेह शिशु उत्सवमे संकलित भेल जाहिमे २ टा कविता बेबी चाइल्डपर छल। पढ़ू ई तीनू कविता, बादक दुनू बेबी चाइल्डपर लिखल कविता पढ़बे टा करू से आग्रह।

**एडिटर्स चोइस सीरीज-३** (डाउनलोड लिंक)

**एडिटर्स चोइस सीरीज-४**

विदेहक ५०-१०० म अंकक बीच जगदानन्द झा मनुक एकटा दीर्घ बाल कथा कहि लिअ बा उपन्यास प्रकाशित भेल, नाम छल चोनहा। बादमे ई रचना विदेह शिशु उत्सवमे संकलित भेल, ई रचना बाल मनोविज्ञानपर आधारित मैथिलीक पहिल रचना छी, मैथिली बाल साहित्य कोना लिखी तकर ट्रेनिंग कोर्समे एहि उपन्यासकेँ राखल जेबाक चाही। कोना मॉडर्न उपन्यास आगाँ बढ़ै छै, स्टेप बाइ स्टेप आ सेहो बाल उपन्यास। पढ़बे टा करू से आग्रह।

**एडिटर्स चोइस सीरीज-४** (डाउनलोड लिंक)

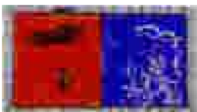
**एडिटर्स चोइस सीरीज-५**

एडिटर्स चोइस ५ मे मैथिलीक "उसने कहा था" माने कुमार पवनक दीर्घकथा "पइठ" (साभार अंतिका) । हिन्दीक पाठक, जे "उसने कहा था" पढ़ने हेता, कें बुझल छन्हि जे कोना अहि कथाकेँ रचि चन्द्रधर शर्मा 'गुलेरी' अमर भऽ गेलाह। हम चर्चा कऽ रहल छी, कुमार पवनक "पइठ" दीर्घकथाक। एकरा पढ़लाक बाद अहाँकेँ एकटा विचित्र, सुखद आ मोन हौल करैबला अनुभव भेटत, जे सेक्सपीरिअन ट्रेजेडी सँ मिलितो लागत आ फराको। मुदा एहि रचनाकेँ पढ़लाक बाद तामस, घृणा सभपर नियंत्रणकेँ आ सामाजिक/ पारिवारिक दायित्वकेँ सेहो अहाँ आर गंभीरतासँ लेबै, से धरि पक्का अछि। मुदा एकर एकटा शर्त अछि जे एकरा समै निकालि कऽ एक्के उखड़ाहामे पढ़ि जाइ।

**एडिटर्स चोइस सीरीज-५** (डाउनलोड लिंक)

**एडिटर्स चोइस सीरीज-६**

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

जगदीश प्रसाद मण्डलक लघुकथा "बिसाँढ़": १९४२-४३ क अकालमे बंगालमे १५ लाख लोक मुइला, मुदा अमर्त्य सेन लिखैत छथि जे हुनकर कोनो सर-सम्बन्धी एहि अकालमे नहि मरलन्हि। मिथिलोमे अकाल आएल १९६७ ई. मे आ इन्दिरा गाँधी जखन एहि क्षेत्र अएली तँ हुनका देखाओल गेल जे कोना मुसहर जातिक लोक बिसाँढ़ खा कऽ एहि अकालकेँ जीति लेलन्हि। मैथिलीमे लेखनक एकभगाह स्थिति विदेहक आगमनसँ पहिने छल। मैथिलीक लेखक लोकनि सेहो अमर्त्य सेन जेकाँ ओहि महाविभीषिकासँ प्रभावित नहि छला आ तेँ बिसाँढ़पर कथा नहि लिखि सकला। जगदीश प्रसाद मण्डल एहिपर कथा लिखलन्हि जे प्रकाशित भेल चेतना समितिक पत्रिकामे, मुदा कार्यकारी सम्पादक द्वारा वर्तनी परिवर्तनक कारण ओ मैथिलीमे नहि वरण् अवहट्ठमे लिखल बुझा पड़ल, आ ओतेक प्रभावी नहि भऽ सकल कारण विषय रहै खाँटी आ वर्तनी कृत्रिम। से एकर पुनः ई-प्रकाशन अपन असली रूपमे भेल विदेहमे आ ई संकलित भेल "गामक जिनगी" लघुकथा संग्रहमे। एहि पोथीपर जगदीश प्रसाद मण्डलकेँ टैगोर लिटरेचर अवार्ड भेटलनि। जगदीश प्रसाद मण्डलक लेखनी मैथिली कथाधाराकेँ एकभगाह हेबासँ बचा लेलक, आ मैथिलीक समानान्तर इतिहासमे मैथिली साहित्यकेँ दू कालखण्डमे बाँटि कऽ पढ़ए जाए लागल- जगदीश प्रसाद मण्डलसँ पूर्व आ जगदीश प्रसाद मण्डल आगमनक बाद। तेँ प्रस्तुत अछि लघुकथा बिसाँढ़- अपन सुच्चा स्वरूपमे।

**एडिटर्स चोइस सीरीज-६** (डाउनलोड लिंक)

**एडिटर्स चोइस सीरीज-७**

मैथिलीक पहिल आ एकमात्र दलित आत्मकथा: सन्दीप कुमार साफी। सन्दीप कुमार साफीक दलित आत्मकथा जे अहाँकेँ अपन लघु आकाराक अछैत हिलोड़ि देत आ अहाँक ई स्थिति कऽ देत जे समानान्तर मैथिली साहित्य कतबो पढ़ू अहाँकेँ अछौं नहि होयत। ई आत्मकथा विदेहमे ई-प्रकाशित भेलाक बाद लेखकक पोथी "बैशाखमे दलानपर"मे संकलित भेल आ ई मैथिलीक अखन धरिक एकमात्र दलित आत्मकथा थिक। तेँ प्रस्तुत अछि मैथिलीक पहिल दलित आत्मकथा: सन्दीप कुमार साफीक कलमसँ।

**एडिटर्स चोइस सीरीज-७** (डाउनलोड लिंक)

**एडिटर्स चोइस सीरीज-८**

नेना भुटकाकेँ रातिमे सुनेबा लेल किछु लोककथा (विदेह पेटारसँ)।

**एडिटर्स चोइस सीरीज-८** (डाउनलोड लिंक)

**एडिटर्स चोइस सीरीज-९**

मैथिली गजलपर परिचर्चा (विदेह पेटारसँ)।

एडिटर्स चोइस सीरीज-९ (डाउनलोड लिंक)

***जगदीश प्रसाद मण्डल जीक ६५ टा पोथीक नव संस्करण विदेहक २३३ सँ २५० धरिक अंकमे धारावाहिक प्रकाशन नीचाँक लिंकपर पढ़ू:-***

Videha_15_05_2018

Videha_01_05_2018

Videha_15_04_2018

Videha_01_04_2018

Videha_15_03_2018

Videha_01_03_2018

Videha_15_02_2018

Videha_01_02_2018

Videha_15_01_2018

Videha_01_01_2018

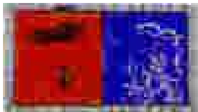
Videha_15_12_2017

Videha_01_12_2017

Videha_15_11_2017

Videha_01_11_2017

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

Videha_15_10_2017

Videha_01_10_2017

Videha_15_09_2017

Videha_01_09_2017

**विदेह ई-पत्रिकाक बीछल रचनाक संग- मैथिलीक सर्वश्रेष्ठ रचनाक एकटा समानान्तर संकलन:**

*विदेह: सदेह: १ (२००८-०९) देवनागरी*

*विदेह: सदेह: १ (२००८-०९) तिरहुता*

*विदेह:सदेह:२ (मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना २००९-१०) देवनागरी*

*विदेह:सदेह:२ (मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना २००९-१०) तिरहुता*

*विदेह:सदेह:३ (मैथिली पद्य २००९-१०)देवनागरी*

*विदेह:सदेह:३ (मैथिली पद्य २००९-१०) तिरहुता*

*विदेह:सदेह:४ (मैथिली कथा २००९-१०)देवनागरी*

*विदेह:सदेह:४ (मैथिली कथा २००९-१०) तिरहुता*

*विदेह मैथिली विहनि कथा [ विदेह सदेह ५ ]देवनागरी*

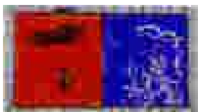
*विदेह मैथिली विहनि कथा [ विदेह सदेह ५ ] तिरहुता*

*विदेह मैथिली विहनि कथा [ विदेह सदेह ५ ]- दोसर संस्करण देवनागरी*

*विदेह मैथिली लघुकथा [ विदेह सदेह ६ ]देवनागरी*

*विदेह मैथिली लघुकथा [ विदेह सदेह ६ ] तिरहुता*

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

*विदेह मैथिली पद्य [ विदेह सदेह ७ ]देवनागरी*

*विदेह मैथिली पद्य [ विदेह सदेह ७ ] तिरहुता*

*विदेह मैथिली नाट्य उत्सव [ विदेह सदेह ८ ]देवनागरी*

*विदेह मैथिली नाट्य उत्सव [ विदेह सदेह ८ ] तिरहुता*

*विदेह मैथिली शिशु उत्सव [ विदेह सदेह ९ ]देवनागरी*

*विदेह मैथिली शिशु उत्सव [ विदेह सदेह ९ ] तिरहुता*

*विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना [ विदेह सदेह १० ]देवनागरी*

*विदेह मैथिली प्रबन्ध-निबन्ध-समालोचना [ विदेह सदेह १० ] तिरहुता*

*विदेह:सदेह ११*

*विदेह:सदेह १२*

*विदेह:सदेह १३*

*The readers of English translations of Maithili Novel "sahasrabadhani" and verse collection "sahasrabdik chaupar par" has intimated that the English translation has not been able to grasp the nuances of original Maithili. Therefore the Author has started translating his Maithili works in English himself. After these translations are complete these would be the official translations authorised by the Author of the original works.-Editor*

Maithili Books can be downloaded from: https://sites.google.com/a/videha.com/videha-pothi/

विदेह सम्मान: **सम्मान-सूची** (समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार सहित)

विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

**अपन मंतव्य editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।**

**सूचना/ घोषणा**

**१**

"विदेह सम्मान" समानान्तर साहित्य अकदेमी पुरस्कारक नामसँ प्रचलित अछि। "समानान्तर साहित्य अकादेमी पुरस्कार" (मैथिली), जे साहित्य अकादेमीक मैथिली विभागक गएर सांवैधानिक काजक विरोधमे शुरु कएल छल, लेल अनुशंसा आमन्त्रित अछि।

अनुशंसा २०१९ आ २०२० बर्ख लेल निम्न कोटि सभमे आमन्त्रित अछि:
१) फेलो
२)मूल पुरस्कार
३)बाल-साहित्य
४)युवा पुरस्कार आ
५) अनुवाद पुरस्कार।

अपन अनुशंसा ३१ दिसम्बर २०२० धरि २०१९ पुरस्कारक लेल आ ३१ मार्च २०२१ धरि २०२०क पुरस्कारक लेल पठाबी।

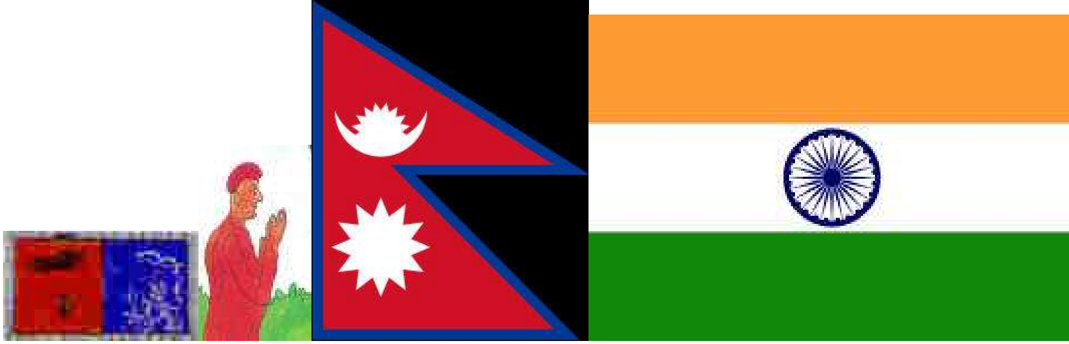
पुरस्कारक सभ क्राइटेरिया साहित्य अकादेमी, दिल्लीक समानान्तर पुरस्कारक समक्ष रहत, जे एहि लिंक sahitya-akademi.gov.in पर उपलब्ध अछि। अपन अनुशंसा editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाउ।

**२**

“मिथिला मखान” फिल्म देखू मात्र १०१ टाकामे। Android App “BEJOD” download करू वा जाउ www.bejod.in पर, signup करू, एकटा ईमेल जायत, अपन ईमेल खोलू आ ओकरा क्लिक करू अहाँक अकाउंट एक्टीवेट भय जायत। आब मिथिला मखान रेण्ट पर लिअ, डेबिट कार्डसँ १०१ टाका ऑनलाइन पेमेंट करू आ फिल्म देखू।

३

विदेह अपन आगामी अंक (२०२१ क प्रारम्भमे) श्री रामलोचन ठाकुर पर विशेषांक निकालबाक नेयार केने अछि। हुनका सम्बन्धी रचना आमंत्रित अछि (संस्मरण, साक्षात्कार, समीक्षा आदि) जे ३१ दिसम्बर २०२० धरि editorial.staff.videha@gmail.com पर पठाओल जा सकैत अछि। विदेह पेटारक अन्तर्गत (पोथी डाउनलोड साइट) मे http://www.videha.co.in/new_page_15.htm हुनकर मौलिक, अनूदित आ सम्पादित रचना फ्री पी.डी.एफ. डाउनलोड लेल उपलब्ध अछि।



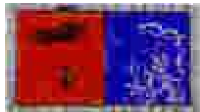
**विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन: मानुषीमिह संस्कृताम्: VIDEHA: AN IDEA FACTORY**

आग्रह। रचनाक संग रचनाकार अपन संक्षिप्त परिचय आ अपन स्कैन कएल गेल फोटो पठेताह, से आशा करैत छी। रचनाक अंतमे टाइप रहय, जे ई रचना मौलिक अछि, आ पहिल प्रकाशनक हेतु विदेह (पाक्षिक) ई पत्रिकाकेँ देल जा रहल अछि। मेल प्राप्त होयबाक बाद यथासंभव शीघ्र ( सात दिनक भीतर) एकर प्रकाशनक अंकक सूचना देल जायत। एहि ई पत्रिकाकेँ श्रीमति लक्ष्मी ठाकुर द्वारा मासक ०१ आ १५ तिथिकेँ ई प्रकाशित कएल जाइत अछि।

 ५ जुलाई २००४ केँ http://gajendrathakur.blogspot.com/2004/07/bhalsarik-gachh.html “भालसरिक गाछ”- मैथिली जालवृत्तसँ प्रारम्भ इंटरनेटपर मैथिलीक प्रथम उपस्थितिक यात्रा विदेह- प्रथम मैथिली पाक्षिक ई पत्रिका धरि पहुँचल अछि,जे http://www.videha.co.in/ पर ई प्रकाशित होइत अछि। आब “भालसरिक गाछ” जालवृत्त 'विदेह' ई-पत्रिकाक प्रवक्ताक संग मैथिली भाषाक जालवृत्तक एग्रीगेटरक रूपमे प्रयुक्त भऽ रहल अछि। विदेह ई-पत्रिका ISSN 2229-547X VIDEHA




विदेह:मैथिली साहित्य आन्दोलन



मानुषीमिह संस्कृताम्

ISSN 2229-547X VIDEHA

यू.पी.एस.सी. क प्रिलिमिनरी परीक्षा २०२० सम्पन्न भऽ गेल अछि। जे परीक्षार्थी एहि परीक्षामे उत्तीर्ण करताह आ जँ मेन्समे हुनकर ऑप्शनल विषय मैथिली साहित्य हेतन्हि तँ ओ एहि टेस्ट-सीरीजमे सम्मिलित भऽ सकैत छथि। टेस्ट सीरीजक प्रारम्भ प्रिलिम्सक रिजल्टक तत्काल बाद होयत। टेस्ट-सीरीजक उत्तर विद्यार्थी स्कैन कऽ editorial.staff.videha@gmail.com पर पठा सकैत छथि, जँ मेलसँ पठेबामे असोकर्ज होइन्हि तँ ओ हमर ह्वाट्सएप नम्बर 9560960721 पर सेहो प्रश्नोत्तर पठा सकैत छथि। संगमे ओ अपन प्रिलिम्सक एडमिट कार्डक स्कैन कएल कॉपी सेहो वेरीफिकेशन लेल पठाबथि। परीक्षामे सभ प्रश्नक उत्तर नहि देमय पड़ैत छैक मुदा जँ टेस्ट सीरीजमे विद्यार्थी सभ प्रश्नक उत्तर देताह तँ हुनका लेल श्रेयस्कर रहतन्हि। विदेहक सभ स्कीम जेकाँ ईहो पूर्णतः निःशुल्क अछि।- **गजेन्द्र ठाकुर**

संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित सिविल सर्विसेज (मुख्य) परीक्षा, २०२० मैथिली (ऐच्छिक) लेल टेस्ट सीरीज-१

मैथिली साहित्य **प्रश्न-पत्र-१**

पूर्णाङ्क- २५० समय- तीन घंटा

प्रश्न-पत्र विषयक विशेष  निर्देश

प्रश्नक उत्तर लिखबाक पूर्व कृपया निम्नलिखित निर्देशकेँ सावधानीपूर्वक पढ़ि लियऽ

एतय दू खण्ड (सेक्शन) मे विभक्त कुल **आठ** प्रश्न अछि।

अभ्यर्थी कुल **पाँच** प्रश्नक उत्तर देथि।

प्रश्न संख्या १ तथा प्रश्न संख्या ५ अनिवार्य अछि। शेष प्रश्नमेसँ तीन प्रश्नक उत्तर लिखू, जाहिमे प्रत्येक खण्ड (सेक्शन) सँ कम-सँ-कम **एक** प्रश्नक चयन आवश्यक अछि।

प्रश्न/ खण्डक निर्धारित अंक ओकरा समक्ष निर्दिष्ट कयल गेल अछि।

उत्तर मैथिलीमे लिखब अनिवार्य अछि।

जतय निर्दिष्ट हो, शब्द सीमाक अनुपालन अपेक्षित अछि।

उत्तरित प्रश्नक गणना क्रमानुसार कयल जायत। यदि काटल नहि गेल हो, तँ अंशतः लिखित उत्तरोकेँ गणना कयल जायत। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिकाक कोनो रिक्त पृष्ठ अथवा कोनो पृष्ठक रिक्त भागकेँ अवश्य काटि दी।

**सेक्शन-ए**

१. निम्नलिखित विषय पर टिप्पणी लिखू (लगभग १५० शब्दधरि): (१०*५=५०)
(ए) 'अर्थ-संकोच'क प्रकृति
(बी) प्रयत्नलाघवक विलक्षणता किछु उदाहरणक संग
(सी)वर्ण-विपर्ययक कारण ओ महत्व
(डी) राजेश्वर झाक भाषावैज्ञानिक कृति
(ई)दीनबन्धु झाक व्याकरणक उपादेयता

२. (ए) भारोपीय भाषा-परिवारक परिचय दिअ। (२०)

(बी) मैथिली ओ असमिया भाषाक सम्बन्धक विवेचन करू। (१५)

(सी) तिरहुता लिपिक उद्भव ओ विकास पर प्रकाश दैत ओकर वर्तमान स्थितिक विवेचन करू। (१५)

३. (ए) मैथिली भाषाक वैशिष्ट्य पर प्रकाश दिअ। (२०)

(बी) मागधीक विकासक्रमक समीक्षा करू। (१५)

(सी) मध्यकालीन आर्यभाषाक परिचय दिअ (१५)

४. (ए) मैथिली भाषाक क्षेत्रमे डॉ. ग्रियर्सनक की अवदान अछि, विवेचन करू। (२०)

(बी) मैथिली भाषा-विज्ञानक क्षेत्रमे सुभद्र झाक योगदानक समीक्षा करू। (१५)

(सी) मैथिली भाषाक विकासमे अवहट्टक महत्त्वक मूल्यांकन करू। (१५)

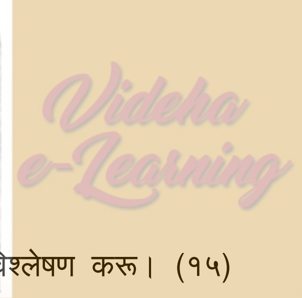
**सेक्शन- बी**

५. निम्नलिखित विषय पर टिप्पणी लिखू (लगभग १५० शब्दधरि): (१०*५=५०)
(ए) डाक-वचनावली
(बी) लोचन
(सी) चर्यापद मैथिलीक सम्पत्ति
(डी) असमक अंकियानाटक विवेचन करू।
(ई) मैथिलीक लोकोक्ति-फकरा ओ सिद्धाचार्य

६. (ए) मैथिली साहित्यक आदिकालक उपलब्ध सामग्रीसँ परिचय कराउ। (२०)

(बी) मध्यकालीन मैथिली नाटकक विकासमे 'कीर्त्तनिञा' नाटकक महत्त्व प्रतिपादित करू। (१५)








(सी) सिद्ध साहित्यक परिचय दैत एकर भाषागत वैशिष्ट्यक विश्लेषण करू। (१५)

७. (ए) ‘‘विद्यापतिक प्रभाव मिथिलेधरि सीमित नहि रहल’’- एहि उक्तिकेँ पल्लवित करू। (२०)

(बी) हरिमोहन झाक ’जीवन-यात्रा’ मार्मिक संस्मरण प्रस्तुत करैत अछि- सयुक्ति विवेचन करू। (१५)

(सी) आधुनिक मैथिली साहित्यक विकासमे पत्र-पत्रिकाक महत्त्वपूर्ण योगदान पर प्रकाश दिअ। (१५)

८. (ए) ’सुन्दर-संयोग’ नाटकक वैशिष्ट्य पर प्रकाश दिअ। (२०)

(बी) आधुनिक मैथिली कविताक पृष्ठभूमिकविवेचन करू। (१५)

(सी) मैथिली समालोचना शास्त्रक विकास ओ वर्तमान स्थिति पर अपन मन्तव्य दिअ (१५)

यू.पी.एस.सी. क प्रिलिमिनरी परीक्षा २०२० सम्पन्न भऽ गेल अछि। जे परीक्षार्थी एहि परीक्षामे उत्तीर्ण करताह आ जँ मेन्समे हुनकर ऑप्शनल विषय मैथिली साहित्य हेतन्हि तँ ओ एहि टेस्ट-सीरीजमे सम्मिलित भऽ सकैत छथि। टेस्ट सीरीजक प्रारम्भ प्रिलिम्सक रिजल्टक तत्काल बाद होयत। टेस्ट-सीरीजक उत्तर विद्यार्थी स्कैन कऽ editorial.staff.videha@gmail.com पर पठा सकैत छथि, जँ मेलसँ पठेबामे असोकर्ज होइन्हि तँ ओ हमर ह्वाट्सएप नम्बर 9560960721 पर सेहो प्रश्नोत्तर पठा सकैत छथि। संगमे ओ अपन प्रिलिम्सक एडमिट कार्डक स्कैन कएल कॉपी सेहो वेरीफिकेशन लेल पठाबथि। परीक्षामे सभ प्रश्नक उत्तर नहि देमय पड़ैत छैक मुदा जँ टेस्ट सीरीजमे विद्यार्थी सभ प्रश्नक उत्तर देताह तँ हुनका लेल श्रेयस्कर रहतन्हि। विदेहक सभ स्कीम जेकाँ ईहो पूर्णतः निःशुल्क अछि।- **गजेन्द्र ठाकुर**

**संघ लोक सेवा आयोग द्वारा आयोजित सिविल सर्विसेज (मुख्य) परीक्षा, २०२० मैथिली (ऐच्छिक) लेल टेस्ट सीरीज-१**

मैथिली साहित्य **प्रश्न-पत्र-२**

अधिकतम अंक- २५० समय- तीन घंटे

प्रश्न-पत्र स्पष्ट  निर्देश

प्रश्नक उत्तर लिखबाक पूर्व कृपया निम्नलिखित निर्देशकेँ सावधानीपूर्वक पढ़ि लिअ:

एतय दू खण्ड (सेक्शन) मे विभक्त कुल **आठ** प्रश्न अछि।

अभ्यर्थी कुल **पाँच** प्रश्नक उत्तर देथि।

प्रश्न संख्या १ तथा प्रश्न संख्या ५ अनिवार्य अछि। शेष प्रश्नमेसँ तीन प्रश्नक उत्तर लिखू, जाहिमे प्रत्येक खण्ड (सेक्शन) सँ कमसँ कम **एक** प्रश्नक चयन आवश्यक अछि।

प्रश्न/ खण्डक निर्धारित अंक ओकरा समक्ष निर्दिष्ट कयल गेल अछि।

उत्तर मैथिली (देवनागरी लिपि) मे लिखब अनिवार्य अछि।

जतय निर्दिष्ट हो, शब्द-सीमाक अनुपालन अपेक्षित अछि।

उत्तरित प्रश्नक गणना क्रमानुसार कयल जायत। यदि काटल नहि गेल हो तँ अंशतः लिखित उत्तरक गणना सेहो कयल जायत। प्रश्न-सह-उत्तर पुस्तिकाक कोनो रिक्त पृष्ठ अथवा कोनो पृष्ठक रिक्त भागकेँ अवश्य काटि दी।










**सेक्शन-ए**

१. प्रत्येक प्रश्न अनिवार्य अछि। काव्य वैशिष्ट्यकेँ निर्दिष्ट करैत निम्नलिखित अवतरणक सप्रसंग व्याख्या करू, जाहिमे भाव स्पष्ट रहए। (उत्तर अधिकतम १५० शब्दमे दातव्य) (१०*५=५०)

(ए) बाग्मति- कमला कोसिक धारा

जा धरि पृथवी सागर जा धरि

जीवित रहब अहाँ तहिआ धरि

काए- बचनसँ अथवा मनसँ

हिंसा कएल न कोनो जीवक

कोटिक कोटि मनुक्खक हित लए

जिनगी अपन बिताओल गरीबक

दुख ककरो नहि देलक कनेको

अपने विपति उठाओल अनेको

जिवितहिँ परसल कीर्ति भुवन भरि

तेना बहाओल शान्तिक सुरसरि।

(बी) आगमने प्रेम गमने कुल जाएत

चिन्ता पङ्क लागलि करिणी

मञे अबला दह दिस ममि झाखञो

जनि व्याध डरे भीरू हरिणी॥

चन्दा दुरजन गमन विरोधक

उगल गगन भरि बैरि मोरा॥

कुहु भरमे पथ पद आरोपल

आए तुलाएल पञ्चदशी।

(सी)अनिल अनलवम मलाज वीख।










जे छल सीतल से भेल तीख॥

चान्द सताबए सविताहु जीनि।

नहि जीवन एकमत भेल तीनि॥

किछु उपचार न मानए आन।

एहि बेआधि अथिक पचवान॥

(डी) विधवा हमरे सन हजारक हजार

बहौने जा रहलि अछि नोरक धार

ओहिमे ई मुलुक डुबि बरू जाय

अगड़ाही लगौ बरू बज्र खसौ

एहेन जाति पर बरू धसना धसौ

भूकम्पक हौक बरू फटौ धरती

माँ मिथिला रहिये कऽ की करती!

(ई) तोड़िकँ हरिसिंहदेवक डाँड़

काल्हि जँ बौआ बिआहथि मेम

महाश्वेता बहुरिआ

चिनमार पर ओ आबि

बिहुँसि लगती गोसाउनिकँ गोड़

तँ अहाँ की छाड़ि कँ ई माटि

पड़ाएब चल जएब मोरङ दीस।

२. (ए) ''चित्रा'' मे प्राचीन-मध्य ओ आधुनिककालीन मिथिलाक सामाजिक जीवनक सम्यक वर्णन भेल अछि- विश्लेषण करू। (२०)

(बी) ''कीचक वध'' महाकाव्यक महाकाव्यत्व प्रमाणित करू। (१५)

(सी) मैथिली काव्य-साहित्यमे ''कृष्णजन्म''क महत्त्व पर प्रकाश दिअ। (१५)

३.	(ए) ““मिथिला भाषा रामायण”क “सुन्दरकाण्ड”मे वर्णित घटनाक्रम अपेक्षाकृत अधिक सारगर्भित आ प्रसंगानुकूल भेल अछि”- एहि कथनक समीक्षा करू। (२०)

(बी) समकालीन मैथिली कविताक आधार पर मायानन्द मिश्रक कवितासँ परिचय कराउ। (१५)

(सी) “समकालीन मैथिली कविता” क आधार पर रामकृष्ण झा “किसुन” क काव्य-सौष्ठवसँ परिचय कराउ। (१५)

४.	(ए) “गोविन्ददास भजनावली” कगीत सर्वथा भक्तिमूलक प्रतीत होइत अछि ओ शृंगार एहिमे आवरणक काज करैत अछि”- पठित अंशक आधार पर अपन  विचार व्यक्त करू। (२०)

(बी) “दत्तवती” महाकाव्यक पठित अंशकाअधार पर “सुमन” जीक पाण्डित्य-प्रकर्षसँ परिचय कराउ। (१५)

(सी) “गोविन्ददासक काव्य नारिकेल फलक सदृश रहितहुँ श्रुति-माधुर्यसँ परिपूर्ण अछि”। पठित अंशक आधार पर एहि कथनक मूल्यांकन करू। (१५)

**सेक्शन- बी**

५.	निम्नलिखित अवतरणक सप्रसंग व्याख्या करू, जाहिमे भाव स्पष्ट रहए। (उत्तर अधिकतम १५० शब्दमे दातव्य) (१०*५=५०)

(ए) भेद रसगुल्ला ओ लड्डूमे छैक। रसगुल्ला सरस ओ कोमल होइछ, लड्डू शुष्क ओ कठोर। रसगुल्ला पूर्वक प्रतीक थीक लड्डू पश्चिमक। तेँ हम कहैत छियौह जे ककरो जातीय चरित्र देखबाक-बुझबाक हो त ओकर प्रधान मधुर देखी।

(बी) अइ टोकमे कोनो तेहनशक्ति रहैक जकरा नेनहिसँ मानबाक संस्कार जमि गेल रहैक। कोनो अनट-बनट काज करैत काल, कोनो अनुचित करैत काल, इएह टोक नेनासँ सुनने रहए। आ तकरा बाद फेर आगाँ किछु कहबाक आ कि करबाक साहस कहियो ने होइक। आइओ ने भेलैक। नवीन पौरुषक दर्प उतरि गेलैक। हठात् घोर लज्जा घेरि लेलकै।

(सी) परन्तु हुनकर मन एकरा कबूल करनि तखन ने! नेनु सन कोमल हृदय एहि दृढ़ताक आँचकेँ कहाँ सहि पबैत अछि? किऐक मन हरदम हुनकहि संग रहऽ लेल लागल रहैत छनि तकर कारण ओ स्वयं नहि बुझि पबैत छथि। परन्तु अन्तमे किछु अनुभव करैत छथि- एक प्रकारक आकुलता, एक प्रकारक आकांक्षा, एक प्रकारक वेदना….।

(डी) जे व्यक्ति अपने कोनो जोगरक नै रहैए सैह समाजक आ कुलशीलक नाक झंडामे टङने फिरैए आ जकरा अपन बाँहिक भरोस रहै छै से घर-परिवार वा समाजक  बोझ नै बनिकऽ अपने हाथ-पयर लाड़ब

पसिन्द करैए।... जखन बैसल बेटा मायो-बापकेँ नै सोहाइत छैक, आन किए ककरो गरा लगोतैक। अहाँकेँ गौँआसभक ओहि ठाम पेट पोसऽमे मर्यादा देखाइत अछि आ हमरा एहन जीवन मरणातुल्य बुझाइत अछि।

(ई) असलमे धरती जोतनिहारक थिक। हरबाह थिक जे धरतीक असल बेटा थिक। जे अपन पसेनासँ धरती-माताकेँ पूजै अछि। कएदिन देखलहक अछि मालिककेँ अपन पसेनासँ धरती-माताक पूजा करैत? देखहक सरकारी कानून तऽ जरूर सोचि विचारिकऽ बनै छैक ने। बटीदारक नामे खाता कि सिकमी-खाता खोलबाक कानून जरूर कोनो इनसाफसँ बनल हेतैक। हमसभ निपढ़ छी तँइ भने नै बुझियै, मगर ई सोचबाक चाही जे सब कानूनक पाछाँ कोनो निसाफ जरूर रहै छैक।

६. (ए) ‘‘घरदेखिया’’ कथा मिथिलाक ग्रामीण समाजक वर्ग-विशेषक यथार्थसँ साक्षात्कार करबैत अछि- स्पष्ट करू। (२०)

(बी) ‘‘लोरिक विजय’’ क कथावस्तु अति-रोचक होइतहुँ एहिमे अतिशयोक्तिक अभिव्यंजना कएल गेल अछि’’- एहि कथन पर विचार करू। (१५)

(सी) ‘‘पृथ्वीपुत्र’’ उपन्यासमे जीवनक ओ चित्र उतरल अछि जे सत्य पर आधारित अछि- एहि उक्तिक समीक्षा करू। (१५)

७. (ए) ‘‘वर्णरत्नाकर’’ मे ज्योतिरीश्वर सर्वत्र प्रतीयमान चित्रदेल अछि, तऽ कतौ-कतौ सम्भाव्य सेहो अछि, जाहिसँ वर्णनक आदर्श चित्रण प्रस्तुत भेल अछि- पठित अंशक आधार पर प्रमाणित करू। (२०)

(बी) कोनो कथाक संगति-विसंगति कथाक नहि, ओहि समाजक रहैछ जाहिमे ओ कथाकार रहैत अछि- ’कृति राजकमलक’ मे पठित प्रथम दस कथाक आधार पर एहि उक्तिक समीक्षा करू। (१५)

(सी) ‘‘पाँच पत्र’’ कथा पति-पत्नीक राग-वृत्ति काल-चक्र द्वारा जीवनक दशा-दिशाक बोध करबैत अछि- एहि उक्तिक आलोकमे एहि कथाक मार्मिकता देखाउ। (१५)

८. (ए)मणिपद्मक ‘‘वालगोविन’’ कथाक मार्मिकता पर प्रकाश दिअ। (२०)

(बी) ‘‘जखन बैसल बेटा मायो-बापकेँ नै सोहाइत छैक, आन किए ककरो गरा लगोतैक’’- भफाइत चाहक जिनगी मे महेशक एहि उक्तिमे सन्निहित भावक समीक्षा करू। (१५)

(सी) ‘‘झगड़ा’’ संयोगाश्रित घटना प्रधान कथा अछि जकर उद्देश्य करुणा उत्पन्न करब थिक- एहिमे लेखककेँ पर्याप्त सफलता भेटल छनि- प्रमाणित करू। (१५)

# डॉ. शंभु कुमार सिंह

*जन्म : १८ अप्रील १९६५ सहरसा जिलाक महिषी प्रखंडक लहुआर गाममे। आरंभिक शिक्षा, गामहिसँ, आइ.ए., बी.ए. (मैथिली सम्मान) एम.ए. मैथिली (स्वर्णपदक प्राप्त) तिलका माँझी भागलपुर विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहारसँ। BET [बिहार पात्रता परीक्षा (NET क समतुल्य) व्याख्याता हेतु उत्तीर्ण, १९९५] "मैथिली नाटकक सामाजिक विवर्त्तन" विषएपर पी-एच.डी. वर्ष २००८, तिलका माँ. भा.विश्वविद्यालय, भागलपुर, बिहारसँ। मैथिलीक कतोक प्रतिष्ठित पत्र-पत्रिका सभमे कविता, कथा, निबंध आदि समय-समय पर प्रकाशित। वर्तमानमे शैक्षिक सलाहकार (मैथिली) राष्ट्रीय अनुवाद मिशन, केन्द्रीय भारतीय भाषा संस्थान, मैसूर-६ मे कार्यरत।- सम्पादक।*



*आलेख:*

## आधुनिक मैथिली नाटकमे चित्रित : निर्धनताक समस्या

भारत गरीबक देश थिक। एतुका अधिकांश जनता एखनहुँ गाममे रहैत छथि जे कि कृषि कार्यपर निर्भर छथि आ बरखापर। फलस्वरुप अनियमित बरखा सरकारी उपेक्षा ओ अशिक्षा तथा पिछड़ापनक कारणेँ गामक लोक गरीबीक जीवन बिता रहल छथि। यैह गरीब किसान ओ गामक लोक जखन कमएबा हेतु शहर जाइत छथि तँ मजदूर वा बोनिहार कहबैत छथि। ओतहुँ हुनका सभकेँ नारकीय जीवन जीवाक लेल बाध्य होमए पड़ैत छैक। भारतक कुल आबादीक पैंतीस प्रतिशतक लगपास लोक एहन छथि जे जीवनोपयोगी न्यूनतम आवश्यकताक पूर्ति करबामे अक्षम छथि।

निर्धनता मनुक्खकेँ बेवस लाचार आ शक्तिहीन बना दैत अछि। निर्धन मनुक्ख पिछड़ल, दीन-हीन बाधाग्रस्त आ सदैव दोसरक दयारपर जीबए लेल बाध्य भ' जाइत अछि। मानव जीवनक भयंकर अभिशाप थिक निर्धनता वा गरीबी। जाहि मनुक्खकेँ दू-साँझक रोटी नहि, पहिरए लेल शरीरपर वस्त्र नहि, रहक लेल घर नहि, बीमार भेलापर दवाय-दारूक उपाए नहि, ओ जँ आत्माक उच्चताक दावा करत तँ ओ मिथ्याक सिवाय किछु नहि भ' सकैत अछि। ओ स्वतंत्र कोना भ' सकैत अछि? ओ कोनहुँ बड़का काज कोना क' सकैत अछि ? ओ अपन विचारकेँ स्वतंत्र रूपसँ कोना प्रकट क' सकैत अछि ? निर्धनताक कारणेँ मनुष्य तंगदिल, तुच्छ, ओछ, कमजोर आ अपन ईच्छाक मारएबला बनि जाइत अछि।

मैथिली नाट्य साहित्य मध्य एहि समस्याक विश्लेषण निम्नस्थ नाटकमे भेल

अछि। जीवनाथ झाक 'वीर वीरेन्द्र' (१९५६) भाग्य नारायण झाक 'मनोरथ' (१९६६) बाबूसाहेब चौधरीक 'कुहेस' (१९६७) गुणनाथ झाक 'कनियाँ पुतरा' (१९६७) महेन्द्र मलंगियाक 'ओकरा आँगनक बारहमासा' (१९८०) नचिकेताक 'नायकक नाम जीवन' (१९७१) अरविन्द कुमार 'अक्कू' क 'आगि धधकि रहल छै' (१९८१) गोविन्द झाक 'अन्तिम प्रणाम' (१९८२) गंगेश गुंजनक 'बुधिबधिया' (१९८२) आदि।

मनोरथमे लक्ष्मीनाथ अपन निर्धनताकेँ कोसैत छथि। ओ कहैत छथि---- "हमर नाम तँ दरिद्रनाथ होमक चाही ने कि लक्ष्मीनाथ। एकठाम नाट्यकार गरीबक धीया-पुताक संबधमे कहने छथि जे ओ कोनो काज सोचि समझि क' करैत अछि ओ अपन सुख-सुविधाकेँ त्यागि दैत अछि। एहि परिप्रेस्थमे मैथिली नाट्यालोचक डॉ. प्रेम शंकर सिंहक कथन छनि--- "आर्थिक दशाक क्षीणताक कारणेँ मनुष्यकेँ केहन संकटापन्न समस्याक सामना करए पड़ैछ तकरे दिग्दर्शन एहि नाटकमे होइत अछि।"१

गरीबीक ई पराकाष्ठा छैक जे क्यो खाइत-खाइत मरैत अछि तँ क्यो कमाइत-कमाइत। एतय समुचित व्यवस्थाक आभाव अछि। एतय अधिकांश नेनाक स्थिति एहने अछि जे जन्मोपरान्त रोजी-रोटीक जोगाड़मे लागि जाइत अछि। 'नाटकक लेल' मे एहि समस्याकेँ उजागर कएल गेल अछि---- "कतेको लोक एक किनारमे पड़ल कूड़ाक ढेरसँ की सभने बीछि रहल छल, क्यो दू एकटा रोगाएल बच्चाकेँ डेंगा रहल छल"२

निम्नवर्गक यर्थाथ चित्रणक दृष्टिसँ 'ओकरा आँगनक बारहमासा' मैथिली नाट्य साहित्यमे अद्वितीय स्थान राखैत अछि। एहि नाटकक केन्द्रबिन्दु थिक सर्वहारा वर्गक यातनापूर्ण जीवन, वासन्ती पवन, ग्रीष्मीय निदाध, बर्षाक रिमझिम हेमन्तक शीत आ शिशिरक सिहकी समटा गरीबक हेतु, फुसि थिक। एहिमे एकटा गरीब एरिवारक बारहो मासक दुर्दैन्य स्थितिक चित्रण कयल गेल अछि, जाहिमे कातिक मासक एकटा बानगी प्रस्तुत अछि-----

"कातिक हे सखि बोनियो ने लागै छै,<br>अन्नक नहि कोनो बाट यौ।<br>पेटक ज्वाला राम सहलो ने जाइ छै,<br>घर-घर हुलकए राड़ यौ।"३

वस्तुत: कातिक मास खेतिहर मजदूरक लेल दुखक मास होइत अछि। एहि समएमे अन्नाभाव भ' जाइत छैक एहन स्थितिमे निम्नवर्ग स्थिति दयनीय भ' जाइत छैक "दू गोट कोकड़ा पकबिति पियास लागल हय।"४ गरीब लोकक लेल खएबाक हेतु भरिपेट अन्न वस्त्र आ आवासक एकटा जटिल समस्या भ' गेल अछि एहि समस्या दिस नाटकारक ध्यान जाति छनि--- "अन्न बिना पेट जरिते हय, बस्तर बिना ठिठुरबे केली आ घर त' दखते छी" ५ प्रो. प्रेमशंकर सिंह एहि नाटककेँ "मिथिलाक निम्नवर्गीय समाजक अलबम कहने छथि।"६ "जाहि आँगनक बारहमासा एहिमे टेरल गेल अदि तकर ध्वनि खाली ओहि

आँगनसँ नहि आबि रहल अछि, प्रत्युत मिथिलाक लाख-लाख आँगनसँ उठैत ओकर रोस, हाहाकार करैत सोझे मर्मकेँ बेधि देमएबला अछि।"७

आर तँ आर आइ समाजमे एहन गरीबी व्याप्त छैक जे गरीबकेँ मुइलाक उपरान्त कफन किनबाक लेल टका नहि रहैत छैक। "अंतिम प्रणाम" मे समाजक एहन दुर्दैन्य स्थितिक चित्रण द्रष्टव्य थिक--- "ठीके तँ कहै छिऐ। हमरा आरू गरीब छी मुदा आनिपर दस गोटए मिलि जाए तँ की ने क' सकैत छी।"८

'बुधिबधिया' मे सेहो गरीबीक दृष्टान्त भेटैत अछि। देशमे कतेको व्यक्तिक स्थिति सोचनीच अछि। किछु व्यक्ति अपन जीवन-यापन विलासितापूर्वक ढगसँ व्यतीत करैत छथि, मुदा सरकारक ध्यान गरीब लोकक दिस नहि जाइत छैक। जँ सरकार द्वारा किछु व्यवस्था कयलो जाइछ तँ ओकर लाभ गरीब लोक घरि नहि पहुँचि सकैत अछि--- "एकरा देहपर एक बीत वस्त्र नहि, एकर अंग-२ उघार अछि।"९

समाजक अधिकांश लोक गरीबी रेखाक नीचाँ अछि। महगी अकाश छुबि रहल अछि। सामान्य लोक अपन परिवारक हेतु भोजन, वस्त्र आवास जुटएबामे परेशान अछि। 'अंतिम प्रणाम' मे मुरारीक कथन अछि--- "तीन-तीनटा बच्चोकेँ भुखले सुतैत देखैत रहैत छी----घरवालीकेँ फाटल वस्त्रमे देखैत छी---अहू सँ बेसी किछु अशुभ भ' सकैत अछि।"१०



वर्तमान युगमे सामाजिक चेतनाक निरन्तर बढ़ैत गतिशीलता ओ परंपरागत रूढ़ि व्यवस्थाक जड़ताक बीच एकटा भयंकर संघर्ष आ तनावक स्थिति बनल अछि। आधुनिक सामाजिक मैथिली नाटकक मूल-स्वर एहि प्रकारक विभिन्न संघर्ष, तनाव आ अनेक सामाजिक समस्या आदिसँ भरल अछि। सामाजिक जीवनक यथार्थक अभिव्यक्ति नाटककारक सामाजिक दृष्टि आ रचना दृष्टि पर आधारित होइत अछि। मिथिलांचलक समाजमे आर्थिक विपन्न जीवनक अस्तव्यस्तता स्वाभाविकतामे परिवर्तित भ' गेल अछि।

**संदर्भ**

१. मैथिली नाटक परिचय, डॉ. प्रेम शंकर सिंह, पृष्ठ–९६
२. नाटकक लेल, नचिकेता, पृष्ठ–५४
३. ओकरा आँगनक बारहमासा, महेन्द्र मलंगिया, पृष्ठ--१
४. वएह, पृष्ठ–२
५. वएह, पृष्ठ--४६
६. मैथिली नवीन साहित्य, सं. डॉ. बासुकीनाथ झा, पृष्ठ--२८
७. वएह, पृष्ठ–२८
८. अंतिम प्रणाम, गोविन्द झा,
९. बुधिबधिया, डॉ. गंगेश गुंजन
१०. अंतिम प्रणाम, गोविन्द झा

जातिकेँ खुऔल जाए आन गामक दोस्त कुटुम-दिआद तँ रहबे करता।

(1)ऐ प्रकारे उपन्यासक मादे उपन्यासकार हमरालोकनिक बीच व्याप्त विभिन्न प्रकारक नीक आ अधला प्रथा-रीति-चलनि-मान्यताक बीच विभिन्न प्रकारक लोक सबहक अमुल्य विचार आ ओही समाजक दालि-भातमे मुसलचन्दक उदाहरण दऽ ओकरासँ सावधान केलनि। सृष्टिक जे चक्र छी जीवन-मरण जइसँ कियो बँचि नै सकै छी जेकरा समाज आ कर्त्तकेँ मनोनुकूल कऽ समाजमे रचनात्मक काज करी ऐ लेल एकटा दिशा-निर्देश देलनि। जेकरा देवनन्दन जी अपने शब्दे स्वीकार कऽ पिताक निम्मिते साले-साल भोजे नै वल्कि यथासाध्य कल्याणकारी काजक प्रेरणा देलनि।





***डॉ.अरुण कुमार सिंह***

**स्वातन्त्र्योत्तर मैथिली कथामे सामाजिक समरसता**

'सर्वेभवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामयाः

सर्वे भद्राणि पश्यन्तु मा कश्चिद् दुख भाक्-भवेत्।'

उपनिषदक ई सूत्र वाक्य समरसतेक उन्नायक व परिचायक अछि।

मानवमात्रक हितक कामना, सुख, समृद्धि एवं कल्याणक भावने सामाजिक समरसता अछि जे विभिन्न जाति, वर्ण, धर्म, सम्प्रदाय, भाषाई लोकक मन वाणी आओर कर्मसँ समरूप भए अपन प्रस्थिति एवं भूमिकाक निर्वाह करैत लक्ष्य प्राप्ति दिस प्रेरित करैछ। सामाजिक समरसता भारतीय संस्कृतिक आत्मा अछि। धर्म सापेक्षीकरण धर्म निरपेक्षीकरण, सर्वधर्म समभाव, मानवतावाद, बहुजनहिताय-बहुजनसुखाय आदि अवधारणा सामाजिक समरसताक पोषक व परिणाम रहल अछि। विविधतामे एकरूपताक भावना समरसतेकेँ प्रतिनिधित्व करैत अछि। संत, साहित्यकार, समाजवैज्ञानिक आदि सब सामाजिक व्यवस्था एवं प्रगति लेल - सामाजिक संगठनक स्थिरता लेल सामाजिक समरसताक अपेक्षा करैत रहल अछि।

सामाजिक समरूपताक प्रचार-प्रसारक प्रति साहित्यकार सदैव सजग रहलाह अछि। सामाजिक प्राणीक रूपमे ओ समाजक शिल्पीए टा नहि अपितु शिक्षक, पथ-प्रदर्शक, विश्लेषक व सर्जक सेहो अछि एतदर्थ हुनक सृजनमे सामाजिक समरसताक सन्देश रहब स्वाभाविके अछि।

मिथिलेत्तर प्रान्त मध्य विद्यापतिक सम्मान आओर आधुनिक युगक प्रथम मैथिली गद्यकार चन्दाझाक यश देखिकेँ मिथिलाक विद्वानमे सेहो अपन निज भाषाक सेवाक उत्सुकता जागल जकर फलस्वरूप मैथिली कथासाहित्यक निर्माण प्रारम्भ भेल। मैथिली साहित्यक समालोचक डॉ. रामदेव झाक कहब छन्हि जे आरम्भमे मैथिली कथा लेखकक लेल रचनाक दुई आदर्श छल पहिल संस्कृत परम्पराक आख्यायिका-उपाख्यायन, नीति कथा आदि तथा दोसर पाश्चात्य परिपाटीक सामाजिक परिवेश पर रचित कथा उपन्यास। ओहि समय धरि अंग्रेजी वा अन्य पाश्चात्य साहित्यसँ मैथिली साहित्यकारक साक्षात् परिचय नहि भए सकल छल, परंच बंगला साहित्य मे पाश्चात्य कथा - उपन्यासक अनुवाद आओर ओहिसँ प्रेरित-प्रभावित अभिनव कथा-उपन्यास विशेष समृद्ध भए बंगाल आओर बंगालसँ बाहर लोकप्रिय भए चुकल छल। मिथिला आओर मैथिलीक पूर्वोत्तर राज्य-आसाम एवं बंगालसँ प्राचीन कालहिसँ घनिष्ट सम्बन्ध रहल अछि, जाहिक कारणेँ मैथिली कथा साहित्यक आरम्भिक कथामे बंगला साहित्यक प्रभाव दृष्टिगोचर होइत अछि। हम कहि सकैत छी जे एकरे फलस्वरूप मैथिली कथा साहित्य मे नव युगक संग-संग नव दृष्टिकोणक सूत्रपात भेल एवं पाश्चात्य

साहित्य एवं भारतीय साहित्यसँ प्रभावित भए मैथिली कथासाहित्य क्रियाशील भेल अछि।

मैथिली साहित्य मध्य 1922-23 ई. क आसपास जखन मौलिक कथा लिखल जाए लागल ताहि मध्य कुमार गंगानन्द सिंह, कालीकुमार दास, लक्ष्मीपति सिंह, कांची नाथ झा 'किरण' आदिक कथा मध्य मिथिलाक वर्त्तमान समाजक स्थितिकेँ देखैत मैथिली कथासाहित्यकेँ सामाजिक जीवनसँ जोड़बाक भरपुर प्रयास कएलन्हि। एहि मे कुमार गंगानन्द सिंहक 'पंचपरमेश्वर' एवं 'बिहाड़ि' मे सामाजिक समरसताक वातावरणक अक्षरशः पालन होइत देखल गेल छल।

स्वातन्त्र्योत्तर युगमे मैथिली साहित्यकार लोकनि अपन साहित्य मध्य पात्र चयन करबामे क्रमशः आभिजात्य मोहक तिरस्कार करैत सामाजिक समरसताक नियोजन (समावेश) करैत गामघरक ओहि पात्रसभकेँ साहित्यमे प्रतिष्ठित कएलनि जे परम्परासँ शोषित ओ प्रताड़ित रहल छलाह।

स्वातन्त्र्योत्तर कालक कथाकारमे ललित, राजकमल, सोमदेव, मायानन्द मिश्र, धीरेन्द्र, रामदेव झा, हंसराज एवं लिली रे आदि प्रमुख अछि। मैथिली कथा साहित्य मध्य सामाजिक समरसताक दिशामे वस्तुतः ललितेक 'रमजानी' ओहि समयक श्रेष्ठ कथा सिद्ध भेल जे अखन धरि टटका बनल अछि। हिनक ओवरलोड, कंचनियाँ, मुक्ति एवं जान्वर आदि कथा मे समकालीन स्थितिकेँ चिन्हैत जीवनक यथार्थक चित्रणक क्रममे समाजक सामन्ती विकारकेँ जगजियार करैत सामाजिक समरसताक बोध तँ देलनि मुदा मुक्तिक रास्ता नहि बना सकलाह। धीरेन्द्रक अधिकांश कथाक जन्म समाजक ओहि क्षेत्रक व्यथासँ होइत अछि जे सामाजिक स्तर पर तिरस्कृत अछि। शारीरिक स्तर पर बात-बात पर दण्डित कएल जाइत अछि। आर्थिक स्तर पर औंठा बोरबा लेल अभिशप्त अछि। हिनक कथा घंटी, सवाइ, हिचुकैत बहैत सेती, गामक ठठरी, मादा काँकोड़, बन्हकी आदि कथामे सामाजिक समरसता देखार दैत अछि। रामदेव झाक मनुक संतान, एक खीरातीन फाँक आदि कथामे स्वतन्त्र भारतक आर्थिक संघर्षक सामाजिक भावनासँ जाति विभेदकेँ समाप्त करैत वर्ग-संघर्षसँ मुक्त भए जाइत अछि। सामाजिक एवं प्रशासकीय व्यवस्थाक विद्रूपताकेँ देखार करैत दलित वर्गक विद्रोहक स्वरकेँ संगठन मे परिवर्त्तन करैत तत्कालीन समकालीन जीवनक यथार्थक चित्रण करैत अछि। सोमदेव विशिष्ट कथाकार छथि। हिनक

प्रमुख कथा भात, अंगाचोर आदि मे निम्न वर्गक जीवनक यथार्थक अत्यन्त आत्मीयतासँ चित्रण भेल अछि। प्रभाष कुमार चौधरीक 'मलाहक टोल' कथा शोषित वर्गकेँ अपन अस्तित्वक रक्षा लेल प्रेरित करैत अछि। रामानन्द रेणु आर्थिक विसंगति जन्य निम्न वर्गक दंश एवं कुण्ठाकेँ अपन कथा मध्य विश्लेषित कएने छथि। जीवकान्तक 'इनकिलाव' तत्कालीन राजनीतिक सामाजिक जीवनक यथार्थसँ अछि।

1970 ई. क दशकमे बैंकक राष्ट्रीयकरण, प्रिवीपर्सक समाप्ति, भूमि सुधार सम्बन्धी आन्दोलन, आदि किछु एहन घटना थिक, जाहिसँ सामाजिक जागरण भेल तँ दोसर दिस साम्यवादी आन्दोलनसँ पूँजीपति एवं श्रमिक मध्य संघर्षमे वृद्धि भेल। दलित वर्गमे सह-अस्मिताक भावमे वृद्धि भेल। एहि यथार्थक प्रवक्ता कथाकारक रूपमे सुभाषचन्द्र यादवक नाम महत्त्वपूर्ण अछि। हिनक महत्वपूर्ण कथा छन्हि- घरदेखिया, काठक बनल लोक, फँसरी एवं 'बनैत बिगड़ैत' कथा संग्रहक कथा आदि। कथाकार दलित अस्मिताक स्वर दैत समकालीन यथार्थक चित्रणसँ पूर्ण सफल भेल छथि। कथाकार महाप्रकाश, सुकान्त सोम, मनमोहन झा, उपेन्द्र दोषी, उदयचन्द्र झा 'विनोद', रामनरेश सिंह, राजाराम प्रसाद, महेन्द्र, विभूति आनन्द, अशोक, रमेश, तारानन्द वियोगी, देवशंकर नवीन, प्रदीप बिहारी, रामभरोस कापड़ि 'भ्रमर', रमेश रंजन, शैलेन्द्र आनन्द, केदार कानन, जगदीश प्रसाद मंडल, उमेश पासवान, डॉ. धीरेन्द्र, उमाकान्त, सुशील, रघुनाथ मुखिया, कामिनी कामायनी, ऋषि वशिष्ट, उमेश मंडल, वीरेन्द्र कुमार यादव, रामदेव प्रसाद मंडल झारूदार, मनोज कुमार मंडल, दुर्गानन्द मंडल आदि अपन कथा मध्य तथाकथित रूपेँ शोषित-दलित निम्नवर्गक छोटसँ छोट घटनाक्रमकेँ अपन कथानक बनबैत समाजक वास्तविक चित्रक चित्रण कए रहल छथि। एवं प्रकारेँ मैथिली कथा अपन स्वरकेँ परिवर्त्तित करैत, नव डेग दैत सामाजिक समरसता कायम करबा दिस विकासोन्मुख अछि।

**सहायक ग्रंथसूची**

1 झा, बासुकीनाथ (डॉ.) (सम्पादक), समकालीन कथा साहित्यःसामाजिक परिप्रेक्ष्य, चेतना समिति, पटना,1976

2 झा, दिनेश कुमार(डॉ.), मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास,मैथिली

अकादमी, पटना, 1989

3 झा, श्री दुर्गानाथ 'श्रीश' (डॉ.), मैथिली साहित्यक इतिहास, भारती पुस्तक केन्द्र, दरभंगा, 1991

4 भारद्वाज, मोहन (सम्पादक), मैथिली आलोचना,पत्रिका, मित्र गोष्ठी द्वारा डॉ. भीमनाथ झा, लक्ष्मीसागर, दरभंगा, फरबरी 1992

5 झा, रामानन्द 'रमण'(डॉ.), अखियासल, अखियासल प्रकाशन, लालगंज, मधुबनी,1995

6 नबीन,देवशंकर, आधुनिक साहित्यक परिदृश्य, अंतिका प्रकाशन, दिल्ली 2000

7 ठाकुर, प्रो. वीणा, वाणिनी, मिथिला रिसर्च सोसाइटी, कबिलपुर, लहेरियासराय, दरभंगा, 2010

8 झा, रामानन्द 'रमण'(डॉ.), हिआओल, अखियासल प्रकाशन, लालगंज, मधुबनी,2012

9 झा बाल गोविन्द ''व्यथित'' (डॉ.) मैथिली साहित्यक इतिहास, पटना भारती भवन, 1981

10 झा, बासुकीनाथ (डॉ.) (सम्पादक) मैथिली साहित्यक रूपरेखा, पटना चेतना समिति, 1976

11. http://www.videha.co.in

*************

**मातृभाषाक माध्यमसँ उच्चशिक्षा**

किछु समयसँ देशमे उच्चशिक्षाक माध्यम एवं विषयवस्तुकेँ लए कए विमर्श चलि रहल अछि। एक दिस बाबा रामदेव अनशनक समय अपन मांग मे भारतीय भाषाक माध्यमसँ उच्च शिक्षाक मांग रखलन्हि, तँ दोसर दिस मुंबई उच्च न्यायालयक एक गोट फैसलामे कहल गेल अछि जे लोक सेवा आयोगक अंतिम





## शम्भु कुमार सिंह

## यू.पी.एस.सी. (मैथिली) प्रथम पत्रक परीक्षार्थी हेतु उपयोगी संकलन

:: मिथिलाक परम्परागत सीमा बृहदविष्णुपुराण (५म शताब्दी)क मिथिला महात्म्य खंडमे वर्णित अछि जकर अनुवाद कवीश्वर चन्दा झा ऐ प्रकारेँ कएने छथि: ''गंगा बहथि जनिक दक्षिण दिसि पूर्व कौशिकी धारा पश्चिम बहथि गण्डकी उत्तर हिमवत बल विस्तारा कमला त्रियुगा अमृता धेमुड़ा बागमती कृतसारा मध्य बहथि लक्ष्मणा प्रभृति से मिथिला विद्यासारा।''

:: बृहदविष्णुपुराणमे मिथिलाक बारह गोट नामक उल्लेख भेटैत अछि:

मिथिला तीरभुक्तिश्च वैदेही नैमिकाननम।
ज्ञानशीलं कृपापीठं स्वर्णलांगलपद्धतिः।।
जानकी जन्मभूमिश्च निरपेक्षा विकल्मषा।
रामानन्दकरी विश्वभाविनी नित्यमंगला।।

:: मिथिलाक आदि शासक विदेहक नाओंपर मिथिलाक नाओं 'विदेह' पड़ल।

::'तिरहुत' नामक उल्लेख सर्वप्रथम पुरुषोत्तमदेवक 'त्रिकाण्डकोश' (१२म शताब्दी) मे भेल अछि।

:: विदेह राज्यकुलक मिथिलापर शासनक समए ३००० ई.पू.सँ ६०० ई.पू. धरि अनुमानित अछि।

:: मिथिलामे पञ्जी बेवस्थाक सम्पादन कर्णाटवंशीय नरपति हरिसिंहदेवक द्वारा प्रारंभ भेल।

:: सप्तरत्नाकरक रचयिता छलाह चण्डेश्वर ठाकुर।

:: मिथिलाक प्रथम कर्णाटवंशीय शासक छलाह 'नान्यदेव' (१०९७ ई.)।

:: खण्डबला राजकुलक स्थापना म.म. महेश ठाकुर द्वारा १५५७मे भेल।

:: मिथिलापर ओइनवार राज्यवंशक शासन चौदहम शताब्दीक मध्यमे आरंभ भेल।

:: मिथिलामे भस्मसँ अंकित त्रिपुण्ड शिवभक्तिक, लम्बाकार श्रीखंडक टीका विष्णुभक्ति एवं सिन्दूरक ठोप शाक्त भावनाक प्रतीक मानल जाइत अछि।

:: मिथिलाक्षरक विकास तान्त्रिक यन्त्रसँ मान्य अछि। ई मानल जाइत अछि जे तिरहुताक्षरक आरंभ जइ मंगल चिह्न 'आँजी' सँ होइत अछि से तान्त्रिक कुण्डलनीक बोधक थिक।

:: मिथिलामे बिआहक अवसरपर गाओल जाइबला 'जोग' तन्त्रसँ सम्बद्ध मानल गेल अछि।

:: मिथिलाक धार्मिक जीवनक मुख्यधारा शिव ओ शक्तिमूलक थिक।

:: मैथिलीय रागरागिनीक प्राचीनतम उल्लेख सिद्ध लोकनिक 'चर्यापद'मे उपलब्ध होइत अछि।

:: कर्णाटनरपति म. नान्यदेव (१०९७ ई.पू.) मिथिलामे अपन राज्य स्थापित करबाक पश्चात् 'सरस्वती हृदयालंकार' नामक संगीतग्रंथ लिखल जइमे सर्वप्रथम ओ मैथिलीय रागरागिनीक उल्लेख क्रमबद्ध रीतिएँ कएल।

:: मैथिलीय संगीतक सक्रिय गतिविधि ओ विकास-प्रसारक दृष्टिसँ म. हरिसिंहदेव (१२९६-१३२६)क राज्यकाल विशेष रूपेँ उल्लेखनीय अछि।

:: 'तिरहुति' श्रृंगाररसक मधुरगीत थिक, जइमे नायक-नायिकाक संयोग-वियोगक रागात्मक वर्णन होइत अछि।

:: 'बटगवनी'मे सखी सबहक संग समागम-गृहमे पतिसँ अभिसारक हेतु जाइत नायिकाक वर्णन होइत अछि।

:: 'गोआलरी'क विषए-वस्तु होइत अछि गोपी सबहक संग कृष्णक नोंक-झोंक एवं केलिकौतुक।

:: 'रास'मे गोपी सबहक संग कृष्णक रासलीलाक वर्णन होइत अछि।

:: रासक सर्वप्रथम रचयिता छथि 'साहेबरामदास'।

:: मिथिलाक लोकवाणी हेतु 'मैथिली' शब्दक प्रयोग सर्वप्रथम कोलब्रुक १८०१ ई.मे कएल, परन्तु ऐ नामकेँ प्रसिद्ध करबाक श्रेय मैथिली भाषा साहित्यक आदि उन्नायक ग्रियर्सन महोदयकेँ छन्हि।

:: कालानुसारेँ मूल भारोपीय भाषाक समए २५०० ई.पू. मानल जाइत

अछि।

:: प्राचीन भारतीय आर्यभाषाक इतिहास १२०० ई.पू. सँ मानल जाइत अछि।

:: बौद्धधर्मक सुप्रसिद्ध ग्रंथ 'ललितविस्तार'मे ''वैदेहीलिपि''क उल्लेख अछि जकरा मैथिली लिपिक प्राचीनतम स्वरूप कहल जा सकैत अछि।

:: कोनो युगमे शिष्ट ओ परिनिष्ठित साहित्यसँ भिन्न जे रचना होहत अछि से ओइ युगक लोक-साहित्य कहबैत अछि।

:: दीर्घ आख्यानपर आधारित गेयात्मक कथा 'लोकगाथा' कहल जाइत अछि।

:: मैथिलीक किछु प्रमुख लोकगाथा काव्य थिक– लोरिकाइन, सलहेस, अनंगकुसुमा, दुलरादयाल, नैका बनिजारा, दीनाभद्री, रईया रणपाल आदि।

:: 'वर्णरत्नाकर' निर्विवाद रूपसँ मैथिली साहित्यक प्रथम उपलब्ध गद्य ग्रंथ थिक।

:: विद्यापतिक 'पुरुषपरीक्षा', पंचतंत्र, हितोपदेश आदि परंपराक संस्कृत नीतिकथा थिक।

::विद्यापतिक 'कीर्तिलता' अवहट्टक गद्यपद्यमय ग्रंथ थिक।

::'गोरक्षविजय' विद्यापतिक संस्कृत नाटक थिक, जइमे मैथिली पद सेहो प्रयुक्त भेल अछि।

::'विशुद्ध विद्यापति पदावली' विद्यापतिसँ कम-सँ-कम एक शताब्दीक पश्चातक संकलन थिक।

::१८७९ ई.मे दरभंगा राज हाई स्कूलक स्थापना भेल छल।

::१९६६ ई.मे मैथिली भारतक प्रमुख साहित्यिक भाषाक रूपमे साहित्य अकादेमी, दिल्ली द्वारा स्वीकृत भेल।

::मैथिली अकादमीक स्थापना १९७६ ई.मे भेल।

::नाटकमे आंगिक, वाचिक, आहार्य, तथा सात्विक चारू प्रकारक अभिनय आवश्यक होइ छै।

::'अंकियानाट'क आदि रचयिता छलाह शंकरदेव (१४४९-१५६९)।

::मिथिलामे 'कीर्तनिञानाच'क परिपाटीक आरंभ नवद्वीपक कीर्तनमंडलीक प्रभावसँ भेल १७म शताब्दीक आदिमे।

(स्रोत: मैथिली साहित्यक इतिहास, डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश')

# मैथिलीक प्रमुख उपभाषाक क्षेत्र आ ओकर प्रमुख विशेषता

**(यू.पी.एस.सी. परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)**



मैथिली भारोपीय भाषा परिवारक, भारतीय आर्यभाषासँ उत्पन्न एक महत्वपूर्ण आर्यभाषा थिक। ऐ भाषाक उद्भव ओ विकासक जेहन प्राचीन साहित्यिक मान्यता उपलब्ध अछि ओहन भारतक कोनो आधुनिक आर्य आ द्रविड़ भाषाक नै अछि।

कोनो सशक्त भाषाक अन्तर्गत ओकर अनेक बोली अथवा उपभाषाक निर्माण कालक्रमसँ क्षेत्रानुसार अवश्य होइत रहैत अछि। तकर कारण अनेक अछि। प्रत्येक भाषा अपन चारूकातक भाषासँ प्रभावित होइत अछि। ऐ क्रममे ईहो कहल जाइत अछि जे प्रत्येक कोसपर बोली बदलैत अछि आ प्रत्येक जाति वा समाजक भाषा भिन्न होइत अछि। डॉ. सुभद्र झा एवं ग्रियर्सन सन विद्वान लोकनि ई पहिनहि स्पष्ट कऽ देने छथि जे मैथिली एक स्वतंत्र आ सशक्त भाषा थिक। ऐ भाषाक चारूकात चारि गोट भाषा अछि। एकर पूबमे बंगला भाषा, पश्चिममे भोजपुरी, उत्तरमे नेपाली आ दक्षिणमे मगही भाषा अछि। ईहो स्वतः सिद्ध अछि जे कोनो भाषा अपन निकटवर्ती भाषा सभसँ प्रभावित होइत रहैत अछि।

उपर्युक्त कारणसँ मैथिली भाषामे अनेक बोली अथवा उपभाषाक जन्म भऽ गेल अछि। सर्वप्रथम मैथिली भाषाक विभिन्न उपभाषाक परिचए डॉ. ग्रियर्सन अपन “Linguistic Survey of India”क दोसर भागमे प्रस्तुत कएने छथि। हिनका अनुसारेँ मैथिलीक छः गोट उपभाषा अछि:- (१) मानक मैथिली (२) दक्षिणी मानक मैथिली (३) छिका-छिकी बोली (४) पूर्वी मैथिली (५) पश्चिमी मैथिली (७) जोलहा बोली।

ग्रियर्सनक उपर्युक्त उपभाषा वा बोलीक वर्णनसँ पं. गोविन्द झा सहमत नै छथि। हिनक कहब छन्हि जे मैथिलीक विभिन्न बोलीकेँ क्षेत्रानुसार पाँच उपभाषामे बाँटल जा सकैछ: (१) पूर्वी मैथिली (२) दक्षिणी मैथिली (३) पश्चिमी मैथिली (४) उत्तरी मैथिली (५) केन्द्रीय मैथिली वा उपभाषा।

उपर्युक्त विवेचनासँ लगैत अछि जे गोविन्द झा सेहो ग्रियर्सनक मतानुसार मैथिलीक उपभाषाक वर्णन केने छथि। ओना ओ कतौ-कतौ विभिन्न उपभाषाक क्षेत्र आदिमे कनेक अन्तर कऽ देने छथि, अस्तु मैथिलीक वर्तमान रूपकेँ देखल जाए तँ ज्ञात होइत अछि जे ग्रियर्सनक समैमे जे मैथिलीक विभिन्न

उपभाषाक क्षेत्र आ रूप छल ओइमे परिवर्तन भऽ गेल अछि। एकर अतिरिक्त नेपालक तराइमे जे मैथिली बाजल जाइत अछि ओकरो एकटा फराक रूप छै। एहना स्थितिमे मैथिलीक उपभाषाक वा बोलीक आठ गोट भेद कएल जा सकैत अछि:

१. **मानक मैथिली:** एकर क्षेत्र केन्द्रीय ओ उत्तरीय पुरना दरभंगा जिला (मधुबनी, दरभंगा आ समस्तीपुर) थिक। ओना तँ डॉ. ग्रियर्सनक अनुसारेँ मानक मैथिली दरभंगा आ भागलपुर जिलाक उत्तरी क्षेत्रक आ पुर्णियाँ जिलाक पश्चिमी क्षेत्रक ब्राह्मण लोकनि बजै छथि। हिनका लोकनिक अपन साहित्य आ परंपरा छन्हि जे ऐ भाषाक विकृत प्रवाहकेँ मन्द कएने अछि। वर्तमानमे ई स्पष्ट भऽ गेल अछि जे मानक मैथिली ब्राह्मणे टाक बोली नै छन्हि, किएक तँ मैथिली भाषाक पठन-पाठनक प्रवृति ब्राह्मणसँ आनो जातिक मध्य पूर्ण रूपसँ जागल अछि। ऐ हेतु मानक मैथिली मिथिलाक सभ जातिक बोली कहल जा सकैत अछि।

२. **दक्षिणी मैथिली:** डॉ. ग्रियर्सनक दक्षिणी मानक मैथिलीकेँ दक्षिणी मैथिलीमे राखल जा सकैत अछि। एकर क्षेत्र मुंगेर, मधेपुरा, सहरसा ओ समस्तीपुर धरि मानल जा सकैत अछि।

मानक मैथिली आ दक्षिणी मैथिलीमे निम्न अन्तर अछि–(I) मानक मैथिलीमे जतए धातु स्वर ह्रस्व रहैत अछि ओतए दक्षिणी मैथिलीमे दीर्घ भऽ जाइत अछि। जेना-मानक मैथिलीमे, 'जनै छी' होइत अछि आ दक्षिणी मैथिलीमे, 'जानै छी'।

(II) सर्वनामक रूपमे मानक मैथिलीमे हमर, तोहर, अहाँ, अपने, आदि प्रयुक्त होइत अछि। दक्षिणी मैथिलीमे मोर, तोर, तोहे सर्वनामक प्रयोग होइत अछि।

(III) क्रियापदमे सेहो भिन्नता देखल जाइत अछि, उदाहरण स्वरूप मानक मैथिली 'अछि' दक्षिणी मैथिलीमे 'अछ' भऽ जाइत अछि।

३. **पूर्वी मैथिली:** ग्रियर्सन एकरा गँवारी मैथिलीक संज्ञा देने छथि। एकर क्षेत्र पूर्णियाँ जिलाक केन्द्रीय आ पश्चिमी भाग, संथाल परगनाक पूर्वी भाग, साहेबगंज आ देवघर धरि अछि। ग्रियर्सन कहैत छथि जे ई भाषा अशिक्षित वर्ग द्वारा बाजल जाइत अछि।

पूर्वी मैथिली, दक्षिणी मैथिली आ दक्षिणी मानक मैथिलीसँ साम्य रखैत अछि। ओना कनेक अन्तर सेहो देखना जाइत अछि– (I) दक्षिणी मैथिलीमे सम्बन्ध कारकमे 'के' प्रयोग होइत अछि, मुदा पूर्वी मैथिलीमे 'केर' चिह्नक

प्रयोग होइत अछि। (II) दक्षिणी मैथिलीमे 'छिक' क्रियाक प्रयोग होइत अछि, मुदा पूर्वी मैथिलीमे ओकर बदलामे 'छिकई' क्रियाक प्रयोग होइत अछि।

४. **छिका-छिकी बोली:** ई गंगाक दक्षिणी मुंगेरक पुबारी भागमे, दक्षिणी भागलपुर ओ संथाल परगनाक उत्तरी ओ पश्चिमी भागमे बाजल जाइत अछि। ई दक्षिणी मानक मधेपुराक बोलीसँ अत्यधिक साम्य रखैत अछि। ऐमे शब्दक अन्तमे 'की' वा 'हो' क उच्चारण कएल जाइत अछि, जेना– अपनो, खएबहो, कहबहो, सुनलहो आदि।

५. **पश्चिमी मैथिली:** एकर क्षेत्र मुजफ्फरपुर ओ चम्पारण जिलाक पुबरिया भाग थिक जइपर भोजपुरीक व्यापक प्रभाव अछि। ग्रियर्सनक अनुसारेँ ऐ क्षेत्रक कतिपय लोक जे बजैत छथि तकरा भोजपुरी कहल जाए अथवा मैथिली ई कहब कने कठिन। ओना मुजफ्फरपुरसँ अलग भेल वैशाली जिलाक क्षेत्रक भाषाक नाओं 'बज्जिका' भाषा देल गेल अछि। ऐ भाषाक नामकरण लिच्छवी वंशक इतिहासक आधारपर कएल गेल अछि।

६. **उत्तरी बोली:** एकर क्षेत्र नेपालक तराई आ वर्तमान सीतामढ़ी जिलाक उत्तरी भाग धरि मानल जा सकैत अछि। ऐ भाषापर नेपाली भाषाक प्रभाव बुझना जाइत अछि।

७. **जोलहा बोली:** पुरना दरभंगा जिलाक मुसलमानक बोलीकेँ डॉ. ग्रियर्सन जोलहा बोली मानैत छथि। ओना हिनक कहब छन्हि जे मिथिलाक मुसलमान मैथिली नै बजैत छथि। मुजफ्फरपुर आ चम्पारण जिलाक मुसलमान जे बोली बजैत छथि ओइपर अवधी भाषाक प्रभाव अछि। एकर अतिरिक्त वर्तमान कालक मुसलमानक बोलीपर उर्दू आ हिन्दीक प्रभाव सेहो परिलक्षित होइत अछि।

८. **केन्द्रीय मैथिली:** मध्य मिथिलाक (दरभंगा, मधुबनी, पंचकोशी) सम्पूर्ण क्षेत्रक भाषा जकर निकट कोनो आन भाषा नै अछि, तकरा केन्द्रीय मैथिलीक नाओंसँ जानल जाइत अछि। केन्द्रीय मैथिली साहित्यक भाषाक अत्यन्त नजदीक कहल जा सकैत अछि। मानक मैथिली आ केन्द्रीय मैथिलीमे बहुत सामीप्य देखल जाइत अछि।

वर्तमानमे मैथिलीक दूटा उपभाषाक नवीन नामकरण भेटैत अछि– अंगिका ओ बज्जिका। छिका-छिकी, अर्थात् पूर्वी बोलीकेँ अंगिका कहल जाइत अछि जकर केन्द्र स्थल थिक भागलपुर। प्रायः भागलपुर महाभारत कालीन अंग राज्यक राजधानी छल तँए ऐ क्षेत्रक भाषाकेँ अंगिका कहल जाइत अछि। बज्जिकाक सम्बन्धमे विवेचना कएल जा चुकल अछि।

एतावता ज्ञात होइत अछि जे मैथिली भाषाक क्षेत्रानुसार अनेक उपभाषा अछि। एखनौं धरि एकर पूर्णरूपेण सर्वेक्षण नै कएल गेल अछि नै तँ किछु आओर उपभाषाक सम्बन्धमे ज्ञात होइत, तँए ऐ बिन्दुपर भाषावैज्ञानिक दृष्टिएँ सर्वेक्षण हएब अत्यंत आवश्यक अछि।

## मैथिली साहित्यक आदिकाल
## (यू.पी.एस.सी. परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)

मानव समुदाय सर्वदासँ समस्या सबहक समाधान करबाक लेल साकांक्ष रहल अछि। कोनो भाषाक जन्म कहिया भेल ऐ विषएमे किछु कहब कठिने नै अपितु असंभव सेहो अछि। यद्यपि किछु विद्वान भाषा सबहक जन्मपत्री बाहर करबामे व्यस्त रहलाह अछि किन्तु ओ लोकनि बरोबरि ऐ दिशामे असफल रहलाह अछि। लिखित उपलब्ध साधनपर एतबे कहल जा सकैछ जे अमुक समैमे अमुक भाषा-शब्द प्रचलित छल। ईएह हाल प्रत्येक भाषाक संग अछि।

साहित्यक शरीर अछि भाषा। संवेगात्मक अनुभूति जकरा साहित्यशास्त्रमे रसक आख्यान कहल जाइत अछि, भाषाक माध्यमसँ अभिव्यक्त होइछ, ओ तँए कोनो साहित्य इतिहाससँ संलिष्ट रहैत अछि। विश्वभाषाक इतिहासमे केवल संस्कृतेटा एहन विषए अछि जे पाणिनि द्वारा 'संस्कृत' भए तेना ने प्रतिष्ठित भेल जे अद्यापि अपन स्वरूप सभ ठाम सभ विषएमे एकरूप स्थिर कएने अछि।

भारतीय साहित्यक आरंभ प्रायः अंधकारमे विलीन अछि। मैथिली साहित्यक संग सेहो ईएह चरितार्थ होइत अछि। साहित्यक इतिहासकार मध्य बहुत दिन धरि ई विवादक विषए बनल रहल जे मैथिली साहित्यक उद्भव एवं विकासक प्रारंभ कहियासँ मानब?

प्राचीन समैसँ मिथिला संस्कृतक केन्द्र रहल अछि। सम्पूर्ण भारत विशेषतः पूर्वांचलक छात्र लोकनि संस्कृत अध्ययनक हेतु मिथिला अबैत छलाह। विद्याक प्रचार-प्रसारक कारणेँ एतए विद्वान लोकनिक संख्या अधिक छल। ई विद्वान लोकनि दर्शन, न्याय, ज्योतिष, गणित, आदिकेँ महत्वपूर्ण मानैत छलाह। फलस्वरूप जनभाषाक उपेक्षा प्रत्यक्ष-अप्रत्यक्ष रूपमे होइते रहलै। मुदा एतबा होइतो ऐठामक लेखक तथा कविगण समए-समैपर जनभाषामे सेहो किछु रचना करैत छलाह। ऐ कारणेँ प्राचीनकालीन मैथिली

सामग्री अत्यंत सीमित रूपमे उपलब्ध होइत अछि।

किन्तु जतबा सामग्री मैथिलीक प्रारंभिक कालक अध्ययनक हेतु उपलब्ध अछि तकरा चारि भागमे विभाजित कएल जा सकैत अछि:- १.शब्द, २.वाक्यखंड, ३.सूक्ति तथा ४.लोकगीत एवं लोकगाथा। अध्ययनक सुविधाक हेतु ऐ सभ वर्गपर अलग-अलग प्रकाश देल जा सकैछ।

(१) **शब्द-** भाषा विज्ञानक अनुसार कोनो भाषाक हेतु शब्दक महत्व सर्वाधिक अछि। पहिने शब्दक प्रयोग होइ छै, तखन स्वरूपक। ऐ दृष्टिएँ प्रथम कोटिमे ओ सभ ग्रंथ अबैत अछि, जइमे मैथिली शब्दक प्रयोग कएल गेल अछि। यद्यपि ओ सभ ग्रन्थ संस्कृतमे लिखल अछि, किन्तु लेखक अपन भावकेँ पूर्ण रूपसँ व्यक्त करबाक हेतु तथा सरल एवं जनसाधारणक बुझबा योग्य बनएबाक हेतु अनेक स्थानपर पर्यायवाची मैथिलीक बेवहार कएलनि अछि। ऐ वर्गमे सर्वप्रथम किछु निबंधकार लोकनि अबैत छथि जे अपना निबंधमे मैथिलीकेँ स्थान देलनि। ऐ प्रकारक लेखक लोकनिमे नवम् (९वम) शताब्दीक लेखक वाचस्पति मिश्रक नाओं सर्वप्रथम लेल जाइत अछि। ई अपन प्रसिद्ध ग्रंथ शाङ्कर भाष्य टीका 'भामति'मे निगड़ शब्दवाची मैथिली 'हरि'क प्रयोग कएने छथि। ई शब्द देशी थिक आ हमरा लोकनिक ओतए आइ धरि प्रचलित अछि। ई शब्द मैथिलीक अप्पन अछि आ तेना ने पचि गेल अछि जे एकरा ऐसँ फराक करब असंभव छै। यद्यपि एखनौं विद्वान मंडली मध्य ई विवाद अछि जे ई शब्द सन्ताली छै। शब्द जँए प्रचलित छलै तँए एकरा अपनाओल गेल, अतएव ऐ शब्दकेँ मैथिलीक शुद्ध रूप कहब विशेष उपयोगी हएत।

दोसर लेखक छथि १०म् ११हम् शताब्दीक सर्वानन्द। डॉ. सुभद्र झा अपन निबंध Maithili Words in Sarvanand's Amarkosh मे पूर्ण रूपेँ विचार करैत कहैत छथि जे "सर्वदानन्दक 'अमरकोष'मे ४०० सँ ६०० बीचमे शुद्ध मैथिली शब्दक प्रयोग देखबामे अबैत अछि, जकरा मैथिलीक शुद्ध रूप कहल जा सकैछ।" मैथिलीकेँ असमी एवं बंगलासँ समता रहबाक कारणेँ ऐपर विवाद कएल गेल जे ई शब्द प्राचीन बंगला एवं असमीक प्रारंभिक रूप थिक। किन्तु ई तँ स्वाभाविक थिक जे तखन भाषा अपन निर्माणक स्थितिमे रहल हएत, तँए ओइ समैक तद्युगीन भाषासँ कमे अंशमे अंतर रहतै तथा देशगत भिन्नता रहबाक कारणेँ पूर्ण रूपसँ एकर विकास हएब असंभव अछि। 'अमरकोष'मे प्रयुक्त ई शब्दावली मैथिलीक निज सम्पत्ति थिक जकरा अस्वीकार नै कएल जा सकैछ।

तृतीय सामग्री हमरा लोकनिकेँ पञ्जीमे उपलब्ध होइछ। डॉ. जयकान्त मिश्र एकरा सभसँ प्राचीन मानैत छथि : The Earliest of these are, of course, the oldest Vernacular names of places and persons found in the early Panji records. किन्तु एतए एकटा तथ्य विचारसंगत अछि जे पञ्जीक प्रारंभ १३१० ई. मानल गेल अछि, तँए ऐमे पओल गेल शब्दकेँ वाचस्पति मिश्र एवं सर्वानन्दक पश्चातहिक मानब उचित हएत। पञ्जी सेहो संस्कृतहिमे अछि किन्तु किछु शब्द एहन भेटैत अछि जे मैथिलीक थिक।

शब्द सबहक ऐ प्रकारेँ प्रयोग चौदहम एवं पन्द्रहम शताब्दीक अन्य विद्वान सभ यथा चण्डेश्वर ठाकुर, रूचिपति, जगद्धर, वाचस्पति द्वितीय तथा विद्यापति ठाकुर सेहो कएने छथि। डॉ. उमेश मिश्र अपन निबंध शीर्षक Chandeshwar and Maithili मे चण्डेश्वर ठाकुर द्वारा प्रयुक्त मैथिली शब्द सबहक चर्चा कएने छथि। तथा पुनः ओ Journal of Bihar Orissa Research Society १९२८क पृष्ठ संख्या २६६मे Maithili Words of the 15th Century शीर्षक निबंधमे रूचिपति एवं जगद्धर द्वारा प्रयुक्त शब्दक चर्चा करैत ओ लिखैत छथि- In this commentary Ruchipati has now and then used words of Maithili, His mother-tongue, in order to give the exact meaning of some of the words of Sanskrit and Prakrit. उदाहरणस्वरूप किछु शब्दकेँ देखल जा सकैछ:-

| संस्कृत | मैथिली |
|---|---|
| कर्तरिल | कतरनी |
| जलग्रह | जलढ़री |
| पलांदु | पियाजु |
| पोत | डोंगी |
| कर्मान्तिक | कामत, कमती |
| विहंगिक | बँहगी |
| सुवासिनी | सुआसिन |
| पर्यङ्क | पलंग |
| पुत्रिक | पुतरी |
| आलवाल | थाल, कादो इत्यादि। |

डॉ. मिश्र ओइ निबंधमे जगद्धर द्वारा प्रयुक्त शब्द सबहक सेहो वर्णन

कएलनि अछि। जगद्धरक 'मालती-माधव' तथा 'वेणीसंहार' दुनू टीकामे मैथिली शब्द पाओल जाइत अछि यथा:

| संस्कृत | मैथिली |
|---|---|
| दोड़दह | दोहर |
| चोर्णकम | टोप्पर |
| ग्रह | गोह |
| अलवालम | थाल, कादो |
| प्राजनम् | पैना |
| यूथिका | जूही आदि। |



वाचस्पति मिश्र द्वितीय द्वारा लिखित 'तत्वचिन्तामणि'क अंग्रेजी अनुवादक भूमिकामे सेहो डॉ. उमेश मिश्र सिद्ध कएने छथि जे वाचस्पति मिश्र द्वितीय सेहो अनेक मैथिली शब्दक प्रयोग कएने छथि।

## (२) वाक्यखंड

शब्दक अतिरिक्त हमरा लोकनिकेँ मैथिली वाक्यखंड सबहक प्रयोग सेहो भेटैत अछि। जखन भारतवर्षमे अंग्रेजी राज्यक सुदृढ़ स्थापना भए गेल, तखन अंग्रेज लोकनि भारतक क्षेत्रीय भाषा सबहक आधुनिक अनुसंधान प्रणालीक अनुसारेँ अध्ययन प्रारंभ कएलनि। ऐ क्रममे म.म. हरप्रसाद शास्त्रीकेँ प्राचीन हस्तलिखित ग्रंथ सबहक अनुसंधान करबाक भार भेटलनि। म.म. शास्त्री ऐ क्रममे नेपाल गेलाह, ओतए हुनका १९१६ ई.मे तीन गोट ग्रंथ भेटलनि, जकरा ओ 'बौद्धगान ओ दोहा' नाओंसँ प्रकाशित करौलनि। उक्त तीनू ग्रंथ थिक (क) दोहाकोष (ख) चर्याचर्य विनिश्चय (ग) डाकार्णव।

ऐ ग्रंथ सबहक रचनाकाल आठम शताब्दीसँ एगारहम शताब्दी धरि मानल जाइत अछि। ओइ समैमे आधुनिक भाषा सभ विकासोन्मुख छल, किन्तु विकसित नै भेल छल, तँए हेतु भाषा-विज्ञानी लोकनि ओइ रचनामे भारतीय पूर्वांचलक प्रायः सभ भाषाक रूप पबैत छथि। सिद्ध लोकनिक विषएमे जखन विशेष अनुसंधान भेल तँ हुनका लोकनिक क्षेत्र गोरखपुरसँ भागलपुर धरि मानल गेल। जे सिद्ध लोकनि जइ क्षेत्रकेँ अपनौलनि से हुनका अपन रचनामे ओइ क्षेत्रक भाषाक प्रभाव देखबामे अबैत अछि। मैथिलीक प्रभाव सेहो सिद्ध लोकनिक रचनामे पाओल जाइत अछि। ऐ मतक पुष्टि करबाक हेतु निम्न तर्कपर दृष्टि देल जा सकैछ:

१. सिद्ध लोकनिक चर्चा ज्योतिरीश्वर अपन 'वर्णरत्नाकर'मे कएने छथि जइसँ अनुमान कएल जाइत अछि जे ओ लोकनि अपन मतक प्रचारार्थ मिथिला अवश्य गेल हेताह।

२. पदक शब्दावली सबहक वैज्ञानिक अध्ययन कएला सँ ई सिद्ध होइ छै जे ओ मैथिलीक अत्यंत सन्निकट अछि।

३. हुनका लोकनिक पदमे जइ प्रकारक स्थानक वर्णन कएल गेल अछि तकरा मिथिलाक भौगोलिक स्थितिसँ विशेष साम्य छै।

४. ओइमे विभक्ति, विशेषण तथा किछु क्रियापद एहन अछि जे मैथिलीमे प्रचुर मात्रामे प्रयोग कएल जाइत अछि।

सिद्ध साहित्यक भाषा, विद्यापतिक कीर्तिलता, कीर्तिपताका, विशुद्ध विद्यापति पदावली तथा ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकरक भाषासँ साम्य रखैत अछि। किछु सामान्य विशेषता ऐ सभ पदमे पाओल जाइत अछि यथा : दन्त्य वर्णक प्रधानता, 'ऍँ' क प्रयोग, चन्द्रबिन्दुक एक्के समान प्रयोग, 'हि' 'ऍँ' तथा 'ए' क ध्वनिक एक्के समान प्रयोग, जे, एहु, तरक, अप्पन, आदि सर्वनामक प्रयोग इत्यादि विशेषता समान अछि।

५. ओइ पद सभमे किछु लोकोक्ति तथा किछु वाक्यखंड एहन प्रयोग कएल गेल अछि जे मिथिलामे एखनौं प्रचलित अछि, यथा : (I) पहिल बियान, (II) बलाद बिआएल गबिया बाँझे (बरद बिआएल गाए रहल बाँझे) (III) बेङ्गसँ साँप बढ़िल जाए (IV) हाक पाड़ई (V) जे जे अएला ते ते गेला (VI) टूटि गेल कन्था इत्यादि।

६. किछु शब्दावली एहन अछि जे मैथिलीक प्राचीन रूप थिक। ओ शब्द सभ अखन विकसित भए दोसर रूप धारण कए लेलक अछि, यथा :

| चर्यापद | मध्यकालीन मैथिली | आधुनिक मैथिली |
|---|---|---|
| आजि | आजि | आइ |
| चापी | चापिदेब | |
| तेन्तलि | - | तेतरि |
| बिआती | बाइति | बिअउती |
| टेंगी | - | टेंगारी |
| चगेरा | - | चङ्गेरा |
| भणइ | भनइ | भनथि |

सिद्ध साहित्यक प्रधान कविगणमे किछु नाओं अछि सरहपा, कान्हपा, भुसुकपा, शबरपा, कुक्करीपा, लुईपा आदि। जतए धरि हिनक सबहक समैक प्रश्न अछि, हिनका लोकनिक समए संवत ८१७सँ मानल गेल अछि किएक तँ प्रथम कवि 'सरहपा'क आविर्भाव काल ८१७ मानल गेल अछि। ऐ तरहेँ हिनका लोकनिक समए ८सँ १२हम शताब्दी धरि निश्चित कएल गेल अछि।

दोहाकोषक भाषाकेँ डॉ. सुनीति कुमार चटर्जी शौरसेनी अपभ्रंश मानैत छथि। 'चर्याचर्य विनिश्चय'पर सेहो शौरसेनीक प्रभावकेँ ई स्वीकार करैत छथि: The Charyas belong to the early or old N.I.A Stage. Being the first attempt, the speech is not sure of its own forms learns on its stronger, better established Sisters and Aunts.

उपर्युक्त तर्क एवं प्रमाण सबहक आधारपर डॉ. सुभद्र झा अपन "Formation of Maithili Language" नामक ग्रंथमे चर्यापदक भाषाकेँ निर्विवाद रूपेँ मैथिलीक "छिकाछिकी" शाखाक अन्तर्गत मानैत छथि। किन्तु ई निर्विवाद नै अछि। एकरा प्राचीन बंगाली, प्राचीन असमियाँ तथा प्राचीन उड़िया सेहो कहल गेल अछि तथापि एतबा विवाद रहितौं अधिकांश विद्वान एकर भाषाकेँ प्राचीन मैथिली मानैत छथि। ऐ मतक समर्थक छथि- राहुल सांकृत्यायन, डॉ. के.पी. जायसवाल, म.म. डॉ. उमेश मिश्र, नरेन्द्रनाथ दास, डॉ. सुभद्र झा, श्री शिवनन्दन ठाकुर आदि।

अतएव निष्कर्ष रूपेँ कहल जा सकैछ जे चर्यापदक भाषा प्राचीन मैथिलीक अत्यंत सन्निकट अछि। कारण जे ऐमे प्रयुक्त वाक्यखंड, जे मैथिलीक थिक, आदिक पूर्ण प्रयोग पाओल जाइत अछि।

## (३) सूक्ति

एकर पश्चात् डाक वचनावलीक स्थान अबैत अछि। अतिप्राचीन कालसँ मिथिला कृषि प्रधान मानल जाइत रहल अछि। एतुका भूमिमे ने नदीक अभाव छैक आ ने भूमि उस्सर छै। फलस्वरूप खेतीपर पूर्ण जोर देल जाइत रहलै। मिथिलावासी लोकनि ज्योतिषमे सेहो विशेष आस्था रखैत छलाह, फलस्वरूप कृषि एवं ज्योतिष संबंधी निअम आदिक विषएमे लोककेँ शिक्षा देबाक हेतु विद्वान लोकनि तत्कालीन प्रचलित जनभाषामे सूक्ति सबहक निर्माण करैत छलाह, जइसँ अनपढ़ लोक सेहो पूर्णरूपसँ लाभान्वित होइत छलाह। ऐ सूक्ति सबहक अन्तर्गत डाक, घाघ, आदिक वचन सभ अबैत अछि।

डाक वचनावलीक भाषाकेँ किछु विद्वान चर्यापदो सँ प्राचीन मानैत छथि। कारण जे चर्यापदे जकाँ एकरो प्रचार उत्तर प्रदेश सहित समस्त पूर्वोत्तर भारतमे भेल। डाक वचनावलीक दू संस्करण मिथिलामे प्रकाशित भेल, कन्हैयालाल कृष्णदास द्वारा मैथिली साहित्य परिषद, दरभंगासँ। भाषाक दृष्टिसँ दोसर संस्करण बेसी प्रामाणिक कहल जा सकैछ। कारण जे ई एक प्राचीन हस्तलिखित पोथीपर आधारित अछि। एकर भाषा अपभ्रंशसँ विशेष साम्य रखैत अछि। प्राचीन तालपत्रमे जे डाकवचन भेटैत अछि से ओइ 'अवहट्ट' मे भेटैत अछि, जइमे महाकवि विद्यापतिक 'कीर्तिलता' विद्यमान अछि। डाकक वचन अखनो मैथिल समाजमे प्रचलित अछि, किन्तु देश कालक व्यवधानसँ हुनक भाषामे अनेक परिवर्तन आबि गेल अछि जइसँ ओ आधुनिकताक छाप लऽ नेने अछि। प्राचीन स्वरूपक एकाध उदाहरण थिक :

मुहूर्त विचार : तिथि परमाणहि साठि दण्डा, से लए करए बारह खण्डा।
अद्रा, भद्रा, कार्तिक मूल, भनई डाक सबेटा निर्मूल।
तथा, सनिसत्ते शुष्क लए दुई छठि वेहप्फए होइ विरूई,
बुध तीअ दोअसि सूर, मंगल दशमी परिहर दूर,
होए एगादशी सोमवारे, दग्धतिथि फुर गहिअ गोआरे।।
किछु आर उदाहरण:-
साओन पछबा बह दिन चारि
चूल्हिक पाछाँ उपजय सारि
साओन शुक्ला सप्तमी जौं गरजे अधरात
तो जाहू पिया मालवा हम जाएब गुजरात।

डाकक समएकेँ लऽ कए विद्वान सबहक मध्य अखन धरि मतैक्य नै अछि। हुनक निवास स्थानक विषय सेहो विवादग्रस्ते अछि। बंगाल, उत्तर प्रदेश, तथा मिथिला सभ हुनका अपन-अपन स्थानक मानैत अछि। मिथिलामे डाकक संबंधमे अनेक किवदंती प्रचलित अछि। ऐसँ ई अनुमान कएल जाइत अछि जे ई अवश्ये मिथिलाक छलाह। मिथिलामे जे किवदंती प्रचलित अछि तइ अनुसारेँ ई बराहमिहिरक पुत्र छलाह तथा जातिक गोआर।

कृषिसँ संबंधित डाकक प्रस्तुत वचन अद्यावधि प्रायः प्रत्येक लोकक कण्ठमे निवास कऽ रहल अछि:

थोड़कए जोतिहऽ अधिक मटिअबिह
ऊँच कए बान्हिहऽ आरि
ताहू पर जँ नै उपजय तँ

डाककेँ पढ़िहऽ गारि।

अथवा

साओन पछबा भादव पुरबा

आसिन बहै ईशान

कातिक कन्ता सिकियो ने डोलै,

कतए कए रखबऽ धान?

अथवा

शुक्र दिन केर बादरी, रहे शनिचर छाय

कहे डाक सुनु डाकिनी, बिनु बरसे नै जाय।।

अथवा

जौं पुरबैया पुरबा पाबै,

सुखले नदिया धार बहाबै



## (४) लोकगीत एवं लोककथा

आदिकालक उपलब्ध सामग्रीक रूपमे लोकगीत एवं लोकगाथाक सेहो अपन महत्वपूर्ण स्थान अछि। ऐमे सँ किछु तँ पूर्ण साहित्यिक थिक। एकर एक विशेषता ई अछि जे ऐ सबहक नायक कोनो अवतारी वा अंशी पुरुष नै छलाह। एहन रचना सभमे लोरिक, सलहेस बिहुला, गोपीचन्द मरसीयाक गीत सभ अबैत अछि। संसारक प्रत्येक स्थानमे वीरपूजाक भावना वर्तमान छलै, मिथिला सेहो ऐ भावनासँ वंचित नै छल। उपलब्ध प्रमाणक आधारपर एतबा कहल जा सकैछ जे १३हम १४हम शताब्दीमे ओइ प्रकारक गानक प्रचार ऐठाम छल। कारण जे ज्योतिरीश्वर अपन ग्रंथ 'वर्णरत्नाकर'मे लोरिक गीतक चर्चा कएने छथि। अतएव ई सिद्ध होइत अछि जे ई ऐसँ पूर्वक तँ अवश्ये थिक। ई गीत सभ अखनो मिथिलामे खूब गाओल जाइत अछि। मात्र जिह्वापर रहबाक कारणेँ एकर भाषा आधुनिक रूप धारण करैत गेलैक अछि। ऐ गीत सबहक भाषा अवश्ये प्राचीन मैथिली छल होएतै, किन्तु दुर्भाग्यवश ओइ प्रकारक गीत सबहक संग्रह एकठाम नै भेल अछि। ऐ दिशामे सर्वप्रथम डॉ. जी.ए. ग्रियर्सन १९म शताब्दीक अन्तमे किछु कार्य कएलनि, हिनक संग्रह प्राचीनतम संग्रह मानल जाइत अछि। एकर पश्चात् 'लोरिक विजय'पर श्री मणिपद्मक एकगोट निबंध, दिसम्बर १९५३मे 'वैदेही'मे प्रकाशित भेल छलनि, जइमे ओ प्रमाणित कएने छलाह जे लोरिकक गीत मैथिली साहित्यक अमूल्य निधि थिक। लोरिक गाथाक प्रस्तुत पाँतीमे केहन धरावाहिकता तथा भाषाक

प्राचीनता अछि से द्रष्टव्य थिक :

आँगी मे जे झाँगी सोभए
रत्तन लागल हार
झाँगी मे जे मानिक सोभए
हीरा झमकार
से हँसइ जखन दामिनी दमकए
जकरा दिसि उठाकए तक्कए
दई करेजा सालि

लोरिकक प्रवाह अपूर्व आ ध्वनि-योजना अत्यधिक ओजस्वी अछि। एकर गायक ई गबैत-गबैत जेना प्रभक्त भए उठैत अछि एवं झूमए लगैत अछि, तथा ताल ठोकि टाहि मारैत अछि। ऐ बीचमे कनियो एकरा टोकि दिऔ अथवा स्थिर भावेँ गाबऽ कहिऔ तँ गायक झमान भए खसत। मंगलाचरणक ई पंक्ति केहन मोहक अछि :

"कंठ दीह कोकिला माय आ मधु सन दीह भास"

लोरिकक सदृश मरसीयाक गीतकेँ सेहो देखल जा सकैछ :

वनमे रोए कोयल जंगलमे रोए फातमा
घरमे रोए दुलहिन अभागलि रे हाय
एक रोए अम्मा दोसर रोवे धन्ना रे हाय
तेसर रोए दूध छारि बलवा रे हाय।

अतएव ई दृढ़तापूर्वक कहल जा सकैछ जे १३हम १४हम शताब्दी धरि मैथिली भाषामे गीत तथा कथाक सृजन अवश्य होमए लागल छल।

एकरा सबहक अतिरिक्त निम्न साक्ष्य सबहक सम्यक अध्ययन सेहो कएल जा सकैछ:-

(अ) **वर्णरत्नाकर:-** एकर पश्चात् वर्णरत्नाकरक स्थान अबैत अछि। ऐठामसँ हमरा लोकनिकेँ मैथिली भाषाक क्रमबद्ध प्रगति दृष्टिगत होइत अछि। वर्णरत्नाकर मैथिलीक प्राचीनतम गद्य ग्रंथ थिक। १३हम १४हम शताब्दीमे मैथिली एक विकसित भाषा भए गेल। केवल शब्द, वाक्यखंड तथा किछु लोकगीतक नै अपितु वर्णरत्नाकर सदृश प्रौढ़ गद्य ग्रंथ, उपलब्ध सामग्रीमे मैथिलीक पूर्ण विकसित रूप ज्योतिरीश्वरक वर्णरत्नाकरक रूपमे भेटैत अछि। ई १४हम शताब्दीक आदिकाल (१३२४)क रचना थिक। वर्णरत्नाकरक

विषयमे केवल एतबे धरि जोर दऽ कए कहल जा सकैछ जे ई प्राचीन उपलब्ध सामग्रीमे मैथिलीक प्रगतिक द्योतक थिक। ई अखन धरि अपन महत्वसँ मिथिला ओ मैथिलीकेँ गौरवान्वित कऽ रहल अछि।

(ब) एकर अतिरिक्त प्राचीन मैथिलीक किछु सामग्री 'प्राकृत पैंगलम' तथा अन्य अपभ्रंश ग्रंथमे सेहो भेटैत अछि। प्राकृत पैंगलममे लोकभाषाक उदाहरण देल गेल छै। शिवनन्दन ठाकुरक मत छन्हि जे ऐमे प्रयुक्त किछु शब्द मैथिलीक थिक।

(स) विद्यापतिक अवहट्ट रचना 'कीर्तिलता' तथा 'कीर्तिपताका'मे प्राचीन मैथिलीक अनेक विशेषता पाओल जाइत अछि, यथा : क्रियाक स्त्रीलिंग रूप ए, एँ तथा हिं क प्रयोग पूर्वकालिक क्रियाक हेतु तथा 'ए' क प्रयोग आदि। ऐ लेल ई ग्रंथ सेहो महत्वपूर्ण भऽ जाइत अछि।

ऐ सामग्री सबहक विषयमे डॉ. सुनीति कुमार चटर्जीक उक्ति युक्तिसंगत अछि- These specimens allow us to have a glimpses of the language in its formative period.

उपर्युक्त सामग्री सबहक समीक्षा कएलासँ ई विषए स्पष्ट भए जाइत अछि जे अभिरूचि ऐठामक लेखकमे ८म शताब्दीसँ प्रारंभ भए गेल छल। एतबा धरि सत्य जे ओइ कालक जे रचना उपलब्ध अछि तइमे विशेषतः दार्शनिक एवं व्यावहारिक पक्षक सबलता देखबामे अबैत अछि। आन प्रकारक रचना मौखिके रूपमे लोकक समक्ष उद्घाटित होइत रहल अछि तथा अनुमानसँ लोक एकर प्राचीन रूप जानबाक चेष्टा करैत अछि।

## मैथिली साहित्यक काल-निर्धारण

### (यू.पी.एस.सी. परीक्षार्थीक हेतु उपयोगी)

ज्ञान राशिक संचित कोष थिक साहित्य। शब्द आ अर्थक यथावत सद्भाव, जइमे मनुष्यक भावना आ बेधन चेष्टा समाविष्ट हुअए, सएह थिक साहित्य। जनताक चित्रवृतिक परम्पराक संग ओकर सामञ्जस्य देखाएबे साहित्यक इतिहास थिक। व्यापक, गहन आ अध्ययनक सुविधाक लेल साहित्यकेँ समैक विभिन्न परिधिमे बाँटब काल-विभाजन थिक। मुदा काल विभाजनक ई तात्पर्य कथमपि नै अछि जे एक कालक समाप्त भेलाक लगले पश्चात् दोसरहि दिन साहित्यक धारा दोसर दिशामे प्रवाहित होमए लगैत अछि। काल-विभाजन कोनो सुनिश्चित मापदण्ड अथवा कसौटी नै अछि। ऐ

लेल काल विशेषक नामकरण, कखनौं सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक आ धार्मिक परिस्थितिक परिपेक्ष्यमे होइछ तँ कखनौं रचना विशेषक प्रवृति प्रावल्यक आधारपर। साहित्य अनन्त अछि। कोनो साहित्यक वैज्ञानिक ओ विधिवत ज्ञान ओइ साहित्यक अध्ययनसँ संभव होइत अछि। साहित्यक सम्यक अध्ययनक लेल युग विभाजन वा काल-विभाजन आवश्यक अछि। कोनो निर्जन प्रदेशक शैवलनी सदृश एकर धारा अबाध गतिसँ प्रवाहित होइत रहल अछि। अतः ओकर सम्यक विचारक परिचए पेबाक हेतु काल-विभाजन प्रयोजनीय अछि, उपयोगी अछि।

मैथिली साहित्यक काल-विभाजनपर जखन विचार करैत छी तँ ई एक गोट विचारणीय विषए बनि जाइत अछि। विभिन्न विद्वानक ऐ संबंधमे मत अछि एवं प्रसिद्ध इतिहासकार लोकनि ऐ प्रसंगे, विभाजन पृथक-पृथक कएल अछि। ओना तँ साहित्य प्रवाहमान धाराक सदृश्य अछि, जकर विभाजन दुःसाध्य नै प्रत्युत असंभव भऽ जाइत अछि; किन्तु अध्ययनक सुविधाकेँ दृष्टिमे राखि विभिन्न प्रवृतिक प्रधानता आर अप्रधानताक आधारपर विभाजन कऽ लेल जाइछ। ई विभाजन दू प्रकारेँ कएल जा सकैछ:

(I) देशकृत
(II) कालकृत

साहित्य तँ सार्वभौमिक ओ सर्वकालिक अछि। यदि देशकृत विभाजन कएल जाए तँ साहित्य पृथक-पृथक स्थानपर भिन्न-भिन्न नाओंसँ संबोधित कएल जाएत। कालकृत विभाजन किछु विशेष प्रवृतिक आधारपर कएल जाइछ। परिवर्तन मनुष्यक संग अवांछनीय रूपसँ अछि। सामाजिक, धार्मिक ओ राजनीतिक परिवर्तन भेल करैछ। कोनो युगमे कोनो खास तरहक प्रवृतिक प्रधानता पाओल जाइत अछि। 'प्राधान्येन व्यपदेशा भवन्ति'। अतः प्रवृतिक अनुरूप ओइ कालक नामकरण कएल जाइछ; जइसँ ई कथमपि नै बुझबाक चाही जे आन-आन प्रवृतिक अवशेष भए जाइछ, अपितु ओ गौण रूपसँ सदिखन वर्तमान रहैछ। जइकालमे कोनो विशेष प्रवृतिक रचनाक प्रचुरता भेटैछ तँ ओ स्वतंत्र भऽ ओकर फराक नामकरण कएल जाइछ। ऐ प्रकारेँ कालकृत विभाजनक एक गोट आर विशेषता पाओल जाइत अछि ओ थिक ग्रंथकेँ विशेष प्रसिद्धि भेलासँ कोनो कालक भीतर जइ प्रकारक अनेक प्रसिद्ध ग्रंथ चलि आबि रहल अछि, तँए ओइ प्रकारक रचनाकेँ ओइकालक अंतर्गत मानब उचित हएत। यद्यपि आनो-आन पुस्तक सभ ओइ कालक मध्य

असाधारण कोटिक किए नै प्राप्त हुअए।

अतः मैथिली साहित्यक युग विभाजन ऐ रचना प्रवृतिक आधारपर तीन युगमे भेल अछि– पहिल अछि गीतिकाव्य युग, दोसर–नाटक युग, आ तेसरकेँ–गद्य युगक संज्ञा देब उचित हएत। दोसर शब्दमे पहिलकेँ 'श्रृंगार युग' दोसरकेँ 'भक्ति युग' आ तेसरकेँ 'आधुनिक युग' कहल जा सकैछ।

प्रारंभिक युगमे मिथिलामे गीतिकाव्यक विशेष प्रचार-प्रसार रहलाक कारणेँ प्रायः गीति-युगक संज्ञा देल गेल। ऐ युगक प्रवर्तक छलाह अभिनव जयदेव महाकवि विद्यापति ठाकुर। हिनकासँ लऽ कए कवीश्वर चन्दा झा धरि एकर पूर्ण प्रचार-प्रसार रहल। कवीश्वरक मृत्युक पश्चात् ऐ युगक अवसान भऽ गेल।

मध्य युगमे आबि कए गीति काव्यक मधुर-मधुर गीत संयोगसँ नाटकक रचना दिसि लोकक प्रवृति झुकल। अतः ऐ युगकेँ 'नाटक युग'क संज्ञा देब उचित प्रतीत होइत अछि। ऐ युगमे हमरा लोकनिकेँ उमापति उपाध्याय कृत 'पारिजातहरण', म.म. रामदास झाक 'आनंदविजयाभिधान', काशीनाथकृत 'विद्याविलाप', कृष्णदेवकृत 'महाभारत' आ धनपतिकृत 'माधवानल काम कण्डला'सँ साक्षात्कार होइत अछि।

एवं प्रकारेँ नाट्य कलाक विशेष प्रदर्शन भेलासँ लोकक रूचि ओइसँ बदलैत गेल एवं वर्तमान युगमे लेखकक प्रवृति गद्य लिखबा दिसि विशेष झुकल। ऐ युगमे लेखक वृन्द गद्य साहित्यमे अपन मौलिक रचनामे उपन्यास, गल्प, कहानी, निबंध, लिखऽ दिसि विशेष रूचि देखौलनि।

आब प्रश्न उठैत अछि जे अखन धरि जतेक काल-विभाजन मैथिली साहित्य मध्य कएल गेल अछि ओकर तिथि निर्धारण करबामे विद्वान लोकनिमे मतैक्य किए नै अछि? मैथिली साहित्यक प्रथम काल-विभाजन करबाक प्रयास म.म. डॉ. उमेश मिश्र, मनबोध रचित कृष्णजन्मक अपन भूमिकामे कएलनि अछि। हिनका मतानुसारेँ :

(I) आदिकाल ११०० सँ १३०० ई. धरि
(II) मध्यकाल १३०० सँ १८०० ई. धरि
(III) आधुनिक काल १८०० सँ अद्यतन।

उपर्युक्त विभाजन एक तँ मैथिलीकेँ धियानमे राखने अछि आ भाषाक विभिन्न रूपकेँ धियानमे राखि कएल गेल काल-विभाजन साहित्यक इतिहासक काल-विभाजन नै कहाओत। साहित्यक इतिहासक काल-विभाजनमे भाषाक

अतिरिक्त कृत्ति, कर्ता पद्धति ओ विषएपर धियान देब आवश्यक अछि।

म.म. डॉ. उमेश मिश्र, बिहार राष्ट्रभाषा परिषद्क वार्षिक अधिवेशन, मार्च १९५३मे अध्यक्ष पदसँ "मैथिली भाषा ओ साहित्य"पर भाषण दैत, राजनीति, सामाजिक ओ भाषाविज्ञानक दृष्टिएँ समस्त साहित्यकेँ निम्न भागमे प्रस्तुत कएने छथि:

(I) आदिकाल १००० सँ १६०० ई. धरि
(II) मध्यकाल १६०० सँ १८६० ई. धरि
(III) आधुनिक काल १८६० सँ १९५० ई. धरि।

ओ मिथिला भाषा तथा इतिहासकेँ ऐ प्रकारक उपादेयतापर विचार करैत तीनू युगमे नामकरण करैत छथि। आदियुगकेँ गीतियुग, मध्ययुगकेँ नाटकयुग एवं आधुनिक युगकेँ गद्ययुगक संज्ञासँ संबोधित कएल अछि। काल विभाजनक प्रसंगमे अपन विचारक परिवर्तनक कोनो युक्तिसंगत कारण म.म. मिश्रजी नै देने छथि। परन्तु हिनक पूर्वक काल-विभाजन एवं नवीन काल विभाजनक बीच डॉ. जयकान्त मिश्रक प्रबंध प्रकाशित भऽ चुकल छल। डॉ. मिश्रक काल-विभाजन ऐतिहासिक पृष्ठभूमिमे सर्वमान्य अछि तँ आश्चर्य नै जे म.म. जी अपन मतमे संशोधन कएने होथि। हिनक ऐ प्रकारक विभाजनमे कए प्रकारक दोष आबि गेल अछि जे सम्प्रति १९५० ई. मे आबि कऽ आधुनिक युगक समाप्ति मानैत छथि। मिथिला वा कोनो देशक जनताक चित्रवृत्त बहुल किछु राजनीतिक, सामाजिक साम्प्रदायिक तथा धार्मिक परिस्थितिक होइत अछि, मुदा जखन १९५०पर दृष्टिपात करैत छी तँ सर्वथा असंगत बूझि पड़ैत अछि, ऐ कालमे कोनो राजनीतिक वा सामाजिक परिवर्तन नै पाबि रहल छी जकर आधार मानि म.म. मिश्रजी अपन विभाजन मध्य आधुनिक कालक समाप्ति कएल अछि। जँ हिनक धारणा छन्हि जे काल-विभाजन राजनीति, सामाजिक एवं भाषा विज्ञानक दृष्टिएँ कएल जाए तँ राजनीतिक परिस्थितिकेँ धियानमे राखि सम्प्रति १९४७ मानि सकैत छलाह। ऐ प्रकारेँ विवेचना कएला उत्तर जखन हिनक विभाजनक साहित्यिक समीक्षा करैत छी, तँ हिनक परिभाषा अमान्य सिद्ध होइत अछि।

(२) डॉ. जयकान्त मिश्र साहित्य अकादमीसँ प्रकाशित अपन शोध-प्रबंध The history of Maithili Literature, Volume-I मे राजनीतिक घटनाक साहित्य परंपरापर प्रभावक आधारपर काल विभाजनक प्रसंगे निम्न मत प्रस्तुत कएने छथि–

(I) प्राक् मैथिली काल ८म शताब्दीसँ १२हम शताब्दी धरि

(II) प्रारंभिक मैथिली साहित्य १३०० ई.सँ १६०० ई.

(III) मध्यकालीन मैथिली साहित्य १६०० ई.सँ १८६० ई.

(IV) आधुनिक मैथिली साहित्य १८६० ई. सँ अद्यतन।

डॉ. मिश्रक उपर्युक्त कथन बहुतो अंशमे तर्कपूर्ण एवं वैज्ञानिक कहल जाएत। यद्यपि अपन काल विभाजनक आधार ओ राजनैतिक घटनाक साहित्य परम्परापर प्रभावेकेँ राखलनि अछि। हिनका अनुसारेँ भाषा-वैज्ञानिक आ व्याकरणक दृष्टिएँ ई विभाजन समीचीन अछि। मुदा ऐमे सेहो किछु त्रुटि रहि गेल अछि। प्रारंभिक कालक समए जे १३०० ई. स्थिर कएल गेल अछि तकर आरंभ मानबाक कोनो कारण नै देल गेल अछि। १३०० ई. मानलाक कारणेँ ओइसँ पूर्वक बहुत रास रचना ऐ परिधिमे नै आबि सकल। मुदा विद्यापतिक पूर्वक साहित्यकेँ प्राक् विद्यापति साहित्यक संगे विस्तारसँ चर्चा कएने छथि। ऐ साहित्यमे 'वर्णरत्नाकर' तँ हिनक युग आरंभिक रचना थिके, चर्यापदोक चर्चा ओ बड़ परिश्रमपूर्वक केने छथि। तखन हिनक उपर्युक्त मत स्वतः संदेहात्मक भऽ जाइत अछि।

१३०० ई.मे मिश्रजी मुसलमानक आगमनक कारण प्रस्तुत करैत छथि। मिथिला सर्वदासँ कट्टर धर्मावलम्बी रहल तइसँ मिथिलापर मुसलमानक आगमनक कोनो प्रभाव नै पड़ए देल। एकर दोसर हेतु इहो भऽ सकैत अछि जे जयकान्त बाबूक धियान ज्योतिरीश्वरक गद्य ग्रंथ 'वर्णरत्नाकर'पर होन्हि एवं एकर समए १३२४ ई. लगभग कहने छथि। १४०० ई.क अभ्यन्तर विद्यापतिक प्रभाव साहित्यपर मुख्य रहल। ऐ समैमे अपभ्रंशक पतनक अनन्तर पूर्वीय भारतमे मैथिलीक प्रयोग भेटैत अछि। श्री जयकात मिश्र ऐ काल-विभाजन अवसानक कारण प्रस्तुत करैत ओइनवार वंशक पतनक कारण प्रस्तुत करैत छथि।

ऐ प्रकारेँ १६०० ई.सँ मध्यकालक प्रारंभ मानल गेल अछि तइ हेतु विशेष उल्लेख नै कएल गेल अछि। ऐ युगमे मिथिलामे नाट्य साहित्यक पूर्ण प्रचार-प्रसार छल। जकरा ओ कीर्तनिञा नाटक कहल अछि। हिनका अनुसारेँ विद्यापति पदावलीक जे सशक्त धारा प्रवाहित भेलसे उमापतिसँ नाट्य रचनाक प्राचुर्य द्वारा एक महत्वपूर्ण ओ प्रौढ़ दिशान्तरकेँ प्राप्त कए नवयुग प्रवेश कएल परन्तु हिनक ई धारणा पूर्वाग्रहसँ अनुप्राणित अछि। वस्तुतः जकरा ओ मैथिलीक नाट्य परंपरा कहैत छथि ओ ओइसँ पूर्व विद्यापति एवं ज्योतिरीश्वरक 'धूर्तसमागम'सँ प्रारंभ भेल। ऐ समैक उल्लेख करैत मिश्रजी

नेपालक जगत प्रकाशमल्ल, उमापति उपाध्याय एवं शंकरदेवक नाम लैत छथि, जे ओ मैथिली नाट्यकलाक प्रवर्तकक रूपमे अबैत छथि। ऐ कालक अवसान सेहो खण्डबला कुलक अवसानसँ भेल।

डॉ. जयकान्त मिश्र आधुनिक युगक आरंभ १८६० ई.सँ मानलनि अछि, जखन कि दरभंगा राज कोट ऑफ वार्डस (Courts of Wards) क संरक्षण मे चलि गेल आर दरभंगा शहरमे अंग्रेजी शिक्षाक प्रचार-प्रसार भेल। परन्तु जखन हम मिथिलाक सीमा मैथिलीक क्षेत्रकेँ दरभंगासँ बाहरो मानै छिऐ तँ खाली दरभंगेक स्थितिपर साहित्यक निर्धारण करब कतए धरि तर्कसंगत हएत?

(३) ऐ प्रकारेँ प्रो. श्रीकान्त मिश्र सेहो अपन इतिहासमे उपर्युक्त तथ्यक समर्थन कएल अछि। एवं क्रममे अनेक गतिरोधक मुख्य कारण प्रस्तुत करैत मिश्रजीक कथन अछि जे शिक्षा-पद्धतिमे बरोबरि मैथिलीक अवहेलना होइत रहल। समए पाबि साहित्यक आनो अंग सभ गद्य, पद्य आदिक विशेष प्रगति होइछ।

(४) तेसर काल-विभाजन कुमार श्री गंगानंद सिंह द्वारा कएल गेल अछि। अखिल भारतीय प्राच्यविद्या सम्मेलनक चौदहम अधिवेशनमे 'मैथिली साहित्यक प्रगति' शीर्षक निबंधपर भाषण दैत अपन मतक पूर्ण विवेचना कएल अछि:

(I) प्रारंभिक काल ८०० सँ १३०० ई. धरि
(II) मध्यकाल १३०० सँ १८०० धरि
(III) आधुनिक काल १८०० सँ १९म, २०म शताब्दी धरि

प्रारंभिक कालमे ओ चर्यापदक आचार्य लोकनिक रचनाकेँ मानैत छथि, आ वाचस्पति मिश्रक 'भामति टीका' आ सर्वानन्दक 'अमरकोष टीका'मे संस्कृतक पर्यायवाची अनेक मैथिली शब्दक उल्लेख कएल अछि। परन्तु चर्यापदक भाषा मैथिलीक पूर्व रूप भलहिँ भऽ सकैछ मुदा ओकरा मैथिली नै कहि सकैत छी। भाषाविज्ञानक अनुसारेँ ई बूझि पड़ैत अछि जे लिपिबद्ध नै भेलाक कारणेँ ओकर भाषामे बहुत परिवर्तन भेल तइसँ ओ बहुत किछु आधुनिक मैथिलीक रूप धारण कए लेने अछि। प्रारंभिक कालकेँ ८००ई. लऽ जएबाक कोनो तेहन युक्ति नै भेटैत अछि।

ऐ प्रकारेँ सम्प्रति मध्यकालमे जयकान्त मिश्रक प्रारंभिक मैथिली साहित्य ओ मध्यकालीन मैथिली साहित्य दुनूकेँ सन्निहित कऽ देल गेल अछि।

ज्योतिरीश्वरक 'वर्णरत्नाकर'कें मैथिलीक सभसँ प्राचीन उपलब्ध गद्य ग्रंथक रूपमे प्रस्तुत करैत छथि। ऐ भाषामे प्रोत्साहन एवं विकास तत्कालीन नृपतिगणक सहयोगक फलस्वरूप भेल। ऐमे अनेक कवि एवं लेखक लोकनिक प्रादुर्भाव भेलासँ साहित्यक अभिवृद्धिमे सहायक सिद्ध भेल।

वस्तुतः साहित्यक प्रारंभ ओ विकास ऐठाम केन्द्रित भऽ जाइत अछि। तइसँ १८०० ई. सँ वर्तमान काल मानवामे समुचित कारणक अभाव भेटैत अछि। ओ आधुनिक कालकें दू भागमे विभाजित करैत छथि। १९म शताब्दी धरि मैथिलीमे जतेक ग्रंथ सबहक चर्चा भेटैत अछि ओइपर भाषा एवं वाक्य विन्यासक दृष्टिएँ १८म शताब्दीक छाप बूझि पड़ैत अछि। परन्तु २०म शताब्दीमे आबि कऽ क्रमशः एकर प्रयास भेलै जे जतए जे छटा भेटलै ओकरा ग्रहण कए मैथिलीक कायाकल्प कएल जाए। ऐ विभिन्नताक मुख्य कारण राजनीतिक थिकै।

(५) ऐ काल विभाजनसँ मिलैत-जुलैत विभाजन श्री भोलालालदास 'मिथिला मिहिर'क मिथिलांकमे सेहो कएलनि अछि, जकर समानता ऐ विभाजनसँ अछि।

(६) मैथिली साहित्यक मूर्द्धन्य विद्वान आ प्रसिद्ध भाषाविद् डॉ. सुभद्र झा अपन शोध प्रबंध Formation of Maithili Language मे सेहो काल-विभाजन करबाक प्रयास कएल अछि। हिनक विभाजनमे सेहो कोनो मतसँ साम्य नै भेटैत अछि, अतएव एकरा स्वतंत्र विभाजन कहल जा सकैछ। हिनक विभाजन ऐ प्रकारेँ अछि:

(I) प्रारंभिक कालक मैथिली A.D १००० सँ A.D १३००
(II) मध्यकालीन मैथिली A.D १३०० सँ A.D १८००
(III) आधुनिक मैथिली A.D १८०० सँ अद्यतन।

आलोचकक अनुसारेँ डॉ. झा मैथिली भाषा ओ साहित्यक विकास १००० ई.क पश्चाते मानैत छथि। संभव ई मानि जे 'वर्णरत्नाकर' मे प्रयुक्त भाषा ओकर रचनाकाल ३०० ई. पूर्व विकसित भेल छल। परन्तु की मिथिला-भाषा विकासक प्रक्रियाकें बुझबाक हेतु 'चर्यापद'क भाषा सहायक सिद्ध नै भऽ सकैछ? ऐ प्रकारेँ डॉ. झा १००० ई.क पूर्वक रचनापर धियान नै रखलनि अछि। १८०० ई. धरि मध्यकाल मानबाक हुनक आधार की अछि, तकरा स्पष्ट सेहो नै केने छथि। डॉ. झा काल विभाजनक क्रममे साहित्य परंपरापर धियान नै दए भाषाक विकासक दृष्टिएँ देखबाक प्रयास कएलनि।

मैथिलीक प्रारंभिक काल विद्यापतिक 'कीर्तिलता' एवं 'कीर्तिपताका'सँ मानैत छथि। ऐ प्रकारेँ ओ अपन निबंधमे लिखने छथि– Hence as the display the genius of the language they are termed pro to Maithili or Maithili at the earliest stage of its development.

वर्णरत्नाकरसँ कृष्णजन्म धरि मध्यकालीन मैथिलीकेँ उदारहण स्वरूप उपस्थित करैत छथि। 'कृष्णजन्म' जकर भाषावलोकन कएलासँ स्पष्ट प्रतीत होइत अछि जे मनबोधक शैली १८म शताब्दीक प्रतिनिधित्व करैत अछि।

जखन कि प्रारंभिक मैथिली एवं मध्यकालीन मैथिली भाषामे सभ्यता आबि गेल तखन आधुनिक मैथिलीक रूप धारण कऽ लेलक। ऐ प्रकारेँ एकर उद्भव एवं विकास १९म शताब्दीकेँ मानि सकैत छी। ई कहबामे कठिनता अछि जे कोन युगमे ऐ साहित्यक कोन रूप छल एवं कोन स्थितिमे छल मुदा एतबा धरि अवश्य जे प्रत्येक युग अपन युगक छाप लैत अछि।

मैथिली साहित्यक समालोचक स्व. प्रो. रमानाथ झा मैथिली साहित्यक काल विभाजनक प्रसंगमे अपन मंतव्य डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश' रचित 'मैथिली साहित्यक इतिहास'क भूमिकामे उपस्थित करैत छथि जे- ''काल विभाजनक समस्यापर कोनो आचार्यक मतसँ हमरा संतोष नै अछि।'' हिनक विभाजन ऐ प्रकारेँ अछि :

(क) विद्यापति युग- कृष्ण काव्य युग अथवा प्राचीन युग
(ख) चन्दा झा युग- कृष्ण काव्य युग अथवा नवीन युग।

समालोचक लोकनिक मतेँ निश्चित रूपेँ उपर्युक्त काल-विभाजन रचना पद्धतिक आधारपर समीचीन होइतो सर्वांगपूर्ण नै कहल जाएत, कारण मैथिली साहित्यक बहुत रास रचना ऐ काल विभाजने नै आबि सकत जेना 'चर्यापद', 'वर्णरत्नाकर' आदि। चन्दा झाक युगसँ पूर्वक समस्त मैथिली साहित्यकेँ प्राचीन युग मानब उचित नै बुझना जाइत अछि।

(८) डॉ. दुर्गानाथ झा 'श्रीश' अपन पुस्तक 'मैथिली साहित्यक इतिहास'मे काल विभाजनक प्रसंगमे निम्न मत प्रस्तुत कएने छथि :

(१) आदिकाल, प्राक् ज्योतिरीश्वर काल अथवा अपभ्रंश युग– ई. पू. प्रथम शतकसँ १३०० ई. धरि

(२) विद्यापति युग–१३०० सँ १८६०

(क) विद्यापति युग–१७००

(ख) उत्तर विद्यापति युग–१७०० सँ १८६०

(३) आधुनिक काल–१८६० सँ अद्यःपर्यन्त (क) वातावरण निर्माण–१८६० सँ १८८० (ख) चन्दा झा युग–१८८० सँ १९३० (ग) नव-नव विकासक युग–१९३० सँ अद्यःपर्यन्त।

आलोचक लोकनिक अनुसारेँ हिनक मत बहुत अंश धरि समीचीन एवं तर्कपूर्ण बुझना जाइत अछि।

(९) डॉ. शैलेन्द्र मोहन झा अपन अप्रकाशित शोध-प्रबंध 'आधुनिक मैथिली साहित्यक विकास' एवं मेघातिथिक छद्म नाओंसँ "मैथिली साहित्यक प्रमुख कविक मैथिली कविताक विकास" शीर्षकमे निम्न तर्क प्रस्तुत कएने छथि:

(I) आदिकाल ११०० सँ १५५६ ई. धरि
(II) मध्यकाल १५५६ सँ १८५७ धरि
(III) आधुनिक काल १८५७ सँ अद्यःपर्यन्त।

आलोचकक अनुसारेँ हिनक दृष्टि शुद्ध साहित्यैतिहासिक हेबाक चाही मुदा से नै अछि। हिनक विभाजनसँ 'चर्यापद' मैथिलीक विवेच्य वस्तु नै रहि जाइत अछि, आ ११०० ई. धरि तँ एहन कोनो कृत्ति नै अछि जकरा आधार मानि ११०० ई.सँ आरंभिक काल मानल जाएत.....। डॉ. झा काल सीमाक विभाजनमे डॉ. जयकान्त मिश्रसँ प्रभावित बूझि पड़ैत अछि; यद्यपि समग्र रूपेँ ओहो साहित्यिक विकासक मर्मकेँ अनुभव करैत अवश्य प्रतीत होइत छथि।

प्रो. शैलेन्द्र मोहन झा अपन अप्रकाशित शोध-प्रबंध 'आधुनिक मैथिली साहित्यक विकास'मे उपरोक्त विभाजनक संशोधन करैत निम्न रूपेँ प्रस्तुत कएने छथि:

(I) आदिकाल १३०० सँ १५५५ ई. धरि
(II) मध्यकाल १५५५ सँ १८५७ धरि
(III) आधुनिक काल १८५७ सँ अद्यःपर्यन्त।

(१०) स्वर्गीय डॉ. राधाकृष्ण चौधरी अपन पुस्तक A Survey of Maithili Literature मे निम्न रूपेँ काल विभाजनक प्रसंगमे अपन मत व्यक्त कएने छथि:

(I) Early Maithili Literature 900-1350 A.D
(II) Middle Maithili Literature 1350-1830 A.D
(III) Early Maithili Literature 1830- till dated।

समालोचकक अनुसारेँ प्रो. चौधरी, अपन काल विभाजनक हेतु सेहो प्रस्तुत कएने छथि मुदा तकर विश्लेषण कएलासँ ओ सभ समीचीन नै बुझना जाइत अछि। १८३० ई.सँ आधुनिक युगक आरंभ मानबामे कोनो ठोस कारण नै भेटैत अछि। ने तँ तत्कालीन कोनो साहित्य उपलब्ध अछि आ ने मिथिलामे एहन कोनो राजनीतिक अथवा सामाजिक घटनाक सूत्र प्राप्त होइत अछि, जकर मिथिलाक सांस्कृतिक जीवनमे प्रभाव पड़ल हुअए।

(११) डॉ. दिनेश कुमार झा 'मैथिली साहित्यक आलोचनात्मक इतिहास' नामक अपन पुस्तकमे काल विभाजनक प्रसंगमे अपन निम्न मत प्रस्तुत कएने छथि:

(I) आदिकाल/ आधारकाल ८०० सँ १३५० ई. धरि
(II) मध्यकाल १३५० सँ १८५७ धरि
(III) आधुनिक काल- (क) ब्रिटिश काल १८५७ सँ १९४७ धरि

(ख) स्वतंत्रता काल **१९४७ सँ अद्यःपर्यन्त।**

डॉ. झा आदिकालक आरंभ सिद्ध साहित्यसँ, मध्यकालक आरंभ विद्यापतिक रचनासँ आ आधुनिक कालक आरंभ अंग्रेज सबहक द्वारा राज्य स्थापना एवं नवीन शिक्षाक फलस्वरूप जीवनक नव परिस्थिति उत्पन्न भेला तथा साहित्यक 'स्पिरिट' बदलि गेलासँ एवं अंग्रेजी एवं अन्य यूरोपीय साहित्यक मैथिली साहित्यपर प्रचुर प्रभावसँ मानैत छथि। हिनक मत समालोचकक अनुसारेँ बहुत अंश धरि तर्कपूर्ण, वैज्ञानिक एवं समीचीन अछि। ई शुद्ध राजनैतिक दृष्टिसँ काल-विभाजन कएने छथि, मुदा आदिकालमे हुनक ओ दृष्टिकोण काज नै कएलकनि, तहिना आधुनिक कालकेँ ब्रिटिश काल आ स्वतंत्रताकालकेँ भागमे विभक्त करब, उचित नै बुझाइत अछि। १९४७मे भारत अवश्य स्वतंत्र भेल मुदा ओइसँ मैथिली साहित्यमे कोनो ऐतिहासिक दिशान्तर भेल हुअए, तकर कोनो प्रमाण नै अछि।

(१२) डॉ. बालगोविन्द झा 'व्यथित' अपन पुस्तक 'मैथिली साहित्यक इतिहास'मे मैथिली भाषा ओ मैथिली साहित्यक सुदीर्घ परंपरा देखि इतिहासमे काल-विभाजन एकर समस्त उपलब्ध कृत्ति, कर्ता, पद्धति ओ विषएकेँ धियानमे राखि निम्न रूपेँ कएल अछि:

(I) प्राचीन काल ७०० सँ १३२५ ई. धरि
(II) मध्यकाल १३२५ सँ १८६० धरि

(III) आधुनिक काल १८६० सँ अद्यःपर्यन्त।

(१३) डॉ. नित्यानंद झा 'मैथिली साहित्यक काल विभाजन' शीर्षक निबंधमे अपन मत ऐ प्रकारेँ व्यक्त कएने छथि:

(I) पूर्व विद्यापति काल ८०० ई.सँ १३५० ई. धरि

(II) विद्यापति काल १३५० सँ १७०० ई.धरि

(III) उत्तर विद्यापति काल १७०० सँ १९०० ई.धरि

(IV) आधुनिक काल १९०० सँ अद्यःपर्यन्त।

प्रो. सोमदेव 'मैथिली भाषा ओ साहित्य' शीर्षक निबंधमे ऐ रूपेँ कहलनि जे मैथिली साहित्यक इतिहासक काल-विभाजन, जँ उपलब्ध सामग्री, प्रवृत्ति, एवं मोड़क दृष्टिएँ कएल जाए, तँ ऐ प्रकारेँ हेबाक चाही:

(I) प्राचीनकाल ८म शताब्दीसँ १८७० ई.धरि

(II) मध्यकाल १८७० ई.सँ १९३६ ई. धरि

(III) नव जागरणकाल– (क) स्वतंत्रतापूर्व १९३६ सँ १९४७ ई. धरि

(ख) स्वतंत्रता उपरान्त १९४७ सँ १९८६ ई. धरि

(ग) जनचेतना युग १९८६सँ प्रारंभ।

प्रो. धीरेन्द्र 'मैथिली प्रकाश' नवम्बर १९८६मे काल विभाजनक प्रसंगे कहैत छथि:

(I) आदिकाल ८०० सँ १३२४ ई.

(II) ज्योतिरीश्वर युग १३२४ सँ १४१२ ई.

(III) विद्यापति युग १४१२ सँ १५२७ ई.

(IV) उत्तर विद्यापति युग १५२७ सँ १८६०

(V) आधुनिक काल १८६० सँ अद्यःपर्यन्त।

(क) पुनर्जागरण युग १८९० सँ १९२५

(ख) नवयुग १९५० सँ अद्यःपर्यन्त।

समालोचक प्रो. झाक विद्यापति युग ओ उत्तर विद्यापति युगक मतसँ सहमत छथि, परन्तु ज्योतिरीश्वर नाओंसँ एक पृथक युगक कल्पनाकेँ उचित नै मानैत छथि। कारण 'वर्णरत्नाकर' सन अमूल्य ग्रंथकारक रचना करितो ओ कोनो विशेष परंपराक स्थापना नै कऽ सकलाह। १९५६ सँ नवयुग मानव सेहो अनुचित कहैत छथि, किएक तँ १९५० मे भारत अवश्य पूर्ण रूपेँ

स्वतंत्र भेल मुदा ओइसँ मैथिली साहित्यमे कोनो विशेष उल्लेखनीय ऐतिहासिक दिशान्तर उपस्थित भेल हुअए तकर कोनो प्रमाण नै अछि।

(१५) प्रो. प्रेमशंकर सिंह 'वैदेही'क १९६३ ई., जनवरी-मार्च अंकमे 'मैथिली साहित्यक काल विभाजन' शीर्षक निबंधमे नवीन दृष्टिकोणसँ काल-विभाजन प्रस्तुत कएने छथि:

(I) अपभ्रंश काल १००० ई. सँ पूर्व
(II) प्रारंभिक युग ११०० ई. सँ १५५६ ई.
(III) मध्य युग १५५६ ई. सँ १८५७ ई.
(IV) आधुनिक युग १८५७ ई. सँ अद्यःपर्यन्त।

अपभ्रंश युगकेँ मैथिलीक पूर्व पीठिका मानि सकैत छी। अपभ्रंश कालक अनेक रचनासँ हमरा लोकनिक साक्षात्कार होइत अछि। अतः भाषाक आधारपर ओकर नामकरण प्रारंभिक कालक पूर्वमे राखल गेल। तथापि एकर अपभ्रंश साहित्य सर्वदासँ समृद्धशाली रहल अछि। ऐ युगक 'प्राकृत पैंगलम' सदृश अपूर्व ग्रंथ प्राप्त होइत अछि। 'चर्यापद' एवं सिद्ध लोकनिक सेहो अनेक रचना सभकेँ ऐ कोटिमे राखल जा सकैत अछि। दिल्लीक बादशाह अकबर जखन सिंहासनपर बैसलाह तँ भारतक राजनैतिक स्थितिमे महान परिवर्तन भेल। ऐ समैमे मिथिलाक शासनक भार पं. महेश ठाकुरकेँ भेटलनि, तथा दिल्ली केन्द्रसँ मिथिलाक साहित्यक सेहो महान परिवर्तन भेल। गीति युगक अवसान भेलाक फलस्वरूप मैथिल विद्वानक धियान कीर्तनिञा नाटक लिखबा दिसि विशेष भेल, परन्तु ऐ नाटक सभमे जइ गीत सबहक समावेश भेल ओ पाण्डित्यपूर्ण ओ वर्गीय होमए लागल। म.म. उमापति सँ लए कए वर्तमान युगमे कवीश्वर हर्षनाथ धरि मैथिली नाटकक ईएह रूप देखल जाइत अछि।

१८५४ ई.सँ मैथिली साहित्य मध्य नवीन युगक प्रादुर्भाव होइत अछि। १८५७क पश्चात् देशमे एक नव-जागरणक संचार भेल। सामाजिक एवं राजनीतिक दृष्टिकोणसँ ऐ सालक नाओं इतिहासमे स्वर्णाक्षरमे लिखल जाएत। एकर नेतृत्व नवीन शिक्षित बुद्धिजीवी वर्गक हाथमे रहल। ऐ सालमे भारतमे राजक्रांति भेल जकर फलस्वरूप एकर प्रत्येक क्षेत्रमे परिवर्तन भेल। अतएव भाषा एवं साहित्यक क्षेत्रमे परिवर्तन अवांछनीय नै कहल जा सकैछ। अतएव नवीन दृष्टिकोणकेँ धियानमे राखि मैथिली साहित्यक आधुनिक कालक प्रारंभ १८५७ सँ मानबामे आपत्ति नै होमक चाही।

मुदा प्रस्तुत विभाजनकेँ लऽ कए मैथिली साहित्य मध्य एकगोट आविष्कारक विषए बनि गेल अछि। म.म. जी एवं जयकान्त मिश्र आधुनिक कालक प्रारंभ १८६०सँ मानैत छथि, एवं कुमार श्री गंगानंद सिंह तथा भोला लालदासक मतानुसारेँ १८०० ई. मानल गेल अछि।

डॉ. जयकान्त मिश्र अपन तर्क प्रस्तुत करैत कहैत छथि जे १८६०मे मिथिलाक शासक 'कोर्ट ऑफ वर्डस'क अधीन चलि गेल तकर फलस्वरूप भाषा-साहित्य नवरूप धारण कए लेलक, ऐमे हिन्दीक साक्षात् प्रभाव देखना जाइत अछि, जे रवीन्द्रक कवितासँ प्रभावित भए श्री सुमनजी कविता लिखल। एकर अवलोकनसँ साक्षात् ज्ञात होइत अछि जे देशी एवं विदेशी दुनू दृष्टिएँ एकर प्रभाव मिथिलाक आध्यात्मिक जीवनपर पड़ल।

मुदा १८५७सँ आधुनिक युगक प्रारंभ मानबाक सबल प्रमाण भेटैत अछि, अंतर्राष्ट्रिय दृष्टिकोणसँ सेहो पर्याप्त छै, ऐ क्रांतिक प्रधान कारण छल जे ऐसँ व्यक्तिक स्वतंत्रताक अभ्युदय हुअए। एक दिसि तँ ई लोकनि अपन प्राचीन संस्कृतिक सुरक्षा लेल उत्सुकता देखौलनि तँ दोसर दिसि ओइ संस्कृतिक परंपराक सुरक्षा एवं विकासक हेतु सचेष्ट रहलाह।

समग्र रूपेँ विचार कएला उत्तर निष्कर्ष रूपेँ कहल जा सकैछ जे मैथिली साहित्यक मध्य आधुनिक कालक बड़ पैघ महत्व छै, एतेक दिन धरि भाषा-साहित्य अन्हारमे टापर-टोइया दैत छल मुदा आधुनिक कालमे आबि कऽ ई नवीन रूप धारण कए लेलक। आधुनिक काव्यक प्रारंभमे चन्दा झाक नाओं लेल जाइत अछि। चन्दा झा मैथिलीमे नवयुगक प्रवर्त्तक छलाह। वर्तमानमे मैथिली कवितामे शैली एवं भावधाराक दृष्टिएँ महान परिवर्त्तन भेल। नवीन युगक पदार्पण भेलासँ कविता कामिनी अपन नैसर्गिक सुषमाक भारकेँ वहन करबामे असमर्थ भेलीह एवं ओकरा संग अग्रलेखक एवं पाठकक अभिरूचि एवं मनोरंजनक हेतु उपन्यास साहित्यपर विशेष जोर देल गेल। ऐ सभ दृष्टिकेँ धियानमे राखि १८५७सँ आधुनिक कालक प्रारंभ मानब उचित हएत।

TOPIC:17

**मैथिली आ दोसर पुबरिया भाषाक बीचमे सम्बन्ध (बांग्ला, असमिया आ ओड़िया)**

[यू.पी.एस.सी. (संघ लोक सेवा आयोग) क मैथिली ऐच्छिक सिलेबस - पत्र-१, भाग-“ए”, क्रम-५])

१



**मैथिली आ बांग्ला**

| मैथिली | **बांग्ला** |
|---|---|
| अपने | आपनि |
| नै (नहि) | नय |
| छी | आछि/ छि |
| काज | काज |
| इनार | इनार |
| करै (करैत) छी | कोरेछि |
| गेल छलौं (छलहुँ) | गियेछिलाम |
| बाजू नै | बोलबेन ना |
| रान्हल | रान्ना |
| की | कि |
| संगे | शंगे |
| चाह | चा |
| दू टा | दुटो |
| ई सब | एशब |
| सिंघाड़ा | शिङाड़ा |
| कोन | कोन |
| हाथ | हात |
| अखन | ऐखोन |
| पाँचटा | पाँचटा |
| अच्छा | आच्छा |
| छथि | आछेन |
| छी | आछि |
| हुअय | आछो |
| करू | कोरून |

| | |
|---|---|
| चाही | चाइ |
| खोलै छी | खुलछि |
| कोनो | कोनो |

बांग्ला ‘‘अ’’ ओड़िया सन ‘‘ओ’’ उच्चरित होइत अछि।

मैथिली सन इ/ ई आ उ/ऊ केर ह्रस्व-दीर्घ उच्चारणमे भेद नहि अछि आ ऐ मैथिलीमे अ+इ आ बांग्लामे ओ+ई उच्चरित होइत अछि। औ बांग्लामे ओ+उ उच्चरित होइत अछि।

‘‘न’’ आ ‘‘ण’’ केर उच्चारण बांग्लामे एके रङ होइत अछि। मैथिलीमे ‘‘ण’’ केर उच्चारण कखनो काल ‘‘ड़’’ होइत अछि (गणेश=गड़ेस)।

व/ ब एके रङ ‘‘ब’’ (मैथिली जकाँ) सन उच्चरित होइत अछि।

आश्विन मैथिलीमे लिखलो आ बाजलो ‘‘आसिन’’ जाइत अछि मुदा बांग्लामे लिखल आश्विन आ बाजल आश्शिन जाइत अछि।

तहिना :-

| बांग्लामे एना लिखल जाइत अछि | बांग्लामे एना बाजल जाइत अछि |
|---|---|
| अन्वेषण | अन्नेशन |
| श्वास | शाश |
| उच्छ्वास | उच्छास |
| अक्षर | अक्खोर |
| पद्म | पद्दो |
| विस्मय | बिश्शय |
| उज्जवल | उज्जल |
| | |

फेर बांग्लामे एना लिखल आ फराकबाजल सेहो जाइत अछि:-

| बांग्लामे एना लिखल जाइत अछि | बांग्लामे एना बाजल जाइत अछि |
|---|---|
| संस्हा | शंस्था |
| स्हान | स्थान |

| सुस्ह | शुस्थो |
|---|---|
| असुस्ह | अशुस्थो |

बांग्लामे कोनो शब्द पर विशेष बल देबाकलेल -तो जोड़ल जाइत अछि।

बांग्लामे पूर्व निर्दिष्ट वस्तु लेल प्रयुक्त वस्तुवाचक संज्ञा/ सर्वनामक एकवचनमे -टा -टि आ बहुवचनमे -गुलो, -गुलि जोड़ल जाइत अछि।

बांग्लामे संख्यावाचक शब्दक संग -टा, -टि, -टे, -टो जोड़ल जाइत अछि मुदा -गुलो, -गुलि केर प्रयोग नहि होइत अछि।

बांग्लामे ''संग'' आ ''लेल'' सन अव्यय लेल सम्बन्ध विभक्तिक प्रयोग होइत अछि जेना:-

चायेर शंगे- चाहक संग

आमार शंगे- हमरा संग

आमार जोन्ने- हमरा लेल

बांग्लामे सर्वनामक सम्बन्धवाचक रूपबनेबा लेल सर्वनामक तिर्यक रूपमे -देर जोड़ल जाइत अछि।

आमा-आमादेर-हमर

आपना-आपनादेर-अहाँक

तोमा-तोमादेर- तोहर

एना-एनादेर-हिनकर

वर्त्तमान काल आज्ञार्थकक बाद -ना प्रयोग जोर देबा लेल कयल जाइत अछि।

देखू ने- देखुन ना

कोनो शब्द पर बल देबा लेल मैथिलीमे द्वित्व+एकार केर प्रयोग होइत अछि जेना- कम्मे, एक्के। बांग्लामे ई प्रभाव -इ युक्त भेलासँ अबैत अछि जेना-कमइ।

मैथिलीमे ‘‘अछि’’ केर नकारात्मक ‘‘नहि अछि’’ प्रयुक्त होइत अछि मुदा बांग्लामे ‘‘आछे’’ केर नकारात्मक लेल मात्र ‘‘नेइ’’ प्रयुक्त होइत अछि।

अपूर्णकालिक क्रियारूप मे जँ धातु स्वरांत होइत अछि तँ धातुक तिर्यक रूपक संग कालवाची प्रत्यय -च्छ जोड़ल जाइत अछि। जँ धातु व्यंजनान्त होइत अछि तँ धातुक तिर्यक रूपमे -छ जोड़ल जाइत अछि। कालवाचक प्रत्यय लगेलाक बाद पुरुषवाचक प्रत्यय जोड़ल जाइत अछि।

| मैथिली | बांग्ला |
|---|---|
| हम अबै छी | आमि फिरिछि |
| हम जाइ छी | आमि जाच्छि |
| ओ सब आबै छथि | उनि फिरछेन |
| अहाँ जाइ छी | आपनि जाच्छेन |
| तूँ आबै छैँ | तुमि फिरछो |
| तूँ जाइ छैँ | तुमि जाच्छो |
| ओ सब अबैत छथि | तिनि फिरछेन |
| ओ सब जाइ छथि | तिनि जाच्छेन |
| ओ आबै छथि | शे फिरछे |
| ओ जाइ छथि | शे जाच्छे |
| अहाँ अबैत छी | आपनि फिरछेन |
| अहाँ करैत छी | आपनि कोरछेन |

बांग्लामे एक प्रकारक असमापिका क्रिया होइत अछि- क्रियाक तिर्यक रूपक। बादमे -ते जोड़लासँ ई बनाओल जाइत अछि।

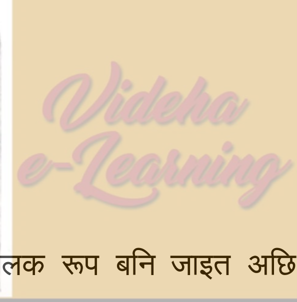
करय मे- कोरते (कोर+ते)

जाइ मे- जेते (जा+ते)

आबय मे- आशते (आश+ते)

मैथिली सन बांग्लामे सेहो दू शब्द वा वाक्यकेँ जोड़बा लेल ओ, आर, एबं (मैथिलीमे एवं/ एवम्) केर प्रयोग होइत अछि। बांग्लामे ‘‘ओ’’ केर प्रयोग ‘‘संग’’ केर अर्थमे सेहो होइत अछि।

हमहूँ- आमि ओ







धातुक पाछाँ पुरुषवाचक प्रत्यय लगा कय क्रियाक सामान्य वर्त्तमान कालक रूप बनि जाइत अछि।

कर+इ= कोरि

कर+एन= करेन

कर+ओ= करो

कर+इश= कोरिश

कर+ए= करे।

२

**मैथिली आ असमिया**

मैथिली जकाँ असमियामे सेहो ह्रस्व इ दीर्घ ई, आ ह्रस्व उ दीर्घ ऊ केर उच्चारणमे कोनो खास अन्तर नहि होइत अछि। मुदा असमिया ऐ केर उच्चारण ओइ आ औ केर उच्चारण ओउ होइत अछि। पहिल तँ मैथिलीसँ भिन्न मुदा दोसर मैथिलीक समान।

मैथिलीमे जेना ‘‘अ’’ बाजल जाइत अछि असमियामे तेना ‘‘आ’’ बाजल जाइत अछि। असमियाक ‘‘अ’’ केर उच्चारण मैथिलीमे नहि अछि।

असमिया ‘‘च’’ आ ‘‘छ’’ मैथिलीक ‘‘स’’ सन बाजल जाइत अछि। असमियाक ‘‘ज’’ ‘‘झ’’ आ ‘‘य’’ मैथिलीक ‘‘ज’’ सन उच्चरित होइत अछि। मैथिलीमे सेहो बहुत ठाम ‘‘य’’ केर उच्चारण ‘‘ज’’ सन होइत अछि।

असमियामे मूर्धन्य आ दन्त दुनू दन्तमूलीय सन उच्चरित होइत अछि।

ट. ठ, ड, ढ, ण, त, थ, द, ध, न एहि सभमे उच्चारणक दृष्टिसँ कोनो अन्तर नहि होइत अछि, सभटा दन्तमूलीय सन उच्चरित होइत अछि।

श, ष, स तीनू ‘‘स’’ सन उच्चरित होइत अछि। मैथिलीमे ‘‘ष’’ कखनो काल ‘‘ख’’ सन उच्चरित होइत अछि। मैथिलीमे सेहो ‘‘श’’ आ ‘‘स’’ ‘‘स’’ सन उच्चरित होइत अछि।

‘‘श’’ ‘‘ष’’ आ ‘‘स’’ ‘‘र’’ केर संग वा दू स्वरक बीचमे रहला पर एकटा तेसरे ढंगसँ उच्चरित होइत अछि, जकर समान मैथिलीमे कोनो उच्चारण नहि अछि।

असमियामे ‘‘जँ संयुक्ताक्षरसँ शब्दक अंत होइत अछि तँ ओ अकारान्त उच्चरित होइत अछि। माने ‘‘ञ’’ केर उच्चारण ‘‘न’’ सन होइत अछि।

| मैथिली | असमिया |
|---|---|
| ऐ (अइ) | एइ |
| चाह | साह |
| हमर | मोर |
| कनियाँ | परिवार |
| परिवार | संसार |
| बहीन | मनी |
| जलखै/ जलपान | जलपान |
| दही | दोइ |
| नारिकेलक लड्डू (लड्डू) | नारिकलर लारू |
| सुआद (सोआद) | सोआद |
| नीक (भल) | भाल |
| बेस (बड्ड) | बेस |
| खाउ | खाओक |
| लिअ | लओक |
| जाउ | जाओक |
| करू | करक |
| अपने | आपुनि |
| करबाक/ करू (करक) | करक |
| जएबाक (जाउ) | जाओक |
| अहाँ | आहा |
| धानक | धानर |
| दिअ | दियक |
| दे | दे |
| बाड़ीमे | बाड़ीत |
| औषध | औसध |
| नेबू (नेबो) | नेमु |
| कथा (गप) | कथा |
| एक बेर | एबार |
| दुइ | दुइ |





| चारि | सारि |
| --- | --- |
| मते (अनुसारे) | मते |
| लगाति | लगत |
| खेनाइ | खा |
| तूँ (पुरातन-तोइ) | तोइ |
| आइ-काल्हि | आजिकालि |
| करह | कर्अ |
| कतऽ | कोत |
| नहि (नइँ) | नाइ |
| चाहक पात | साह पात |
| बाँस | बाँह |
| नोकसान | लोकसान |
| बौस्तु | बस्तु |
| आनौं (आनी) | आनौं |
| करौं (करी) | करौं |
| लिखौं (लिखू) | लिखौं |
| एक बेर | एबार |
| आबह | आह |
| टाका-पाइ (पइसा) | टका-पइसा |
| के | कोन |
| परिवार | परियाल |
| छौरा | लोरा |
| रखलौं | राखिसों |
| ऱाति | राति |
| बजे | बजात |
| प्रायः | प्राय |
| भाराक घर | भाराघर |
| डेढ़ हजार | डेर हेजार |
| बेसी | बेसि |
| पचास | पसास |
| हाथी | हाँती |
| हरिण | हरिणा |
| पोखरि | पुखुरि |




असमियामे कोनो शब्द पर जोर देबाले -हे जोड़ि कऽ बाजल जाइत अछि। असमियामे जनी स्त्रीलिंग वाचक प्रत्यय तँ -जन पुल्लिंग वाचक प्रत्यय अछि।

असमियामे बहुवचन बनबै लेल तीन प्रकारक विभक्ति लगैत अछि। ‘‘तुमि’’, ‘‘तेओँ’’, ‘‘आपुनि’’ क संग -लोक, तुच्छार्थबोधक विशेष्य पदक संग -बोर, ‘‘तइ’’, ‘‘सि’’, ‘‘एइ’’, ‘‘ताइ’’ सर्वनाम आ संबंधवाचक विशेष्य पदक संग ‘‘हैंत’’ क प्रयोग होइत अछि।

| एकवचन | **बहुवचन** |
|---|---|
| तुमि | तोमालोक |
| आपुनि | आपोनालोक |
| तेओ | तेओंलोक |
| तइ | तहँत |
| सि | सिहँत |
| एइ | एइहँत |
| ताइ | ताइहँत/ सिहँत |
| लोरा | लोराबोर |
| किताप | कितापबोर |
| घर | घरबोर |

असमियामे ‘‘ई’’/‘‘एकरा’’ लेल ‘‘एइ’’ आ ‘‘ओ’’/’’ओकरा’’ लेल ‘‘सेइ’’ प्रयुक्त होइत अछि। लागत/ पड़त लेल असमियामे लागिब प्रयुक्त होइत अछि।

असमियामे प्रश्नवाचक वाक्यमे जाहि शब्द पर बलदेबाक रहैत छैक ओहिमे -नो जोड़ल जाइत छैक। धातुक संग -ओवा जोड़ि कऽ भूतकाल वाचक विशेषणक निर्माण होइत अछि।

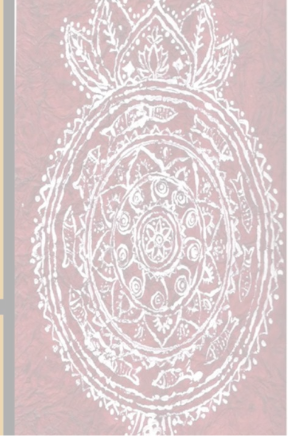
मूल धातुक संग -आ जोड़ि कऽ क्रियावाची संज्ञा बनाओल जाइत अछि।

असमियामे कर्मवाच्यक ब्रिया बनेबा लेल धातुमे -आ जोड़ि कऽ आ फेर -हय वा -जाय केर प्रयोग कयल जाइत अछि।

मैथिली सन असमियामे सेहो क्रिया कालक अनुसार बदलैत अछि।





विदेह सम्मान

३

**मैथिली आ ओड़िया**

किछु विशेष टिप्पणी देल जा रहल अछि जाहिसँ मैथिली आ ओड़ियाक बीचमे सम्बन्ध स्पष्ट भऽ जायत।



मैथिलीमे ‘‘ई’’ केर बदला ओड़ियामे ‘‘इए’’ प्रयुक्त होइत अछि, मुदा उच्चारण दुनू ठाम एक्के छैक, मात्र वर्त्तनीमे अन्तर छैक। जेना रेघा कऽ हम सब ‘‘ई’’ बाजै छी सएह ‘‘इए’’ छिऐ।

‘‘तूँ जाह’’ हम सब कहै छी आ ओड़ियामे ‘‘तू जाऽ‘‘ कहल जाइत अछि। ‘‘तूँ जो’’ हम सब कहै छी आ ओड़ियामे ‘‘तुमे जाअ’’, हमसब ‘‘अहाँ जाऊ’’ आ ओड़ियामे ‘‘आपण जाआन्तु’’ कहल जाइत अछि।

मैथिलीमे ‘‘अछि’’ ओड़ियामे सेहो ‘‘अछि’’ अछि।

हमर केर प्राचीन मैथिली रूप ‘‘मोर’’ (पिआ मोर बालक- विद्यापति) अखनो ओड़ियामे गद्यमे ‘‘मोर’’ प्रयुक्त होइत अछि।

‘‘नहि’’ केर बदला ‘‘नाहिं’’ (नाँई) (मैथिलीमे सेहो एहेन उच्चारण होइत अछि आ मैथिली पत्रिका अंतिकामे नइँ लिखलो जाइत अछि), ‘‘अपने’’ आ ‘‘अहाँ’’ केरबदला ‘‘आपण’’ प्रयुक्त होइत अछि जे मैथिलीक ‘‘अपने’’ सन अछि।

‘‘छी’’ केर बदला ‘‘छि’’ प्रयुक्त होइत अछि।

‘‘कोन’’ केर बदला ‘‘केउँ’’, ‘‘काल्हि’’ केर बदला ‘‘कालि’’ आ ‘‘पीलक’’ केर बदला ‘‘पिइला’’ प्रयुक्त होइत अछि।

‘‘नै सुनलनि’’ केर बदला ‘‘शुणिलुनि’’, एतय गहिंकी नजरिसँ देखब तँ पता लागि जायत जे नकारात्मक बनेबा लेल ओड़ियामे ‘‘नि’’ शब्दक अन्तमे जोड़ल जाइत अछि।

’कैँ’ केर बदला ’कु’ जेना ’रामकैँ’ केर बदला ’रामकु’ प्रयुक्त होइत अछि।

‘‘देल’’ केर बदला ‘‘देल’’ यएह प्रयुक्त होइत अछि।

जेना अपने सभ भात ''सिझ'' गेल कहैत छिऐ, ओड़ियामे बरकल पानिक बदलामे ''सिझापाणि'' कहल जाइत अछि।

''हएत'' केर बदला ''हेब'', ''नै हएत'' केर बदला ''हेबनि'' (नि जोड़ि कऽ नकारात्मक बनल)।

अग्रिम/ अगारी केर बदलामे ''आगरू'', कराबय केर बदला करिबाकु, पड़त केर बदला पड़िब, ''देखने छह'' केरबदला ''देखिछ'', कतेक/ कत्ते केरबदला केते, जतेक/ जत्ते केर बदला जेते प्रयुक्त होइत अछि।

मैथिली केर ''ओ'' केर बदला ओड़ियामे ''से'' प्रयुक्त होइत अछि। मैथिलीमे ''से'' (जेना- से कहलक) कनेक भिन्न अर्थमे मुदा मोटा-मोटी ''फराक'' केर अर्थमे प्रयुक्त होइत अछि।

| मैथिली | ओड़िया |
|---|---|
| जाइ छै | जाउछि |
| एकटा (गोटे) | गोटे |
| बुलब/ बुलनाइ | बुलिबा |
| दूटा | दिटा |
| कोन ठाम(कोन ठाँ) | केउँठि |
| जाइ छी | जाउछि |
| देखै छी | देखिछि |
| आउर के | आउ किए |
| आबैले छथिन्ह | आसिछन्ति |
| मरि गेल | मरिगला |
| जाइ छै | जाइछि |
| जेबै | जिबे |
| जायब | जिबि |
| छलै (छलय) | थिला |
| जैठाम (जइठाम, जइठाँ) | जेउँठि |
| दरमाहा | दरमा |
| गेल | गले |
| बैसा कय | बसेइदइ |
| करायब | करेइबा |
| तोहर | तांकर |
| लागैछै | लागुछि |
| करबै | करिबेनि |
| से काज | से काम |

| | |
|---|---|
| करि लेता | करिनेब |
| किछु | किछि |
| दऽ देबै | देइदेबि |
| तऽ (तँ) | त |
| दिआयल जायत | दिआजिब |
| भौजी/ भाउज | भाउज |
| जलखै | जळखिआ |
| आउर (आओर) | आउ |
| चाह | चा |

ओड़ियामे उच्चारण सेहो कनेक भिन्न छैक, जेना ‘‘अ’’ केर उच्चारण ‘‘ओ’’ सन होइत छैक। जेना ‘‘समर’’ कें हम सभ समर पढ़ब मुदा ओड़ियामे एकरा पढ़ल जायत ‘‘सोमोरो’’। ‘‘अ’’ लागि कय सभ व्यंजन हलन्त सँ पूर्ण होइत अछि से सभटा व्यंजनमे अ=ओ उच्चारण होयत। मैथिलीमे मनोज कें बाजल जाइत अछि मनोजऽ, मुदा ओड़ियामे बाजल जायत मोनोजो।

इ/ ई, उ/ ऊ- मैथिली आ ओड़ियामे एक्के रङ उच्चारण होइत अछि।

ऐ जेना मैथिलीमे अ+इ आ औ जेना अ+ऊ बाजल जाइत अछि तहिना ओड़ियामे सेहो उच्चरित होइत अछि।

ऋ मैथिलीमे ‘‘री’’ बाजल जाइत अछि मुदा ओड़ियामे ‘‘रु’’ उच्चरित होइत अछि। कृप मैथिलीमे ‘‘क्रीप’’ पढ़ल जाइत अछि आ ओड़ियामे ‘‘क्रुपो’’ उच्चरित होइत अछि।

व ब सन उच्चरित होइत अछि दुनू भाषामे से मैथिलीमे ओ उच्चरित होयत ‘‘ब’’ आ ओड़ियामे ‘‘बो’’।

मुदा विदेशज शब्दक उच्चारण ओड़ियामे सेहो हलन्त सन होइत अछि आ ‘‘ओ’’ सन ‘‘अ’’ केर उच्चारण नहि होइत अछि।

मैथिली सन ‘‘य’’ कें ‘‘ज’’ किछु ठाम पढ़ल जाइत अछि, से ‘‘यम’’ मैथिलीमे ‘‘जम’’ आ ओड़ियामे ‘‘जोमो’’ पढ़ल जाइत अछि।

शब्दक प्रारम्भमे जँ ‘‘ड’’ वा ‘‘ढ’’ अबैत अछि तँ नीचाँक बिन्दु दुनु भाषामे विलुप्त रहैत अछि।

मैथिली आ ओड़िया दुनूमे कचटतप केर पाँचम अनुनासिक्य अक्षर (क्रमसँ ङ, ञ, ण, न, म) मे सँ मात्र न आ म सँ शब्दक प्रारम्भ सम्भव अछि।

‘‘क्ष’’ मैथिलीमे ‘‘क्छ’’ उच्चरित होइत अछि आ ओड़ियामे ‘‘ख’’ वा ‘‘ख्य’’।







मराठी सन ओड़ियामे संस्कृतक “ळ” अखनो अछि जे मैथिलीमे आब नहि अछि।

“ज्ञ” मैथिली आ ओड़िया दुनूमे “ग्य” उच्चरित होइत अछि।

“त्स” मैथिलीमे “तस” मुदा ओड़ियामे (स् +च) उच्चरित होइत अछि।








**मैथिली आ हिन्दी/ बांग्ला/ भोजपुरी/ मगही/ संथाली**

***बिहार लोक सेवा आयोग (बी.पी.एस.सी.) केर सिविल सेवा परीक्षाक मैथिली (ऐच्छिक) विषय लेल***

१



**मैथिली आ हिन्दी**

| मैथिली | **हिन्दी** |
|---|---|
| हमरा सभक | हमारा |
| हमर | मेरा |
| ओकर | उसका |
| ई | यह |
| ओ | वह |
| ई सब | ये |
| ओ सब | वे |
| अछि | है |
| छी | हूँ |
| देखनाइ | देखना |
| जीनाइ | जीना |
| गेनाइ | जाना |
| पीनाइ | पीना |
| छूनाइ | छूना |
| सुतनाइ | सोना |
| पढ़नाइ | पढ़ना |
| जाउ | जाइए |
| जो | जा |
| राम गेल | राम गया |
| सीता गेलि | सीता गई |
| आननाइ | लाना |
| बजनाइ | बोलना |
| बिसरनाइ | भूलना |
| छह | हो |
| लिखैत अछि | लिखता है |

| लिखि रहल अछि | लिख रहा है |
|---|---|
| जायत | जाएगा |
| अयताह | आएंगे |
| राम जाइत अछि | राम जाता है |
| सीता जाइत अछि | सीता जाती है |
| सीता जाइत छथि | सीता जाती हैं |
| राम खेनाइ खेलक | राम ने खाना खाया |
| राम सोहारी खेलक | राम ने रोटी खाई |
| तोँ ई काज केने छह | तूने यह काम किया है |
| राम फिल्म देखने छल | राम ने फिल्म देखी थी |
| राम फिल्म देखने छला | राम जी (आदर) ने फिल्म देखी थी |
| राम पाठ समाप्त कऽ लेने होयत | राम ने पाठ समाप्त कर लिया होगा |
| राम पाठ समाप्त कऽ लेने हेता | राम जी (आदर) ने पाठ समाप्त कर लिया होगा |
| राम सीताकेँ देखलक | राम ने सीता को देखा |
| राम सीताकेँ देखलनि | राम जी (आदर) ने सीता को देखा |
| | |

ऊपर अहाँकेँ स्पष्ट भऽ गेल होयत जे हिन्दीमे कर्त्ता लेल ‘‘ने’’ प्रयुक्त भेल मुदा मैथिलीमे ई रिक्त रहल। कर्म लेल हिन्दीमे ‘‘को’’ आ मैथिलीमे ‘‘केँ’’ प्रयुक्त भेल।

| **हिन्दी** | सेब | एक सेब | दू सेब | दो सेबों में |
|---|---|---|---|---|
| **मैथिली** | सेब | एकटा सेब | दूटा सेब | दूटा सेबमे |
| **हिन्दी** | सिपाही | एक सिपाही | दो सिपाही | दो सिपाहियों ने |
| **मैथिली** | सिपाही | एकटा सिपाही | दूटा सिपाही | दूटा सिपाही |
| **हिन्दी** | साधु | एक साधु | दो साधु | दो साधुओं को |
| **मैथिली** | साधु | एकटा साधु | दूटा साधु | दुनू साधुकेँ |
| **हिन्दी** | चमगादड़ | एक चमगादड़ | दो चमगादड़ | दोनों चमगादड़ों पर |
| **मैथिली** | बादुर | एकटा बादुर | दूटा बादुर | दुनू बादुर पर |
| **हिन्दी** | चिड़िया | एक चिड़िया | दो चिड़िया | दो चिड़ियाओं |
| **मैथिली** | चिड़ै | एकटा चिड़ै | दूटा चिड़ै | दुनू चिड़ै |

एतय स्पष्ट भऽ गेल जे बहुवचनमे हिन्दीमे शब्दक रूप परिवर्तित भेल मुदा मैथिलीमे से नहि भेल। एहिसँ पहिने क्रियामे किछु ठाम स्त्रीलिङमे हिन्दी सन परिवर्तन मैथिलीमे सेहो भेल (गेलि) मुदा बेसी ठाम (जाइत

अछि, छथि) परिवर्तन नहि भेल। आदरसूचक वाक्यमे हिन्दीमे क्रियामे परिवर्तन नहि भेल मुदा मैथिलीमे भेल (देखलक/ देखलनि)। स्त्रीलिङ्क बहुवचनमे हिन्दीमे रूप परिवर्तित होइताछि मुदा मैथिलीमे से नहि होइत अछि।

| **कारक/ विभक्ति (मैथिली)** | **कारक/ विभक्ति (हिन्दी)** |
|---|---|
| राम | राम ने |
| रामकेँ | राम को |
| गेन्दसँ, लाठीसँ, लाठी द्वारा | गेन्द से, लाठी द्वारा |
| रामकेँ, रामकलेल, राम हेतु | राम को, राम के लिये, राम हेतु |
| गाछसँ (विलगाव) | पेड़ से |
| रामक घर, रामक पोथी, सीताक राम | राम का घर, राम की किताब, सीता के राम |
| घर पर, खोतामे | घर पर, घोसला में |








२

मैथिली आ बांग्ला

| मैथिली | बांग्ला |
|---|---|
| अपने | आपनि |
| नै (नहि) | नय |
| छी | आछि/ छि |
| काज | काज |
| इनार | इनार |
| करै (करैत) छी | कोरेछि |
| गेल छलौं (छलहुँ) | गियेछिलाम |
| बाजू नै | बोलबेन ना |
| रान्हल | रान्ना |
| की | कि |
| संगे | शंगे |
| चाह | चा |
| दू टा | दुटो |
| ई सब | एशब |
| सिंघाड़ा | शिङाड़ा |
| कोन | कोन |
| हाथ | हात |
| अखन | ऐखोन |
| पाँचटा | पाँचटा |
| अच्छा | आच्छा |
| छथि | आछेन |
| छी | आछि |
| हुअय | आछो |
| करू | कोरून |
| चाही | चाइ |
| खोलै छी | खुलछि |
| कोनो | कोनो |

बांग्ला "अ" ओड़िया सन "ओ" उच्चरित होइत अछि।

मैथिली सन इ/ ई आ उ/ऊ केर ह्रस्व-दीर्घ उच्चारणमे भेद नहि अछि आ ऐ मैथिलीमे अ+इ आ बांग्लामे ओ+ई उच्चरित होइत अछि। औ बांग्लामे ओ+उ उच्चरित होइत अछि।

"न" आ "ण" केर उच्चारण बांग्लामे एके रङ होइत अछि। मैथिलीमे "ण" केर उच्चारण कखनो काल "ड़" होइत अछि (गणेश=गड़ेस)।

व/ ब एके रङ "ब" (मैथिली जकाँ) सन उच्चरित होइत अछि।

आश्विन मैथिलीमे लिखलो आ बाजलो "आसिन" जाइत अछि मुदा बांग्लामे लिखल आश्विन आ बाजल आश्शिन जाइत अछि।

तहिना :-

| बांग्लामे एना लिखल जाइत अछि | बांग्लामे एना बाजल जाइत अछि |
|---|---|
| अन्वेषण | अन्नेशन |
| श्वास | शाश |
| उच्छ्वास | उच्छास |
| अक्षर | अक्खोर |
| पद्म | पद्दो |
| विस्मय | बिश्शय |
| उज्जवल | उज्जल |
| | |

फेर बांग्लामे एना लिखल आ फराकबाजल सेहो जाइत अछि:-

| बांग्लामे एना लिखल जाइत अछि | बांग्लामे एना बाजल जाइत अछि |
|---|---|
| संस्हा | शंस्था |
| स्हान | स्थान |
| सुस्ह | शुस्थो |
| असुस्ह | अशुस्थो |

बांग्लामे कोनो शब्द पर विशेष बल देबाकलेल -तो जोड़ल जाइत अछि।

बांग्लामे पूर्व निर्दिष्ट वस्तु लेल प्रयुक्त वस्तुवाचक संज्ञा/ सर्वनामक एकवचनमे -टा -टि आ बहुवचनमे -गुलो, -गुलि जोड़ल जाइत अछि।

बांग्लामे संख्यावाचक शब्दक संग -टा, -टि, -टे, -टो जोड़ल जाइत अछि मुदा -गुलो, -गुलि केर प्रयोग नहि होइत अछि।

बांग्लामे "संग" आ "लेल" सन अव्यय लेल सम्बन्ध विभक्तिक प्रयोग होइत अछि जेना:-

चायेर शंगे- चाहक संग

आमार शंगे- हमरा संग

आमार जोन्ने- हमरा लेल

बांग्लामे सर्वनामक सम्बन्धवाचक रूपबनेबा लेल सर्वनामक तिर्यक रूपमे -देर जोड़ल जाइत अछि।

आमा-आमादेर-हमर

आपना-आपनादेर-अहाँक

तोमा-तोमादेर- तोहर

एना-एनादेर-हिनकर

वर्त्तमान काल आज्ञार्थकक बाद -ना प्रयोग जोर देबा लेल कयल जाइत अछि।

देखू ने- देखुन ना

कोनो शब्द पर बल देबा लेल मैथिलीमे द्वित्व+एकार केर प्रयोग होइत अछि जेना- कम्मे, एक्के। बांग्लामे ई प्रभाव -इ युक्त भेलासँ अबैत अछि जेना-कमइ।

मैथिलीमे "अछि" केर नकारात्मक "नहि अछि" प्रयुक्त होइत अछि मुदा बांग्लामे "आछे" केर नकारात्मक लेल मात्र "नेइ" प्रयुक्त होइत अछि।

अपूर्णकालिक क्रियारूप मे जँ धातु स्वरांत होइत अछि तँ धातुक तिर्यक रूपक संग कालवाची प्रत्यय -च्छ जोड़ल जाइत अछि। जँ धातु व्यंजनान्त होइत अछि तँ धातुक तिर्यक रूपमे -छ जोड़ल जाइत अछि। कालवाचक प्रत्यय लगेलाक बाद पुरुषवाचक प्रत्यय जोड़ल जाइत अछि।

| मैथिली | बांग्ला |
|---|---|
| हम अबै छी | आमि फिरिछि |
| हम जाइ छी | आमि जाच्छि |
| ओ सब आबै छथि | उनि फिरछेन |
| अहाँ जाइ छी | आपनि जाच्छेन |
| तूँ आबै छँ | तुमि फिरछो |
| तूँ जाइ छँ | तुमि जाच्छो |
| ओ सब अबैत छथि | तिनि फिरछेन |
| ओ सब जाइ छथि | तिनि जाच्छेन |
| ओ आबै छथि | शे फिरछे |
| ओ जाइ छथि | शे जाच्छे |
| अहाँ अबैत छी | आपनि फिरछेन |
| अहाँ करैत छी | आपनि कोरछेन |

बांग्लामे एक प्रकारक असमापिका क्रिया होइत अछि- क्रियाक तिर्यक रूपक। बादमे -ते जोड़लासँ ई बनाओल जाइत अछि।

करय मे- कोरते (कोर+ते)

जाइ मे- जेते (जा+ते)

आबय मे- आशते (आश+ते)

मैथिली सन बांग्लामे सेहो दू शब्द वा वाक्यकेँ जोड़बा लेल ओ, आर, एबं (मैथिलीमे एवं/ एवम्) केर प्रयोग होइत अछि। बांग्लामे ‘‘ओ’’ केर प्रयोग ‘‘संग’’ केर अर्थमे सेहो होइत अछि।

हमहूँ- आमि ओ

धातुक पाछाँ पुरुषवाचक प्रत्यय लगा कय क्रियाक सामान्य वर्त्तमान कालक रूप बनि जाइत अछि।

कर+इ= कोरि

कर+एन= करेन

कर+ओ= करो




कर+इश= कोरिश

कर+ए= करे।









३

मैथिली आ भोजपुरी

*भोजपुरीमे*

| केर बदला | ई वर्ण प्रयुक्त होइत अछि |
|---|---|
| ण | न |
| ल | र |
| ष | ख |
| श | स |

भोजपुरीमे सहचर तीन प्रकारक अछि, विपरीतार्थक, समानार्थक, आनुप्रासिक आ विशेषार्थ बोधक सहचर।

**विपरीतार्थक सहचर**

| शब्द | विपरीतार्थक सहचर |
|---|---|
| हकासल | पियासल |
| लरम | गरम |
| रकम | पताई |
| साँप | गोजर |
| | |

**समानार्थक सहचर**

| शब्द | समानार्थक सहचर |
|---|---|
| लकड़ी | काठी |
| कनिया | बहरिया |
| पुरखा | पुरनिया |
| किन | बेसाह |

| बिआ | बाल |
|---|---|
| नेग | चार |



आनुप्रासिक सहचर

| **शब्द** | **आनुप्रासिक सहचर** |
|---|---|
| अखोर | बखोर |
| हरवा | हथियार |
| बोहनी | बट्टा |
| पर | पाहुन |
| चासा | बासा |
| चिरई | चुरुंग |

**विशेषार्थ बोधक सहचर**

| **शब्द** | **विशेषार्थ बोधक सहचर** |
|---|---|
| सेवा | खरचा |
| अह | जह |
| तगड़ | बगड़ |
| अकट | बहेर |
| आउँज | गाउँज |

**भोजपुरीक किछु उपसर्ग**

नि-निदरदी

कु- कुअन्न








अध- अधमरु

**भोजपुरीक किछु प्रत्यय**

डाका- अइत- डकइत

हार- चूड़ी- चूड़ीहार

लकड़ी- लकड़ीहार

हर-मुस- मुसहर

बाप- बहर

मामा- ममहर

**भोजपुरीमे संज्ञासँ विशेषण**

कातिक- कतिका

आइन- धुँआ- धुआँइन

**भोजपुरीमे विशेषणसँ संज्ञा**

पियर- पिअरी

अई- थेथर- थेथरई

अवती- बूढ़- बुढ़उती

**भोजपुरीमे संज्ञासँ संज्ञा**

अई- लरिकाई

**भोजपुरीमे विशेषणसँ विशेषण**

लाल- ललछहूँ

औठा- पहिल- पहिलौठा

**स्त्री प्रत्यय**

आइन- मिसिर- मिसराइन

आनी- देवर- देवरानी

**भोजपुरीमे वचन**

लइका (एकवचन)- लइकन (बहुवचन)

हाथी (एकवचन)- हाथिन/ हाथियन (बहुवचन)

| **मैथिली** | **भोजपुरी** |
|---|---|
| छथि | तारी |
| खाइत अछि | खाता |
| खुजैत अछि | खुलता |
| नहि खेलाइत छथि | खेलत नइखन |
| नहि अछि | नइखे |
| नहि जयताह | ना जइहन |
| नहि खयताह | ना खइहन |
| जाइ छी | जातार |
| पढ़ैत छी | पढ़ तानी |
| खाइ छथि | खा तारन |
| अहाँ | रउआ |

भोजपुरीक सेहो विभिन्न रूप अछि, जेना क्षेत्रानुसार बा, बाटे, बीया, बड़वें, बटे/ बानी बाजल जाइत अछि।








४

**मैथिली आ मगही**



भुवअनेश्वर शर्माक मगही शब्दकोषमे किछु वर्ण आ संयुक्ताक्षर जेना ण, श, ष, ऋ, लृ, क्ष, त्र, ज्ञ हटा देल गेल अछि। मैथिली सन मगहीमे सेहो ‘‘व’’ केर उच्चारण ‘‘ब’’ आ कतेक ठाम ‘‘य’’ केर उच्चारण ‘‘ज’’ होइत अछि।

मगही सेहो अपन उत्पत्ति ८४ सिद्ध आ नाथ सम्प्रदायक नाथ साहित्यसँ मानैत अछि। मगही क्रियामे एकटा आकारक मात्रा कम होइत अछि जेना:-

| **मैथिली** | **मगही** |
|---|---|
| एनाइ | अनई |
| गेनाइ | गनई |
| धोनाइ | धोनई |
| | |

**मगही लोकोक्ति आ कहावत:**

अदरा गेल, तीन गेलन, सन, साठी, कपास- स्त्रदरा नक्षत्रमे वर्षा नहि भेने सन, साठी (धान) आ कपासक खेती बर्बाद भऽ जाइत अछि।

ओछा के प्रीत बालू के भीत- ओछ व्यक्तिसँ दोस्तियारी क्षिक होइत अछि।

ब्लातदेवल- खोराकी चलायल

सिहरी फटल- अकश-तिकश खतम भेल।

हहास कयल- दोसरकेँ आगू बढ़ैत देखि कऽ जरल।

तुला राशि के भेल- बड़ड तमसायल

कन्या राशि के भेल- काजसँ बेकार भेल।

ओरहन देवल- शिकाइत कयल।

पीढ़ा देवल- आदर देल।

खोपसन देवल- उलहन देल।

डॉ रामनरेश मिश्र ‘‘हंस’’ मगधक भाषा मागधीक विकसित रूपकेँ मगही कहलनि अछि। मागधी प्राकृतसँ असमिया, बांग्ला, ओड़िया, मैथिली, भोजपुरी आदि भाषा सेहो बहार भेल अछि।

मगहीमे ‘‘र’’ लेल ‘‘ल’’ ‘‘ड़’’, ‘‘ल’’ लेल ‘‘र’’ ‘‘ड़’’ केर प्रयोग होइत अछि। मगहीमे सेहो निर- लगा कऽ निरइठ बनैत अछि (अइठ/ निरइठ)।

**मगही लोकगाथा**

आल्हा, सोरठी वृजभार, लोरकाइन, रेसमा-चुहरमल, सारंगा-सदाबृज, छतरी-घुघुलिया, कुँवर विजयी, राजा भरथरी, गोपीचन्द, सोभां नायक, सती बिहुला, नेटुआ दयाल सिंह, राजा ढोलन सिंह, मान गुजरिया, मामा-भगिना, विक्रम, कर्दब-लीला, बनजारा, हिरनी-बिरनी, सहलेस, नूनाचार, राजा हरिचन, बाबा चिन्तामन, बकतौर, बिहुला-विसहरी, बाबा लखन्दर बिहुला-विषधर।

**मगही लोकनाट्य, नाट्य-गीत आ लोक-नृत्य**

-कीर्त्तन, जातरा, करमा भइया दूज, जीतिया (नायिका रुसि कऽ नैहर चलि गेल, धनरोपनीक बाद किसान-मजदूर ई नाट्य करैत छथि।)

-फागू, चैता, सावनी, बारहमासा, रोपनी।

-दूधवंशी (दुसाध), साफी (धोबी), च्हन्द्रवंशी (कहार), कोइरीक नाट्य गीत।

-जनी- जातिक- डोमकच, बीछामार, चुलहारिन, सीता-मीता, गेदुरी।

-ओझा-डाइन।

-सामा-चकेवा, बगुला-बगुली, जाट-जाटिन, सास-पुतोह,

-सगबेचनी, मछली बेचनी, जीराबुन, दही बेचनी।

-नाच, नेटुआ-कसबिन, कठपुतली।

आब किछु मैथिली आ तकर मगही रूपक चर्चा कयल जा रहल अछि।

| मैथिली | मगही |
|---|---|
| खेलेलौं (खेलेलहुँ) | खेलली |

| हएत | होत |
|---|---|
| अछि | हे |
| छथि | हथ/ हथुन |
| छी | ही |
| जायत | जइतो |
| एता | अतथुन |
| भेटत | मिलतो |

मगहीक रूप

पटनाक आसपास मारलुक (मारबौ) आदिक प्रयोग होइत अछि जे कने दक्षिण गेला पर हथिन/ छथिन आदिमे परिवर्तित भऽ जाइत अछि।








५

मैथिली आ संथाली

| मैथिली | संथाली |
|---|---|
| पिता | बा |
| बाबी (बा) | नुनुगो (बुडीगो) |
| बाबा | गोड़म्बा |
| नमस्ते | जोहारगी |
| भेल | हुयेना |
| उसरि कऽ (जल्दी) | उसारा |
| अछि | काना/ गिया |
| छी | काना |
| आर | आर |
| सँ | ते |
| एखन लगाइत | एहोबोक् लगीत |
| देखाउ | उदुगमे |
| विलम्ब | बिलम्ब |
| दिऔ | मे/ में |
| करू | मा/ कामीयमे |
| नहि | आलोम |
| बनू | बिनाक्आ |
| बुरबक (बोका) | बोका |
| आउ | हजुक्मे |
| ध्यान | ध्यान |
| दाँत सभ | डाटा |
| लगा लिअ | लगाव ताम |
| सत्त | सरी |
| खबरि | खोबोर |
| हमरा | इञ |
| खराप | बड़ीच् |
| मोन | मोने |



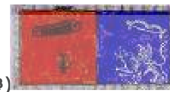

| लगा कऽ | लगाव |
|---|---|
| काज | कातेक |
| कें | दो |
| घास | घास |
| आनू | अगुकुम |
| अहाँ सँ | आमसांव |
| जरूर | जरूड़ |
| थोर | थोड़ा |
| पंखा | पंखा |
| बिजली | बिजली |
| लैम्प | लैम्प |
| कागत-पेंसिल | कागज-पेंसिल |
| मना | मना |
| मामिला | मामला |
| समय | समय |
| धन | धन |
| मेहनति | मेहनत |
| अहाँ | आम |
| कुकुड़ (पु.) | सीता |
| कुकुड़ (स्त्री.) | सीता इंगा |
| पिल्ला (कुकुड़क बच्चा) | सीता होपोन |
| बाछी | बछी |
| बेंग | रोटे |
| पनही (जुत्ता) | पनाही |
| करैल | कारला |
| घर (दलान) | दुलान |
| मचान | मचान |
| कड़छु | कड़छु |
| पटिया | पटया |
| चालनि | चलनी |
| सलाइ-काठी | सलाई कठी |
| सूत | सुतम |
| थारी-बाटी | थरी-बटी |







| लोटा | लोटा |
|---|---|
| बोरा | बोरा |
| गहूम | गुहुम |
| दही | दाही |
| थुथुन | थुथना |
| गाहकि (गहकी) | गहकी |
| अखबार | खोबोर कागज |
| हरियर | हरयड़ |
| खर्चा | खर्चा |
| साफ करब | साफा |
| बीछब | बाछाव |
| बनायब | बिनाव |
| नव करब | नावा |
| नेहोरा करब | नेहोर |
| जिरायब (विश्राम करब) | जिराव |
| थरथरी | थारथाराक् |
| आछी करब (छीकब) | अछीम |
| साटब | साटाव |





३.**कनकमणि दीक्षित (मूल नेपालीसँ मैथिली अनुवाद श्रीमती रूपा धीरू आ श्री धीरेन्द्र प्रेमर्षि)**

**भगता बेडक देश-भ्रमण**



१.मूल तेलुगु कविता: पसुपुलेटि गीता; तेलुगुसँ हिंदी अनुवाद: आर.शांता सुंदरी; हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद: विनीत उत्पल (दिल्लीक बलात्कारक घटनापर)- **दुमर्जा** २. मन्त्रद्रष्टा ऋष्यश्रृङ्ग- हरिशंकर श्रीवास्तव "शलभ"- (हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद विनीत उत्पल)



1

मूल तेलुगु कविता: पसुपुलेटि गीता; तेलुगुसँ हिंदी अनुवाद: आर.शांता सुंदरी;

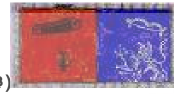
हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद: विनीत उत्पल

(दिल्लीक बलात्कारक घटनापर)

**दुमर्जा**

देह भऽ गेल अछि एकटा इतिहास-दोख
दूटा ठोढ़, दूटा गाल
दूटा स्तन, दूटा जांघ
जोड़ा चुहचुही
दुइए युगमे एहन जेना जिनगी भऽ गेल खतम

जिनगी एत्ते संकीर्ण भऽ गेल जे
कनियो टा डोलू तँ उघड़ए लागैत अछि



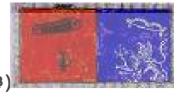


भीतक रहस्य बिनु खुजनहिये
ग्राफिती भटरंग हुअए लागैत अछि
काल्हि नै जानि केकर बेर अछि?

खराप नै मानब,
लागए लागल अछि
लगमे ठाढ़ सभटा पुरुख जेना
जांघक बीच अप्पन
भाला लऽ कऽ चलि रहल अछि
समुद्र आ अकासकेँ मिला कऽ बुनलापर सेहो
ऐ अदौक पाथर-युगक उघारकेँ
झपबा लेल
हाथ भरि लत्ता नै भेटैत अछि

आँखि खुजलेपर तँ
बुझाएत

जे भोर भऽ गेल
जइ अंगमे आँखिये नै
ओकरा लेल
आन्हरक-अन्हारे आनंद अछि
अँतड़ीये टा नै
हृदएकेँ सेहो उधेसैत
देहमे अन्हार सोझे खन्ती बनैए
धँसि जाइए
खराप नै मानब,
कीड़ीसँ कीड़ीक नाशक आशा करैत
मृत्युसँ अमृत मांगैत
मालजाल भऽ मालजालक बहिष्कार के करैत अछि?
मानवताक भ्रमजालमे
सिग्नल सभक बीच बड़का सड़क
जखैन बनि जाइत अछि आक्रंदनक गुमकी





कान फाड़ैबला
प्रश्नक गोली जनमि रहल अछि
तँ की भेल?
विवेकपर लाठी बजरि रहल अछि
फुसियाहींक भरोस, बिकट्ठ गारि
नोर पोछि रहल अछि।
प्रहरी-दलक पसार
नोरबला गैसक मेघ बनि
विश्वासपर आच्छादित भऽ रहल अछि।
नग्न एकटा मृत्युक ओजार बनि गेल अछि
अप्पन आ आस-पड़ोसक घर
नव घा बनि औनाए लगैत अछि
हमरा दूनू गोटेक अस्तित्व काएम रहबाक हुअए

तँ अहाँकेँ हमरामे

मनुष्यता बनि झहरऽ पड़त

हमरा अहाँमे पैसि

मातृत्व बनि बहए पड़त

देहक दोखी भेलाक बाद

प्राणक हिलकोर मिझा गेलाक बाद

चण्ठमे अनूदित भेलाक बाद

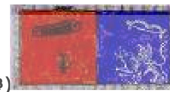
बालुक पानिक झिल्हरिक बाँझ स्थितिमे

प्रवासी भऽ प्रवेश केलाक बाद...

माँ सेहो अहाँ लेल

एकटा गलत सम्बन्ध बनि कऽ रहि जाएत...

खराप नै मानब,





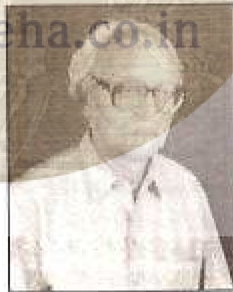
आब एतए मुर्दाघरक अलाबे

सौरी-घरक कोनो खगता नै!



2





मन्त्रद्रष्टा ऋष्यश्रृङ्ग- हरिशंकर श्रीवास्तव ‘‘शलभ"- (हिन्दीसँ मैथिली अनुवाद



विनीत उत्पल)

**ब्राह्मचर्य एवं अध्ययन**

श्री भागवत दर्शक अनुसार, विभांडक सोचैत छला जे अप्सरा उर्वशीक देखलेसँ हुनकर तेज नष्ट भेल। तइसँ ओ अप्पन नेनाकेँ गलतीयोसँ कोनो स्त्रीक दर्शन नै कराएत। ओकरा विशुद्ध ब्रह्मचारी बनाएब, ई सोचि कऽ ओ अप्पन नेना ऋष्यश्रृंगकेँ आश्रमसँ बाहर नै जाइले दै छल। ओ हुनकासँ तप, अग्निहोत्र कराबैत छल, वेद पढ़ाबैत छल आ पैघ-पैघ ऋषिकेँ छोड़ि कऽ ओकरा केकरोसँ भेँटो नै करऽ दै छल। स्त्रीकेँ तँ ओ अप्पन आश्रमक परिधि धरिमे पएरो नै राखऽ लेल दै छल। कोनो बूढ़ ऋषिक स्त्री सेहो ओतए नै आबि सकैत छल। आबैक गप तँ दूर, ओ अपन नेनाक आगू कोनो स्त्रीक नाम धरि नै लैत छल। ऋष्यश्रृंग जानितो नै छल जे मुनिक अलाबे कोनो अओर स्त्री-पुरुख होइत अछि। ओ नै तँ कोनो नग्र देखने छल आ नहिये नग्रक कोनो वस्तुए।9

ऋष्यश्रृंगक समय अग्नि आ अप्पन तपस्वी पिताक सेवामे बितैत छलै। स्त्रीक अस्तित्वक तँ हुनका पतो नै छलनि। तकर बादो ओ वेदक परगामी विद्वान छल।10

रामायणकार हुनका शक्तिशाली महर्षि कहने छथि। हुनका विषय-सुखक कनियो टा ज्ञान नै छल। ओ अखंड ब्रह्मचारी छल।



मीना झा

**जन्म स्थान:** दरभंगा, शिक्षा: बी.ए (मैथिली ऑनर्स फर्स्ट क्लास), १९७६; एम. ए (फर्स्ट क्लास) १९८०

**कार्य अनुभव:** १९८२-१८८७ रा. रा.कैम्पस, जनकपुर (नेपाल) मैथिली विभागमे व्याख्याता, **प्रकाशन:** मैथिलीक विभागाध्यक्ष स्वर्गीय डॉ धीरेश्वर झा धीरेन्द्रक प्रेरणासँ पहिल निबंध नेपाक पत्रिका "सिंहावलोकन" मे प्रकाशित भेल। **वर्तमान:** पति डॉ. अरुण कुमार झा तथा पुत्र द्वय संगे सन १९८७ सँ इंग्लैंडमे निवास, आ ओइठाम अपन बच्चा सभक संगे आन आन मैथिल बच्चा सभकँ सेहो मैथिली भाषा आ संस्कारक प्रति जागरूकता उत्पन्न करवामे प्रयत्नशील। Mithila Cultural Society, UK क २०११ वार्षिक अधिवेशनक प्रमुख अतिथि डाक्टर श्रीमती शेफालिका वर्माक प्रोत्साहन पाबि पुन: मैथिलीमे लिखब प्रारम्भ केलनि।

# ब्रेस्ट कैंसर

लन्दनक थेम्स नदीक पश्चिम किनारपर नवनिर्मित सेंट थोमस अस्पतालक पाँचम मंजिलपर कैंसर वार्ड रहै। खिड़की लगक कोनाबला बेड रहनि मनोरमा सिंघक। खिड़कीक पैघ शीशासँ मनोरमाक आँखि बिग बेनक पैघ घड़ीपर अटकल छलनि। सूर्यास्तक समयमे सूरजक किरण बिग बेनकँ मनोरम बना रहल छल मुदा मनोरमाक आँखि ऐ मनोरम दृश्यक आनंद नै लऽ घड़ीक सुइपर लागल छल जे आब ६ बाजि ३५ मिनट देखा रहल छल। हुनकर पति सुरेश आ जौंवा बेटी रश्मि आ किरणकँ तँ अखन तक आबि जाइ कऽ चाही छलन्हि। पति अपन न्यूज एजेंटक दोकान साढ़े ५ तक बंद कऽ दैत छथिन आ बेटी सभ सेहो स्कूलसँ आबि जाइत छन्हि। ६ बजे नर्स हुनका रातुक भोजन दऽ गेलनि, ओ नै खयली, ओ अपन परिवार संगे भोजन करए चाहैत छलीह।

कैंसर वार्डमे १२ टा बेड रहै, पुरुख आ स्त्रीगनक वार्ड अलग-अलग।

स्त्रीगनक वार्डक सभटा बेड भरल रहै। ओना सबहक बेडक चारू कात हरियर पर्दा लागल रहै, तैँ के की कऽ रहल छल से नै पता चलै। नर्स मनोरमाक टेबलसँ भरल प्लेट लऽ गेलन्हि आ आइसक्रीम दऽ गेलन्हि। आब आइसक्रीम सेहो पिघलि कऽ चुबय लागल, जेना मनोरमाक आँखिसँ नोर। मनोरमा पिछला ३ सालमे १३ बेर अस्पतालमे भर्ती भेल छथि। जखने दर्द तेज होइन्ह वा उलटी नै रुकन्हि, अस्पतालमे भर्ती भऽ जाथि। कखनो कोनो समय ९९९ नंबर घुमाबथि, अम्बुलेंस लेबय लेल आबि जानि। ओहू दिन किछु एहिना भेल रहै। मनोरमा अपन पतिक पसंदक भोजन मकइक रोटी आ सरिसौंक साग बनौने छलीह। दुनु बेटी भोजन कऽ बैठकमे टीवी देखि रहल छलन्हि आ पति देव मुँह हाथ धोअ लेल बाथरूममे गेल छलखिन्ह। एम्हर मनोरमा दुकान बंद होबय कऽ आवाज सुनिते टेबलपर २ टा थारीमे सरिसोंक साग हरियर मिर्चीक संगे, २टा कटोरीमे दही दऽ तवाकेँ चूल्हापर राखि मकइक रोटी हाथपर गोल-गोल घुमाबऽ लगलीह। तवा गर्म होइते रोटी राखि देलखिन्ह। अपन पसंदक लाल रंगक सलवार कुरता पहिरने मनोरमा चूल्हा लग ठाढ़ छलीह, मुदा हुनकर आँटा लागल दहिना हाथ रोटीकेँ उनटाबय लेल उठि नै रहल छलन्हि। अचानक हुनका दहिना छातीमे दर्द उठल जे बाहींसँ होइत हाथ धरि पहुँचि गेल। दर्दसँ छटपटा उठलीह मनोरमा। भानस घर सौंसे धुँयासँ भरि गेलै, स्मोक अलार्म बजै लागल। घरक सभ लोक भानस घर दिस दौड़लाह। रोटीसँ धधरा निकलि रहल छल। मनोरमा अपन बामा हाथसँ दहिना हाथ पकड़ने चिचिया रहल छलीह। ओही दिन अम्बुलेंस संगे फायर ब्रिगेड सेहो आएल छल।

३ बरख पहिने मनोरमाकेँ कैंसर डैगनोस भेल रहनि, बामा ब्रेस्टमे, जे ६ मासक इलाजक बाद ठीक नै भेलन्हि, तैँ डॉक्टरकेँ हुनकर ब्रेस्ट काटि हटाबय पड़लन्हि, जइसँ शरीरक आर भागमे कैंसरक कीटाणु नै फैलैक। मुदा हुनका रेडिओ थेरापी भेलन्हि आ कतेक तरहक दवाइ सेहो खाइत छलीह, तइ सभसँ कैंसर कण्ट्रोलमे छलन्हि। नव दवाइ आ दवाइक खुराकमे फेर बदल कएलापर साइड इफेक्ट बढ़ि जाइत छलन्हि तैँ अस्पतालक बेर-बेर चक्कर लगाबय पड़ैत छलन्हि। ऐबेर ओ तेरहम बेर अस्पतालमे भर्ती भेल छलीह। डॉक्टर सबहक अथक प्रयासक बादो मनोरमाक दहिना ब्रेस्टमे सेहो कैंसर भऽ गेल रहनि। हुनकर सबहक सलाह रहैक जे दवाइसँ ठीक नै हएत। ओइ लेल ओपरेसन मात्र उपाय अछि।

मनोरमा बड्ड असमंजसमे छलीह। ओपरेसन करा लेने हुनका किछु दिन

आर जिनगी भेट जयतनि मुदा की ओ जिनगी मृत्युसँ कम भयावह हेतन्हि। मनोरमा लेल निर्णय लेब बहुत कठिन लागि रहल छलन्हि। जौँ ओ ओपरेसन नै करौतीह तँ कैंसर सौंसे शरीरमे पसरि जेतन्हि आ जौं करौतीह तँ हुनकर स्त्रीत्व समाप्त भऽ जेतन्हि। मोनमे उथुल-पुथल मचल छन्हि। पहिल बेर ओपरेसन करौने छलीह तहियासँ सुरेश शराब पीयब शुरू कऽ देलखिन। शराबक लत तेहन लगलन्हि जे आब भोरका चाहक बदला शराबक गलास हाथमे रहए लगलन्हि। आमदनीक एक मात्र जरिया न्यूज एजेंटक दोकान रहनि, तकर आधा कमाइ ओ अपन सिगरेट आ शराबमे खर्च कऽ दैत छलखिन। शराब पिला बाद हुनका तामस सेहो बहुत होइत छलन्हि। बेटी सभपर सेहो कहियो काल हाथ उठा दैत छलखिन। ओपरेसनक बादसँ सुरेश बेडरूममे मनोरमा संगे सुतब छोड़ि देलन्हि, बेशी काल शराब पिबैत-पिबैत बैठकमे लुढ़कि जाइत छलाह।

अपना लेल नै तँ अपन दुनो बेटी लेल तँ जीबय पड़तन्हि। दुनु बेटी “ए” लेवल कऽ रहल छलन्हि, आगाँ साल एकटा बेटी मेडिकल कॉलेजमे जेतन्हि आ दोसर लॉ पढ़तनि। मनोरमा ओपरेसन करा लेलीह। बेटीक भविष्यक लेल ओ अपन भविष्य दावपर लगा लेलीह। ममताक आगू सभ बात छोड़ि देलखिन, बेटी सभकेँ कॉलेज जाइत देखी से सपना रहनि।

मनोरमाक आधा खुजल आँखिसँ नोर झर-झर बहि रहल छल। माँ-बाप, भाइ-बहिन सभसँ एतेक दूर अपनाकेँ बहुत असगर महसूस कऽ रहल छलीह। बिग बेनक घड़ीमे ७ क घंटा बाजल। मनोरमाक मोन आशंकित भऽ रहल छन्हि जे अखन धरि बेटी आ पति किए नै अएलखिन। मनोरमा आइ भोरेसँ अस्पतालसँ डिस्चार्ज भऽ घर जाय लेल व्यग्र रहथि, जइ घरमे पिछला २० सालसँ एक-एक टा वस्तु कीनि सजौने रहथि। आगूमे पैघ दोकान रहनि आ पाछूमे भंडार घर, भानस घर आ स्नान घर रहनि। ऊपरमे २ टा सुतयबला घर, एकटा स्नान घर आ एकटा पैघ बैठक आ तइसँ लागल छोट सनक बालकोनी। मनोरमाकेँ ई घर बड़ड पसिन्न छलन्हि कारण इंग्लैंडमे बालकोनीबला घर बहुत कम भेटै छै। ओहुना आब जीवाक इच्छा जेना समाप्त भऽ गेल रहनि, बेटी सभक खातिर ओ घर जाय चाहैत छलीह। जइ कोठरीमे ओ पति संगे कतेओक मधुर पल बितौने छलीह, आब ओ कोठरी हुनका काटय दौड़ैत छलनि। मनोरमा अपनाकेँ पति द्वारा तिरस्कृत महसूस करैत छलीह। सुरेशक सहयोगक बदला उदासीनता हुनकर मोनकेँ आर आहत करैत छलन्हि।

मनोरमाक विवाह बड़ड धूमधामसँ बनारसमे भेल रहनि। माँ-बापक बड़ड

दुलारू रहथि। पिता अपने आइ.ए.एस. ऑफिसर रहथिन। चारु भाइ बहिनक शिछा दीक्षा कॉन्वेंटमे भेल रहनि। मनोरमा देखै-सुनैमे निक, मुदा चंचल रहथि। मनोरमा ७-८ सालक रहथि, तइ बेर दिवाली दिन फटाका छोड़ै कालमे छुरछुरी घूमि गेलै, जइसँ हुनकर दहिना बाँही केहुनी तक आ दहिना गाल निक जकाँ पाकि गेलन्हि, कतेक दिनक इलाजक बाद ठीक भेलथि मुदा दाग नै छुटलनि। ऐ दागक कारण सर्वगुण संपन्न होइतो मनोरमाक विवाह नै भऽ रहल छलनि जइसँ माँ-बाप बड़ड चिंतित रहैत छलखिन। मनोरमाक उम्र सेहो ३० पार कऽ गेल छलनि, सुरेशसँ हुनका अपन एकटा दोस्तक घरमे भेँट करायल गेलनि। सुरेशक अपन अंग्रेज पत्नीसँ तलाक भऽ गेल रहनि, ओहो सुशील कनियाँक खोजमे इंडिया आएल रहथि। दुनो गोटाक बात मिलि गेलन्हि। चट मंगनी आ पट विवाह भऽ गेलनि।

विवाहक बाद मनोरमा अपन घर गृहस्थीसँ बड़ड प्रसन्न छलीह। बेटी भेला बाद दुनो गोटा आर प्रसन्न रहै जाइ लगलाह। काजक बाद सुरेशकेँ जे समय भेटन्हि ओ अपन बचिया संगे बिताबथि। कहियो काल बेटी सभकेँ लेगोलैंड, डिजनीलैंड घुमाबथि आ कहियो मेला सभमे। बेटी पैघ भेलन्हि तखन पेरिस आ स्विटजरलैंड सेहो घुमा देलखिन। ३ साल पहिने हिनका सबहक खुशीमे जेना ग्रहण लागि गेलन्हि। जहियासँ मनोरमाकेँ कैंसर डैगनोस भेलन्हि, सभ बात उलट-पुलट भऽ गेलनि। मनोरमा ऐ बातसँ बड़ड आहत महसूस करैत छलीह जे सुरेश हुनकर व्यथा कोना नै बुझि रहल छथिन। हुनका लागैत छलन्हि जे ओ हुनकासँ नै हुनकर शरीर मात्रसँ प्रेम करैत छलखिन।

ककरो पदचाप सुनि मनोरमाक आँखि खुजि गेलनि। बाहर अन्हार भऽ गेल रहै, हुनकर आँखिक नोर सुखा गेल रहनि। हुनका आगू हुनकर दुनो बेटी नोराएल आँखिये मुँह लटकौने ठाढ़ छलखिन। मनोरमा धरफरा कऽ बैसैत पुछलखिन, “अहाँ सभ कखन अएलहुँ?”

“अखने मम्मी” - दुनु बेटी धीरेसँ जवाब देलकन्हि।

मनोरमा चारू कात तकैत पुछलखिन- “अहाँक पापा कतए छथि?” दुनु बेटी एक दोसराक मुँह ताकए लागल।

“की बात छै बेटा? अहाँ सभ एना गम सुम किए छी?” मनोरमा व्याकुल होइत बजलीह।

“मम्मी ... पापा.......”

“हाँ बेटा पापा के की भेलनि?” मनोरमा आतुर होइत बजलीह। हुनकर

चिंता बढ़ि गेलनि। की बात भेलै? बच्चा सभ कानि किए रहल अछि? हुनकर आँखि सुरेशकेँ ताकि रहल छलनि। तखने दुनु बेटी हुनकर गर पकड़ि कानए लगलनि। ओ दुनु बेटीक पीठपर हाथ फेरैत पुचकारैत कहलखिन,- ‘‘अहाँ सभ एना बच्चा जकाँ किए कानि रहल छी?’’

रश्मि कनैत बाजल- ‘‘मम्मी, पापा हमरा सभकेँ छोड़ि चलि गेलाह?’’

‘‘कतए चलि गेलाह बेटा?’’ हतप्रभ होइत मनोरमा बजलीह। हुनकर करेजक धड़कन तेज भऽ गेलनि।

‘‘हम सभ जखन स्कूलसँ अएलहुँ तँ पापा दोकानक भीतर खसल छलाह। ओ नींदक दवाइ खा आत्म हत्या कऽ लेलनि।’’ किरण सिसकैत बजलीह।

‘‘की............?’’ मनोरमा चिचिया उठलीह।

‘‘निचाँ इमरजेंसी रूममे पापाकेँ रखने छन्हि। हम सभ अम्बुलेंसमे पापाक संगे अएलहुँ।’’ किरण हिचकैत बाजल। मनोरमा अवाक रहि गेलीह।





*जगदीश चंद्र ठाकुर 'अनिल'*

## बाल गीत

### १

हमरहि खातिर सुरुज उगइ छथि
हमरहि खातिर चान
हमरहि खातिर कोटि तरेगन
हमरहि ले आसमान।
हमरहि खातिर साँझ पड़इए
राति सँ होइए प्रात
हमरहि खातिर रौद अबैए
हमरहि लेल बसात
हमरहि खातिर गाछ फड़इए
जामुन, आम, लताम।
पानि तपैए, भाफ बनैए
भाफ उड़इए, मेघ बनैए
सेहो हमरे ले ऊपरसँ
धरती पर रिमझिम बरसैए
हमरहि खातिर धरती मैया
देथि गहूम आ धान।
हमरहि खातिर फूल फुलाइछ
उज्जर- पीयर- लाल
कतहु असीमित सागर अछि तँ
पर्वत कतहु विशाल

सभटा हमरहि लेल बनाकऽ
नुका गेला भगवान।



२

बुच्ची बढ़ती,
लिखती-पढ़ती
हमरा चिन्ता कथी के।
तिलक-दहेजक दानव केर
उत्पात मचल अछि मिथिलामे,
तै लए बुच्ची
खडग उठौती
हमरा चिन्ता कथी के।
ज्ञान आर विज्ञानक संपति
अर्जित करती जीवनमे,
नव सुरुज आ
चान बनौती
हमरा चिन्ता कथी के।
लोकक मोल बुझै छै एखनहुँ
लोक बहुत छै दुनियामे,
संगी अप्पन
अपनहि चुनती
हमरा चिन्ता कथी के।
अपनहि श्रम सँ बाट बनौती
एहि बबूर केर जंगलमे,
दुख सँ लड़ती
आगाँ बढ़ती
हमरा चिन्ता कथी के।

## ३



मम्मी, तौँ चिंता जुनि कर,
तौँ तँ हमरा पढ़ा-लिखा दे
कर नहि कनियाँ कथूक डर।
तिलक-दहेजक बल पर किन्नहु
हम कतहु नहि करब बियाह,
अज्ञानी, ढोंगी, पाखंडीक
संग नहि जीवन करब तबाह
अपन पएर पर ठाढ़ होएब हम
होएब अपनहि पर निर्भर,
मम्मी, तौँ चिंता जुनि कर।
संपति अर्जित करब सतत हम
ज्ञान आर विज्ञान केर
नाम बढ़ाएब हम दुनियामे
सगरो हिन्दुस्तान केर
हमर स्वप्नमे 'किरण', 'कल्पना'
सतत कानमे हुनकहि स्वर,
मम्मी, तौँ चिंता जुनि कर।
हम्मर गहना होएत मम्मी
हमर आत्म-विश्वास टा
विजय अंध-विश्वासक ऊपर
सत्यक दिव्य प्रकाश टा
जीयब स्वामिभमान केर संगहि
एतबहि अछि अभिलाष हमर,
मम्मी, तौँ चिंता जुनि कर ।





*जगदानन्द झा "मनु"*

## *चोनहा*

ऋतु राज वसन्तक मास। नै जाड़, नै गर्मी, चारुकात बाड़ी-झाड़ी फूलसँ लदल। सेरसोँक पिअर-पिअर फूलसँ खिलाएल खेत, जेना कोनो चतुर कलाकार द्वारा बनाएल गेल अनुपम कलाकृतिक सुन्नर नमूना हुअए। गृहस्थक खेत-खड़िहान गहुमक बोझसँ भरल, मानू साक्षात् लक्ष्मी हँसि रहल छथि। आंगनमे रौद लगाबैक हेतु गहुमक बोझ खोलि-खोलि कऽ पसारल। भोरक मन-मोहक रौद तइ ऊपर छितरल। ओइपर घरक स्त्रीगन एवं धिया-पुता सभ विराजित, अमृतमय रौदक आनन्द लैत, प्रकृतिक अमृत लुटैत। ओइ पसरल गहुमक डाँटपर करीब दस वर्षक मासूम संजय अपन दुनु हाथे माँथ कसि कऽ पकड़ने, असहाय, माथक पीड़ासँ कराहैत छटपटाइत। ओइ असहाय दर्दपर सँ ओकर माय रहि-रहि कऽ कहैत- "जलखै कए ले नऽ, कतेक बेर भऽ गेलौ।"

असहाय माथक दर्दक पीड़ा, कष्ट, ओइपर सँ मायक रहि-रहि कऽ जलखैक आग्रहक कानमे आबैत शब्द। संजयकेँ ई शब्द सुनि अओर बेसी माथ पीड़ासँ फटए लगै। मुदा मायकेँ धनसन। हुनका जेना संजयक असहाय पीड़ाक कोनो अनुमाने नै। ओकर कष्टपर किनको ध्यान नै, किएक तँ ई ओकर नित्यक कथा रहै। जेना-जेना सूर्यक तेज बढ़ल जाए तेना-तेना ओकर माथ अओर अधिक पीड़ासँ फाटल जाए, ओकर छटपटेनाइक गतिमे वृद्धि भेल जाइ।

कखनो ओकर बाबीकेँ नै देखल जाए तँ एक चुरुक करु तेल माथमे होंसैत देथिन, ओइसँ ओकर माथक पीड़ामे तँ कोनो अंतर नै होइ मुदा दुनु आँखिक कोरसँ नोरक धार बहए लगै। शाइद दर्द एवं पीड़ाक अधिकतासँ अथवा बाबीक हाथक स्नेह स्पर्शसँ। दाँतसँ अपन ठोरकेँ कटैत जेना दर्दकेँ अंदर समेटक कोशिसमे असफल, सभक रहितो अनाथ, स्नेहक आ दुलारक

अनाथ।

जानलेबा दर्द, ई आइ-काल्हि ओकरा सभ साल होइ छै। जँ कहबै भरि दिन, भरि राइत, सेहो नै। भोरे रौदक तीव्रताक संग-संग ओकर माथक दर्द बढल जाइ छै, आ दुपहड़ियाक बारह-एक बजे बाद जेना-जेना रौदक तेज कमल जाइ छै तेना तेना ओकर दर्द कम भेल जाइ छै। बेर खसैत-खसैत एकदम ठीक, फेर अगिला दिन। ई ओकर नित्यक क्रम, मुदा घरमे कियो कान-बात दैबला नै। उलटे कियो कहैत- "हूँ पढ़ैक दुआरे बहाना करैए।" कियो कहैत- "काज करै दुआरे बहाना करैए।" एनाहियो अपन मिथिलाक कनियाँ-दाइ सभकेँ झगडा-निंदापर बेसी ध्यान रहैत छनि, अपन बाल-बच्चापर कम। पिताकेँ बाहर कमेनाइयेसँ फुरसैत नै, जे कतौ देखेथिन कि चेक करेथिन। फुरसैत ककरा लग रहै छै, ओहेन उइक्त रहबाक चाही, धिया-पुतासँ स्नेह रहबाक चाही, अपन बच्चाक प्रति अपन कर्तव्यकेँ समझबाक चाही। खाली मारने-पीटने, खिसियौने बुझु अपन कर्तव्यक इत्तीश्री भऽ गेल से नै। संजयकेँ ओइ कष्टकारी पीड़ा एवं दर्दकेँ सहैत दू वर्ष अओर व्यतीत भऽ गेल। दर्दक अधिकता आ भयंकरतामे दिनो-दिन वृद्धिये होइत रहलै। परन्च ओकर बाबीक एक चुरुक करु तेलक अलावा कोनो आन उपचार नै। संजयक पिता पापी पेट भरै लेल महानगर दिल्ली प्रवास कऽ लेला। किछु महिना बाद अपन छोट भाइ अर्थात संजयक पित्तीकेँ समाद देलखिन- "हमर स्त्री-धिया-पुताकेँ नेने आउ।" संजयक बाल मोन बहुत प्रसन्न भेलै। एक अपन बाबूजी लग जाएब, दोसर दिल्ली। ओहू सभसँ बेसी खुसी रेलपर बैसबाक। ओइसँ पहिले कहियो रेल देखनेहों नै। अपन दू वर्षीय छोट भाइकेँ कोरामे नेने आ समतुरिये माँझिल 'अनुज'केँ संग लेने भरि गाम खुशीसँ सभकेँ नोतैत- "'हम दिल्ली जाएब, हम दिल्ली जाएब।"

ओ शुभ दिन आएल, संजय तीनू भाँइ, माय, पित्ती संगे दिल्ली आएल। नव लोक, नव जगह संजयकेँ बड़ नीक लगलै। सभ गोटे अपन-अपनमे व्यस्त भऽ गेल। संजयक पिता अपन नोकरीमे, माय घर-आंगनक काजमे। संजय दुनु भाँइकेँ स्कुलमे नाम लिखा गेलै। दिल्लीक गर्मीमे संजयक माथक पीरा अओर बेसिए वृहद् रूप लऽ लेलकै। जतए गाममे वर्षमे एक बेर कष्टदायक पीड़ा होइ छलै, ऐठाम वर्षमे दू बेर होबए लगलै, छः छः महिनापर। फरबरी-मार्च महिनामे जार खत्म भेलापर गर्मीक आगमनक संगे, आ अक्टूबर-नवम्बरमे गर्मी खत्म भेलाक बाद जाड़क आगमनक संगे। ऐठाम

एलाक दोसरे वर्षमे एहन भऽ गेलै जे संजयकेँ घरसँ बाहर रौदमे निकलैत डर लगै। डर की, रौदमे जाइते देरी माथ दर्दसँ फाटऽ लगै। ओकर व्याकुलता-व्यग्रता देखि माय-बाबु पुछथिन- "कि होइ छौ? मोन ठीक छौ?" "बहुत जोर सँ माथ दुखाइये।", संजय एतबे कहि कऽ रहि जाए। माथ दर्दक कोनो सामान्य गोटी दएय देलासँ तत्काल दर्द ठीक भऽ जाए। संजयकेँ अपना बुझि पड़ै जेना दर्द रूपी आगिमे पानि पड़ि गेलै। मुदा दू-तीन दिन बाद ओहिना पहिलुका क्रम शुरू, जँइ-जँइ रौद बढ़ल जाइ तँइ-तँइ ओकर माथक दर्द बढ़ल जाइ। संजयकेँ अत्यधिक पीड़ा एवं कष्टसँ दुखी देख ओकर बाबूजी कहितथिन- "काल्हि चलि जइहेँ, काकासँ दबाइ लऽ लिहेँ।' ओकर काका एकटा डाक्टर लग कम्पोंडरी करै छलखिन। तैं किएक अपने लऽ कऽ कोनो डाक्टर लग जाइतथिन जे ई लगातार एतेक वर्षसँ किएक माथक दर्द होइत छै, की कमी छै, की दिक्कत छै, मुदा नै, कि माय कतौसँ देखा ऐबतथिन, मुदा नै। संजय अपन अनुजक हाथ पकड़ि चलि जाए काका लग। काका सेहो दुनु बच्चाकेँ देख बड खुश होथि, बिस्कुट टॉफी कीन कऽ दय देथिन, एक दू रुपया नगदो दय देथिन, बस बाल-मोन तइमे खुश। संजय अपने तँ काकासँ किछु कहियो नै सकैन, अनुजे काका सँ कहनि- "काका यौ, भाइजीक माथ बड दुखाइत रहै छन्हि।" "हँ। किए?"- माथ छुबैत काका कहथिन। माथ ऐ दुआरे छुबथिन कि बुखार-तुखार नै होय, मुदा बुखार नै रहै। "कहिया सँ?"- काका पुछथिन। "सभ दिन दुखाइत रहैए, बड तेज। भोरे जतेक रौद तेज भेल जाइ छै ओतेक बेसी दुखाइए।" ऐबेर संजय अपने बाजल, धिया-पुता ऐसँ बेसी कि कहतै? ओनाहूँ संजय बाजैमे बड़ कम। खास कऽ बाप-पित्तीसँ तँ अओर कम। लाजे बुझु या धाखे अथवा डरो कहि सकै छी। घर-अंगनाक वातावरणक असर धिया-पुताक मस्तिष्कपर पड़िये जाइ छै। "बस"!- काका अपने कोनो डिब्बासँ एक मुट्ठी गोटी निकालि कऽ दऽ देथिन। दू-तिन दिन दवाइ खेलासँ दर्द बिलकुल ठीक। जतए आन-आन वर्ष दू-अढ़ाइ महिना दर्द रूपी राक्षसक सामना करए पड़ै, ओतए ऐ बेर दस-पन्द्रह दिनक तकलीफक बादे दवाइ खेने ठीक भऽ गेलै।

समय एलै-गेलै। फेर अगिला साल ओहे खिस्सा। पहिलेसँ बेसी विकराल रुपे संजयक माथक दर्द शुरू, मुदा किनको कोनो ध्यान नै। फेर ओ अपन बाबूजीक कहला उपरांत काकासँ दवाइ लऽ अनलक। दू-चारि दिन

खेला बाद दर्द ठीक। आब तँ ईहे निअम भऽ गेलै। समय आबै- जाए, संजयोकेँ अपार पीड़ा लऽ कऽ माथक दर्द आबै, गोटी खाए, ठीक भऽ जाए। दिल्ली एला सेहो तीन वर्ष भऽ गेलै मुदा ओकर माथ दर्दक कोनो स्थाइ इलाज नै। स्कूलमे संजय पढाइमे बड तेज। आब ओ वर्ग सात पास कऽ वर्ग आठमे प्रवेश केलक। पँचमासँ लगातार सभ साल अपन वर्गमे पहिल या दोसर स्थान आनए। ओकर अध्यापको सभ ओकर खूब प्रशंसा करथिन। मुदा ओ कहियो स्कूलक खेल-कूदमे भाग नै लिअए, किएक तँ स्कुलमे अक्सर सभ बैट-बॉल खेलाइ, मुदा ओकरा बैट-बॉलक खेलमे बॉल सुझबे नै करै। तैं ओ की खेलेतै? की बॉल पकड़तै? ओकर खेलाइक स्तर निम्न भऽ जाइ तँ ओ खेलेबे नै करए।

मुदा ई बात ओ नै बुझि पेलक या नै अनुभव कऽ सकल जे ओकरा बहुत कम देखाइ दै छै। सभ तँ केहन बढियाँ खेलाइ छै तँ ओहे किए नै खेल ? या ओकरा नै बॉल देखाइ दै छै तँ किए नै? अनुभवो कोना हेतै, ई बात माय-बाप या गारजनक अनुभव करै बला छै नै कि बच्चाकऽ, अगर बच्चाकेँ एतेक ज्ञान वा अनुभव भऽ गेलै तँ बच्चा, बच्चा किए कहेलक?

ऐ वर्ष जहियासँ संजय वर्ग आठमे प्रवेश कएलक तहियासँ तँ ओकर आँखि दिनपर दिन अओर बेसिए कमजोर होबए लगलैए। स्कुलमे ओ सभसँ अगिला बेंचपर बैसैत छल मुदा आइ आबैमे किछु विलम्ब भऽ गेलै तैं दोसर पंक्तिक बेंचपर बैसऽ पड़लै, मुदा ओइ ठामसँ ओकरा ब्लैक बोर्डपर लिखलाहा देखेबे नै करै। ओ अपन अध्यापक द्वारा देल गेल किछो सवाल नै कऽ पेलक। आइ ओकरा अपना अनुभब भेलै जे ओकर आँखि कमजोर छै, कमजोर नै बड़ड कमजोर छै। ओ अनुभव केलक जे आन-आन बच्चा पाँचम-छअम पंक्तिक बैंचसँ बैसल सवाल कऽ रहल अछि मुदा ओकरा दोसरे पंक्तिसँ ब्लैक बोर्ड नै देखा रहल छै। आइ ओकरा ज्ञात भेलै जे ओकरा क्रिकेटक बॉल किए नै देखाइ दै छै। आइ ओ अनुभव केलक जे ओ बसपर किए नै चढ़ि सकैए। किए तँ ओकरा बसक नम्बरे नै सुझै छै। आइ ओकरा अनुभव भेलै जे ऐ साल वर्ग सातमे पिछुलका सालसँ कम नम्बर किए एलै? ईहे सभ सोचैत-सोचैत ओकर मस्तिष्कमे विचारक मंथन होइत रहै। कखन घंटी खतम भेलै, कखन मास्टर साब चलि गेलखिन, संजयकेँ किछो ज्ञात नै। ओकर ध्यान तँ तखन खुजलै जखन कि टिफिनक घंटी बजलै। सोचैत-सोचैत ओकर माथो बड़ड जोर-जोरसँ दुखाए लगलै। दर्दक

अधिकतासँ ओकर दुनु आँखिसँ नोरक धार बहऽ लगलै। कोनो-ना ओ अपनाकेँ सम्हारैत मास्टर साबसँ छुट्टी लऽ कऽ घर चलि आएल। घर अबिते स्कुल बैग एक कात फेक चौकीपर मुँह नुका कऽ सुइत रहल, कखन ओ निन्द पड़ि गेल ओकरा कोनो ज्ञान नै। घरमें कियो नै। बारह बजे माय कतौसँ गप्प-सप्प कऽ कए एली तँ संजयकेँ सुतल देखलन्हि। निन्दसँ उठेलीह, तावत ओकर दर्द आ मोन दुनु स्थिर भऽ गेल रहै, खेलक-पिलक, दिन बित गेलै। साँझ खन पढै लेल बैसल तँ आइ ओ अनुभव केलक जे किताबपर ओ एतेक झुकि कऽ किए पढैए। जतए कि आन-आन बच्चा सभ पलथा मारि एकदम सोझ बैस कऽ पढ़ि रहल अछि। आब ओ पढत कि ओकर मस्तिष्क किछु दोसरे सोचैमे लागल छै। आइ ओकरा ज्ञात भऽ गेलै कि ओकर आँखि कमजोर छै। आब ओ करत तँ करत की? गुन-धुन, गुन-धुन करैत समय व्यतीत केलक।

अगिला भिनसर संजय सभ दिन जेकाँ सुति कऽ उठल। रवि दिन रहै, स्कुल बन्दे, बच्चा सभ टेलीविजन देखैमे लागि गेल, संजय सेहो टेलीविजन देखए लागल। ओकरा बहुत लगसँ टी. वी. देखैक आदत छलै। ई ओकर मजबुरी रहै, किए तँ दूरसँ ओकरा टी. वी. नै देखाइ। मुदा बच्चाक ज्ञान, ओ अपने ऐ बातकेँ नै बुझै आ आगुएसँ टी.वी. देखए। माय-बाबु ऐ बातकेँ किए नै ध्यान देथिन से तँ आब ओहे सभ जानथि। टी.वी. देखै कालमे किछु छन बाद अनुज आबि संजयक आगू बैस रहलै। शाइद संजयकेँ नीकसँ सुझैत रहितै तँ अपने पाछू बैस रहितए। मुदा ओ विवश छल, ओकरा पाछू भेलासँ टी.वी. सुझबे नै करतै, तैं ओ अनुजसँ पाछू होइ लेल कहलकै। ओहो बच्चा, बच्चाक जिद्द। नै पाछू भेल दुनु बच्चामे झगड़ा भऽ गेलै, एतवामे माय संजयकेँ कान ऐंठ कऽ एक चटकन मारैत कहलखिन्ह- "ई चोनहा हरदम झगड़े करैत रहत, छोट भाइ छै, आगुए बैस रहलै तँ की भऽ गेलै। पाछुए भऽ जो।" आब तँ संजयक दुनु आँखिसँ नोरक गंगा-यमुना बहए लगलै। ओकर कान मायक कोनो शब्द नै सुनलकै, खाली ओकर कानमे बेर-बेर "चोनहा" शब्द गुंजय लगलै। आ ई चोनहा ओकर प्राचीन नाम छै, जखन-जखन ओकरा अपन मायक क्रोधक सामना करए पड़ै तखन-तखन ओकरा ऐ चोनहा शब्दसँ विभूषित कएल जाइ। आन दिन कोनो बात नै किए तँ ओ चोनहा शब्दसँ अनभिज्ञ छल मुदा आइ ओकरा चोनहा शब्दक ज्ञान भऽ गेल रहै, ओकरा कम सुझै छै तकर ज्ञान भऽ गेल रहै। तइ लऽ कऽ

ई चोनहा शब्द ओकर हृदएमे शीसा जकाँ भोकए लगलै। मायो ओकरा चोनहा कोनो करणे कहथिन्ह किएक तँ आँखिक अधिक कमजोर भेला कारणे संजयकेँ कोनो वस्तु देखैक हेतु आँखिपर बेसी जोड़ देबए पड़ैक। तइ अवस्थामे ओकर आँखिक दुनु पपनी सिकुड़ि कऽ अधिक समीप भऽ जाए। ई बात ओकर माय देखथिन्ह आ तइ कारणेँ ओकरा चोनहा नामसँ अलंकृत कऽ देलखिन्ह। मुदा ओ एना अपन आँखिकेँ किए करैए, ऐ बातपर किए ध्यान देथिन? जखन मायेकेँ अपन बच्चाक प्रति ई जिम्मेवारी तँ आनक कि बात, जखन मालिए अपन लगाएल गाछकेँ उखाड़त तँ ओइ गाछक भविष्य कतए रहतै?





… … … …..

संजयक मोन सैदखन ऐ सोचमे लागल रहै जे आब एकर कि उपाय हुअए। एक तँ माथक दर्द पहिनहिये छह-सात वर्ष सँ हरान केने, तइपर सँ ई आँखिक कमजोरी। किए तँ आब ओकरा अपन कमजोर आँखिक ज्ञान भऽ गेलै तइ कारण सैदखन ओकर मोन ओइ चिंतामे लागल रहै। आब ओ कि कऽ सकैए, गामसँ दिल्ली आएल तेरह-चौदह वर्षक बच्चा। नै किछु बुझल नै किछु ज्ञान, नै कोनो अस्पताल देखल, नै कोनो डाक्टरक पता। माय-बाबुसँ

साफ-साफ ऐ बारेमे बात करए सेहो नै, ओकर मोनमे धाख वा डरक मिश्रित भाव एवं कनी कोनो कोनमे स्वाभिमानक भावना सेहो। ऐ गुण-धुन, गुण-धुनमे तीन महिना अओर बीत गेलै, कोनो उपचार नै। स्कुलमे त्रिमासिक परीक्षा भेलै। परीक्षा-परिणाम ओकर स्तरसँ निम्न रहलै, तैयो ओकर माय-बाबुक कोनो प्रतिक्रिया नै जे सभ वर्गमे पहिल-दोसर आबैबला बच्चाक ऐ परीक्षामे अनुरूप परिणाम किए नै एलै। उल्टा दू-चारि टा बात अओर सुनए पड़लै। एतेक कम नम्बर किए एलै तकर जड़ि ताकैबला कियो नै। आब तँ ओकर हालत ई भऽ गेलै जे ओ पढ़ए हेतु बैसऽमे कोताहि करए लगलै, किए तँ आँखि एतेक कमजोर भऽ गेलै जे ओकरा लेल किताब पढ़नाइ असम्भव भेल जाइ। त्रिमासिक परीक्षाक सेहो दु महिना भऽ गेलै। अकस्मात कतौसँ संजयकेँ रोटरी क्लब द्वारा संचालित आँखिक अस्पतालक विज्ञापनक पर्ची हाथ लगलै। तइमे सूचित कएल गेल रहै जे रोटरी क्लब, ब्लोक-३, त्रिलोकपुरीमे निःशुल्क आँखिक अस्पताल खोललक। संजयकेँ ई पढ़ि बड मोन खुश भेलै। ओकर अन्हार मोनमे इजोतक एकटा आशा भेटलै। सभसँ बेसी नीक बात जे ओ अस्पताल ओकर स्कुलक लगे आ निःशुल्क रहै। अगिले दिन संजय स्कुलक छुट्टी भेलाक बाद असगरे पुछैत-पुछैत आँखिक अस्पताल ब्लोक-३ त्रिलोक पुरी पहुँच गेल। ओइठाम ओकरा ज्ञात भेलै जे नव मारीच वास्ते पुर्जा भोरक आठसँ एगारह बजे तक बनैत छै। मुदा आइ तँ एक बाजि गेल रहै। काल्हि भोरे आबैक निश्चय मोने-मोन करैत घर चलि आएल। अगिला दिन भोरे संजय नहा-सुना कऽ स्कुल लेल बिदा भेल अवश्य मुदा स्कुल गेल नै, किताबक बस्ता ब्लोक-दु, त्रिलोकपुरीमे अपन काकाक घर राखि कऽ आँखिक अस्पताल ब्लोक-३ आबि गेल। किछु महिना पहिले तक संजयो सभ ब्लोक-२, त्रिलोकेपुरीमे रहै छल मुदा आब गणेश नगरमे आबि गेल जे किछु एक-डेढ़ किलोमीटर दूर छै। अस्पताल आबि, नव पुर्जाक लाइनमे लागि गेल, लाइनमे लागलाक बाद ओकरा ज्ञात भेलै जे पुर्जा बनेबाक वास्ते दू रुपैय्या देबऽ पड़ै छै जे ओकरा लग नै रहै। ओकर मोनमे किछु दुखो भेलै। स्वयंकेँ सम्हारैत दोसर दिन एबाक निश्चय कऽ ओ ओइठामसँ बिदा भऽ गेल। काका ओइठामसँ स्कूल बस्ता लैत घर आबि गेल।

संजयकेँ स्कूल जाइकाल टिफिन बास्ते जे कहियो कऽ चारि-आठ आना पाइ घरसँ भेटै ओइ पाइ कऽ संजय खाए नै, बचा कए राखए लागल। एक सप्ताह बाद ओकरा लग दू रुपैय्या जमा भऽ गेलै। ठीक आठम दिन फेर ओ

रोटरी क्लब द्वारा संचालित आँखिक अस्पताल गेल। पहिले जकाँ भोरे-भोरे किताब-कापी काकाक घर राखि कऽ पहुँचल। पाँतिमे लागि दू रुपैय्या देलाक बाद नव पुर्जा बनेलक। पुर्जा बनेलाक बाद डॉक्टरक कक्षमे पहुँचल। डॉक्टर-साब एकटा तेरह-चौदह वर्षक बच्चाकेँ असगर देखते पुछलखिन्ह- "संगे के अछि?"

संजय चुप। डाक्टरसाब- "माय-बाबू किनको संगे नेने आउ।" आब संजयकेँ बड़ड मुस्किल भेलै मुदा ओ अपनापर काबू रखैत डॉक्टरसाबकेँ तत्काल उत्तर देलकन्हि- "बाबूजी ड्युटी गेल छथि आ माय गाममे छथि।"

हलाँकि ओ ई बात झूठ बाजल जे माय गाममे छथि मुदा डॉक्टर साब ओकर उत्तरमे सत्य देखैत कहलखिन्ह- "अपन बच्चा लेल अहाँक बाबुजी एक दिनक छुट्टी नै कऽ सकै छथि।" "नै डॉक्टर साब, हुनक नव नोकरी छन्हि, छुट्टी करथिन्ह तँ नोकरी छुटि जेतैन।" इहो बात संजय झूठे बाजल, जखन कि ओकर बाबूजी महिनामे पंद्रह दिन छुट्टीएपर रहैत छलखिन्ह, परन्च डॉक्टर साबकेँ एक गोट मासूमक मुँहसँ ई बात सुनि विश्वास आ किछु सहानभूति सेहो भऽ गेलन्हि। "कोनो बात नै, आगू घुसैक कऽ बैसू।" ई कहैत डॉक्टर साब टोर्च वा अन्य-अन्य उपकरणसँ नीक जकाँ आँखिक जाँच कएलाक बाद बजलाह- ‘‘आँखि बड़ड कमजोर अछि, तीन दिन आबए पड़त, दू दिन आँखिमे दवाइ पड़त आ तेसर दिन चश्माक नम्बर भेटत।"

ई कहैत डॉक्टर साब ओकर पुर्जापर किछु-किछु लिखैत, पुर्जा पेपरवेटक निचाँ दबा पुनः कहलखिन्ह- "जाउ बाहर बैस रहू, सिस्टर आँखिमे दवाइ देती, दवाइ लेलाक बाद करीब एक घंटा ऐठाम बैसब, सिस्टरकेँ कहला बाद घर जाएब, हँ! काल्हि परसू दू दिन अओर अवश्य आएब।" "ठीक छै।"- कहैत संजय उठि बाहर आबि बेंचपर बैस रहल। किछु छन बाद सिस्टर संजयक आँखिमे ड्रॉप दैत- "आँखि मुनि बैसल रहब।" ओकरा तँ आँखिमे दवाइ पड़िते आँखि एतेक दुखए लगलै जेकर हिसाब नै मुदा सहास केने चुपचाप आँखि मुनने बैसल रहल। लेकिन पंद्रह-बीस मिनटक बाद बुझेलै जे माथ एकदम शांत स्थिर भऽ गेल हुअए। किछु समय बाद सिस्टर आबि एक बेर फेरसँ संजयक आँखिक जाँच केलाक बाद ओकर दुनु आँखिमे दू-दू बूंद दवाइ दैत पहिले जकाँ आँखि मुनि कऽ बैसबाक निर्देश दैत चैल गेलि। ऐबेर पहिलेसँ किछु कम आँखि दुखेलै।

करीब आधा घंटा बाद सिस्टर आबि संजयक आँखिक जाँच करैत कहलखिन्ह- "ठीक छै, आब जाउ काल्हि भोरे आठ बजे आएब।" "अच्छा !"- कहैत संजय उठि बिदा भऽ गेल, पुनः अपन काका ओइठामसँ बस्ता लेलक आ अपन घर आबि गेल।

अगिला दिन संजय फेरसँ अस्पताल गेल, डाक्टर साब फेरसँ ओकर आँखिक जाँच कएलखिन्ह आ पहिले दिन जकाँ सिस्टरसँ आँखिमे दवाइ दिया कऽ आबि गेल। तेसर दिन अस्पतालमे डॉक्टर साब संजयक आँखिक भिन्न-भिन्न तरह लेंशसँ जाँच कएलाक बाद चश्माक नम्बर बना एकटा पुर्जापर लिख पुर्जा ओकर हाथमे दैत कहलखिन्ह- "ई अहाँक चश्माक नम्बर अछि, माइनस तीन, जे ऐ उमेरमे बहुत अधिक अछि आ अहाँक आँखिक खराबीक गति एखन बहुत अधिक अछि। तइ हेतु आइये जा कऽ चश्मा बनबा लेब आ सैदखन पहिरब। आ हँ, एक बात अओर जे छ महिना बाद आबि फेरसँ आँखिक जाँच करबा लेब, जइसँ ई ज्ञात चलत की आँखिक खराबीक गति कम भेलै, स्थिर भेलै वा बढ़ि रहल अछि।" "अच्छा जाइ छी।"- अपन दुनु हाथ जोड़ि संजय डॉक्टर साबसँ आज्ञा लेलक। "ठीक छै, जाउ।"- डॉक्टर साब बजला।

संजय घर चलि आएल मुदा ओकर मोनमे एकटा नव द्वन्द्व मचए लगलै।

चश्मा !

-"चश्मा कतए बनतै? कतए चश्माक दोकान छै? कमसँ कम डेढ़-दू सय रुपैयामे चश्मा बनत, ई डेढ-दू सय रुपैया कतएसँ आएत?"

अओर आन-आन प्रश्न सभ ओकर मस्तिष्कमे एकक बाद एक समुद्रक हिलकोर जेकाँ आबै जाइ।

"की करू? कोना करू? की बाबूजीकेँ कहि दिऐन, जइ चश्माक नम्बर अन्लौंहें से चश्मा बनबा दिअ, नै-नै, कोना कहबनि? की कहबनि? नै कहबनि तँ चश्मा कतएसँ आएत? चश्मा किनै लेल रुपैया कतएसँ आएत? की करु नै करू?"

संजय किछु निश्चय नै कऽ सकल। ऐ सभ बिषयमे सोचैत-सोचैत ओकर आँखि लागि गेलै। ओ सुइत रहल। करीब तीन बजे बेरुपहर ओकर निन्द खुजलै। उठल, मुँह-हाथ धो भोजन केलक, परन्च ओकर मस्तिष्कमे चश्माक द्वन्द्व मचले रहै। ओ कतौ किच्छो करए मुदा ओकर दिमाग चश्मेक बारेमे सोचैत रहै। गुनधुन-गुनधुन करैत अंतमे ओ एकगोट योजनाक अंतर्गत निश्चय

केलक जे साँझु पहर बाबूजी कँ कहि देतनि। आन कोनो दोसर उपाए ओकरा नै भेटलै। आ शाइद ई बहुत उचित उपाए रहै।

साँझुपहर ओकर बाबूजी नोकरीसँ एलखिन्ह। गर्मीक महिना रहै, हाथ-पएर धोला बाद बाहर अंगनामे खाटपर बैसला। जलपान इत्यादि कएलाक बाद इम्हर-उम्हरक गप्प-सप्प होबए लगलै। संजय सेहो जेबीमे चश्माक नम्बर बला पुर्जा लेने हुनके लग जा बैस रहल। संजयक मोन आबो गुनधुन-गुनधुन करै, कहियौन्ह की नै। अंतमे ओ हँ कऽ निर्णय केलक आ अपन सम्पूर्ण हिम्मतकँ जमा करैत, जेबीसँ पुर्जा निकालि कऽ बाबूजीकँ दय देलकन्हि।

"की छै?"- हलाँकि ओकर बाबूजी पढ़ल-लिखल छथिन्ह, पुर्जापर सभटा लिखल रहै, अस्पतालक नाम-पत्ता, मरीजक नाम उम्र, डॉक्टरक नाम, चश्माक नम्बर आ जारी करै कऽ तारीख, मुदा तैयो बाबूजी पुर्जाकँ पढ़ैत पुछलखिन्ह।

"चश्माक नम्बर।"- संजय अपन माथकँ निचाँ झुकोने डराइत धीरेसँ बाजल।

"ककर?"- बाबूजी पुर्जा पढ़ैत बातकँ अन्ठाबैत पुछलखिन्ह।

"हमर।"- संजय अपन सेफकँ गरदनिसँ निचाँ घोटैत आगू बाजल- "आइ स्कूलमे डॉक्टर आएल रहैक ओ सभ बच्चाक आँखिक जाँच केलकै, हमरो जाँच केलक, हमर आँखि खराप अछि से कहलक। चश्मा पहिरऽ पड़तै।"

हलाँकि संजय ई सभ बात झूठ बाजल मुदा ओ पिता छथि, पढ़ल-लिखल छथि, डॉक्टरक पुर्जा हुनक हाथमे छनि, ओ पढि सकै छलाह जे ई पुर्जा रोटरी क्लब द्वारा संचालित आँखिक अस्पताल त्रिलोकपुरी ब्लोक-३ क छै। मुदा कखन, जखन अपन बच्चा वा बच्चाक स्वास्थ्यक प्रति कोनो रूचि रहितनि। हुनका जेना संजयक बातपर विश्वास भऽ गेलन्हि। विश्वासो भेलन्हि तँ कमसँ कम ई तँ ज्ञात भेलन्हि जे हुनक बच्चाक आँखि खराप छनि। आबो कोनो नीक डॉक्टरसँ कतौ अपनेसँ देखा दिऐक वा डॉक्टर देखने छै तँ चश्मा बनबा दिऐ। कनी मोनमे किछो दोसर रंग हेबाक चाही। एकदमसँ बैसल-बैसाएल किनको ई ज्ञात होइन जे हुनक बच्चाक आँखि खराप छै, एकर प्रमाणिकताक एकटा विशेषज्ञ डॉक्टरक लिखल पुर्जा हुनक हाथमे छनि, ऐ तरहक पिताक मोनमे जरुर किछो भाव हेतैन्ह, आश्चर्यक, विस्मयक, दुखक, तत्पर्यताक मुदा नै, संजयक बाबुजीक ऊपर कोनो तरहक प्रभाव नै, धनसन।

हँसैत संजयसँ कहै छथिन्ह -"डॉक्टर सभ एनाहीं कहैत छै, ऐ उम्रमे कतौ आँखि खराप होइ।"

तै पर संजयक माय कहितो छथिन्ह -"हँ यौ, एकर आँखि चोनाह लगै छै।"

बाबूजी- "अच्छा देखियौ, इम्हर आ।"

एकर बाद अपन एकटा आंगुर देखबैत- "ई कएटा आंगुर छै।"

संजय- "एकटा।"

ऐबेर दूटा आंगुर देखा कऽ बाबूजी -"ई कएटा आँगुर छै।"

"दूटा"- संजय धीरेसँ बाजल।

"सभ ठीक छै, अच्छा कोनो बात नै। चश्मों बनबा देबौ।"- कहैत बाबूजी पुर्जा जेबीमे राखि लेला।

तकर बाद इम्हर-उम्हरक गप्प-सप्प होइत बात खत्म।

बात एलै-गेलै। समय बितैत रहलै। संजयक स्कूलक छमाही परीक्षा सेहो खत्म भऽ गेलै। ओकर आँखिक कमजोरीक गति लगातार बढ़ैत रहलै, चश्माक नम्बरो अनला महिनासँ उपर भऽ गेलै मुदा अखन तक ओकर चश्मा नै बनलै। संजयक छोटका मामा सेहो गणेश नगरमे संजयक घरसँ किछुए दूरपर रहै छलखिन्ह। हुनका किछु समानक खरीदारीक बास्ते सदर बजार जाइ कऽ रहनि। समान किछु बेसी लेबए कऽ रहनि, तइ हेतु ओ संजयकेँ सेहो अपन संगे टेल्हूमे संग कऽ लेलखिन्ह। मामा-भगिना दुनु गणेश नगरसँ लाल किलाबला बस पकड़ि लाल किलाक बस स्टेंडपर उतरि गेला। ओइ ठामसँ पएरे सदर बाजार हेतु चांदनी चौक खाड़ी-बाबली क रस्ते बिदा भऽ गेला। लाल किला दिससँ चांदनी चौक रोडपर किछुए दोकान पार कएलाक बाद दहिना हाथ कऽ एकटा सिनेमा घर पड़लै आ ओकर तेसरे दुकान चश्माक दोकान रहै। संजयक नजैर ओइ दोकानपर पड़ि गेलै। ओ ओइ दोकानकेँ देख लेलकै, देख की लेलकै ओकर नक्शा अपन मानस-पटलपर उताड़ि लेलक। चलैत-चलैत संजयक मस्तिष्कमे एकटा नव विचारक मंथन होबए लगलै- "चश्माक दोकान तँ देख लेलौंह, ऐठाम हम असगरो आबि सकै छी, आबि कऽ चश्मा बनबा सकै छी। रहि गेलै पाइयक बात, हम अपने पाइ जमा करब, तीन महिनामे हेतै, चारि महिनामे हेतै, कहुना कऽ दू सय रुपैया जमा करब। तकरा बाद ऐठाम आबि कऽ चश्मा बनबा लेब। जखन बाबूजी नै बनबा देला तँ अपनों तँ बनाबी। कियो कान-बात नै दै छथि, काल्हि

आन्हर भऽ जाएब तँ... नै-नै.. हम जमा करब, दू सय रुपैया जमा करब, अवश्य जमा करब।"

चलैत-चलैत अपने भीतर हराएल संजय कखन मामा संगे-संगे सदर बजार पहुँच गेल ओ किछु नै बुझलक, आ नै ओकरा कोनो रस्ता यादि रहलै, यादि रहलै तँ मात्र अपन घरसँ चश्मा दुकान तकक रस्ता। आब की छलै, आब तँ संजयकेँ एक गोट नव राह भेट गेलै। जतए कतौ कोनो बाबति दस -बीस पाइ, चारि-आठ आना, एक-दू रुपैया, जे जतऽ हाथ आबै, एकटा डिब्बामे जमा केने गेल। सभसँ नुका कऽ छुपा कऽ, माय-बाबू सभसँ। भेटै कते? दोसरा तेसरा दिनपर घरेसँ स्कूलक टिफिन बास्ते चारि-आठ आना पाइ। किएक तँ ओकर भोरका स्कूल रहै आ माय ओतेक भोरे किछु बना कऽ टिफिन बास्ते देथिन से नै पार लगनि। तइ हेतु दोसरा-तेसरा दिनपर नगदे चारि-आठ आना वा एक-दू रुपैया जे जहिया भेलै ओकरा भेट जाए। मुदा संजय ओइ पाइकेँ खाइमे खर्च नै करए। ओ मासूम बच्चा अपन भविष्य हेतु, अपन वर्तमानक मोनकेँ मारि सएह कऽ रहि जाए। कखनो कऽ कोनो पित्तियो आ मामा लोकनि सेहो किछु पाइ-कौरी धिया-पुताकेँ कोनो विशेष अवसरपर दऽ देथिन्ह मुदा संजय ओइ पाइकेँ खर्च नै कऽ चश्मा हेतु राखि लए। पाबनि-तिहार जेना दशहरा, रामलीला देखै लेल, मेला घुमै लेल, दिवालीक फटक्का किनै लेल, आन-आन पाबनि-तिहारक अवसरपर संजयकेँ जे पाइ घरसँ भेटै, सभटा अपन मोनकेँ मारि चश्माक लेल राखि लए।

... ... ... ... ... ...

सभ मिला कऽ डेढ़ सय रुपैया जमा करैमे संजयकेँ पाँच महिना लागि गेलै। नम्बर लेलाक एक डेढ़ महिना बादसँ ओकर मोनमे पाइ जमा करैक बात एलै। कुल मिला कऽ चश्माक नम्बर अनला छ महिना भऽ गेलै मुदा संजय लग एखन तक मात्र डेढ़ सय रुपैया जमा भेलै। ओकर लक्ष्य तँ दू सय रुपैयाक रहै, मुदा आगूक पचास रुपैयाक वास्ते पता नै कतेक समय आरो लगतै। ताँइ ओ निश्चय केलक जे एतबेसँ दोकान जाए, कम भेलै तँ आगू देखल जेतै।

अगिला दिन संजय स्कूलक टिफिनेमे स्कूलसँ लालकिलाक बस पकड़ि कऽ चाँदनी चौक चश्मा दुकानक हेतु बिदा भेल। पाँच महिना पहिले आएल छल, तइ कारण किछु दिक्कत सेहो भेलै, मुदा पहुँच गेल। जखन दोकानदारकेँ चश्माक नम्बरबला पुर्जा देलकै तँ दोकानदार देखिते बाजल- "ई

तँ बड्ड पुरान नम्बर अछि, डॉक्टरसँ नबका पुर्जा बनबा कऽ लऽ आबू, किएक तँ नम्बर बढ़ैत रहै छै आ छह महिना तँ बहुत बेसी समय भेलै।"

दोबारा पुर्जा बनाबैक निश्चय करैत संजय दुखी मोने ओइठामसँ चलि आएल। आइ प्रथमे कतौ बाहर असगरे निकलल रहए, असुविधो भेलै। सभसँ बेसी ओकरा बसक नम्बरे नै सुझाइ, तैं रहि-रहि कऽ सभसँ पुछऽ पड़ै, कोनोना घर तक सकुशल आएल।

पुनः भोरे-भोर संजय पाहिले जकाँ रोटरी क्लब संचालित आँखिक अस्पताल त्रिलोकपुरी ब्लोक-३ पहुँचल। तीन दिनक हरानीक बाद चश्माक नव नम्बर भेटलै मुदा जे छह महिना पहिले माइनस तीन रहै से आब ठामे दुगुन्ना माइनस छह भऽ गेलै। छह महिनामे एतेक नम्बर बढ़नाइ। अही बातक अंदाजा लगाएल जा सकै छै जे ओकर आँखि कतेक बेसी खराप रहै वा कतेक बेसी गतिसँ खराप भऽ रहल छै।

डॉक्टर तँ संजयकेँ ऐ बातसँ पहिले अबगत करा देने रहथि आ चश्मा तुरंत बनाबैक हिदायत से देने रहथि। मुदा विधिकेँ जे मन्जुर। अगर आबो अपने नै सचेत हएत तँ आगूक छह महिनामे आन्हरे भऽ जाएत। संजयकेँ आब बढ़ल नम्बरकेँ जानि बड़ चिंता होबए लगलै। अगिला दिन ओ स्कूलो किए जाएत, किताबक झोरा लेने सोझे चाँदनी चौक चश्माक दुकानपर पहुँचल। चश्माक नव नम्बरक पुर्जा दुकानदारकेँ देलक। ओकर आँखिक एतेक नम्बर देखि दोकानदार आश्चर्यसँ- "हाँ, एतेक बेसी नम्बर, अहींक छी की?" "हाँ"- संजय धीरेसँ बाजल। दोकानदार- "किए ऐसँ पहिले नै देखने रही की? ई तँ साफ-साफ लापरबाहीक लक्षण थिक। माँ बाबुजी नै छथि की? ओहो भगवान एहेन ककरो...।" "नै-नै एहन कोनो बात नै।"- दोकानदारक बात बिच्चेमे रोकैत संजय बाजल। दोकानदार सेहो अपन बातकेँ विराम दैत अलग-अलग डिजाइनक फ्रेम निकालि-निकालि कऽ देखाबए लागल आ संगे-संगे ओकर दाम सेहो बताबए लागल। फ्रेम सभपर एक नजरि दैत संजय बाजल- "हम विद्यार्थी छी आ हमरा लग कुल डेढ़ सय रुपैया अछि, अही दाममे कोनो मजबूत आ टिकाउ फ्रेम देखाबू।" "ठीक छै।"- कहैत दोकानदार सेफक एक कोनासँ एकटा साधारण परञ्च मजगूत फ्रेम निकालि कऽ दैत बाजल- "ई लिअ, अहाँ एहेन बच्चा लेल ई बहुत उचित छै। मजगूत टिकाउ आ दामो मात्र पचहत्तरिये रुपैया, पचास रुपैयाक शीसा अर्थात कुल सवा सय रुपैया लागत।"

"ठीक छै एकरे बना दिअ।"- संजय खुशीसँ बाजल, किएक तँ ओकरा अंदेसा छलै जे रुपैया कम हएत आ कतऽ जे पचीस रुपैया बचिये गेलै। दोकानदार- "ठीक छै तँ पाइ जमा कऽ दिअ, काल्हि आबि कऽ चश्मा लय जाएब।"

संजय दोकानदारकँ एक सय पचीस रुपैया देलाक बाद बिल लय ओइठामसँ बिदा भऽ गेल। बिलपर देखलक दोकानक नाम "लक्ष्मी आप्टिकल" लिखल रहै। साइन-बोर्डपर लिखल नाम तँ ओकरा सुझले नै रहै। बस पकड़ि घर आएल। आइ ओकर मोन किछु शांत रहै। घरपर ई बात सभ केकरो लग नै बाजल। ओकर मोनमे तँ हलचल मचल रहै, कखन भोर होइ आ जल्दी-जल्दी चश्मा आनए।

भोरे संजय उठि सभ दिन जेकाँ नहा-सुना कऽ स्कूल गेल। स्कूलक छुट्टी भेलाक बाद सोझे स्कूलेसँ लालकिलाक बस पकड़ि कऽ चश्मा लेल चाँदनी चौक बिदा भऽ गेल। चश्मा दोकान पहुँचल, ओकर चश्मा बनि चुकल छलै। चश्मा देखलाक बाद दोकानदारक कहला उत्तर लगाओ कऽ देखलक। ई की? चश्मा लगेलासँ ओकरा एक नव दुनियाँक दर्शन भेलै। सभ किछु नव-नव। ओ सामने रोडक ओइ पारक दोकान सभ, दोकानक भीतर राखल समान सभ, दोकान सबहक साइन-बोर्डपर लिखल अक्षर सभ एकदम साफ-साफ बिलकुल स्पष्ट देखा रहल छलै। एके मिनटमे आइ ओकरा ज्ञात भेलै जे ई महानगर कतेक सुन्नर छै जे की आइसँ पहिले कहियो नै देखने छलै। लगले ओ अपन आँखिसँ चश्मा निकालि कऽ खोलमे रखैत जेबीमे राखि लेलक। किएक तँ बिना चश्माक आ चश्मा पहिरलाक बादक दुनियाँक सन्तुलन करैमे किछु तँ समय लगतै। चश्मा पहिरला बाद सभटा नव-नव लगै, जे- जे बस्तु सब देखाइ से-से सभ कहियो ओ अनुभवो नै केने। अही दूरीकँ भरैमे तँ किछु समय, एक दू दिन तँ लगबे करतै। दोसर दोकान तक ओ बिना चश्माक आएल छल, आब पहीर कऽ नव दुनियाँ संगे जाएमे असुविधा छलै। दोकानसँ बाहर निकलि बिना चश्मेक बस स्टेंड तक आएल। आब कोन बस पर चढ़ए कि ओकरा चश्माक यादि एलै। चश्मा निकालि कऽ लगेलक, की ओकर आश्चर्यक सीमा नै रहलै, जतऽ बिना चश्माक सामने ठाढ़ बसक नम्बरो नै सुझै छलै ततए चश्मा पहीर कऽ समूचा रोडपर जतेक बस गाड़ी रहै, सबहक नम्बर पढ़ि सकै छल।

ओकर मोन ऐ नव वस्तु सभ देख कऽ आनन्दविभोर भऽ गेलै। पाछाँ

घुमि कऽ देखलक तँ सामने छाती तनने ठाढ़ विशालकाय लाल पाथरसँ निर्मित सुन्नर लालकिला देखलक। लालकिलाक सुन्नरता एवं मनमोहकता देखि कऽ ओ मन्त्रमुग्ध रहि गेल। किए तँ पहिले बिना चश्माक तँ खाली लाल-लाल धुंद जकाँ किछु छै, सएहटा देखाइ दै। असली लालकिला तँ आइ चश्मा पहिरलाक बाद देखलक। तावत सामने दूरसँ ओ देखलक, ओकर बस आबि रहल छै। मुदा चश्मा पहिरबाक आदत नै रहबाक कारण चलैमे असुविधा होइ। तँ फेरसँ चश्मा खोलि जेबीमे रखलक आ बसपर बैसल। बसपर बैसलाक बाद फेरसँ चश्मा निकालि एकबेर लगाबए एकबेर निकालए। अन्तमे चश्मा निकालि खोलमे दय बस्तामे राखि लेलक, तावतमे बस सेहो चलए लगलै। बस चलि रहल छलै आ संजय कऽ मोनमे सोचक भँवर उठए लगलै- "अही सवा सय रुपैयाक चश्माक अभावे हमरा एतेक कष्टक सामना करए पड़ल। नै खेला सकै छलौंह, नै बसपर चढ़ि सकै छलौंह, नै ब्लैक बोर्डपर लिखल हिसाब देख सकैत छलौंह, नै नीक जकाँ किताब पढ़ि सकै छलौंह, नै टी. वी. देख सकै छलौंह। पढ़ाइयोमे दिन-दिन पिछरल जा रहल छलौंह। मुदा माँ बाबूजी ऐ बातपर कोनो ध्यान नै देलनि। एक बेर तँ चश्माक नम्बरो आनि कऽ देलियन्हि मुदा धन-सन, कोनो कान-बात नै। कोना-कोना कुन-कुन हिसाबे अपने एक -एकटा पाइ जोड़ि कऽ पाँच महिनामे ई रुपैया जमा केलहुँ।" विचारक मंथनमे डुबल कोना समय बीत गेलै, कोना बस अपन गंतव्य स्थानतक आबि गेलै, संजयकँ किछु ज्ञात नै। ओ तँ अपन ध्यानमे डुबल रहए, जखन सभ बससँ उतरि गेलै तखन ओकर ध्यान खुजलै आ ओ बससँ उतरल। बससँ उतरलाक बाद पएरे चलैत ओकर मोन एक बेर फेरसँ नव समस्यामे ओझराए लगलै- "चश्मा तँ लऽ अनलौं, आब घरमे की कहबै? कतए सँ चश्मा अनलौं? रुपैया कतएसँ अनलौं? के बना देलक?" आन-आन सवाल-जवाब सभ ओकरा मोनमे अबै जाइ। रस्ता खत्म, घर आबि गेलै। खेलक-पिलक मुदा ओकर मोन तँ अही प्रश्नक उत्तर खोजैमे लागल रहै की- "घरमे चश्मा की कहि कऽ देखेबै?"

समय बितलै, साँझ पड़लै। संजय सेहो नव मोर्चा सम्हारैक किछु उपाय सोचलक।

संजयक बाबुजी सेहो ड्यूटीसँ एलाह। नितकर्मसँ निवृत भेलाक बाद माँझ आँगनमे खाटपर बैसलाह। संजयक माय आ छोट दुनु भाइ हुनके चारुकात बैसल। संजय सेहो अपन जेबीमे चश्मा रखने ओइठाम बैसल मुदा

बाहर निकालि कऽ देखेतै से हिम्मतक अभाव। आन-आन गप सभ होइत रहैक, तइ बिचमे संजय बहुत आत्ममंथन आ आत्मदृढ़ताक बाद अपन सम्पूर्ण सहासकेँ जुटाबैत जेबीसँ चश्मा निकालि बाबूजीकेँ देलकन्हि। बाबूजी चश्माकेँ हाथमे लैत- "की छै?" "चश्मा।" संजय अस्थिरेसँ माथ झुकौने बाजल। आगू अपन सेफकेँ गरदनिसँ निचाँ घोंटैत बाजल- "आइ फेरसँ स्कूलमे डॉक्टर आएल रहै। हमर चश्मा नै बनल तइ कारण बहुत बाजल, कहलक पहिलेसँ दुगुना बेसी आँखि खराब भऽ गेल-ए। अंतमे वएह डॉक्टर अपने लगसँ चश्मा देलक।" ई बात ओ एतेक फटाफट बाजल जेना कियो गोटा ड्रामामे रटल-रटाएल शब्द फटाफट बाजि जाइए। हलाँकि ओ उपरोक्त सभ बात फुसिए बाजल, किए तँ बच्चाक मोन अपने ओतेक कष्ट सहि चश्मा बनबेलक मुदा ओकरा सामने आनै लेल किछु नै किछु तँ कहैए पड़तै। झूठो बाजि कऽ अपन आँखिक रक्षा केलक। जे काज ओकर माय-बाबूकेँ करबाक चाहियैन्ह से काज ओ मासूम बच्चा अपने केलक। मुदा ई कोनो एतेक भारी झूठ नै भेलै जे पकड़ल नै जाए। चश्माक खोलपर साफ-साफ दोकानक नाम पत्ता लिखल रहै, लक्ष्मी ओप्टिकल, दोकान नम्बर फलाँ-फलाँ, चाँदनी चौक दिल्ली छह। आ ई कियो एक गोट सामान्य बुद्धिक व्यक्ति जनै छै जे एक निजी दुकान मँगनीमे चश्माक वितरण किए करतै? कोनो सरकारी या धर्मार्थ संस्थाक नाम होएतैक तँ कनी बिस्बासो कएल जा सकै छलै। मुदा ऐठाम एहन कोनो बात नै। दोसर चश्मा बनेनाइ कोनो चुटकीक काज तँ नै छैक? नम्बरक सीसाकेँ काटि-छाँटि कऽ,घसि कऽ फ्रेमक मुताबिक बनेनाइ, जे एक गोट वर्क-शॉपमे भऽ सकैत छै, नै कि कोनो डॉक्टरक जेबीमे। परञ्च बाबूजीकेँ संजयक बातपर विश्वास भऽ गेलनि, सैदखन पहिरै कऽ निर्देश दैत। बस! आगू कोनो बात-चित नै। कनीकाल लेल मानि लेल जाए, छह महिना पहिले जखन संजय हुनका हाथमे चश्माक नम्बर देने रहनि तखन ओ कोनो कारणे चश्मा नै बना पएलनि, मुदा आबो तँ सामने देख रहल छथिन जे कतेक मोटका सीसाक चश्मा ओकर आँखिक ऊपर छै। आबो तँ अपन पहिलुक गलती सुधारि सकै छलथि। कतौ कनी नीक डॉक्टरसँ ओकर आँखिक इलाज करा सकै छलथि। दिल्लीमे तँ एकसँ एक पैघ-पैघ अस्पतालक लाइन लागल छै। कतऽ धिया-पुताक आँखिमे एकटा कीड़ा पड़ि जाइत छै तँ ओकर माय-बापक आत्मा तर्पय लगै छै, आ कतए एक गोट माय-बापक बच्चाक आँखिक ऊपर माइनस छहक चश्मा लागि गेलै आ धन-

सन। आब संजय सैदखन आँखिसँ चश्मा लगोने रहए, स्कूल, हाट-बाजार, रस्ता-घाट कतौ बिना चश्माक नै जाए। पहिले दु-चारि दिन किछु असुविधो भेलै मुदा बादमे अभ्यास भऽ गेला पश्चात सभ ठीक। चौबीस घंटामे जेतबे काल रातिमे सुतल ततबे काल ओकर आँखिसँ चश्मा निकलै, कहियो कऽ तँ चश्मे पहिरने सुतियो रहए।

संजयकेँ चश्मा लेला पुरे दू वर्ष भऽ गेलै आ आइये ओकर दसम वर्गक परीक्षा परिणाम घोषित भेलैक ओ नीक अंकसँ पास केलक। परीक्षा परिणाम जनला बाद ओकर मोन रिजल्टक चिंतासँ किछु हल्लुक भेलैक, किछु शांतिसँ बैसल रहए की ओकर मोन रूपी घोड़ा जीवनक सात-आठ वर्ष पाछू चलि गेलै। कोना-कोना ओकरा कष्टकारी माथ दर्द होइ, कोना गामपर माथ दर्दसँ अंगनामे ओंघड़िया मारए आ कियो ओकरा देखनाहर नै। दिल्ली आएल मुदा दिल्लीयोमे ई जानलेबा असहाय माथ दर्द कोनो कम नै, दिनसँ दिन बेसिए परेशान केलकै। कि एकाएक ओकर मानसपटलपर कतौसँ अबाज एलै- "ई की? बहुतो दिनसँ तँ माथ दुखेबे नै कएल-ए। कहिया सँ? दू वर्षसँ, हाँ -हाँ दुए वर्षसँ, जहियासँ चश्मा लेलौंहँ तहिये सँ। हाँ-हाँ जखनसँ चश्मा पहिरब शुरु कएलौंहँ तखने सँ ई असहाय जानलेबा माथ दर्द ठीक अछि। ई दू वर्षमे एको बेर माथ दर्द नै भेल। तँ जे एतेक असहाय माथ दर्द सात-आठ वर्ष वा ओहुसँ पहिलेसँ होइ छल से आँखिक कमजोरीक कारणे? हाँ ! शाइद -- शाइद कि पक्का? पक्का, हाँ! आँखिक कमजोरीक कारणे ओतेक माथ दर्द होइत छल।"

जान लेबा माथ दर्द, ओकर सुमरण मात्रसँ संजयक समुच्चा देहमे कपकपी भऽ गेलै। जेना-जेना आँखिक कमजोरी बढ़ल जाए तेना-तेना ओकर माथक दर्द विकराल रूप धारण केने गेल रहै। मुदा कियो कोनो डॉक्टरसँ देखाबए बला नै। ई बात सभ सुमैरते ओकर दुनु आँखिसँ नोरक धारा बहए लगलै। मुदा तैयो ओकर सोचक विराम नै होइ छै, ओकर विचार रूपी घोड़ा लगातार अपन पथपर सरपट दौड़ रहल छै- "आह! अगर सात-आठ वर्ष पहिले, कमसँ कम दिल्लीयो एला बाद कोनो नीक डॉक्टरसँ हमर माथ दर्दक इलाज भेल रहितए तँ किएक ओ ओतेक कष्ट आ पीड़ा सहय पड़ितए, आ किएक आइ एतेक मोट सीसाक चश्मा आँखिपर पहिरए पड़ितए, जकर बिना कि एक तरहे आन्हरे छी। ई ककर दोष? हमर? हमर समाजक? हमर माय-बापक? कि हमर कपारक? यदि एतबोपर हम अपने नै सचेत भेल

रहितौं तँ आइ दसवीं पास करबाक जगह एक भयंकर अन्हारक दुनियाँमे विलीन भऽ गेल रहितौं।"



संजयक विचारक घोड़ा विराम लेलकै कि नै? मुदा समाजक सामने एकटा यक्ष प्रश्न छोड़ि गेलै- माय-बापक कर्तव्य अपन संतानक प्रति की हेबाक चाही? भोजन, कपड़ा-लत्ता आकि आगुओ किछु? आगू की-की ???

## बिसाँढ़



पछिला चारि सालसँ रौदी भेने गामक सुर्खीए बेदरंग भऽ गेल। जे गाम हरिअर-हरिअर गाछ-बिरिछ, अन्नसँ लहलहाइत खेत, पानिसँ भरल इनार-पोखरि, सैकड़ो रंगक चिड़ै-चुनमुनी, हजारो रंगक कीट-पतंगसँ लऽ कऽ गाए-महिंस आ बकरीसँ भरल रहै छल ओ मरनासन्न भऽ गेल। सुन-मसान जकाँ। बीरान। सबहक मनमे एक्केटा विचार अबैत जे आब ई गाम नै रहत। जँ रहबो करत तँ खाली माटिएटा। किएक तँ जइ गाममे खाइले अन्न नै उपजत, पीबैले पानि नै रहत, तइ गामक लोक की हवा पीब कऽ रहत? जइ मातृभूमिक महिमा अदौसँ सभ गबैत एला ओ भूमि चारिए सालक रौदीमे पेटकान लाधि देलक। मुदा तैयो लोकक टुटैत आशाक वृक्षमे नव-नव फुलक कोढ़ी टुस्सा संग जरूर निकलि रहल अछि। किएक तँ आखिर जनकक राज मिथिला छिऐ किने। जइ राज्यमे बारह-बर्खक रौदीक फल सीता सन भेटल तइ राजमे, हो-ने-हो, जँ कहीं ओहने फल फेर भेटए। एक दिस रौदीक सघन मृत्युवाण चलैत तँ दोसर दिससँ आशाक प्रज्वलित वाण सेहो ओकर मुकाबला करैत। जेकर हँसेरीओ नम्हर। एहनो स्थितिमे दुनू परानी डोमनक मनमे जीबैक ओहने आशा बनल रहल, जेहने सुभ्यस्त समैमे। कान्हपर कोदारि नेने आगू-आगू डोमन आ माथपर सिंगही माछ आ बिसाँढ़सँ भरल पथिया नेने पाछू-पाछू सुगिया, बड़की पोखरिसँ आँगन, जिनगीक गप-सप्प करैत अबैत रहए। चानिक पसीना दहिना हाथसँ पोछि, मुस्कीआइत सुगिया बाजलि-

> “जेकरा खाइ-पीबैक ओरियान करैक लूरि बूझल छै ओ कथीक चिन्ता करत?”, पत्नीक बात सुनि डोमन पाछू घूमि सुगियाक चेहरा देखि बिनु किछु बजनइ नजरि निच्चाँ केने आगू डेग बढ़बए लगल। किएक तँ खाइक ओते चिन्ता मनमे नै, जेते पानि पीबैक।

......................................

डोमनकेँ अपन खेत-पथार नै। मुदा दुनू बेकती तेहेन मेहनती जे नहियोँ किछु रहने नीक-नहाँति गुजर करैत। गिरहस्तीक सभ काजक

लूरि रहितो ओ कोनो गिरहस्तसँ बन्हाएल नै, ओना समए-कुसमए अपना काज नै रहने बोइनो कऽ लैत। अपना खेत नै रहने खेती तँ नहियेँ करैत मुदा दस कट्ठा मरूआ सभ साल बटाइ रोपि लैत, जइसँ पाँच मन अन्नो घर लऽ अबैत। मरूआ बीआ उपजबैमे बेसी मिहनत होइए। सभ दिन बीआ पटबए पड़ैए। शुरूहे रोहणिमे बड़की पोखरिक किनछरिमे डोमन बीआ पाड़ि लैत। लगमे पानि रहने पटबैओक सुविधा। आरू बीराड़ तँए बीओ नीक उमझैत। पनरहे दिनमे बीआ रोपाउ भऽ जाइत। मिरगिसिरामे पानि होइते अगते मरूआ रोपि लैत। मुदा ऐ बेर से नै भेलै। बर्खा नै भेने बीआ बीराड़ेमे बुड़हा गेलै। एक्को धूर मरूआक खेती गाममे नै भेलै। आ ने कियो अखनि धरि धानक बीराड़क खेत जोतलक आ ने बीआ बागु केलक। रौदीक आगम सबहक मनमे हुअ लगल। मुदा तैयो केकरो मनमे अन्देशा नै! किएक तँ ढेनुआर नक्षत्र सभ पछुआइले रहए।

जहिना रोहणि-मिरगिसिरा फोंक गेल तहिना अद्रो। समए सेहो खूब तबि गेलै। दस बजेसँ पहिनइ सभ बाधसँ आँगन आबि जाइत। किएक तँ लू लगैक डर सबहक मनमे। मरूआ खेती नै भेने दुनू परानी डोमनक मनमे चिन्ता पैसए लगलै।

बड़की पोखरिसँ दुनू परानी पुरैनिक पातक बोझ माथपर नेने अँगना अबैत। बाटमे सुगिया बाजलि-

> “ऐ बेर एक्को कनमा मरूआ नै भेल। बटाइओ केने आन साल ओते भऽ जाइ छल जे सालो भरि जलखै चलि जाइ छेलए। ऐ बेर तँ जलखैओ बेसाहिए कऽ चलत।”

माथ परक पुरैनिक पातक बोझसँ पानि चुबैत। जे डोमनो आ सुगियोकेँ अधभिज्जु कऽ देने। नाक परक पानि पोछैत डोमन उत्तर देलक-

> “कोनो कि अपनेटा नै भेल आकि गाममे केकरो नै भेलै। अनका होइतै आ अपना नै होइत तहन ने दुख होइतए। मुदा जब केकरो नै भेलै तँ हमरे किए दुख हएत। जे दसक गति हेतै से अपनो हएत। अपना तँ पुरैन-पातक रोजगारो अछि आ जेकरा ईहो ने छै?”

डोमनक उत्तर सुनि मिरमिरा कऽ सुगिया बाजलि-

"हँ, से तँ ठीके। मुदा ठनका ठनकै छै तँ कियो अपने माथपर ने हाथ दइए। तहन तँ ई रौदी इसरक डाँग छी, लोकक कोन साध।"

अखनि धरिक समैकेँ कियो रौदी नै बुझलक। सबहक मनमे यएह होइत जे ई तँ भगवानक लीले छियनि। कोनो साल अगतेसँ पानि हुअ लगैत तँ कोनो साल अंतमे होइत। कोनो साल बेसीओ होइत तँ कोनो साल कम्मो। कोनो-कोनो साल नहियेँ होइत। जइ साल अगते बिहरिया हाल भऽ जाइत ओइ साल समैपर गिरहस्ती चलैत मुदा जइ साल पचता बर्खा होइत तइ साल अधखड्डू खेती भऽ जाइत। मुदा जहन हथिया नक्षत्र धरिमे बर्खा नै भेलै तहन सबहक मनमे आबए लगल जे ऐ बेर रौदी भऽ गेल! ओहिना जोतल-बिनु-जोतल खेतसँ गरदा उड़ैत। घास-पातक केतौ दरस नै। मुदा तँए कि लोक हारि मानि लेत? कथमपि नै! सभ दिनसँ गामक लोकमे सीना तानि कऽ जीबैक जे अभियास बनल अछि ओ पीठ केना देखौत? भऽ सकैए जे इन्द्र भगवानकेँ कोनो चीजक दुख भऽ गेल हेतनि। जइसँ बिगड़ि कऽ एना केलनि। तँए हुनका बौसब जरूरी अछि। जखने फेर सुधरि जेता तखनेसँ सभ काज सुढ़िया जाएत। यएह सोचि कियो भूखल-दुखलकेँ अन्न दान तँ कियो कीर्तन-अष्टयाम-नवाह तँ कियो चंडी, विष्णु यज्ञ-जप तँ कियो महादेव पूजा इत्यादि अनेको रंगक बौसैक ओरियान शुरू केलक। जनिजाति सभ कमला-कोसीकेँ छागर-पाठी कबुला सेहो करए लगली। किएक तँ जँ हुनकर महिमा जगतनि तँ बिनु बर्खोक बाढ़ि अनती। बाढ़ि औत पोखरि-झाखड़िसँ लऽ कऽ चर-चौरी, डीह-डाबर सभ भरत। रौदी कमत। अदहा-छिदहा उपजो हेबे करत।

बर्खाक मकमकी देखि नेङराकाका महाजनी बन्न कऽ लेलनि। ओ बूझि गेलखिन जे ऐ बेरक रौदी अगिला साल बिसाएत। मुदा सोझमतिया बौकीकाकी सभटा चाउर लगा लेलनि जइसँ सठि गेलनि। ओना बौकीकाकीक लहनो छोट। खाली चाउरेक। सेहो पावनिए-तिहार धरि समटल। हुनकर महाजनी मातृ-नवमी, पितृपक्षसँ शुरू होइत। पाहुन-परक लेल दुर्गापूजा, कोजगरा होइत दिवाली परेब, गोवर्धनपूजा, भरदुतिया, छठि

होइत सामा धरि अबैत-अबैत सम्पन्न भऽ जाइ छेलनि। किएक तँ सामाकेँ सभ नवका चूड़ा खुअबैत। खुएबेटा नै करैत संग भारो दैत। ताधरि कोला-कोली धानो पकि जाइत। मुदा से बात बौकीकाकी बुझबे ने केलखिन जे ऐ बेर रौदी भऽ गेल। तँए अपनो खाइले नै रखलथि। जहिना बोनिहार-किसान तहिना महाजन बौकीओकाकी भऽ गेली।

अगहन अबैत-अबैत सभकेँ चिन्ता हुअ लगलै जे अपने की खाएब आ माल-जालकेँ की खुआएब। किएक तँ कातिक धरिक ओरियान -अपनो आ मालो-जाल लेल- तँ अधिकांश लोक पहिनइ सँ करि कऽ रखैत। जे नेङराकाका छोड़ि सबहक सठि गेलनि। धानोक बीआ सभ कुटि-छाँटि कऽ खा गेल। धानक कोन गप जे हाल दुआरे रब्बीओ-राइ हएब कठिन। सबहक भक्क खुजल! भक्क खुजिते मनमे चिन्ता समाए लगल। जेना-जेना समए बीतैत तेना-तेना चिन्तो फौदाइत। एक तँ ओहिना चुल्हि सभ बन्न हुअ लगल तैपर सँ सुरसा जकाँ समए मुँह बाबि आगूमे ठाढ़। चिन्तासँ लोक रोगाए लगल। भोर होइते धिया-पुताक बाजा सौंसे गाम बाजए लगैत। मौगी पुरुखकेँ करमघट्टू तँ पुरुख मौगीकेँ राक्षसनी कहए लगल। जइसँ धिया-पुताक बाजा संग दुनू परानीक नाच शुरू भऽ जाइत। मुदा एहेन समए भेलोपर दुनू परानी डोमनक मनमे एक्को मिसिआ चिन्ता नै। किएक तँ जुड़ेशीतलसँ पुरैनिक पातक कारोबार शुरू केलक। कारोबार नम्हर। बावन बीघाक बड़की पोखरि। जइमे सापर-पिट्टा पुरैनिक गाछ। बजारो नम्हर। निर्मली, घोघरडीहा, झंझारपुर स्टेशनो आ पुरनो बजार। असगरे सुगिया केते बेचत। पुरैनिक पात किनिनिहार हलुआइसँ लऽ कऽ मुरही-कचड़ीवाली धरि। तैपर सँ भोज-काजमे सेहो बिकाइत। तँए आठ दिनपर पार लगौने रहए। भरि दिन डोमन पत्ता तोड़ि-तोड़ि जमा करैत। एक दिन सुगिया पात तोड़ैत, दोसर दिन सेरियबैत आ तेसरा दिनपर भोरुके गाड़ीसँ बेचैले जाइत। जे पात उगरि जाए ओकरा डोमन सुखा-सुखा रखैत। किएक तँ सुखेलहो पातक बिकरी होइए।

आइ निर्मलीसँ पात बेचि कऽ सुगिया आबि पतिकेँ कहलक-

"रौदी भेने अपन चलती आबि गेल।"

चलतीक नाओं सुनि मुस्की दैत डोमन पुछलक-

"से की?"

"सभ पात बेचिनिहार वेपारी थस लऽ लेलक। सभ गामक पोखरि सूखि गेलै जइसँ सबहक कारबार बन्न भऽ गेलै। अपनेटा पात बजार पहुँचैए। आइ तँ जहाँ गाड़ीसँ उतरलौं आकि दोकानदार आबि-आबि बुझ्झू जे झपटि लेलक। टीशनेपर छुहुक्का उड़ि गेल।"

डोमन-

"अहाँकेँ लूरि नै छेलए जे दाम बढ़ा दैतिऐ, एकक दू होइत।"

सुगिया-

"अगिला खेपसँ सएह करब। आब तँ बड़ी सेहो जुआइत हएत किने?"

डोमन-

"गोटे-गोटे जुआएल अछि। मुदा बीछि-बीछि तोड़ए पड़त। तँए पाँच दिन आरो छोड़ि दइ छिऐ।"

तेसर साल चढ़ैत-चढ़ैत गामक एकटा बड़की पोखरि आ पाँचटा इनार छोड़ि सभ सूखि गेल। नम्हर आँट-पेटक बड़की पोखरि। किएक तँ दाँइत खुनने अछि किने? लोकक खूनल थोड़े छिऐ। देव अंश अछि। तँए ने गामक सभ अपन बेटाकेँ उपनयनो आ बिआहोमे ओही पोखरि जा पहिने नहबैए। तेतबे नै छठिमे हाथो उठबैए। हमरा इलाकाक पृथ्वीओक बनाबटि अजीब अछि। बुझ्झू तँ माटिक पहाड़। पाँच सए फुटसँ निच्चाँ धरि ने बालु अछि आ ने पानि। शुद्ध माटि। जइसँ ने एक्कोटा चापाकल आ ने बोरिंग गाममे। पानि दुआरे गामक-गाम लोककेँ पड़ाइन लागि गेल। माल-जाल उपटि गेल। सभटा गाए-माल चाहे तँ लोक बेचि लेलक वा खढ़ पानि दुआरे मरि गेलै। अदहासँ बेसी गाछो-बिरिछ सूखि गेल। चिड़ै-चुनमुनी इलाका छोड़ि देलक। जे मूस अगहनमे अंग्रेजी बाजा बजा-बजा सत-सतटा बिआह करै छल ओ या तँ बिलेमे मरि गेल वा केतए पड़ा गेल तेकर ठेकान नै। हमरो गामक अदहासँ बेसीए लोक पड़ा गेल। मुदा

तैयो जिबठगर लोक गाम छोड़ैले तैयार नै। पुरुख सभ गाम छोड़ि परदेश खटैले चलि गेल। मुदा बाल-बच्चा आ जनि-जाति गामेमे रहल। पोखरि-इनारकेँ सुखैत देखि लोक पानि पीबैलै बड़कीए पोखरिक कतबाहिमे कूप खुनि-खुनि लेलक। अपन-अपन कूप सभकेँ। पानिक कमी नै। तीन सालक जे रौदी, परोपट्टा लेल बाम भऽ गेल रहए, बएह डोमन लेल दहीन भऽ गेल। काज तँ आने साल जकाँ मुदा आमदनी दोबर-तेबर भऽ गेलै। गामक जमीनोक दर घटल। जइसँ डोमन खेत किनए लगल। ओना सुगियाक इच्छा खेत किनैक नै। किएक तँ मनमे होइ जे अहिना रौदी रहत आ खेत सभ पड़ता रहत। तँए अनेरे खेत लऽ कऽ की करब। मालो-जाल तँ घास-पानि दुआरे नहियेँ लेब नीक हएत। डोमनक मनमे आशा रहै जे जहिना लूल्हीओ कनियाँ बेटा जनमा कऽ गिरथाइन बनि जाइए, तहिना तँ पानि भेने परतीओ खेत हएत किने।

योगी-तपस्वीक भूमि मिथिला अदौसँ रहल। जे अपन देह जीव-जन्तुक कल्याण लेल गला लेलनि। ओ कि ऐ बातकेँ नै जनै छेलखिन? जनै छेलखिन! तँए ने गाममे अट्ठारह गण्डा (माने ७२ टा) पोखरि, सत्ताइस गण्डा (माने १०८ टा) इनार संग-संग चौरीमे सैकड़ो कोचाढ़ि-बिरै खुनि पानिक बखाड़ी बनौने छला। सोलहो आना बरखे भरोसे नै, अपनो जोगार केने छला।

तीन साल तँ दुनू परानी डोमन चैनसँ बितौलक। मुदा चारिम साल अबैत-अबैत बेचैन हुअ लगल। गामक सभ पोखरि-इनार तँ पहिनइ सूखि गेल छल। लऽ दऽ कऽ बड़की पोखरिटा बँचल। तहूमे सुखैत-सुखैत मात्र कट्ठा पाँचेमे पानि बँचल। सूखल दिस पुरैनिओ उपटि गेल। बीचमे जे पानि रहए मात्र ओहीमे पुरैनिक गाछ बँचल, मुदा तइमे जाँघ भरिसँ ऊपरे गादि। पैसब महाग मोसकिल रहए। पएर दैते सरसड़ा कऽ जाँघ भरि गड़ि जाइत। के जान गमबए पैसत। निराशाक जंगलमे डोमन बौआ गेल। मनमे हुअ लगलै, जहिना गामक लोक चलि गेल तहिना हमहूँ चलि जाएब। जानि कऽ परानो गमाएब नीक नै। जिनगी बँचत, समए-साल बदलतै तँ फेर घूमि कऽ आएब नै तँ केतौ मरि जाएब। जहिना गामक सभ किछु बिलटि गेल, समाजक लोक बिलटि गेल, तहिना हमहूँ बिलटि जाएब...।

पतिकेँ चिन्तित देखि सुगिया पुछलक-

"किछु होइए की? एना किए मन खसल अछि?"

पत्नीक प्रश्न सुनि डोमन आँखि उठा कऽ देखि पुनः आँखि निच्चाँ कऽ लेलक। आँखि निच्चाँ करिते सुगिया दोहरा कऽ पुछलक-

"मन-तन खराप अछि?"

नजरि उठा डोमन उत्तर देलक-

"तन तँ नै खराब अछि मुदा तनेक दुख देखि मन सोगाएल अछि। जइ आशापर अखनि धरि खेपलौं ओ तँ चलिए गेल। जे अगिलोक कोनो आशा नै देखै छी। की करब आब?"

सुगिया-

"अपना केने किछु ने होइ छै। जे भगवान जनम देलनि, मुँह चीड़ने छथि, अहारो तँ वहए ने देता। तइले एते चिन्ता किए करै छी?"

डोमन-

"गामक सभ किछु बिलटि गेल। एहेन सुन्दर गाम छल, सेहो उपटि रहल अछि। खाली माटिटा बँचल अछि। की माटि खुनि-खुनि खाएब? बिनु अन्न-पानिक काए दिन ठाढ़ रहब?"

"चिन्ता छोड़ू। जहिया जे हेबाक हेतै से हेतै। अखनि तँ पाइनो अइछै आ अन्नो अछिए। जाधरि ऐ धरतीपर दाना-पानी लिखल हएत ताधरि भेटबे करत। जहिया उठि जाएत तहिया केकरो रोकने रोकेबै! तइले एते चिन्ता किए करै छी?"

कहि सुगिया भानसक ओरियान करए लागलि। पत्नीक बात सुनि डोमन मोने-मन सोचए लगल जे हमरा तँ मरैओक डर होइए मुदा एकरा कहाँ होइ छै। ई तँ मरैओले तैयारे अछि। फेर मनमे उठलै, जीवन-मृत्युक बीच सदासँ संघर्ष होइत आएल अछि आ होइत रहत। तइसँ पाछू हटब कायरता छी। जे मनुख कायर अछि ओ कोन जिनगीक आशामे

अनेरे दुनियाँकेँ अजबारने अछि। पुनः अपना दिस तकलक। अपना दिस तकिते मनमे एलै, जीबैक बाट हरा गेल अछि। तँए एते चिन्ता दबने अछि। तमाकुल चुना कऽ मुँहमे लेलक। तमाकुल मुँहमे लइते डोमनकेँ अपन माए-बापसँ लऽ कऽ पछिला पुरखा दिस घोड़ा जकाँ नजरि दौगलै। मुदा केतौ रूकलै नै। जाइत-जाइत मनुक्खक जड़ि धरि पहुँच गेलै। पुनः घूमि कऽ आबि नजरि माए लग अँटकि गेलै। मन पड़लै माए संग बितौलहा जिनगी। मन पड़लै माएक ओ बात जे दस बर्खक अवस्थामे रौदी बितौने छल। रौदी मन पड़िते बड़की पोखरिक बिसाँढ़ आ अन्है माँछ आँखिक सोझमे आबि गेलै। कनीकाल गुम्म भऽ मन पाड़ए लगल।

मन पड़लै, अही पुरैनिक जड़िमे तँ बिसाँढ़ो फड़ैए। अल्हुए जकाँ। जहिना माटिक तरमे अल्हुआक सिरो आ अल्हुओ रहै छै तहिना पुरैनिक जड़िमे सिरो आ बिसाँढ़ो रहैए। अनासुरती मुहसँ निकललै-

> "बाप रे! बाबन बीघाक पोखरिमे तँ केते-ने-केते बिसाँढ़ हेतै। ओकरे खुनैमे माछो भेटत। खाधि बना-बना सिंही-माङुर रहैए।"

एक पंथ दू काज। मनमे खुशी अबिते पत्नीकेँ हाक पाड़ि कहलक-

> "भगवान बड़ीटा छथिन। जहिना अरबो-खरबो जीव-जंतुकेँ जनम देने छथिन तहिना ओकर अहारोक जोगार केने छथिन।"

पतिक बात सुनि सुगिया अकबका गेलि। बुझबे ने केलक। मुँह बाबि पति दिस देखैत रहल। जीबछीकेँ टकटक तकैत देखि डोमन बाजल-

> "चुल्हि मिझा दियौ। घूमि कऽ आएब तहन भानस करब।"

पतिक उत्साह देखि सुगिया मोने-मन सोचए लगली जे मन ने तँ सनकि गेलनि हेन। अखने मुर्दा जकाँ पनिमरु छला। आ लगले की भऽ गेलनि। दोसर बात परखैक खियालसँ चुप-चाप ठाढ़ रहली।

डोमन फेर बाजल-

> "की कहलौं? पहिने आँच मिझा दियौ। फट्टक लगा छिट्टा लऽ कऽ संगे चलू।"

सुगिया पुछलक-

"केतए।"

"बड़की पोखरि।"

"किए?"

"एहेन-एहेन सएओ रौदी कटैक खेनाइ पोखरिमे दाबल अछि। आनैले चलू।"

सबाल-जवाब नै कऽ सुगिया आगि पझा, फट्टक लगा छिट्टा लऽ तैयार भेल। घरसँ कोदारि निकालि डोमन विदा भेल। आगू-आगू डोमन आ पाछू-पाछू सुगिया। बड़की पोखरिक महारपर पहुँच डोमन हाथक इशारासँ पत्नीकेँ देखबैत बाजल-

"जेते पोखरिक पेट सूखल अछि ओइमे तेते खाइक वस्तु गड़ाएल अछि जे ने खाइक कमी रहत आ ने पीबैक पानिक। जेना-जेना पानि सुखैत जेतै तेना-तेना कूपकेँ गहींर करैत जाएब। जेते पुरैनिक गाछ सुखाएल अछि ओइमे घौंर्छा जकाँ बिसाँढ़ फड़ल हएत।"

पोखरि धँसि डोमन तीन डेग उत्तरे-दछिने आ तीन डेग पूबे पछिमे नापि कोदारिसँ चेन्ह देलक। एक धूर। उत्तरबरिया-पुबरिया कोनपर कोदारि मारलक। माटि तेते सक्कत जे कोदारि धँसबे ने कएल। दोहरा कऽ फेर जोरसँ कोदारि मारलक। कोदारि फेर नै धँसल। आगू दिस देखि हियाबए लगल जे किछु दूर आगूक माटि नरम हएत। खुनैमे असान हएत। मनक खुशी उफनि कऽ आगू बढ़ल-

"अँइ यइ ढोरबा माए, हम पुरुख नै छी? देखियौ हमरा माटि गुदानबे ने करैए! अहाँ हमरासँ पनिगर छी, दू छअ मारि कऽ देखियौ।"

सुगिया-

"हमर चूडी-साड़ी पहिरि लिअ आ हमरा धोती दिअ। तहन

कोदारि पाड़ि कऽ देखा दइ छी।"

मुस्की दैत दुनू आगू मुहेँ ससरल। एक लग्गा आगू बढ़लापर माटि नरम बूझि पड़लै। कोदारि मारि कऽ देखलक तँ माटि सहगर लगलै। एक धूर नापि डोमन खुनए लगल। पहिले छअमे एकटा बिसाँढ़क लोली जगलै। लोल देखिते उछलि कऽ बाजल-

"हे देखियौ। यएह छी बिसाँढ़।"

सुगिया-

"लोल देखने नै बूझब। सौंसे खुनि कऽ देखा दिअ?"

पत्नीक बात सुनि डोमनकेँ हुअ लगल जे हो-ने-हो कहीं अधेपर सँ ने कटि जाए। से नै तँ लोल पकड़ि डोला कऽ उखाड़ि लइ छी। मुदा नै उखड़ल। कनी हटि दमसा कऽ दोसर छअ मारलक। छअ मारिते एक बीतक देखलाहा आ चारि-चारि ऑगरीक दूटा आरो देखलक। तीनूकेँ खुनि दुनू परानी निङहारि-निङहारि देखए लगल।

उज्जर-उज्जर। नाम-नाम। लठिआहा बाँस जकाँ गोल-गोल। मोट। हाथी दाँत जकाँ चिक्कन। बीत भरिसँ हाथ भरिक। पाव भरिसँ आध सेर धरिक।

सुगिया दिस नजरि उठा कऽ डोमन देखलक तँ पचास वर्षक आगूक जिनगी बूझि पड़लै। पति दिस नजरि उठा कऽ सुगिया देखलक तँ चूड़ीक मधुर स्वर आ चमकैत मांगक सिनुर देखलक।"

छिट्टा भरि बिसाँढ़ आ सेर चारिएक सिंही माछ नेने दुनू परानी डोमन-जीबछी खुशीसँ हलसैत विदा भेल।

OOO









## आत्मकथा खण्ड

*(मैथिलीमे दलित आत्मकथाक सर्वथा अभाव रहल अछि। सन्दीप कुमार साफीक आत्मकथा मिथिलाक साहित्य, समाज आ संस्कृतिकेँ हिलोरैत ओइ अभावक पूर्ति करैत अछि।- गजेन्द्र ठाकुर, सम्पादक, विदेह)*

## आत्मकथा



जीवन एगो संघर्ष होइत अछि, संघर्षमय होइत अछि। ऐ संघर्षमे कियो-कियो आगू निकलि जाइत अछि तँ कियो अप्पन जीवनमे बहुत पाछू छूटि जाइत अछि।



ओही संघर्षमय दुनियाँमे एगो हम छी, जिनकर नाम अछि संदीप कुमार साफी माने किरण। स्कूलमे सन्दीप नामसँ चिन्हल जाइबला अओर गाममे सभ किरण नामसँ पहचानैए। ग्राम+पोस्ट मेंहथ, भाया-झंहझारपुर, जिला- मधुबनीक रहनिहार हमर जन्म निर्धन गरीब परिवारमे भेल। हम जातिक धोबी छी, हरिजन (दलित) छी। गाममे सभक कपड़ा धो कऽ माँ-बाबू हमरा सभक पालन-पोषण केने अछि। हम चारि भाइ-बहीन छी, जइमे हम सभसँ बड़का छी, तइसँ छोट हमर भाइ-बहीन सभ अछि। हमर जन्म ०७.०६.१९८४ ई. मे भेल। ओइ जमानामे सस्ता सभ किछु, तैयो हमरा सबहक भरन-पोषण झूर-झूरइतो चलए। अ-आ सँ कबीर कान तक हम सभ दुखीरामसँ पढ़लौं। किछु दिन बाद बाबूजी सरकारी स्कूलमे नाम लिखा देलक। सरकारी स्कूलमे पढ़ाइ चलै तँ ठीके-ठाक मुदा हम सभ ओतेक किछु बुझि नै पबिऐ। ओहेन गारजनो होसगर नै जे देखबितए जे की लिखलएँ, की सिखलएँ। मुदा धीरे-धीरे आगू बढ़लौं।

छोटमे माए एकटा बकरी किनलक जे ओकरोसँ किछु रुपैया आमदनी हएत तँ कहुना गुजर-बसर हएत। थोड़ेक दिन बकरी सेहो चरेलौं अओर बकरी बेचि हमर माँ ओहीसँ एकटा बाछी लेलक जे ओइसँ दूधक आमदनी हएत आ ओइ पाइसँ अपन परिवार सुखीसँ गुजर करब।

ई सभ काज करैत बाबूजी संगे लोकक ऐठाम कपड़ा पहुँचेनाइक सेहो काज करैत छलौं।

पिछला पाँच दस सालमे जमाना बहुत आगू बढ़ि गेल। पहिले एते बोइन नै भेटैत छलै जेतेक अखुनका समएमे भेटैत अछि। पहिने एक मोटा कपड़ा धोइ छल हमर माँ-बाबू तँ गिरहस्त सभ पाँच सेर धान नै तँ दू किलो आँटा दैत छलै। कियो कपड़ा धुआइ तरे पाइयक आमदनी नै रहलासँ मजूरीमे दू-तीन किलो अल्लूए दऽ देलक। पहिने पाइ महग छलै आ अन्न-पाइन सस्ता छलै।

गाममे सबहक माय-बाबू इस्कूल भेजै मुदा हम जाइ लोकक कपड़ा पहुँचाबऽ, तइयो साँझका टेममे अंगनामे बोरा बिछा कऽ पढ़ैले बैसए हमर पिसियौत भाय राजू भैया, तखन हमहूँ पढ़ैले आबी तँ दू-कानसँ बीस कान तक सिखलौं। ओकरा बाद अप्पन गामक इस्कूलमे नाम लिखा देलक, हेडमास्टर छल पहिने कोइलखक यादवजी, हुनका कहि बाबू, जे एकरा कनी देखबै। किछु दिन अहिना समए कटल, चौथा-पचमामे बढ़ला बाद किताब पढ़ला किछु आबि गेल तँ गारजीयन कहलक जे चलि जा बौआ पीसा संगे, ओतै नेपालमे रहिहऽ। गामपर खर्चाक दिक्कत तँ हेबे करइए, से नै तँ ओतै काज-राज करिहऽ अओर ओतै रहिहऽ। पढ़ाइ-लिखाइ आब छोड़ऽ। पढ़ि-लिखि कऽ की हेतै। १९९४ ई. क समएमे हम चलि गेलौं नेपाल। ओतै दीदी संगे रही, सभ दिन कपड़ा धोइ अओर संगे पहुँचाबैले जाइ। अओर आबी तँ लकड़ी चुल्हापर भानस करी। भोरे तीन बजे उठी कपड़ा धोइले। ओइ समए हमर उमेर बुझू जे ११-१२ कऽ छलए। किछु दिन ओहू ठाम गुजारलौं। तकरा बाद हम फेर गाम एलौं। हमर बाबू कहलनि जे आब नै जा, किछु दिन पढ़ऽ। कमसँ कम मैट्रिको तक पढ़ि लेबऽ तँ कतौ ने कतौ सरकारी नोकरी भइये जेतऽ। हमरा जेतबे जुड़त ओतबेमे हम

गुजर करब मुदा तूँ पढ़ऽ। तकरा बाद हम कोठिया इस्कूलमे नाम लिखेलौं। ओइ ठाम छठासँ किलास चलै छलै। फेर थोड़ेक दिन गाममे रहि कऽ माल-जाल चरा कऽ हाइस्कूल तक गेलौं। मुदा समए एहेन आएल जे फेर हम पढ़ाइ छोड़ि पंजाब चलि गेलौं। ओइ समएमे हम छलौं नौमामे। गेलौं ओइ बास्ते जे हमरासँ छोट बहीन छल, घरक गारजन कहलक जे बौआ गाममे रहलासँ आब किछु नै हेतौ, से नै तँ चलि जा लोक सभ संगे बड़का कक्का लग चण्डीगढ़। कतौ नोकरी धरा देतऽ, कइहक हमर नाम जे बाबू कहलक यऽ। हमर कक्का बित्तन साफी जे बी.ए.क डिग्री प्राप्त केने छलए, वएह सोचि हमर बाबू हुनका लगमे पठौलनि जे ओकरा कनीक बुइध छै, कतौ नीक-नीक नोकरी पकड़ा देतै। मुदा हमरा लगमे कोनो सर्टिफिकेट नै रहए, से हमरा कतौ छोटो-मोटो काजपर नै राखए। कोनो औफिसोमे नै राखए जे ई तँ पढ़ल लिखल नै अछि, सभ दफतरमे से कहए। आखिरीमे काका एगो प्रेस आइरनक दोकान कऽ कहलक, एतै आइरन कर। नया आइरनक दोकान, कोइ ग्राहक आबै, कियो नै आबै। एक-दू महिनाक बाद काका हमरापर शक करए लागल जे ई पाइ कमाइ अइ मुदा हमरा नै दइए। हमरा मनमे बहुत दुख हुअए जे हम कतऽ आबि गेलौँ, खेनाइ खाइ लऽ जाइ तँ कहए जे दोकानक भाड़ा आब तोरे भरऽ पड़तऽ चाहे दोकान चलऽ या नै चलऽ। ई सभ सुनि मन व्याकुल भेल जे आब ऐठाम हमरा रहलासँ कोनो फाएदा नै हएत। आब एतऽसँ जाइए पड़त। ओही ठाम गामक कतेक लोक रहै छल, तेकरा कहि-सुनि हम कोठीमे काज करए लगलौं। एक महिना भेल तँ गाम जाइ कऽ भाड़ा भऽ गेल। एलौं काका लगमे जे हम गाम जा रहल छी। तँ काका कहलक, रुकि जा, हम टिकट बना दै छिअ। एक दू दिन रुकि जा। गामक लोक जाइत छै, तेकरा संगे हम गाम पठा देबऽ।

विदेह सम्मान
विदेह सम्मान
www.videha.co.in



तइ बिच हमरा संग एगो घटना भऽ गेल जे हमरा पएरमे आगि लागि गेल। हमरा पूरा पएरमे, पएरसँ एड़ीसँ जांघ तक झड़कि गेल। आब हम बड़का समस्यामे फँसि गेलौं। उ घाव हमरा तीन महिना तक घिघरी कटेलक। असगरे साइकिलसँ एक पएरे पाइडिल मारि कऽ ऊँच-नीच रस्तापर सँ जाइ छलौं दवाइ कराबैले चण्डीगढ़ शहरसँ दूर छै गाम धनास, ओइठाम। कम पाइमे डाक्टर दवाइ दै छलै। सप्तामे तीन बेर जाइ छलौं दवाइ कराबैले। जेहो रुपैया कोठीसँ कमा कऽ अनने छलौं सभ पाइ कक्काकेँ दऽ देलौं। एकर समाचार जखन हमर माँ आ बाबूकेँ पहुँचल तँ बहुत कानल जे कोहुना बौआ केकरोसँ पाइ लऽ कऽ तूँ गाम आबि जो। ओही ठाम छै बुधन अओर कोरैला, तेकरासँ पाइ लऽ कऽ गाम चलि आ। हम गामेपर ओकरा पाइ दऽ देबै। ओही समएमे हमर बोर्ड परीक्षाक फॉर्म भराइ छलए, यएह कातिक अगहन महिनामे हमरा केकरो द्वारा चिट्ठी समाद आएल जे जल्दी गाम आबऽ जे किछु दिन पइढ़ो लेबऽ अओर घाव से छुटि जेतऽ। हमर फॉर्म हमर संगी मनोज पासवान सभ भरि देलक। किछु बुझल ने सुझल, ने गणितक ज्ञान ने संस्कृतक ज्ञान। तैयो परीक्षा मधुबनीमे वाटसन स्कूलमे भेल सन २००० ई. मे, जखन दू महिना बाद रिजल्ट निकलल तखन मनमे जएह धुकधुकी छल सएह भेल। हम परीक्षा पास नै कऽ पेलौं। आब तँ अओर मोन दुखी भऽ गेल जे आब की कएल जाए।

तकरा बाद कोइ ने कोइ कहलक जे संस्कृत बोर्ड सँ परीक्षा दहक। एक बेर बाबू तँ हमर मानलक मुदा माँ कहलक जे आब सभ पढ़ाइ-लिखाइ छोड़ऽ, चलि जा ममियौत भाए संगे बंगलोर। हम फेर बंगलोर चलि एलौं। ऐठाम काज भेटल खानाक केटरिंगमे, कुक सबहक कपड़ा धोइ कऽ काज भेटल। किछु दिन बाद गामपर सँ हमर विवाहक बातचीतक समाचार आएल जे तूँ गाम आबऽ। फरबरी-मार्चमे हम गाम गेलौं। बाबूजीकेँ कहलियनि जे विवाहमे जे दहेज देतऽ ओइ दहेजसँ

अओर एक सालमे किछु रुपैया अओर लगा कऽ बहिनक कन्यादान सेहो कऽ लेब। किछु भाड़ा-बर्तन अओर ओइमे लगा देबै। ई सभ मजबूरी देख हमर विवाह २००२ मे भेल, पण्डौल गाममे, जइ गामक पड़ोसमे कनी हटि कऽ अछि भवानीपुर गाम, जइ ठाम महादेव उगना रूप धारण कऽ विद्यापतिकेँ दर्शन देने छलनि जे अखन मिथिलामे सुप्रसिद्ध अछि, कवि विद्यापति अओर उगना महादेव। हमर विवाहक पश्चात एक बेर फेर हम संस्कृत बोर्डसँ परीक्षा देलौं, अओर ओइमे हम द्वितीय श्रेणीसँ उत्तीर्ण भेलौं। हम ई परीक्षा केथाही-रामपट्टी स्कूलसँ देने छलौं २००५ मे। तेकरा बाद पुनः हम अपने गाम लगमे कॉलेज छल शिवनन्दन-नन्दकिशोर महाविद्यालय, भैरवस्थान ओइमे एडमिशन करा कऽ आइ.ए. मे, हम फेर आबि गेलौं बेंगलोर। तकरा बाद ओइ केटरिंगमे आदमी बढ़ि गेलासँ हमरा ओइठाम काज नै भेटल तँ हम फेर एतौ एकटा कोठीमे काज पकड़लौं अओर गाम आबि कऽ इण्टरमीडिएट परीक्षामे फेर शामिल भऽ गेलौं आ अहूमे सेकेण्ड डिवीजनसँ पास भेलौं, कोठीएमे समए बचए तँ पढ़बो करी, किताब गामसँ लऽ कऽ जाइ छलौं।

संग-संग बहिनक कन्यादान सेहो भऽ गेल भगवतीक दयासँ। ओही विवाहमे किछु खर्चा आ कर्जा भऽ गेल बेसी। कोठीमे दू हजार रुपैया दिअए महिना, ओइमे घरक खर्चा अओर ओम्हर अपन पढ़ाइक परीक्षा फीस, पलसमे परिवारक सेहो खर्चा।

फेर बी.ए. मे नाम लिखेलौं अओर फेर चलि गेलौं बंगलौर। हमर विषय छल आर्ट जे कोनो ट्यूशन बिना पढ़ि सकै छलौं। हमरा इण्टरमीडिएटमे हिन्दी विषयमे ज्यादा अंक आएल छल मुदा अपने नै रही गाममे तँ हमर संगी छल राकेश कुमार ठाकुर, लगैमे हजाम, वएह छल हमर फॉर्म भरनिहार, परीक्षा शुल्क जमा केनिहार, हुनका मैथिलीमे

ज्यादा अंक एलै, ओइ वास्ते हमरो उ यएह ऑनर्स विषय रखबा देलक।



गाम एलौं तँ मन किछु पछताइतो छल जे आबक जमानामे आर्टक पढ़ाइ कियो पढ़ै छै, मुदा मैथिलीक जखन नाम सुनलिऐ तखन मन गदगद भऽ गेल। हँ, मुदा किताब भेटल बहुत मेहनति कऽ कए।

हर साल पाँच सएमे किताब खरीदऽ पड़ए, ओहूमे जेरोक्स पन्ना। तेकरा पढ़ि कऽ हम बी.ए. फर्स्ट क्लाससँ २०११ ई. मे पास केलौं ललित नारायण मिथिला यूनिवर्सिटा, कामेश्वर नगर दरभंगासँ।

ताऽत हमरा बालो बच्चा भेल। पढ़ाइ संग-संग एकरो सबहक देख-रेख केनाइ माय-बापक दायित्व होइ छै। तखन हम फेर गामसँ बेंगलोर आबि गेलौं।

कतेक बेर पैराशुट रेजीमेंटमे बेंगलोरमे भर्तीमे बहालीमे गेलौं मुदा असफल रहलौं। ऐबेर गाममे एस.टी.ई.टी.बला परीक्षामे सेहो शामिल भेलौं मुदा उहो असफल रहल।

आबि गेलौं बेंगलोर जे आब ओतेक कोनो नीक एजुकेशनो नै अछि जे कतौ नोकरी हएत, तैयो कोनो काजमे लागल छी। भगवतीक दया, आगू हुनका हाथमे छनि। हमरा दूटा बेटा अछि अओर एकटा बेटी, बड़का अछि राजकुमार साफी, छोट बेटा सागर कुमार साफी। तइसँ छोट अछि राज नन्दनी कुमारी। अखन ई सभ आंगनवाड़ी स्कूलमे पढ़ि रहल अछि। ओतेक पाइ अछि नै जे प्राइवेट स्कूलमे धीया-पुताकेँ पढ़ाएब, दिनोदिन महगाइ बढ़ले जाइत अछि। हम सभ बी.पी.एल. कोटिमे शामिल छी। धीरे-धीरे एतबो शिक्षा भेलाक बादो कोनो नोकरी नै भेटैए। लोक कहै छलए जे एतेक पढ़निहार बड़का अफसर होइत अछि मुदा हम सभ किछु नै कऽ पाबि रहल छी।

हमरा संगीतसँ बेसी मिलान रहैत अछि। गीत गेनाइ हमरा बहुत नीक लगैत अछि। मैथिली होइ बा नेपाली बा हिन्दी, हम ओहू गीतकेँ गाबि सकै छी। कीर्तन-भजन केलौं अपने गामघरपर संगी-साथी संग। जीवन एगो घड़ीक सुइया होइत अछि, दिन भरि, राति भरि चलिते रहैए, कखनी बन्द भऽ जाएत किनको नै थाह अछि।



हम अप्पन ऐ मैथिलीक माटि-पानिसँ जुड़ल हर एक बातक सम्मान करब। अप्पन भाषाकेँ ऊँच शिखरपर पहुँचेबाक प्रयास करब।

हम मैथिल छी, मिथिलेमे रहब अओर पोरो साग तोड़ि कऽ गुजर करब। सादा छी सादा रहब। जय मिथिला, जय मिथिला धाम, प्रणाम।



*पवनकान्त झा (काश्यप कमल)*

## बाबूक सुनाएल खिस्सा

*सहस्त्रमुखक दीप*





एक टा राजा छलाह। ओ अपन प्रजाक बड नीक जेकाँ ध्यान रखैत छलाह। राजा साहेब रोज राति कऽ भेष बदलि कऽ अपन राज्यमे घुमैत छलाह।

एक राति राजा घुमैत छलाह तँ देखलखिन जे एकटा गरीब आदमी घूर तपैत रहै, तखने ओकर पत्नी आबि कऽ कहलकै.. चलू भोजन कऽ लिअ।

पति पुछलकै- पैंचा लगेलौं?

पत्नी कहलखिन- हँ।

पति पुछलकै- पैंचा सधेलौं?

पत्नी कहलखिन- हँ।

पति कहलकै- तँ चलू, सहस्त्रमुखक दीप जराउ गऽ, हम अबैत छी।

पत्नी चलि गेलीह।

राजा नुका कऽ सभटा गप्प सुनैत रहथि। राजा सोचलन्हि जे ई गरीब आदमी पैंचा लगबैतो अछि, पैंचा सधैबतो अछि आ सहस्त्रमुखक दीप बारि कऽ खाइत अछि। हम राजा छी से एक-दू नै तँ पाँच मुखक दीप जरबैत छी आ ई सहस्त्रमुखक दीप जरबैत अछि आ ई सभ दिन पैंचा लगबैत-सधबैत अछि। एकरा एतेक धन कतएसँ अबैत छैक? अवश्य ई कतौ चोरि करैत हएत। एकरा सजा भेटबाक चाही।

भोरे राजा दरबारमे ओइ आदमीकेँ बजेलन्हि।

दरबारमे राजा ओकरा पुछलखिन्ह- तोँ कोन काज करैत छेँ?

ओ कहलकन्हि- महाराज, हम मजदूरी करैत छी।

राजा बजलाह- तोँ झूठ बजैत छेँ।

ओ कहलकन्हि- नै महाराज, हम झूठ नै बजैत छी।

राजा तमसा कऽ पुछलखिन्ह- तहन तोरा रोज कतऽ सँ पैंचा लगबैत आ सधबैत छेँ? सहस्त्रमुखक दीप बारि कऽ भोजन कतए सँ करैत छेँ?

ओ मजदूर विनती कऽ कऽ पुछलकन्हि तँ राजा रातुक सभ वृत्तान्त कहलथिन्ह।

ओ मजदूर हँसए लागल आ बाजल- महाराज, हम सभ मजदूरी कऽ कऽ गुजर करैत छी तैयो अपन संस्कारसँ हटि नै सकलौं। राति जे हम अपन पत्नीसँ कहलिऐ से पैंचा लगेबाक अर्थ भेलै जे हमर दू टा छोट धिया-पूता अछि तकरा भोजन करेनाइ आ पैंचा सधेबाक माने भेलै जे बूढ़ माए-बापकेँ भोजन करेनाइ। हमर घरवाली जखन कहलक हँ, तकर बाद हम कहलिऐ सहस्त्रमुखक दीप जरबै लेल। सरकार, हमरा सभकेँ लालटेम-डिबिया कतएसँ एतै? हम सभ तँ एक मुट्ठी पुआर जरा कऽ ओकरे इजोतमे खा लैत छी। हमरा सभ लेल वएह सहस्त्रमुखक दीप भेलै।

सभ दरबारी ओकर जय-जयकार केलक आ राजा ओकरा बहुते रास इनाम देलखिन्ह।

## गप्पक अर्थ

एक बेर एकटा राज दरबारमे नाच होइत रहै, ताइ दिन नाच भरि रातुक होइ, ब्रह्ममुहुर्त सँ कनी पहिने नटुआकेँ औंघी लागि गेलै, ई देखि नाचमे जे मूलगैन रहै से इशारामे कहलकै- गये रे बहुतरे काले संजनम मन रंजनम... आ नटुआ गाबए लागल।



ई सुनि राजकुमार अपन गलाक हार नटुआकेँ इनाममे दऽ देलकै। राजकुमारी अपन गिरमोहार (गिरमलहार) नटुआकेँ इनाममे दऽ देलकै। सभकेँ आश्चर्य भेलै।

जहन पुछल गेलै तँ राजकुमार कहलकै- हमर बाबू (राजा) ८० बरखक बूढ़ भऽ गेलाह तैयो एखन तक हमरा राजा नै बनेलन्हि, आइ हम सोचने रही जे रातिमे तलवारसँ काटि दितियन्हि। किन्तु अइ नटुआक शब्दक अर्थ हमरा लागि गेल, संयम राखै लेल मूलगैन कहलक।

तकर बाद राजकुमारीसँ पुछल गेल तँ ओ कहलथि- हमरा मंत्रीक बेटासँ प्रेम अछि परंतु हमर बाबू (राजा) हमर विवाहक विरुद्ध छथि आ आइ हम दुनू गोटा भागि जैतौं मुदा ई नटुआ हमरा कहलक से हमरा अर्थ लागि गेल, संयम राखै लेल मूलगैन कहलक।

तँ किछु लोक केँ गप्पक अर्थ आ लक्ष्मीनाथ गोसाँइक पाँतिक जँ अर्थ बुझाए, से ने मनुख..

## जहियासँ काल धेलक



एक टा जोतखी जी रहथि। प्रकाण्ड विद्वान। विद्वतामे समस्त राज्यमे हुनकर धाख छलन्हि।

भादव मास, सन्ध्या काल। जोतखी जी लोटा लऽ कऽ पैखाना दिस विदा भेलाह। बुनछेक भेल रहै परंच मेघ लागल रहै। गामक बाहर रस्ता कातमे मिरचैया गाछक झाँखुर लग धोती खोलि बैसि गेलाह। जहाँ बैसला कि बोनमे नुकाएल साँप पाछूमे काटि लेलकन्हि।

जोतखी जी धरफराएल गामक कन्हा भगता लग गेलाह। ताइ दिन तँ गामक भगता सभ बेसी मुर्खे होइत छल। भगता झाड़ए लगलन्हि आ कहन्हि- केहेन बेकूफ छी, कुठाममे साँप काटि लेलक।

जोतखी जी चुप रहला।

भगता फेर हँसैत कहलकन्हि- धुर जोतखी जी, केहेन बेवकूफ छी।

जोतखी जी फेर चुप।

तेसर बेर भगता फेर कहलकन्हि- “ ”।

अइ बेर जोतखी जीकेँ नै रहल गेलन्हि, कहलखिन्ह- हमरा सन विद्वान अइ राजमे नै छौ। परंच जहनसँ ई काल धऽ लेलकए तहनसँ ठीके हम बेवकूफ भऽ गेलौं।

कहैत जोतखी जी विदा भऽ गेलाह।

## *नीक करी तँ पैघ के? बेजाए करी तँ पैघ के?*

एक टा पण्डितजी रहथि, ओइ राज्यक राज कुमारकेँ शिक्षा देनाइ सेहो हुनके काज रहन्हि। पण्डितजी अपन बेटाकेँ सिखबथिन्ह जे *नीक करी तँ पैघ के? बेजाए करी तँ पैघ के? छोट बुद्धिबलासँ संगत नै करी आ जनानीकेँ सभ गप्प नै कहिऐ।*

जहन पण्डितजी बूढ़ भऽ कऽ मरि गेलाह तँ हुनकर बेटा राज पण्डित भेलाह। ओइ राजाकेँ बुढ़ारीमे एकटा बेटा भेलन्हि। राजकुमार जहन ५-६ बरखक भेलाह तँ पण्डितजीसँ शिक्षा ग्रहण करए लगलाह।



एक दिन पण्डितजीकेँ बुझेलन्हि जे बाबू सभ दिन कहैत छलाह *नीक करी तँ पैघ के? बेजाए करी तँ पैघ के? छोट बुद्धिबलासँ संगत नै करी आ जनानीकेँ सभ गप्प नै कहिऐ।* से एकरा भजेबाक चाही .... एक दिन ओ एकटा बड़का टा सन्दूक लेलन्हि, ओइमे खेबा-पिबाक व्यवस्था कऽ देलखिन्ह आ राजा बेटाकेँ कहलखिन्ह जे अहाँ अइ सन्दूकमे बन्द भऽ जाउ आ कतबो कियो सोर पाड़ए तँ नै बाजब। जाबे हम नै कही तावत नै निकलब।

पण्डितजी बाहर एलाह आ एकटा चक्कू लेलन्हि आ चक्कूक संग अपन हाथमे लाल रंग लगा लेलन्हि आ हड़बड़ाइत पंडिताइनकेँ कहलथिन्ह जे हमरा बुते जुलूम भऽ गेलै, चक्कूसँ *करची कलम* बनबैत काल उछट्टि कऽ राजकुमारक नरेटी कटा गैलै। ई सुनि पंडिताइन छाती पीटऽ लगली। हरेलन्हि ने फुरेलन्हि पंडिताइन अपन पड़ोसिया चौकीदारक कनियाँ, जिनकासँ पंडिताइनकेँ बड़ अपेछितारे छलन्हि, दौड़ कऽ कहऽ गेलखिन्ह। चौकीदारनी दौड़ कऽ खेतमे हर जोतैत चौकीदारकेँ कहलकै। चौकीदार ने यएह सोचलक ने वएह, सोझे आबि पंडितजीक डांड़मे रस्सा लगेलक आ राजदरबारमे लऽ गेल। चौकीदारकेँ भेलै जे अइ माथे प्रोमोशन भऽ जाएत।

राजदरबारमे सभ आश्चर्यचकित भऽ गेल? राजा कहलखिन्ह जे गुरुकेँ

रस्सामे बान्हि अनर्थ केलैं। तुरत हिनकर रस्सा खोल।

चौकीदार- महाराज, ई बड़का पैघ गलती केलन्हि।

राजा- कतबो पैघ गलतीक लेल गुरुकेँ रस्सासँ बान्हल नै जा सकैत छै। जल्दी हिनका खोल।

चौकीदार खोलि देलकन्हि, तहन राजा कहलखिन्ह- आब कह जे ई की केलन्हि?

चौकीदार बाजल जे ई राजकुमारक हत्या कऽ देलन्हि। सभ सन्न। सभ दरबारीमे खुसुर-फुसुर होमए लागल। कियो कहै जे हिनका शूलीपर चढ़ा दे तँ कियो कहै जे भकसी झोंका दियन्हु। राजा बड़ी काल सोचलन्हि आ अंतमे फैसला लेलन्हि आ पण्डितजी केँ कहलखिन्ह- हमरा जीवनमे अइसँ पैघ अनर्थ नै हएत। अहाँ बड़ पैघ अपराध केलौं परंतु अहाँ गुरु छी। तथापि अहाँकेँ सजा भेटत। हम अहाँकेँ सजा दैत छी जे अहाँ सपरिवार चौबीस घंटाक भीतर हमर राज्यसँ निकलि जाउ।

सभा समाप्त भऽ गेल। सभ दरबारीमे खुसुर-फुसुर शुरु भऽ गेल। समुच्चा राज्यमे हाहाकार मचि गेल।

पण्डित जी गामपर एलाह आ बक्सामे सँ राजकुमारकेँ निकालि आंगुर पकड़ि राजदरबार दिस बिदा भेलाह।

सभ आश्चर्यचकित भऽ गेल।

पण्डित जी राजदरबार पहुँचलाह। सभ अचम्भित।

राजा पुछलखिन्ह- की बात छिऐ पण्डित जी?

पण्डित जी बजलाह- सरकार, हमरा जनमहिसँ बाबू कहैत छलाह जे नीक करी तँ पैघ के? बेजाए करी तँ पैघ के? छोट बुद्धिबलासँ संगत नै करी आ जनानीकेँ सभ गप्प नै कहिऐ। से गप्पकेँ हम भजेलौं अछि।

राजा बजला- तँ की प्राप्ति भेल?

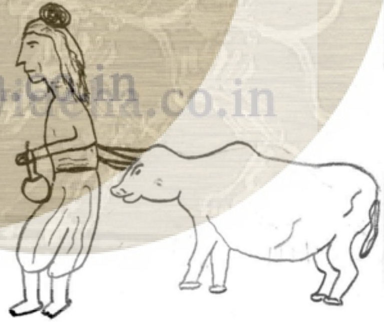
अइ राज्यमे सभसँ पैघ अहाँ आ अहाँक अइसँ पैघ अनर्थ किछु नै भऽ सकैत अछि तथापि अहाँ हमरा मर्यादानुकूल दण्ड देलौं। तैँ ई तँ ठीके जे नीक करी तँ पैघ के आ बेजाए करी तँ पैघ के? दोसर अइ चौकीदारनीसँ पण्डिताइनकेँ बड़ अपेक्षितारे छलन्हि आ चौकीदार सेहो हमरा बड नमस्कार पात करैत छल। समय पड़लापर ओ ई बात नै बुझऽ लागल, सोझे पकड़ि लेलक, बुझलक जे अही माथे प्रोमोशन भऽ जाएत। तँ ठीके बाबू कहैत छलाह जे छोट बुद्धिबलासँ संगत नै करी।

तेसर- हमर पण्डिताइन किछु सोचऽ नै लगली आ सोझे चौकीदारनीकेँ कहए गेलखिन्ह। तँ ईहो ठीक जे जनानीकेँ सभ गप्प नै कहिऐ।

बाबूक सभ गप्प मील गेल। लिअ अपन बेटा आ हम चललौं।

*(बौआ-बुच्ची, ई पुरान खिस्सा छै जखन शिक्षा खास कऽ स्त्री-शिक्षाक अभाव रहै। आब परिस्थिति सभ ठाम, सभ वर्गमे बदलल छै। -सम्पादक।)*

## *पढ़बे टा नै करी ओकरा गुनबो करी*



एक टा आदमी छलाह। हुनका आध्यात्मिक किताब पढ़ैमे बड़ मोन लगैत रहन्हि। आस्ते-आस्ते ओ बाबाजी भऽ गेलाह। हुनका नान्हिये टा मे किताबमे पढ़ल रहन्हि जे कण-कणमे भगवान बसैत छथि आ सएह सत मानि कऽ ओ जीवन कटैत रहलाह।

एक बेर एक टा गाममे बड़ मरखाह साँढ़ आबि गेलै। भरि गाममे तेहेन ने उछन्नर देने छल जे गामक लोक ओइ साँढ़क डरे ओ रास्ता छोड़ि देने छल।

एक दिन ई महात्मा जी ओइ गाम गेलाह। भरि दिन घुमलाक बाद साँझमे जखन घुमल जाइत रहथि तँ वएह रस्ता धरऽ लगलाह। ओहू ठाम नेना भुटका सभ खेलाइत रहै। बाबाजीकेँ ओइ रस्ते जाइत देखि नेना भुटका सभ मना केलकन्हि। बाबाजी कहखिन्ह जे रे बच्चा तूँ सभ की जाने गेलैं, कण-कणमे भगवान बास करैए, हमरामे, तोरामे, ओइ साँढ़मे, सभमे... आ जखन साँढ़मे भगवान अइ तँ भगवान हमरा कोना मारत? हम तँ ओकर भक्त छी।

नेना भुटका सभ कहलकन्हि- तहन जा तोरा भगवान बचेथुन्ह।

बाबाजी आगू बढ़लाह। साँढ़ दूरेसँ देखि नांगरि उठा दौड़ल आ बाबाजीकेँ सिंघपर उठा आरिक कात मे रगड़ऽ लागल। बाबाजी बाप-बाप करए लगलाह। जावत लोक सभ लाठी-भाला आदि लऽ कऽ दौगल तावत बाबाजी बेदम भऽ गेलाह। हुनकर मृत्यु भऽ गेल छलन्हि।

मुइलाक बाद जहन भगवानसँ भेँट भेलन्हि ओ बाबाजी भगवानसँ पुछलखिन्ह तँ भगवान जबाब देलखिन्ह- बाउ, किताबमे पढ़बे टा नै करू ओकरा गुनबो करियौ। जँ सभमे हम (भगवान) रहैत छी तँ ओ नेना भुटका सभ जे अहाँकेँ मना केलक ओकरोमे तँ हम (भगवान) छलिऐ। तेँ खाली पढ़बे टा नै करियौ, ओकरा गुनबो करियौ।

## अकिलक मोल

एकटा राज्यमे वृद्ध राजा छलाह। हुनकर मंत्रीमण्डलमे सभसँ बेसी दरमाहा एक टा बुरहा मंत्रीजीकेँ छलन्हि। दरबारक किछु अपेक्षाकृत युवा मंत्रीगणकेँ एकटा बात अखरैत छलन्हि जे सभटा काज हम सभ करैत छी तैयो हमरा सभक कम दरमाहा आ ई बुरहा मंत्री कोनो काज नै करैत छथि, खाली राजा साहेब लग गप्प दैत रहैत छथिन्ह, तैयो ओ सभसँ बेसी दरमाहा पबैत छथि संगहि राजा साहैब हुनकर गप्प बेसी मानबो करैत छथिन्ह। अइ बातपर सभ दरबारी सभमे घोल-फचक्का होमए लागल। एक दिन सभ मिलि कऽ भरल राजदरबारमे अइ प्रश्नकेँ उठौलक। राजा साहेब बड़ गम्भीर भऽ कहलथिन्ह जे काल्हिए हम एकर प्रमाण देब। दरबार खतम भऽ गेल।



भोर भेने दरबार लागल। राजा प्रतिवादी युवा मंत्रीकेँ आ बुरहा मंत्रीकेँ अलग अलग कमरामे बैसा देलथिन्ह। सभसँ पहिने प्रतिवादी युवा मंत्रीकेँ बजेलाह आ कहलखिन जे जाउ आ राजमहलक पछुआरमे नारक टाल छै ओइमे एकटा पिलिनियाकेँ बच्चा भेल छै, कने देखने अबियौ।

युवा मंत्री गेलाह आ कने कालमे घुमि कऽ आपस एलाह।

राजा पुछलखिन्ह- देखलिऐ?

युवा मंत्री- जी महाराज, ठीके कुक्कूरकँ बच्चा भेल छै महाराज।

राजा- कएक टा छै?

युवा मंत्री- जा, से तँ गनबे नै केलिऐ।

युवा मंत्री फेर दौड़ कऽ गेलाह आ आबि कऽ कहलखिन- महराज, तीन टा चितकबरा, दू टा गोला आ एक टा उज्जर छै।

राजा- ओइमे कएक टा पिलिनिया आ कएक टा पिल्ला छै?

युवा मंत्री- जा से फरिछा कऽ देखबे नै केलिऐ।

युवा मंत्री फेर दौड़ कऽ गेलाह आ आबि कऽ कहलखिन- महाराज, पाँच टा पिलिनियाँ आ एक टा पिल्ला छै।

राजा- बिख लगैबला कएक टा छै आ बिना बिखबला कएक टा छै?

युवा मंत्री फेर दौड़ कऽ गेलाह आ आबि कऽ कहलखिन- महाराज, तीन टाकँ बिख लगतै आ तीन टाकँ बिख नै लगतै।

राजा- कएक टा पिल्लाकँ बिख लगतै आ कएक टा पिलिनियाकँ बिख लगतै?

युवा मंत्री फेर दौड़ कऽ जेबाक लेल बढ़ए लगला तँ राजा रोकि देलखिन आ कहलखिन- बैस जाउ। युवा मंत्री बैस गेलाह।

तकर बाद राजा बुरहा मंत्रीकँ दरबारमे बजेलन्हि आ कहलखिन जे मंत्रीजी राजमहलक पछुआरमे जे नारक टाल छै ओइमे एकटा पिलिनियाँकँ बच्चा भेल छै, कने देखने अबियौ।

बुरहा मंत्री गेलाह आ कने कालमे घुमि कऽ आपस एलाह। राजा पुछलखिन्ह- मंत्री जी देखलिऐ?

बुरहा मंत्री- जी महाराज, देखलिऐ। गोला पिलिनियाकँ करीब पाँच-छः दिन पहिने बच्चा भेल हेतै। तीन टा चितकबरा, दू टा गोला आ एक टा उज्जर रंगक छै। पाँच टा पिलिनियाँ आ एक टा पिल्ला छै। तीन टाकँ बिख लगतै जइमे दू टा पिल्ला आ एक टा पिलिनियाँ आ बाँकी तीन टाकँ बिख नै लगतै। लगैत अछि जे...

राजा बीचमे रोकि देलखिन आ दरबारी सभसँ पुछलखिन जे अहाँ आब बुझलिऐ जे बुरहा मंत्रीजी कँ सभसँ बेसी दरमाहा किए छै? आबो ककरो कोनो कोनो प्रश्न?

सभ दरबारी महाराजक जयकार कऽ उठल आ युवा मंत्रीक मुँह लटकि गेलन्हि।



*ज्योति सुनीत चौधरी*

## *ध्वनि-प्रतिध्वनि*

ध्वनि आ प्रतिध्वनि नाओंक दूटा जुड़बा बहिन छली जे कि पहाड़ी इलाकामे रहै छली। ध्वनि स्वभावसँ बड़ड शान्त आ निर्मल छलथि जखन कि प्रतिध्वनि हुनकर विपरीत बहुत चञ्चल आ उपद्रवी छलथि। ध्वनि हमेशा घरमे अपन माएकेँ काजमे मददि करै छलथि। प्रतिध्वनि पहाड़ीमे एम्हर-उम्हर भागैत रहैत छलथि। एकदिन प्रतिध्वनि बाहर घुमै छली तँ हुनका एकटा राजकुमार देखेलनि। ओ राजकुमार हुनका बड़ड नीक लगलनि। प्रतिध्वनि ओइ राजकुमारसँ खूब दोस्ती केली आ ओकरा घुमाबए फिराबए लगली, कारण ओ राजकुमार ओइठाम ककरो अतिथि बनि कऽ आएल छला। राजकुमार हुनकासँ बड़ड प्रसन्न छला।

दिन बीतल आ प्रतिध्वनि ओइ राजकुमारसँ बिआहक मोन बनाबए लगली मुदा एकदिन जखन ओ घर गेली तँ देखली जे ओ राजकुमार हुनकर बहिनकेँ बिआहक प्रयोजनसँ देखए लेल आएल छलनि।

राजकुमार हुनकर बहिन ध्वनिकेँ पसन्द कए बिआह कऽ लेलाह। प्रतिध्वनिकेँ बहुत पैघ आघात पहुँचल छलनि। हुनका बहुत क्षोभ भेलनि जे लोक हुनकर दुःख नै बुझलकनि। ओ पहाड़ीसँ कूदि कऽ अपन प्राण तिआगि देली। मुदा हुनकर आत्माकेँ मुक्ति नै भेटलनि। हुनकर आत्मा पहाड़क खाधिमे अखनो भटकैत रहै छन्हि। अखनो जँ कियो पहाड़क खाधिमे किछु जोरसँ बाजैत अछि तँ प्रतिध्वनि ओइ आवाजकेँ बेर-बेर बाजै छथि।

## *अदृश्य बन्धन*

स्वतंत्र विचारक स्वामिनी माया अपन पेशाक प्रति अत्यधिक समर्पित एक बाल्य मनोविज्ञानक विशेषज्ञा छली। ऐ विषयमे हुनका बच्चेसँ लगाव छलनि आ हुनकर अपन परिवार सेहो बड्ड आधुनिक विचारक छलनि। माता-पिताक दिससँ कहियो कुनो जोर नै छलनि, ने व्यवसायक चयन बेरमे आ ने बिआहक निर्णयमे।

ओना मायाक एक बड्ड नीक पुरुष मित्र छलखिन जे ने मात्र हुनकर, वरन हुनकर परिवारक सेहो बहुत स्नेही छलथि। मुदा ई मायाक अपन व्यवसायक प्रति अनुराग आ अपन निजी महत्वाकांक्षाक उन्माद छलनि जे ओ अपन एहेन पुरान आ घनिष्ठ मित्र द्वारा आएल बिआहक प्रस्तावकेँ अस्वीकार कऽ एकटा क्रेश -छोट बच्चा सभकेँ दिनमे देखभाल करैबला संस्था- मे नोकरी पकड़ली। विषय विशेषमे पारंगत मायाकेँ कार्यमे अपन निपुणता प्रमाणित करए मे कनियो देरी नै लगलनि। ओ अपन क्रेशक सभ बच्चाक व्यक्तिगत व्यवहारपर विशेष धियान राखै छलथि आ आवश्यक परामर्श अभिभावक सभकेँ दै छलथि। बच्चा सभक अभिभावक लग कोनो समस्या नै छल जकर उपाय हिनका लग नै छलनि। ऐ तरहेँ बहुत शीघ्र हुनका अपन कार्यक्षेत्रमे प्रसिद्धि आ प्रशंसा भेट गेलनि। आस्ते-आस्ते अपन कार्यमे अभ्यस्त भेलापर मायाकेँ अपन निजी जीवनक विषयमे सोचैक समए सेहो भेटए लगलनि।

एक मनोवैज्ञानिकक रूपमे तँ ओ अपन अस्तित्व बना लेने रहथि मुदा जखन कखनो ओ बच्चा सभसँ आन्तरिक प्रेम स्थापित करए कऽ प्रयास करै छली, हुनका आन हुअ कऽ आभास आबि जाइत छलनि। दिन भरि बच्चाक भोजनक पौष्टिकता, रहन-सहनक शुद्धता आ खेलमे मस्तिष्कक विकासक समावेशक धियान राखैमे माया कतेक श्रम करैत छथि मुदा जखन बच्चा सभकेँ ओकर अभिभावक लेबऽ आबै छल तखन बच्चा सभमे एकटा अद्भुत खुशी बुझाइत छल। अभिभावकोक कहब छल जे अपन बच्चाकेँ पाबि सभटा थकान दूर भऽ जाइत अछि। बच्चा सभक मुँहपरक ओ खुशी जे ओकरा सभमे अपन माता-पिताकेँ देखलापर आबैत छल से खुशी देबाक सेहन्ता मायामे जागि गेल रहनि। बहुत सोच विचारक बाद ओ निर्णय केली जे अपन माता-पितासँ अपन मित्रक जानकारी ली। ज्ञात भेलनि जे ओकर कुनो खोज

खबरि नै अछि। मायाकेँ विचार एलनि जे एक बच्चाकेँ गोद ली। मुदा सभ कहलकनि जे एनामे बच्चाकेँ पिताक सुख नै भेटतनि। तखन माया अपन माता-पितासँ अपन बिआह लेल एहेन वरक चएन करए कहलखिन जे एक बच्चाकेँ गोद लेबएसँ मना नै करनि; अन्यथा ओ ओहिना बच्चाकेँ गोद लेती कारण दुनियाँमे कतेको बच्चा बिना माता-पिताक सेहो रहैत अछि।

माता-पिता अपन कार्यमे लागि गेला। किछु दिन बाद 'वेलेन्टाइन्स' दिवसपर मायाक अभिभावक हुनका अपना लग बजेलखिन। माया अपन कार्यसँ कम्मे दिनक छुट्टी लऽ अपन घर गेली। ओतए हुनकर अभिभावक घरपर पार्टी रखने रहथिन जइमे हुनका एक टा बढ़िया आश्चर्यजनक उपहार भेटलनि। मायाक पुरान मित्र ओइ पार्टीमे आएल छलनि जे अखनो मायासँ बिआह लेल तैयार छलनि। अतबे नै, ओ मायाक जे विचार रहनि, अनाथ बच्चाकेँ गोद लऽ अपन बनाबक, तहूसँ सहमत छलनि। सभ बेर माया अपन माता-पिताकेँ *वेलेन्टाइन्स डे* पर किछु उपहार दैत छलखिन मुदा ऐबेर हुनका अपन माता-पितासँ अमूल्य उपहार भेटल रहनि। अपन कार्य हेतु समर्पित माया कखन गृहस्थीक अदृश्य बन्धनमे बँधि गेली से हुनको नै बुझेलनि।

---

## नानीक खिस्सा

---

हम जखन चारि पाँच वर्षक रही तखनसँ मोन अछि जे ई खिस्सा नानी सुनाबै छलथि। व्याहक बाद बहुत दिन हुनकासँ भेँट नै भेल। बादमे जखन भेटली तँ हम फेर कहलियनि खिस्सा सुनाबए, तँ हुनका खूब हँसी लगलनि। कहलनि जे आब तँ बाउ हइ तूँ अपन बच्चाकेँ सुनेबहीं। हम बिसरि गेल रही मुदा नब्बेसँ बेसी वर्षक अवस्था भेलाक बादो हुनका सभटा खिस्सा मोने छलनि। हम बस कोशिश कऽ रहल छी हुनके जकाँ कहैक।

## *१. भलुनिया मौसी*

---

सुखनी आ दुखनी नाओंक दू बहिन छली। नाओंक अनुरूपे सुखनीक बिआह खूब सम्पन्न घरमे भेलनि आ दुखनीक गरीब घरमे। सुखनीक स्वभाव घमण्डी आ टेढ़ छलनि आ दुखनीक बड़ड शालीन आ मृदुल। सुखनीकेँ अपन बहिनक प्रति कखनो दया नै आबै छलनि। बहिनक बच्चा सभ जखन

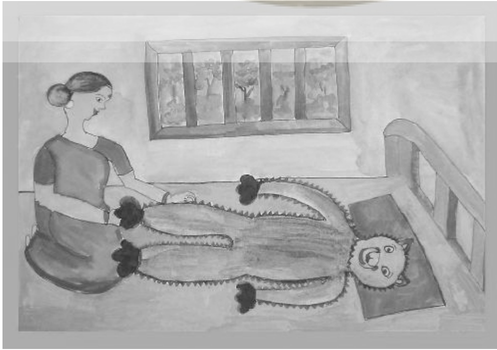
कखनो किछु मांगै लेल आबैत छलनि तँ ओ दुत्कारि कऽ भगा दइ छलखिन।

एक दिन दुखनी फर-फूल ताकै लेल बोन दिस चलि गेली। जाइत-जाइत एकटा घर देखेलनि। खिड़कीसँ भीतर तकली तँ एक टा दुर्गन्ध गन्हाइत भलुनियाकेँ सूतल देखलनि। ओतएसँ पड़ाइते छली आकि ओ भलुनिया देखि लेलकनि आ अपन कर्कश बोलीमे पुछलकनि “के छैं गै”।

आब सुखनी डेरा तँ खूब गेल रहथि मुदा कोनो रस्ता नै छलनि। तुरन्त हँसए लगली आ बड़ड आपकतासँ जबाब देलनि- “नै चिन्हलैं गइ मौसी, हम दुखनी। बड़ड मोन लागल छल तोरा देखै लेल।”

भलुनिया फेर कहलकनि “हम तँ ठीके नै चिन्हलियौ। एतँ की करै छलैं?”

“हम देखै छलौं तोहर घर, कतेक नीक कोठा छौ। मोन होइत अछि तोहर खूब सेवा करियौ। अतेक दिन बाद भेटलैं। कहै ने, की काज कऽ दियौ।" दुखनी जबाब देलखिन।



अतेक नीक बोलीसँ भलुनिया खुश भऽ गेल। दुखनीकेँ अपन घर घुसेलक। अन्दर खूब बड़का घर छल। एक कोठली सोना-चाँदी-हीरा-असर्फीसँ भरल छल तँ एक कोठली कपड़ा लत्ताक ढेर छल। भनसा घर तरह-तरहक पकवाऩ, फल आदिसँ भरल छल। दुखनी पूरा घर नीप कऽ साफ कऽ देलखिन। तकर बाद भलुनियाक सेवा करए लगली। तेलसँ मालिस कऽ खूब जाँति देलखिन। भलुनिया बड़ड प्रसन्न भेल आ दुखनीकेँ खूब समान पाती संगे विदा केलक।

पूरा ठेला गाड़ी सोना-असर्फी कपड़ा-लत्ता आ पूरी-पकवानसँ भरि कऽ



दुखनी घर पहुँचली। बच्चा सभकेँ पहिल बेर भरि पेट भोजन करेलथि। फेर अपन बेटीकेँ कहलखिन जे मौसीसँ तराजू लेने आ। सिखा देलखिन जे भलुनिया दऽ किछु नै कहियनि। दुखनीक बेटी जखन सुखनी लग तराजू माँगए गेल तँ सुखनीकेँ आशंका भेलनि। ओ तराजूक पलड़ाक नीचाँ गोंद लगा देलखिन। दुखनी पूरा सोना-असर्फी सभ तौल कऽ तराजू लौटबा देलखिन। एकटा असर्फी आ किछु सोना तराजूमे सटि कऽ सुखनी लग पहुँचि गेलनि। आब तँ सुखनी दौगल गेली बहिन लग। बड़ड निहौरा करै लगलखिन तँ दुखनी सभटा बता देलखिन।

लोभी सुखनी सेहो गेली बोनमे भलुनिया लग। फेर ओहिना भलुनिया देखि लेलकनि आ पुछलकनि तँ ई कहलखिन जे हम दुखनी छी। भलुनिया तुरत अन्दर बजा लेलकनि। सुखनी भीतर गेली आ सभसँ पहिने ठेलामे घर लऽ जाइ लेल समान पाती बान्हि लेलनि। फेर भलुनिया लग एली तँ ओकर महकैत शरीर नै बर्दाश्त भेलनि से बाजऽ लगली -“गए मौसी, गए मौसी। तोहर देह केहेन महकै छौ गए। घर केहेन घिना कऽ रखने छैं गए, एनामे केना रहल होइ छौ।”



एतेक सुनक छलै आकि भलुनियाकेँ तामस उठलै। ओ उठल आ सुखनीक कण्ठ मचोड़ि कऽ माइर कऽ खा गेल।

## २. सिन्नुरक पुल

एकटा ब्राह्मण छलथि जे भीख मांगि कऽ अपन दिन काटैत छलथि। एक घर भीख मांगैत छलथि तैयो एक सेर चाउर होइत छलनि आ चालीस घर मांगैत छलथि तैयो एके सेर होइत छलनि। हुनकर संगे एक टा कुक्कुर आ एक टा बिलाड़ि सेहो रहैत छलनि। कुक्कुरमे आसपासक खतरा देखैक शक्ति छलै आ बिलाड़िमे भविष्य देखबाक दिव्यदृष्टि छलै।

एक दिन ब्राह्मण भीख लऽ कऽ लौटि रहल छलथि तँ बिलाड़ि कहलकनि जे मालिक अहाँकँ काल्हि बड धन सम्पत्ति भेटत, ताबे कुक्कुड़ भौंकऽ लागल। मुड़ि कऽ देखलनि तँ एकटा नाग साँप कादोबला खत्तामे खसि पड़ल छलै। ब्राह्मण ओइ नागकँ एकटा डारिक सहारे बाहर निकालि देलखिन। ओ नाग साधारण सर्प नै छल। ओ ब्राह्मणकँ एकटा मणिबला अंगूठी देलकनि आ कहलकनि जे अहाँ भोरेमे नहाकऽ ठाँउ कऽ पूब मुँहँ बैस कऽ ऐ अंगूठीक पूजा करब तकर बाद जे मांगब से भेटत। ब्राह्मणकँ विश्वास तँ नै भेलनि तैयो ओ लऽ कऽ विदा भेला।

भोरे जखन ब्राह्मणक नींद खुजलनि तँ मोन भेलनि जे अंगूठीकँ जाँचल जाए। सभटा बताएल तरीकासँ पूजा कऽ ओ अपना लेल एकटा सुन्दर महल आ खूब धन सम्पत्ति मंगलनि। सभटा पूरा भऽ गेलनि। तकर बादसँ ब्राह्मणक दिन बदलि गेलनि। जखन जे जरूरत से मांगि लैत छलथि। एक दिन किछु लोक ढिंढोरा पीट आएल जे जमीन्दार साहब कहलखिन हैँ जे हुनका अपन सुन्दरी बेटी लेल एकटा वर चाहियनि। जे जमींदारक घरसँ शुरू कए अपन घर तक सिन्नूर पुल बनाओत तकरासँ ओ अपन बेटीक बिआह करेथिन। गछलाक बाद नै बनेलासँ सजा भेटत। ई ब्राह्मण गछि लेलखिन। विदा भेला सेवक सभ संगे। कुक्कुर कहलकनि- अंगूठी हम अपन मुँहमे लऽ कऽ जाएब। ब्राह्मण मानि गेला। बिलाड़िकँ किछु अनर्थ होइक आशंका भेलै से ओहो संगे लागि गेल।

रस्तामे एकटा पोखरिक कात सभ विश्राम लेल रूकला। कुक्कुरकँ पोखरिमे अपन प्रतिबिम्ब देखेलै। ओ ओकरा अपन संगी बूझि उत्तेजित भऽ कऽ भौंकऽ लागल। एनामे अंगूठी पोखरिमे खसि पड़लै। आब ब्राह्मण बहुत दुखी भऽ गेला। सेवककँ कहलखिन जे आब हमरासँ नै हएत पुल बनाओल। सेवक सभ हुनका कैद कऽ लेलकनि आ जमींदार लग विदा भेल। बिलाड़ि

ओतै रूकि गेल। कुक्कुर कारण पुछलकै तँ कहलक जे काल्हि एतए माछ मारल जाएत। अंगूठी एकटा माछ गीर गेल अछि। जखन मल्लाह सभ माछक भोंटि फेकत तँ हम ओइमे सँ अंगूठी निकालि लेब। कुक्कुर सेहो रूकि गेल।

भोरे सभटा ओहिना भेलै जेना बिलाड़ि कहने रहए। बिलाड़िकेँ इम्हर उम्हर घूमैत देखि मल्लाह सभटा माँछक भोंटि ओकरा दिस फेक देलकै। कुक्कुर बिलाड़ि दुनू सभटा भोंटि चिबाबए लागल। आखिर एकटामे अंगूठी भेटलै। दुनू अंगूठी लऽ कऽ जमीन्दारक कोठा दिस विदा भेल। ओतए ब्राह्मण कारावासमे बन्द छलथि। बिलाड़ि घुसिया कऽ गेल आ अंगूठी देलकनि। ब्राह्मणक जानमे जान एलनि। तुरन्त सेवक सबहक द्वारा जमींदारकेँ खबरि देलखिन। जमींदार सेवक सभकेँ बढ़ियासँ ठाँउ करै लेल कहलखिन। भोरे ब्राह्मण नहाकऽ पूब दिस बैस कऽ अंगूठीक पूजा केलनि आ फेर सिन्नुरक पुलक मांग केलखिन। पुल तुरत बनि गेल।

जमींदार प्रसन्न भेला आ अपन बेटीसँ ओइ ब्राह्मणक बिआह करा देलखिन। फेर ब्राह्मण अपन पत्नी आ कुक्कुर-बिलाड़ि लऽ कऽ सिन्नुरक पुले बाटे अपन महल आबि गेला आ खुशी-खुशी रहए लगला।

## ३. एक राजाक सात मेहरी

एकटा राजा रहथि जिनकर सात टा रानी रहनि। राजाक छोटकी रानी अपन सरल स्वभाव द्वारे सभसँ बेसी प्रिय रहनि जइ कारणे बाँकी छौओ रानीकेँ ओकरासँ बड़ड डाह होइ छलै। राजाकेँ एकोटा संतान नै छलनि तँए संतान प्राप्ति लेल ओ यज्ञ केलनि। साधु कहलकनि जे अहाँ आमक गाछमे बाम हाथे झट्टा फेकू आर दहिना हाथे आम लोकू, तखन ओइ आमकेँ सातो रानीकेँ कहियनु खाइ लेल। एना केलासँ अहाँकेँ शीघ्र पुत्र प्राप्ति हएत। राजा सएह केला आ लोकल आमकेँ बड़की रानीकेँ देलखिन आ कहलखिन जे सभ बाँटि कऽ खा लिअ।

बड़की रानी आमकेँ छोटकी रानीकेँ नै देलखिन आ सभटा आम छहो रानी मिलि कऽ खा गेली आ आँठी खोंइचा छाउरक ढेरपर फेक एली। जखन छोटकी रानीकेँ पता लगलनि तँ ओ छाउरक ढेरपर सँ आँठी खोंइचा आनि कऽ ओकरा धो कऽ चाटि गेली। समए बीतल, छहो रानीकेँ किछु नै भेलनि आ छोटकी रानी गर्भवती भऽ गेली। राजाकेँ ज्ञात भेलनि तँ ओ तुरन्त

सभ सेविका सभकेँ छोटकी रानीक बेसी धियान राखैक निर्देश दऽ देलखिन। ऐ सँ आन रानी सभ आरो तमसा गेली। जखन छोटकी रानीकेँ प्रसव भेलनि तँ बड़की रानी हुनकर नवजात बेटाकेँ छाउरक ढेरपर फेकवा देलखिन आ कान-खापैड़ देखा कऽ कहलखिन जे छोटकी रानीकेँ यएह संतान भेलनि। छोटकी रानी खूब कानए लगली। राजा सेहो बड्ड निराश भेला।

उम्हर एकटा सियारिन, जे राहड़िक खेतमे रहै छल, रोज राजमहलक पछुआड़मे छाउरक ढेरमे खाना ताकऽ आबै छल। ओ जखन ओइ बच्चाकेँ देखलक तँ सभ बात बूझि गेल। ओ सियारिन ओइ बच्चाकेँ अपन खोहिमे लऽ गेल आर अपन दूध पिया कऽ पालय लागल। राजमहलसँ चोरा चोरा ओकर पूरा पहिरन ओढ़न राजकुमार जकाँ राखने छल। एकटा सेविकाकेँ ई बात ज्ञात भऽ गेल। ओ बड़की रानीकेँ ई सभटा गप्प पाइक लोभमे कहि देलक। बड़की रानीकेँ भेलनि जे सियारकेँ मरबा देब तँ बच्चा फेर अनाथ भऽ जाएत आ कुनो जानवर ओकरा खा जेतै। ओ तुरन्त बेमार हुअए कऽ भग्गल कऽ लेलनि। राजा पुछलखिन जे की भेल तँ कहलखिन जे हम बड्ड बेमार छी। हमरा राहरिक खेतबला सियारक कलेजी तरि कऽ खाए पड़त नै तँ हम मरि जाएब। राजा तुरन्त अपन सैनिककेँ कहलखिन जे ओइ सियारकेँ माइर कऽ आनू। सैनिक सभ सियारकेँ माइर कऽ बड़की रानी लग हाजिर केलकनि, रानी फेर प्रसन्न आ स्वस्थ भऽ गेली।

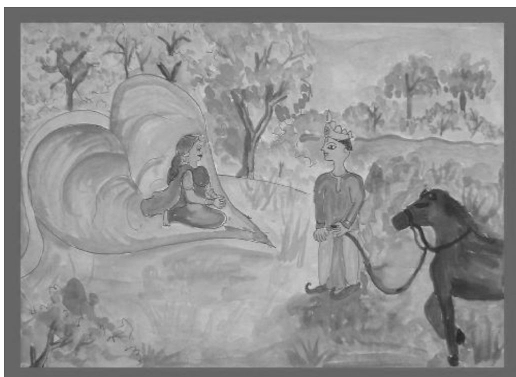
ओइ बच्चाक औरदा अखन बाँकी छलै। एकटा चिल्होड़ि जे नदीक कातक गाछपर घर बना कऽ रहैत छल से ओइ बच्चाकेँ रहड़िक खेतसँ उठा अपन घोंसलामे आनि कऽ पोषण करऽ लगलै। ओकर पहिरन देखि कऽ ओ चीन्हि गेलै जे ई राजकुमार अछि। ओइ घाटपर राजमहलक कपड़ा सभ धुआइत छल। चिल्होड़ि सेहो उम्हरसँ कपड़ाकेँ चोरा कऽ बच्चाकेँ पहिराबए लागल। ओ जगह-जगहसँ खाना लुझि कऽ बच्चाकेँ आनि कऽ दै छलै। आब बच्चा कनी ठेकनगर भऽ गेल छल, तँ चिल्होड़ि ओइ बच्चाकेँ एकटा फकड़ा सिखेलकै आ कहलकै जे ई गाबि-गाबि कऽ तूँ लोक सभसँ भीख मांग। बच्चा से करए लागल।

जखन ई गीत राजमंत्रीक कानमे गेलनि तँ ओ राजाकेँ कहलकनि जे राजा ई गीत तँ अहींक खिस्सा लागैत अछि। अहाँक छोटकी रानीकेँ बच्चा भेल रहनि। सभ कहलक कान-खापड़ भेलनि से लागैत अछि झूठ अछि। राजा बच्चाकेँ राजमहल बजेलनि। कहलखिन जे अपन गीत गाबै। बच्चा

गौलक- “एक राजा कऽ सात मेहरी, छोटकी मेहरी मोर महतरिया, रहड़िक खेतमे फेक देली, चिल्होरि पाओल, हम समचरिया, भिक्षा दे मैया।” राजाक माथा ठनकलनि। ओ सेविका सभकेँ डरा कऽ सभ बात ज्ञात केलनि। रहड़िक खेत तकक खिस्सा सेविका कहलकनि आ बाँकी ओइ चिल्होड़क सिखाएल गीतसँ बुझा गेलनि। बिना देर केने राजा छौहो रानीकेँ मृत्युदण्ड देलखिन आ चिल्होड़िकेँ इनाम देलखिन। अपने छोटकी रानी आर राजकुमार संगे महलमे खुशी खुशी रहए लगला।

## ४. पन्साया कुम्मरि

एक दिन एकटा राजा शिकारपर गेला। जाइत-जाइत ओ एक जगह पहुँचला जतए एकटा विशाल सुन्दर पानक पात छल। राजा जइने ओ पात तोड़ै लगला आकि ओ पात एकटा सुन्दर राजकुमारीमे बदलि गेल। राजा मोहित भऽ गेला। ओइ राजकुमारीक नाओं पन्साया कुम्मरि छल। राजा पन्साया कुम्मरिसँ बिआह कऽ हुनका अपन महलमे आनि लेलनि आ खुशीसँ रहए लगला।



किछु दिनक बाद राजा फेर शिकारपर गेला। फेर जाइत-जाइत ओ थाकि गेला तँ एकटा महल देखेलनि। राजा ओइ महलमे प्रवेश केलनि तँ ओकर वैभव देखि चकित भऽ गेला। अन्दर जाइते नौकर चाकर हुनकर सत्कारमे लागि गेल। राजा बहुत प्रसन्न भेला। तखन एकटा राजकुमारी एलखिन आ कहलखिन जे जँ अहाँकेँ हमर सत्कार नीक लागल तँ हमरासँ बिआह करू। राजा फँसि गेला। ओइ राजकुमारीक नाओं छल पहुनाइ।



राजा पहुनाइसँ बिआह कऽ ओइ महलमे रहय लगला।

समए बीतल। राजाक घर नै घुरलासँ पन्साया कुम्मरि चिन्तित रहए लगली। ओ सैनिक पठेली चारू दिस, राजाक खोजमे। सैनिक सभ खबरि आनि कऽ देलकनि। पन्साया कुम्मरि एकटा पत्र राजाक नामे पठेलखिन जइमे राजासँ घर लौटक आग्रह केने रहथि। पत्र महल तँ पहुँचल मुदा राजासँ पहिने पहुनाइक हाथ लागल। पहुनाइ जबाब पठौलखिऩ-

“जरथु मरथु पन्साया कुम्मरि़ दय बसहु पहुनाइ।

जइ देस रहत पन्साया कुम्मरि तइ देस पिया घुरि नै जाय।। ”

जबाब पढ़ि पन्साया कुम्मरि तमसा गेली। अपन सेवककेँ कहलखिन- हमरा एक पेटी मूस आ एक पेटी झिंगुर दिअ। जुल्हासँ काँच रंगमे रंगल खूब चटकदार साड़ी मंगेली। चटकदार साड़ी पहिन पेटी लऽ विदा भेली पहुनाइक महल दिस। पहुनाइक महल लग रूकि कऽ नाचए लगली। पहुनाइक नजरि हुनकर साड़ीपर गेलनि। राजासँ जिद्द करए लगली जे हमरा वएह साड़ी चाही। राजा बड़ड बुझेलखिन जे हम अहूसँ नीक आनि देब मुदा ओ जिद्दपर अड़ि गेली। हारि कऽ पन्साया कुम्मरिकेँ बजाओल गेल। पन्साया कुम्मरि राजासँ कहलखिऩ- हम एकेटा शर्तपर अपन साड़ी देब। काल्हि भोरमे अहाँ हम्मर साड़ी जेहेन अखन ऐ तहिना लौटाएब। नै तँ अहाँकेँ हमरा संगे चलए पड़त।” राजा शर्त मानि गेलखिन।



रातिमे जखन पहुनाइ ओ साड़ी पहिन कऽ सुतली तँ पन्साया कुम्मरि हुनकर कोठलीक खिड़की बाटे भरि पेटी मूस आ भरि पेटी झिंगुर अन्दर दऽ देलखिन। राति भरिमे मूस साड़ीकेँ जतए ततए काटि देलकनि आ झिंगुर सभटा रंग चाटि गेलनि। भोरे पहुनाइ जखन उठली तँ साड़ीक दुर्दशा देखि कानए लगली। मुदा राजा एकटा नै सुनलखिन। अपन वचनबद्धताक कारण पन्साया कुम्मरि संगे ओ विदा भऽ गेला।

## ५. *सुहान बोन*

एकटा राजाकेँ सात टा रानी रहनि। सभ मिलि-जुलि कऽ नीकसँ रहैत रहथि। किछु दिनका बाद छोटकी रानी गर्भवती भेलखिन। राजा खूब प्रसन्न भेला। एक दिन ओ शिकारपर गेला। जाइत-जाइत ओ सुहान बोन पहुँच गेला जतए एकटा राक्षसीक राज रहए। राक्षसीक एकटा बेटी रहै जकर नाओं सुहान रहए। राक्षसी जखन राजाकेँ देखलक तँ अपन बेटीकेँ खूब सुन्दर रूप दऽ कऽ राजाक रस्तामे बैसा देलक। राजा ओकर रूपपर मोहित भऽ ओकरासँ बिआह कऽ लेला। आब सुहान सेहो सातो रानी संगे महलमे रहए लागल। अपन राक्षसी प्रवृतिक अनुसार ओ सभकेँ खूब तंग करए लागल। राजाकेँ जखन अकर आभास भेलनि ओ सुहानपर सँ धियान हटाबए लगला। सुहानकेँ से बर्दाश्त नै भेलै आ ओ सातो रानीक आँखि निकालि कऽ जंगल दिस बैला देलक। सातो रानीक चौदह टा आँखिकेँ ओ अपन माएकेँ दऽ देलक। ओकर माए ओइकेँ सीकपर टांगि कऽ राखि लेलक। जखन राजा पुछलखिन सुहानकेँ जे बाँकी रानी सभ कतए छथि तँ सुहान कहलकनि जे ओ सभ महल छोड़ि कऽ भागि गेली। राजाकेँ बड़ड क्षोभ भेलनि।

एम्हर सातो रानी फल-फूल खा कऽ गाछक नीचाँ जीवन काटै लगली। एहनेमे छोटकी रानीकेँ बेटा भेलनि। दिन बितैत गेल आ ओ बेटा पैघ भेल। एक दिन ओ जंगलसँ जाड़नि जमा कऽ शहरमे बेचलक आ जे पाइ भेलै तइसँ सभ लेल भोजन कपड़ा आदि किनने आएल। अतेक दिनका बाद अन्न खा कऽ सभ माए ओइ बच्चाकेँ खूब आशीर्वाद देलखिन। धीरे-धीरे ओ बच्चा एकटा झोपड़ी सेहो बना लेलक। अहिना एक दिन ओ बच्चा जाड़ैन ताकैत रहए तँ ओकरा फूलक ढेर देखेलइ। लग गेल तँ ओ एकटा पूजाक स्थल रहए। ओ तुरन्त सभ निर्मालकेँ बहा कऽ जगहकेँ नीप पोइछ कऽ ठीक कऽ लेलक आ नुका कऽ ताकऽ लागल जे एतऽ के पूजा करैत अछि? कनिक कालक बाद एकटा साधुबाबा एला। जगह साफ देखि कऽ बड खुश भेला। ओ आवाज देला जे जे कियो ई केलौंहँ से सामने आउ। बच्चा सामने गेल तँ साधु बाबा कहलखिन जे अहाँ वरदान मांगू तँ बच्चा कहलकनि जे हमर माए सभकेँ सभटा पहिनेबला सुख, आँखिक रौशनी, राजमहल आदि भेट जाए। साधु कहलखिन जे सभटा भेटत मुदा अहाँकेँ अपने प्रयास करए पड़त।



साधु अपन दिव्य दृष्टिसँ देखि कऽ सुहानक माइक घरक रस्ता पता केलनि। फेर एकटा उड़ैबला घोड़ा बनेला। तखन कहलखिऩ “अहाँ सुहान

बोनमे सुहानक नैहर जाउ। घोड़ाकेँ बाड़ीमे नुका कऽ ठाढ़ कऽ लेब आ अपने कौआ बनि कऽ चारपर बैस कऽ ई फकरा गाएब 'बुढ़िया मैया नाति सुहान, मैया पूत लवा खाँऊ खाँऊ खाँऊ।' ई सुनि कऽ ओ राक्षसनी बुझत जे अहाँ ओकर नाति आ सुहानक बेटा छी। अहाँकेँ असौरापर बैसा कऽ कहत जे माछी माइर-माइर कऽ फाँकू। हम रोपणी आ कटनी केने आबै छी। ओ बारहो मास धान रोपै छै आ बारहो मास काटै छै। जखने ओ खेत दिस जाएत अहाँ मनुखक रूप धऽ सीकपर सँ आँखिक कोहा उठा कऽ घोड़ापर चढ़ि भागि जाएब।''

ओ बच्चा सभटा तहिना केलक जेना साधु बाबा सिखेने रहथिन। मुदा जखन ओ भागै छल तँ सुहानक माए पाछाँ-पाछाँ भागए लगलै आ कहए लगलै ''रे मुड़ि घुरि ताक, रे मुड़ि घुरि ताक।'' ओ बच्चा जइने पाछाँ तकलक की बच्चा आ घोड़ा जरि कऽ भष्म भऽ गेल। सुहानक माए फेरसँ सभटा आँखि सीकपर टांगि लेलक। साधु बाबा कहनाइ बिसरि गेल रहथिन जे पाछाँ घुरि कऽ नै ताकब।

समए बीतल। आन्हर माए सभकेँ भेलनि जे बच्चाकेँ कुनो जानवर खा गेल। साधु बाबाकेँ सेहो कनी दिन बाद धियान एलनि जे ओइ बच्चाक हाल बुझिऐ। जइने दिव्य दृष्टि दौगेला तँए अपन गलतीक ज्ञान भेलनि। तुरन्त अमृत छीट कऽ बच्चा आ घोड़ाकेँ जियेला। एकटा काज आर केला जे सुहानक माएकेँ ऐ घटनाक स्मृति ओ हरि लेलखिन। फेरसँ बच्चा ओहिना सुहानक माए लग गेल, सभटा ओहिना भेलै मुदा ऐबेर बच्चा पाछाँ घुरि कऽ नै ताकलक। ऐबेर ओ सुरक्षित आँखि लऽ कऽ आबि गेल छल। आब सभटा आँखि ओ माए सभकेँ लगा देलक। सातो रानीकेँ सूझए लगलनि। सभ बड्ड प्रसन्न भेली। सभ साधु बाबाकेँ खूब धन्यवाद देलखिन आ बेटाकेँ खूब आशीष।

साधु सहित सभ कियो मिलि कऽ राजमहल गेला। राजाकेँ सभ बात कहलखिन। राजा सुहान आ ओकर माएकेँ मृत्युदण्ड देलखिन आ बाँकी सभसँ माफी मंगला। फेर सभ कियो संगे खुशीसँ रहए लगला।





# मुन्नाजी

## मैथिली गजलपर परिचर्चा

### मैथिली गजल: उत्पत्ति आ विकास (स्वरूप आ सम्भावना)

मैथिली गजलकेँ लोकप्रिय होइत देखि बेगरता बुझाएल एकरा पूर्ण रूपेँ फरिछेबाक। तेँ विदेह *www.videha.co.in* ISSN 2229-547X द्वारा "मैथिली गजल: उत्पत्ति आ विकास (स्वरूप आ सम्भावना)" विषयपर परिचर्चाक आयोजनक भार हमरा देल गेल। ऐ विषयपर लेखक लोकनिक विचार संक्षिप्तमे नीचाँ देल जा रहल अछि।- मुन्नाजी

१



**सियाराम झा "सरस"**

मुन्नाजी, मैथिली गजलपर परिचर्चाक आयोजन नीक लागल।

बन्धुवर, मैथिली गजल सम्बन्धी हमर मान्यता एना अछि:-

१) **उत्पत्ति:** पण्डित जीवन झाक नाटक "सुन्दर संयोग" (१९०५-०६) मे सर्वप्रथम मैथिली गजलक आगमन पबैत छी। तइसँ पूर्वक कोनो सूचना नै देखा पड़ैछ। तँए उत्पत्ति हम एतैसँ मानैत छी।

२) **विकास:** विगत १०६ बर्खक इतिहासमे गुणात्मक नै जँ संख्यात्मके चर्चा करी तँ अमरजी, माया बाबू (गीतल कहि कऽ), केदार नाथ लाभ,

सोमदेव, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, स्व. मार्कण्डेय प्रवासी, स्व. इन्दुजी, राजेन्द्र बिमल, गंगेश गुंजन, बुद्धिनाथ मिश्र, सियाराम सरस, स्व. कलानन्द भट्ट, डॉ. देवशंकर नवीन, डॉ. तारानन्द वियोगी, रमेश, भ्रमर, धीरेन्द्र प्रेमर्षि, जगदीश चन्द्र ठाकुर "अनिल", अरविन्द ठाकुर, अशोक दत्त, रोशन जनकपुरी, अजित आजाद, कु. मनीष अरविन्द, डॉ. कृष्णमोहन झा "मोहन"(राँची), आशीष अनचिन्हार समेत दर्जनो रचनाकार एकरा पुष्ट-बलिष्ट केलन्हि अछि। कथन आ भंगिमामे सेहो विविधता आएल अछि। दर्जनसँ बेशी संकलन नोटिस लेबा योग्य उपलब्ध अछि। विकास अखनो भऽ रहल अछि।

३) स्वरूप आ संरचनामे यथास्थान अछि। बहरक विकास गजलकारक अपन क्षमतापर निर्भर होइछ, किछु अध्ययन-मननपर सेहो। मैथिलीमे शेर तँ कहैत छी, मुदा मिसरा वा मतला-मकता आदिक प्रयोग नै कएल जाइछ। लोक बात-बातमे शेर नै कहैछ।

४) **सम्भावना-** नव-नव लोक सभ जुड़ि रहल छथि, संकलनो आबि रहल अछि, परिचर्चो शुरू भेल अछि, से चलैत रहए। आशीष अनचिन्हार जे योजना आरम्भ केलनि अछि, सेहो महत्वपूर्ण बिन्दु थिक। *खरा-खरी कहबाक नाम छी गजल..गाम-घरमे दिवा रातिमे; हवा जकाँ बहबाक नाम छी गजल।*- सरस।

## २



### गंगेश गुंजन

धन्यवाद जे ऐ मैथिली-गजल परिचर्चामे अहाँ हमरो शामिल कएलौंहें। ओना तँ अहाँ लोकनिक मैथिली गजलक परिभाषा-मान्यताक आन्दोलनमे स्वयंकेँ हम मैथिलीक गजल रचनाकारक श्रेणीसँ बाहर मानि लेने रही। किछु अर्थमे एखनो सएह अनुभव होइत अछि। तथापि -

१. मैथिली गजलक प्रारम्भ अपने पं जीवन झासँ मानी बा विद्यमान रवीन्द्रनाथ ठाकुर सँ (अप्रिय-अनसोहाँत लगनु भने किनको, तथापि) ओइ

'खास' प्रवर्तन-गजलक मूल पाठ सेहो पाठकक सोझाँ देब उचित। नव भावबोधकेँ, नवतुरिया कवि-पीढ़ीकेँ से देखलाक बादे तकर मीमांसाक आधार भेटतै।

हमर लाचारी अछि जे साहित्येतिहासक ने हम ओतेक आग्रहीए रहलौं आ तँ ने अन्वेषके। मुदा तकर 'उत्स' आभास, निजी हमरा अहीमे सँ कतौ बुझाइछ। यद्यपि कोनो प्रयोग, विशेषतः साहित्य बा कला-विधामे, मात्र एतबे बात लेल ओइ रचनाकार बा ओइ विधाक 'प्रारम्भ' नै मानि लेल जएबाक चाही जे 'ओ' पहिल बेर 'लीखल' गेल। से पहिल बेर लीखल गेल विधा-रचना, अपन साहित्यिक प्रवृत्तिक स्वरूपमे निरन्तरतासँ कहाँ धरि सृजन-सक्रिय रहल? आगाँ रहबो कएल कि नै? असल मूल्य मानक सएह थिक। कोनो साहित्यक आयु ओकर जीवन्त आ प्रवहमान प्रयोगक काल मात्रहिमे देखल-बूझल जाइछ। हिन्दीमे छायावादी महाप्राण *निराला* तथा *प्रसाद*, संयोगसँ एतऽ हमर ऐ दुनू सिद्धान्तक युगीन आ मूर्त्त उदाहरण छथि। ई दुनू 'छायावाद'क स्तम्भ छथि आ 'गजल' सेहो लिखलनि। मुदा 'गजल' मे तँ आइ दुनूक आयु इतिहास मात्र अछि। तँ मैथिली गजलपर विचारैत काल से महत्त्वपूर्ण बिन्दु। रचनाकारो काल लेखनक अपन मौलिक रुचि-प्रवृत्ति तथा अभ्याससँ फराक जा, तात्क्षणिक आवेशेँ 'अन्यो विधा'मे टहलि-बूलि अबैए। परन्तु से आवेश निरन्तरतामे ओकर सर्जनाक स्वाभाविक प्रवृत्ति नै बनि पबै छै, यावत ओइ नव विधामे सृजन करबामे ओकर मोन रमि नै जाइक। हिन्दीक दुष्यन्त कुमार कविताक प्रारम्भ 'गजल' सँ नै कएने रहथि जे कि आगाँ आबि कऽ अपन उत्तर पीढ़ीक प्रेरणा भेलाह। से दुष्यन्ते जी भेलाह, जखन कि शमसेर बहादुर जी सन प्रशस्त पैघ कवि 'गजल' लीखि रहल छलाह। आनो कए टा नाम अछि, जे हिन्दीमे महत्त्वपूर्ण। मुदा गजल विधा-लेखनमे ऐ सघन निरन्तरताक श्रेय हम तँ दुष्यन्ते जीकेँ मानैत छी।

अपने विचारियौ जे मधुप जी चाहितथि तँ गजल सेहो उत्कृष्ट नै लीखि सकैत छलाह? नै लिखलनि। किए? बा यात्री जी ? कविक अनुभव-आनुभूतिक विकलता ओकरासँ प्राथमिकता तय करबैत छै- जे ओ की आ कोना कहए-लिखए। सएह प्राथमिकता रचना प्रक्रियामे रचनाकारकेँ अपन स्वभावक फ्रेममे उद्वेलित करै छै आ कवि से शैलीक बाट धरबा लेल सृजन विवश भऽ होइत अछि। सभ कविक तँ अपन-अपन रुचिक खास विधा सेहो भऽ जाइ छै। सएह ओकर अभिव्यक्तिक सहज स्वाभाविक तागति बनि जाइ छै। कालांतरमे समाज मध्य ताही रूपमे ओकर परिचिति बनि जाइ छै।

सएह मोटा-मोटी सुमन-मधुप-मणिपद्म-अमर तथा यात्रीक रूपमे चीन्हल जाइ योग्य होइछ।

एखन मैथिली-गजलक प्रवाह 'बाढ़ि' बला अछि, यद्यपि स्नेह आ स्वागत करबा योग्य। किएक तँ मुख्यतः प्रवृत्तिक ई सृजन-प्रवाह एकछोहा 'युवापीढ़ी'क थिक आ यदि मैथिली गजलक कोनो भविष्य छै तँ एही पीढ़ीक सृजन-सम्पदामे। एक बएग जे ई सघन आ कए तरहें संगठित सेहो, ऐ विधाक प्रति उत्कट आग्रह आ ताही कारणें सक्रिय निरन्तरता आएल छै, से अगिला दशक धरि उल्लेख करबा योग्य स्वरूप लऽ लेत, ऐ बातमे हमरा कोनो संदेह नै। अवश्ये ऐ परिवेश-निर्माण मे ब्लॉग/ फेसबुक/ अर्थात इन्टरनेट महाशक्तिक अपूर्व योगदान अछि, जे हमरा युगक नव रचनाकारकेँ नै छलै। अभिव्यक्ति सम्प्रेषण-माध्यम अत्यन्त सीमित छलै।

तँ मैथिली-गजलक वास्तविक 'प्रस्थान' हम एकदम टटका पीढ़ीमे पबैत छी। नव गछुली अछि एखन। बताह भऽ कऽ मजरल अछि। एकर कतेक मज्जर टिकुला भऽ पाओत आ कतेक 'गोपी' धरि परिणत हएत से देखबा योग्य हएत।

आशा-अभिलाषा तँ 'नव गछुलीए' सँ। निश्छल तथा उदार बुद्धिये एकर अभिसिंचन-संरक्षण हेबाक चाही। से दायित्व पूर्व खाढ़ीक बचलाहा जीवित रचनाकारक। यदि नवतुरियाकँ से स्वीकार होइक, जे कि अधिकांश नव रचना आ रचनाकारक 'तेवर'मे परिलक्षित नै बुझाइछ। जइ गजलक ई गहन विमर्श कऽ रहल छी, तकर 'जन्मभूमिक भाषा' मे आइयो 'इस्लाह'क परम्परा काएम छै। मान्य, श्रेय-प्रेय। ओना यथावत ताइ दिनबला गुरु-शिष्य परम्पराकेँ हमहूँ नै मानैत छी। आजुक युग आ वातावरणमे आब उचितो नै हएत से। मुदा कोनो विद्याक सरिता धार, जँ कि एखनो प्रवाहित भइए रहल छै, तँ किछु दूर धरि, पुरना 'घटबारोक' जरूरति बाँचले छै। तै अर्थमे कहलौं।

सम्प्रति गजल-रूपमे लिखल गेल समस्त मैथिली-गजलकेँ चालल जाए तँ साबुत गजल दू गाहीसँ बेसी भरिसक्के निकलत। चनकल, टूटल-भांगल रचनाक गनती नै हुअए। से तँ कहबे कएलौं 'बाढ़ि' आएल अछि। अप्रिय परन्तु हमर जानकारीक यथार्थ यएह कहैए जे मैथिलीमे गजलक नामे लिखल जाइत रचनाक अधिकांश 'खखरी' अछि। उत्सुकतामे हम फेसबुकपर विशेष कऽ नव हस्ताक्षर सभकेँ पढ़बे करैत छी। मुदा फालतू,..सँ आगाँ बुझाए लगैत अछि। एक-दू टा रचना पढ़ैत काल तँ जीह ओकियाय लागल। हमर बात उत्कट लगैत हुअए भने मुदा एकटा पाठकक रूपमे हमरा एहनो अनुभव

भेलए।

दोसर जे, आजुक पीढ़ीक रचनाकार हमरा बेसी काल 'बहर-मैनिया' सँ ग्रस्त बुझाइछ, से माफी देब। दोसर रूपे कही तँ 'बहर'क 'ऑबसेसन' सीमा तक आग्रही बुझाइत छथि। बहर अंततः साँच मात्र थिक। फ्रेम । 'रूह' नै।

हम जखन रेडियोमे रही तँ हमरे कोठलीमे नारी जगत आ नाटक विभाग सेहो रहै। नारी जगतमे एक टा परम सुन्दरि स्त्री आबथिन। नख शिख सुन्दरि। कत्तौसँ कोनो कमी नै। तथापि कोनो आकर्षण नै। ई हमर सोचब छल। कए टा हमरासँ भेंट कएनिहारो देखथिन। ओइ सुन्दरी दऽ चर्चा करथि मुदा यएह प्रश्न सेहो जे आखिर की छै जे ई एहन सुन्दरी होइतो प्रशंसा योग्य नै। एकदिन अंततः हमर दू टा महिला संगी, जे रेडियोक रहथि, हमरा लोकनि संगे चाह पीबी, अएली संग करऽ। ओ सुन्दरी कोनो रिकार्डिंमे आएलि रहथि। फेर देखलखिन तँ ओइ दिन चाह दोकान दिस जाइते काल अचानक पुछलनि- 'ई के सुन्दरी छथि जे दिलमे नै उतरि पबै छथि। विचित्र असुन्दर सुन्दरता छन्हि गुंजन जी।' हम किछु जवाब नै दऽ यएह सोचैत रहलौं जे ओइ सुन्दरीक विषयमे हमर अपनो यएह जिज्ञासा रहए। अर्थात हमरा लोकनिक बुद्धियें शरीर तँ सर्वगुण सुन्दर, मुदा 'सौन्दर्य' सँ आत्मा गाएब रहनि सुन्दरीक।

यदि अहाँक सूचीमे बाँचल छी तँ हम एखनो यएह मानैत छी आ वएह कहब-

छुच्छे 'इल्म' सँ कविता जेकाँ किछु लिखि देल गेल, 'गजल' नै भऽ जाइ छै।

लीखू किछु आसान गजल
सबहक मोनक जान गजल

एक एक हृदयक छाँह लगय
गाबय सबहक प्राण गजल

सब कानय अपने अपनी
बनय सभक मुस्कान गजल

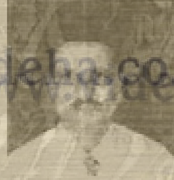
लोकक दुःखक बनय पुकार
बौआय नै सुनसान गजल

झलझल जल मोनक सपना
से अछि गंगास्नान गजल

जइ क्षण पीड़ा मे कानल
धो दय सकल जहान गजल

आकांक्षा हो जन-जन के
से गीतक अभिमान गजल

३



*प्रेमचन्द्र पंकज*

## मैथिली गजल : एक नजरिमे

गजल एकटा एहन सशक्त विधाक नाम थिक, जकरा माध्यमसँ अनेक सामाजिक प्रक्रियाक जटिलताकें थोड़ शब्दमे सहजतासँ अभिव्यक्ति प्रदान कएल जाइत अछि। सहजता एवं भाव-चमत्कार एकर मुख्य लक्षण थिक। अपन सहजता एवं भाव-चमत्कारक कारण एकरामे एकटा अद्भुत आकर्षण छै। अही आकर्षणक कारणें फारसीसँ उर्दू एकरा हपसि कऽ अपन कोरामे लेलक। हिन्दी सेहो ओकर नजरि अपना दिस घिचबाक प्रयास कएलक। सफलता सेहो भेटलै। मुदा उर्दूक कोरामे जेहन छलै, तेहने प्राप्त भेलै। कहबाक तात्पर्य जे उर्दूमे गजल एक खासे मानसिकताबला लोकक बीच अपन आकर्षणक भाभट पसारने छल आ हिन्दीमे सेहो ओहने स्थिति रहलै-बहुत दिन धरि। ओना सम्प्रति ओतौ (हिन्दीमे सेहो) इतिहास-दृष्टि आ सामाजिक द्वन्द्वबोधक ज्ञानसँ परिपूर्ण गजलकार लोकनि सार्वभौमिक अनुभूतिकें अभिव्यक्ति देबाक माध्यम नीक जकाँ बनौने छथि।

गजलक ऐ सहजता एवं भाव-चमत्कारक आकर्षणक कारणें आइ प्राय: सभ भारतीय भाषामे एकरा दुलरुआ बना कऽ राखल गेल छै। ई दुलरुआ सुकुमार छै, मुदा कमजोर नै। कखनो किछु कऽ सकैए। केहनो विस्फोट।

मैथिलीमे सेहो गजल आएल- ओहिना- सुकुमार, मुदा कमजोर नै। कखनो किछु कऽ सकैबला। कोनो विस्फोट। तें सुरेन्द्र नाथ कहै छथि- गजल हमर हथियार थिक। तारानन्द वियोगी एकरा *अपन युद्धक साक्ष्य* मानैत आगि जनमा रहल छथि-

दर्द जँ हदसँ टपल जाए तँ आगि जनमै अछि
बर्फ अंगार बनल जाए तँ आगि जनमै अछि

प्रेमचन्द्र पंकज गजलक प्रसंग कहै छथि-
ढोढ़िया नञि असली नाग छी गजल
मस्तीमे गरजैत बाघ छी गजल

प्रेमिकाक आँचर नहि, प्रीतमक बोल नहि
चेतनामे बरकल मिजाज छी गजल

गजलकें पारिभाषिक रूपसँ बुझबाक लेल एकर स्रोत-भाषा अरबी-फारसीक परम्पराक सूत्रकें पकड़ब आवश्यक भऽ जाइत अछि। ओतए एकर परिभाषा देल गेल छै- सुखन अज जनान (अथवा अज माशूक) गुफ्तन तथा बाजनान गुफ्तन करदैन। एकर अर्थ थिक स्त्रीगणक विषयमे वार्तालाप किंवा प्रेमी-प्रेमिकाक संवाद। आइ ई परिभाषा विस्तार पाबि सभ प्रकारक संवाद-प्रेषण-स्थापन करबामे सक्षम अछि- जँ ऐ परिभाषाकें संकुचित रूपसँ नै देखल जाए। प्रेम सार्वभौमिक अछि, सार्वस्थानिक अछि, सार्वकालिक अछि। जँ प्रेमक अर्थ विस्तृत अछि, प्रेम स्वयं एतेक विस्तारमे पसरल अछि तँ ने प्रेमी-प्रेमिका संकुचित भए सकैत अछि आ ने प्रेमी-प्रमिकाक वार्तालाप विषय विशेष पर सीमित रहि सकैत अछि। तें आइओ सभ भाषाक गजलमे उक्त परिभाषाकें घटित देखल जा सकैत अछि।

गजलक अपन भिन्न व्याकरण छै आ ई व्याकरण देखबामे जतबा सरल छै, वस्तुत: ओइसँ कइएक गुना जटिल छै। ओना ऊपरसँ लगैत अछि जे ई मतला, शेर आ मक्ताक चौकठिमे ठोकल एकटा काव्य-विधा थिक। मुदा एकर बहरक निर्बाह करबामे मगज दुहा जाइ छै। ध्यान देबाक बात थिक जे गजल लिखल नै जाइ छै, कहल जाइ छै। स्पष्ट अछि, जे एकर बहर (छन्द) क संरचनामे वज्न (मात्रा)क गणना शब्दक उच्चारणक अनुसार कएल जाइत अछि, जइमे अनेक गजलकार (तथाकथित) हरदा बाजि जाइ छथि। गजल किछु शेरक माला थिक। पारम्परिक रूपसँ गजलक प्रत्येक शेरक

विषय भिन्न-भिन्न होइ छै, परन्तु एक गजलक प्रत्येक शेरमे रदीफ आ काफिया एके रहै छै। गजलक पहिल शेर मतला कहबैत अछि, जकर दुनू पाँती (मिसरा) सानुप्रासिक होइत अछि, अर्थात् रदीफ आ काफियासँ सामन रूपें युक्त रहैत अछि। एकर अन्तिम शेर मक्ता कहबैत अछि तखन, जखन ओइमे रचनाकारक नाम अथवा उपनामक प्रयोग होइत अछि, अन्यथा सामान्य शेर भऽ कऽ रहि जाइत अछि। बीचबला शेरक उपरका पाँतीक रदीफसँ मेल रहब आवश्यक नै। किन्तु निचला पाँतीकें रदीफसँ मेल अर्थात् सानुप्रासिक हएब अनिवार्य छै। शेरक लेल आवश्यक छै जे ओ कोनो छन्द विशेषमे रहए, जे निश्चित कएल गेल छै। ई छन्द विशेष बहर कहबैत अछि।

अस्तु, मैथिली गजलक इतिहास पर एक नजरि फेकबाक प्रयास कएल जाए तँ मैथिलीक पहिल गजल बीसम शताब्दीक प्रारम्भमे लिखल गेल आ मैथिलीक पहिल गजलकार भेलाह पं. जीवन झा। जीवन झाक गजलमे एकर मुख्य गुण- सहजता एवं भाव-चमत्कार स्पष्ट देखबामे अबैत अछि, जे ऐ बातकें द्योतित करैत अछि जे ओ गजलकें कतेक लगीचसँ बुझबाक चेष्टा कएने छलाह, बुझने छलाह। हुनक एक गजलक मतला देखल जाए-

पड़ैए बूझि किछु ने ध्यानमे हम भेल पागल छी
चलै छी ठाढ़ छी बैसल छी सूतल छी कि जागल छी

जीवन झा द्वारा रोपल गजलक ऐ पिपहीकें समय-समय पर भुवनेश्वर सिंह भुवन, यात्री, आरसी प्रसाद सिंह, डॉ. वृजशोर वर्मा मणिपद्म आदि खाद-पानि दैत रहलाह आ ई वर्तमान रहल। बादमे केदारनाथ लाभ, सुधांशु शेखर चौधरी, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, विभूति आनन्द, कलानन्द भट्ट, सियाराम झा सरस, मार्कण्डेय प्रवासी, बुद्धिनाथ मिश्र, राजेन्द्र बिमल, तारानन्द वियोगी, नरेन्द्र, देवशंकर नवीन आदिक सेवासँ ई एकटा झमटगर गाछक रूप धारण कऽ लेने अछि। मैथिलीक गजलकारक जँ सूची बनाओल जाए तँ आस्वस्त करत। किन्तु मैथिलीमे गजल-संग्रहक सर्वथा अभाव अछि- जकरा अंगुरी पर गानल जा सकैत अछि। मैथिली गजलक पहिल संग्रह थिक विभूति आनन्दक *उठा रहल घोघ तिमिर*। एकर प्रकाशन जून ८१ मे भेल। फेर कलानन्द भट्टक *कान्ह पर लहास हमर*, सियाराम झा सरस क *शोणिताएल पैरक निशान*, तारानन्द वियोगीक *अपन युद्धक साक्ष्य*, रमेशक *नागफेनी* आएल। सियाराम झा सरस क सम्पादनमे बारह गोटेक कुल चौरासीटा गजलक संकलन *लोकवेद आ लालकिला* प्रकाशित भेल। *थोड़े आगि थोड़े पानि*

सरसजीक एहन गजल संग्रह थिक जे ऐ विधाकें अओर मजगूती प्रदान करैत अछि। सुरेन्द्र नाथक *गजल हमर हथियार थिक* निश्चित रूपसँ स्वागत योग्य अछि।

गजल-संग्रहक एहन अभाव थोड़ेक निरास अवश्य करैत अछि, मुदा सम्प्रति मैथिलीमे धुड़झाड़ गजलक रचना भए रहल अछि, अनेक बाधाक अछैतो। मैथिली गजल बहुत दिन धरि गजल बनाम गीतलक ओझराहटिमे पड़ल रहल। किन्तु कोनो भ्रममे नै पड़ल। सभ तर्कक जवाब दैत रहल। आगाँ बढ़ैत रहल। आइ मैथिली गजलक स्थिति ई अछि जे अनेक नव-पुरान रचनाकार अपन अभिव्यक्तिक माध्यम एकरा बनओने छथि, अपन स्वर गजलकें दऽ रहल छथि। डॉ. गंगेश गुंजन, डॉ. अरविन्द अक्कू, अरविन्द ठाकुर, डॉ. नरेश कुमार विकल, अजित आजाद, फूलचन्द्र झा प्रवीण आदि अपन अभिव्यक्तिक माध्यम गजलकें बनाए एकरा एकटा सशक्त विधाक सरूपमे प्रतिष्ठित कऽ रहल छथि। प्रसन्नताक विषय ईहो अछि जे आशीष अनचिन्हार *अनचिन्हार आखर* नामसँ गजलक लेल एकटा फराकसँ वेबसाइट तैयार कएने छथि जकरा माध्यमसँ अनेक नव-पुरान गजलकार लोकनिक गजल-रचना लगातार सोझाँ आबि रहल अछि।

कतिपय व्यक्ति एकटा राग अलापि रहल छथि जे मैथिलीमे गजलक सुदीर्घ परम्परा रहितो एकरा मान्यता नै भेटि रहल छै। एहन बात प्राय: ऐ कारणे उठैत अछि जे मैथिली गजलकें कोनो मान्य समीक्षक-समालोचक एखन धरि अछूत मानि कऽ एम्हर ताकब सेहो अपन मर्यादाक प्रतिकूल बुझैत छथि। ऐ सम्बन्धमे हमर व्यक्तिगत विचार ई अछि, जे एकरा ओहने समालोचक-समीक्षक अछूत बुझैत छथि जनिकामे गजलक सूक्ष्मताकें बुझबाक अवगतिक सर्वथा अभाव छनि। गजलक संरचना, मिजाज आदिकें बुझबाक लेल हुनका लोकनिकें स्वयं प्रयास करऽ पड़तनि, कोनो गजलकार बैसि कऽ भट्ठा नै धरओतनि। हँ, एतबा निश्चय, जे गजल धुड़झाड़ लिखल जा रहल अछि आ पसरि रहल अछि आ अपन सामर्थ्यक बलपर समीक्षक-समालोचक लोकनिकें अपना दिस आकर्षित कइए कऽ छोड़त। हमरा सभकें मन पाड़बाक चाही जे एकटा एहनो समए छलै जहिआ नव-कविताक प्रति समीक्षक-समालोचक लोकनिक रबैया एहने छलनि। मुदा आइ? आइ की स्थिति छै? सएह होएतै गजलोक संग। निश्चय होएतै।

वस्तुत: मैथिली गजल आइ ओइ ठाम ठाढ़ अछि जतएसँ ओकरा एकसूत्रताधारी विचार, दर्शन, समाज-संहिताक अतिरिक्त राजनैतिक,

सांस्कृतिक, सामाजिक आ राष्ट्रीय-अन्तर्राष्ट्रिय संवेदनाकें अभिव्यक्त करबाक स्त्रोत सहजहिं भेटि जाइ छै। सम्भावनासँ परिपूर्ण ऐ विधाक क्रमिक विकासक लेल आवश्यक अछि प्रतिबद्धतापूर्वक गजलक निरन्तर रचना हएब। से भए रहल अछि- ऐ रूपमे भए रहल अछि जे एकर भविष्य लेल आश्वस्त करैत अछि, निश्चित रूपसँ।

४



राजेन्द्र बिमल

मुन्नाजी: मैथिली साहित्य मध्य वर्तमान समयमे गजलक की दशा अछि, एकर भविष्यक की दिशा देखाइछ?

राजेन्द्र बिमल: गजल अत्यन्त लोकप्रिय विधा थिक। मैथिलीमे सेहो खूब लीखल जा रहल अछि आ पढ़लो जा रहल अछि। बहुत गजलकार एकर व्याकरणसँ कम परिचित छथि। मुदा भविष्य उज्जवल छै। मैथिली गजलमे अपन निजात्मकताक विकास शुभ संकेत थिक।

मुन्नाजी: मैथिलीक प्रकाशित गजलक संगोर (कतेको गजल संग्रह) आ मायानन्द मिश्रक गजलकेँ गीतल कहि प्रकाश्यक मादेँ गजेन्द्र ठाकुर एकरा अस्तित्वहीन कहि अपन सम्पादकीय आलेख माध्यमे अवधारणा स्पष्ट केलनि।अहाँक ऐपर अपन स्वतंत्र विचार की अछि?

राजेन्द्र बिमल: संगोर सभ नै देखल अछि। आदरणीय माया बाबूक गीतल (गीत-गजल) एक गोट प्रयोग थिक। हम कोनो सृजनकेँ निरर्थक नै बुझैत छी आ लेखन स्वतंत्रतामे विश्वास रखैत छी।

५



मंजर सुलेमान



जखन ऐ मिथिलामे अमीर खुशरो (१२२५-१३२५) सन विद्वान एलाह तँ ओहो ऐ भाषाक मधुरतासँ मुग्ध भऽ फारसी, मैथिली आ उर्दूक समिश्रणसँ कहलनि-

हिन्दु बच्चा है कि अजब हुस्न रै छै।
बर बक्ते सुखन गुफ्तम मुख फूल झरै छै॥

गुफ्तम ज लबे लालें तऽ यक बोसा बगीरम।
गुफ्ता के अरे राम तुर्क का ई करै छै।

(मंजर सुलेमान - त्याग-बलिदानक पवित्र पर्व मुहर्रम (मिथिला दर्शन नवम्बर-दिसम्बर २०१०)

६



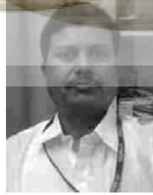
शेफालिका वर्मा

आदरणीय मुन्नाजी,

अपनेक विषय गजल पर परिचर्चा बड नीक लागल मुदा मैथिलीक प्रोफेसर हम नै छी, तैं एकर जानकारी देनाइ हमरा लेल सुरुजकेँ दीपक देखेनाइ अछि। हँ हम एतबे जनैत छी जे पहिने छिटपुट गजल लिखल जाइत छल, हमहूँ पढ़ैत रही, कखनो हमरो नीक लागल छल। मुदा आशीष

अनचिन्हारक कारण विदेहक पन्नापर गजलक जेना बाढ़ि आबि गेल अछि। गजल हमर सभसँ प्रिये विधा हमरा लेल अछि, प्यार, रोमांससँ भरल भावातीत भऽ हृदएक उन्मेषमे जिबैत उर्दू गजल, शेरो शायरी सभ। हम तँ गजल माने प्यार मुहब्बते टा बूझैत छलौं जे शुद्ध प्रेम भावपर आधारित छल। एखनो हमर पुरना डायरीमे गजल सभक अंश लिखल अछि, कोमलकान्त पदावलीसँ परिपूर्ण मुदा मैथिलीमे एकर नाना अर्थे प्रयोग होइत देखलौं, कखनो नीक लगैत छल तँ कखनो कचोटी। मुदा जमाना कतऽ सँ कतऽ चलि गेल। सभ ठाम विकास भऽ रहल छै तँ मैथिली गजल केर सेहो नव परिभाषा उल्लेखनीय रहत। साँच पुछू तँ प्रायः सभ टा गजल हम अवश्य पढ़ैत छी, ऐलेल आशीष जीकेँ अशेष बधाइ। मैथिली साहित्यमे गजल विधा नूतन मुस्की लऽ सबहक ह्रदएकेँ आलोक लोकसँ भरि देत, संगहि विदेह परिवारकेँ जे नाना रुपे माँ मैथिलीक श्री वृद्धि कऽ रहल छथि।

७



**मिहिर झा**

गजल मूलतः अरबी भाषा केर काव्य विधा छै। गजल शब्दक अरबीमे माने छै स्त्रीसँ वा स्त्रीक बारेमे बात केनाइ। गजल जेखन अरबीसँ फारसीमे आएल तँ एकर शिल्प विधाक तँ पालन भेल लेकिन एकर विषय वस्तु भौतिक वा दैहिक रखैत एकर मर्ममे अध्यात्मिक प्रेमक अनुभूति आनि देलक। ऐ मर्मकेँ रखैत फारसी सूफी कवि सभ गजलक प्रसारमे महत्वपूर्ण योगदान केलन्हि। सूफी साधनामे विरहक बेशी महत्व छै, तइ कारणे, फारसी गजलमे विरह प्रेम केर बेशी उल्लेख अछि।

गजल जखन फारसी सँ उर्दू मे प्रवेश केलक तँ एकर शिल्प विधा तँ ओहिना रहलै लेकिन कथ्य एकदम भारतीय भऽ गेल। मध्य कालमे उर्दू फारसीसँ बहुत प्रभावित छलै आ एकर व्याकरण ओ शब्द जटिल फारसी होइ छलै। भारतकेँ स्वतंत्र भेलाक बाद उर्दू धीरे धीरे फारसीक प्रभावसँ निकलल

आ गजलमे बोल चालक शब्द प्रयोगमे आबए लागल। संगहि एकर मर्म अपन परंपरागत मर्म "स्त्रीसँ वा स्त्री संबंधित"केँ कात छोड़ैत नव-नव आयाम अपनामे सम्मिलित केलक। ध्यान देबाक गप ई अछि जे गजल केर शिल्प विधामे कोनो बदलाओ नै आएल, केवल एकर मर्ममे परिवर्तन आएल। जे गजल अरबीमे मात्र प्रेम तक सीमित छल से आब अपनामे सभटा विषय वस्तु समेट लेलक।

हिन्दीक बाद गजल मराठी, अँग्रेजी होइत आब मैथिलीमे प्रवेश केलक आ धीरे धीरे मैथिली साहित्यमे अपन स्थान बना लेलक। मैथिलीमे सेहो गजलक शिल्प विधामे परिवर्तन नै भेलै, हँ एकर मर्म आ शब्दकोष पूर्ण मैथिल भऽ गेल। भाव भक्ति, प्रेम, वीर, विरहक होइक वा सामाजिक, राजनीतिक वा व्यक्तिक कटाक्ष पर, सभ विधामे मैथिलीमे गजल देखबामे आबि रहल अछि। संगहि मिथिलाक संस्कार ओ परिवेशक छाप लैत मैथिली गजल आब पूर्णतः मैथिल भऽ चुकल अछि। गजलक मैथिली शिल्प विधाक लेखन विस्तारमे "अन्चिन्हार आखर" मे आलेखित अछि। बहुत रास मैथिली गजलकारक मैथिली गजलकारीमे प्रवेश ऐ बातक द्योतक अछि जे ई मैथिलीक पोर-पोरमे समा चुकल अछि आ कोनो एक विशेष स्तरक लोकक बदलामे ई जनकाव्य बनि चुकल अछि।

"मैथिली गजलक उत्पत्ति आ विकास (स्वरूप एवं संभावना सहित)" विषय पर अपन भावना हम गजलक रूपमे देबाक प्रयास कऽ रहल छी-

बैसलहुँ आइ करै ले मैथिली गजलक बखान हम
डूबि गेलहुँ उदगार मे केलहुँ नहि किछु ध्यान हम

गजल होइत छैक प्रेम महिमा एकर महान छैक
दू पाँति मे समेटा देलहुँ ई प्रेम गाथा क बखान हम

बहर रफीद और काफिया शेरक होइ छैक प्राण यौ
मतला मकता जोड़ि एहि मे बढेलौ शेरक शान हम

फारसी उर्दू अंग्रेजी सँ होइत ई आयल मिथिला धाम
तघज्जुल अपन बनाबी लऽ माछ मखान ओ पान हम

शास्त्रीय कहू वा आधुनिक वा पकड्डू अ-गजलक कान
समय संग बदलबै आब एहि गजलक प्राण हम

प्रेम विरह सूफी आ भक्तिमे कऽ चुकल ई नाम अमिट
जन जीवन सँ जोड़बै लऽ आधुनिकताक नाम हम

मुरद्दफ होइक वा गैर मुरद्दफ पबै छै एके शान
"शौकीन" क ई कथा अमोल राखब सदिखन ध्यान हम



८





ओमप्रकाश झा

## मैथिली गजल पर परिचर्चा

मैथिली गजलक उद्भव आ विकास विषय पर कोनो विचार प्रकट करबाक बहुत योग्य तँ हम अपनाकेँ नै मानै छी, मुदा ई विषय देखि किछु कहैसँ अपनाकेँ रोकि नै पाबि रहल छी। मैथिली गजलक इतिहास ओना तँ बड्ड पुरान नै अछि। मुदा गीत आ कविता लेखनक कार्य बहुत दिनसँ मैथिलीमे चलि रहल अछि। गीत आ कवितामे मैथिलीक बड्ड धनिक इतिहास छै। भारतवर्षक आर्य भाषा सभमे यदि देखल जाए तँ ई अपने बुझा जाइ छै जे उत्पत्तिक बादेसँ मैथिलीमे नीक गीत आ कविता लिखेनाइ शुरू भऽ गेल छल। गजल लिखबाक कोनो परम्परा मैथिलीमे नै छल। २० म शताब्दीमे गजल लिखबाक शुरूआत भेल आ २०म शताब्दीक उतरार्द्धमे ऐमे तेजी आएल। हम अपने किछु दिन पूर्व धरि गजलसँ अनजान छलौं। आशीष अनचिन्हार जी आ गजेन्द्र जीक सम्पर्कमे आबि मैथिली गजलक विषयमे किछु ज्ञान प्राप्त भेल। अनचिन्हार आखर ब्लाग पूर्ण रूपसँ गजलक लेल समर्पित अछि आ गजलक शास्त्रीयताकेँ नीक जकाँ ऐ ब्लागपर बुझाओल गेल अछि। यएह ब्लाग पढ़ि कऽ हम थोड़ बहुत सरल वार्णिक बहरक गजल लिखबाक प्रयास करैत रहै छी। एखन मैथिलीमे गजल बहुत तँ नै लिखल गेल अछि, मुदा गजलक अकालो नै बुझाइत अछि। एकटा नीक गप जे हमरा नोटिसमे आएल जे आब मैथिली पत्र-पत्रिकामे सेहो मैथिली गजल नियमित रूपैँ छपि

रहल अछि। उत्कृष्टतापर हम किछु बाजबा योग्य नै छी। मुदा एतबा कहब जे जेना जेना नव नव गजलकार सभ एता आ गजल पढ़बाक रूचि बढ़ल जेतै, तेना तेना नव प्रयोगक संग नीक नीक रचना केर बाढ़ि आबि जेतै। हमरा बुझने मैथिली गजल एखन जवान भऽ रहल अछि आ समएक संग एकर जवानी मैथिली गजलकेँ बहुत ऊँच स्थान पर लऽ जाएत।

९



धीरेन्द्र प्रेमर्षि

*मैथिलीमे गजल आ एकर संरचना (पूर्वमे विदेहक अंक २१ मे प्रकाशित)*

रूप-रङ्ग एवं चालि-प्रकृति देखलापर गीत आ गजल दुनू सहोदरे बुझाइ छै। मुदा मैथिलीमे गीत अति प्राचीन काव्यशैलीक रूपमे चलैत आएल अछि, जखन कि गजल अपेक्षाकृत अत्यन्त नवीन रूपमे। एखन दुनूकेँ एकठाम देखलापर एना लगै छै जेना गीत-गजल कोनो कुम्भक मेलामे एक-दोसरासँ बिछुड़ि गेल छल। मेलामे भोतिआइत-भासैत गजल अरब दिस पहुँचि गेल। गजल ओम्हरे पलल-बढ़ल आ जखन बेस जुआन भऽ गेल तँ अपन बिछुड़ल सहोदरकेँ तकैत गीतक गाम मिथिला धरि सेहो पहुँचि गेल। जखन दुनूक भेट भेलै तँ किछु समए दुनूमे अपरिचयक अवस्था बनल रहलै। मिथिलाक माटिमे पोसाएल गीत एकरा अपन जगह कब्जा करऽ आएल प्रतिद्वन्दीक रूपमे सेहो देखलक। मुदा जखन दुनू एक-दोसराकेँ लगसँ हिया कऽ देखलक तखन बुझबामे अएलै- आहि रे बा, हमरा सभमे एना बैर किएक, हम दुनू तँ सहोदरे छी! तकरा बाद मिथिलाक धरतीपर डेगसँ डेग मिला दुनू पूर्ण भ्रातृत्व भावेँ निरन्तर आगाँ बढ़ैत रहल अछि।

गीत आ गजलक स्वरूप देखलापर दुनूक स्वभावमे अपन पोसुआ जगहक स्थानीयताक असरि पूरापूर देखबामे अबैत अछि। गीत एना लगै छै जेना रङ्ग-बिरङ्गी फूलकेँ सैँति कऽ सजाओल सेजौट हुअए। मिथिलाक गीतमे काँटोसन बात जँ कहल जाइछ तँ फूलेसन मोलायम भावमे। एकरा हम अहू

तरहेँ कहि सकैत छी जे गीत फूलक लतमारापर चलबैत लोककेँ भावक ऊँचाइ धरि पहुँचबैत अछि। ऐमे मिथिलाक लोकव्यवहार एवं मानवीय भाव प्रमुख भूमिका निर्वाह करैत आएल अछि। जइ भाषाक गारियोमे रिदम आ मधुरता होइ छै, ओइ भूमिपर पोसाएल गीतक स्वरूप कटाह-धराह भइए नै सकैत अछि। कही जे गीतमे तँ लाली गुराँसक फूल जकाँ ओ ताकत विद्यमान छै जे माछ खाइत काल जँ गऽरमे काँट अटकि गेल तँ तकरो गलाकेँ समाप्त कऽ दै छै।

गजलक बगय-बानि देखबामे भलहि गीते जकाँ सुरेबगर लगै, ऐमे गीतसन नरमाहटि नै होइ छै। उसराह मरुभूमिमे पोसाएल भेलाक कारणे गजलक स्वभाव किछु उस्सठ होइ छै। यद्यपि गजलकेँ प्रेमक अभिव्यक्तिक सशक्त माध्यम मानल जाइ छै। गजल कही तँ हिंदेरी लोकक मन-मस्तिष्कमे प्रेममय माहौल नाचि उठैत छै, ऐ बातसँ हम कतहु असहमत नै छी। मुदा गजलमे प्रेमक बात सेहो बेस धरगर अन्दाजमे कहल जाइ छै। कहबाक तात्पर्य जे गजल तरुआरि जकाँ सीधे बेध दै छै लक्ष्यकेँ। लाइ-लपटमे बेसी नै रहै छै गजल। मिथिलाक सन्दर्भमे गीत आ गजलक एक्कहि तरहेँ जँ अन्तर देखबऽ चाही तँ ई कहल जा सकैत अछि जे गजल फूलक प्रक्षेपण पर्यन्त तरुआरि जकाँ करैत अछि, जखन कि गीत तरुआरि सेहो फूल जकाँ भँजैत अछि।

मैथिलीमे संख्यात्मक रूपेँ गजल आनहि विधा जकाँ भलहि कम लिखल जाइत रहल हुअए, मुदा गुणवत्ताक दृष्टिएँ ई हिन्दी वा नेपाली गजलसँ कतहु कनेको झूस नै देखबामे अबैत अछि। एकर कारण इहो भऽ सकै छै जे हिन्दी, नेपाली आ मैथिली तीनू भाषामे गजलक प्रवेश एक्कहि मुहूर्त्तमे भेल छै। गजलक श्रीगणेश करौनिहार हिन्दीक भारतेन्दु, नेपालीक मोतीराम भट्ट आ मैथिलीक पं. जीवन झा एक्कहि कालखण्डक स्रष्टा सभ छथि।

मैथिलीयोमे गजल आब एतबा लिखल जा चुकल अछि जे एकर संरचनाक मादे किछु कहनाइ दिनहिमे डिबिया बारब जकाँ लगैत अछि। एहनोमे यदाकदा गजलक नामपर किछु एहनो पाँति सभ पत्र-पत्रिकामे अभरि जाइत अछि, जकरा देखलापर मोन किछु झुझुआन भइए जाइ छै। कतेको गोटेक रचना देखलापर एहनो बुझाइत अछि, जेना ओ लोकनि दू-दू पाँतिबला तुकबन्दीक एकटा समूहकेँ गजल बुझै छथि। हमरा जनैत ओ लोकनि गजलकेँ दूरेसँ देखि कऽ ओइमे अपन पाण्डित्य छाँटब शुरू कऽ दै छथि। जँ मैथिली साहित्यक गुणधर्मकेँ आत्मसात कऽ चलैत कोनो व्यक्ति एक बेर दू-चारिटा गजल ढङ्गसँ देखि लिअए, तँ हमरा जनैत ओकरामे गजलक

संरचना प्रति कोनो तरहक द्विविधा नै रहि जएतै।

तैँ सामान्यतः गजलक सम्बन्धमे नव जिज्ञासुक लेल जँ किछु कहल जाए तँ बिना कोनो पारिभाषिक शब्दक प्रयोग कएने हम ऐ तरहेँ अपन विचार राखऽ चाहैत छी- गजलक पहिल दू पाँतिक अन्त्यानुप्रास मिलल रहै छै। अन्तिम एक, दू वा अधिक शब्द सभ पाँतिमे सझिया रहलोपर साझी शब्दसँ पहिनुक शब्दमे अनुप्रास वा कही तुकबन्दी मिलल रहबाक चाही। अन्य दू-दू पाँतिमे पहिल पाँति अनुप्रासक दृष्टिएँ स्वच्छन्द रहैत अछि। मुदा दोसर पाँति वा कही जे पछिला पाँति स्थायीबला अनुप्रासकेँ पछुअबैत चलै छै।

ई तँ भेल गजलक मुँह-कानक संरचना सम्बन्धी बात। मुदा खाली मुँहे-कानपर ध्यान देल जाए आ ओकर कथ्य जँ गोड़िआइत वा बौआइत रहि जाए तँ देखबामे गजल लगितो यथार्थमे ओ गीजल भऽ जाइत अछि। तैँ प्रस्तुतिकरणमे किछु रहस्य, किछु रोमाञ्चक सङ्ग समधानल चोट जकाँ गजलक शब्द सभ ताल-मात्राक प्रवाहमय साँचमे खचाखच बैसैत चलि जएबाक चाही। गजलक पाँतिकेँ अर्थवत्ताक हिसाबेँ जँ देखल जाए तँ कहि सकैत छी जे हऽरक सिराउर जकाँ ई चलैत चलि जाइ छै। हऽरक पहिल सिराउर जइ तरहेँ धरतीक छाती चीरि कऽ ओइमे कोनो चीज जनमाओल जा सकबाक आधार प्रदान करै छै, तहिना गजलक पहिल पाँति कल्पना वा विषय वस्तुक उठान करैत अछि, दोसर पाँति हऽरक दोसर सिराउरक कार्यशैलीक अनुकरण करैत पहिलमे खसाओल बीजकेँ आवश्यक मात्रमे तोपन दऽ कऽ पुनः आगू बढ़बाक मार्ग प्रशस्त करैत अछि। गजलक प्रत्येक दू-पाँति अपनोमे स्वतन्त्र रहैत अछि आ एक-दोसराक सङ्ग तादात्म्य स्थापित करैत समग्रमे सेहो एकटा विशिष्ट अर्थ दैत अछि। एकरा दोसर तरहेँ एहुना कहल जा सकैत अछि जे गजलक पहिल पाँति कनसारसँ निकालल लालोलाल लोह रहैत अछि, दोसर पाँति ओकरा निर्दिष्ट आकार दिस बढ़एबाक लेल पड़ऽबला घनक समधानल चोट भेल करैत अछि।

गीतक सृजनमे सिद्धहस्त मैथिल सभ थोड़े बगय-बानि बुझितहिँ आसानीसँ गजलक सृजन करऽ लगै छथि। सम्भवतः तैँ आरसी प्रसाद सिंह, रवीन्द्रनाथ ठाकुर, डॉ महेन्द्र, मार्कण्डेय प्रवासी, डॉ. गङ्गेश गुञ्जन, डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र आदि मूलतः गीत क्षेत्रक व्यक्तित्व रहितो गजलमे सेहो कलम चलौलनि। ओहन सिद्धहस्त व्यक्ति सभक लेल हमर ई गजल लिखबाक तौर-तरीकाक मादे किछु कहब हास्यास्पद भऽ सकैत अछि, मुदा नवसिखुआ सभकेँ भरिसक ई किछु सहज बुझाइक।

मैथिलीमे कलम चलौनिहार सभ मध्य प्रायः सभ एक-आध हाथ गजलोमे अजमबैत पाओल गेलाह अछि। जनकवि वैद्यनाथ मिश्र "यात्री" सेहो "भगवान हमर ई मिथिला" शीर्षक कविता पूर्णतः गजलक संरचनामे लिखने छथि। मुदा सियाराम झा "सरस", स्व. कलानन्द भट्ट, डॉ.राजेन्द्र विमल सन किछु साहित्यकार खाँटी गजलकारक रूपमे चिन्हल जाइ छथि। ओना सोमदेव, डॉ.केदारनाथ लाभ, डॉ.तारानन्द वियोगी, डॉ.रामचैतन्य धीरज, बाबा वैद्यनाथ, डॉ. विभूति आनन्द, डा.धीरेन्द्र धीर, फजलुर्रहमान हाशमी, रमेश, बैकुण्ठ विदेह, डा.रामदेव झा, रोशन जनकपुरी, पं. नित्यानन्द मिश्र, देवशङ्कर नवीन, श्यामसुन्दर शशि, जनार्दन ललन, जियाउर्ररहमान जाफरी, अजित कुमार आजाद, अशोक दत्त आदि समेत कतेको स्रष्टाक गजल मैथिली गजल-संसारकेँ विस्तृति दैत आएल अछि।

गजलमे महिला हस्ताक्षर बहुत कम देखल जाइत अछि। मैथिली विकास मञ्च द्वारा बहराइत पल्लवक पूर्णाङ्क १५, २०५१ चैतक अङ्क गजल अङ्कक रूपमे बहराएल अछि। सम्भवतः ३४ गोट अलग-अलग गजलकारक एकठाम भेल समायोजनक ई पहिल वानगी हएत। ऐ अङ्कमे डा. शेफालिका वर्मा एक मात्र महिला हस्ताक्षरक रूपमे गजलक सङ्ग प्रस्तुत भेलीह अछि। अही अङ्कक आधारपर नेपालीमे मैथिली गजल सम्बन्धी दू गोट समालोचनात्मक आलेख सेहो लिखाएल अछि। पहिल मनु ब्राजाकी द्वारा कान्तिपुर २०५२ जेठ २७ गतेक अङ्कमे आ दोसर डा. रामदयाल राकेश द्वारा गोरखापत्र २०५२ फागुन २६ गतेक अङ्कमे। छिटफुट आनो गजल सङ्कलन बहराएल हएत, मुदा तकर जानकारी ऐ लेखककेँ नै छै। हँ, सियाराम झा "सरस"क सम्पादनमे बहराएल "लोकवेद आ लालकिला" मैथिली गजलक गन्तव्य आ स्वरूप दऽ बहुत किछु फरिछा कऽ कहैत पाओल गेल अछि। ऐमे सरस सहित तारानन्द वियोगी आ देवशङ्कर नवीन द्वारा प्रस्तुत गजल सम्बन्धी आलेख सेहो मैथिली गजलक तत्कालीन अवस्था धरिक साङ्गोपाङ्ग चित्र प्रस्तुत करबामे सफल भेल अछि।

समग्रमे मैथिली गजलक विषयमे ई कहि सकैत छी जे मैथिली गीतक खेतसँ प्राप्त हलगर माटिमे गुणवत्ताक दृष्टिएँ मैथिली गजल निरन्तर बढ़ि रहल अछि, बढ़िए रहल अछि।

१०



आशीष अनचिन्हार

## मैथिली गजलक वर्तनमान

अनचिन्हार आखरक जन्मसँ पहिने (इंटरनेट पर) किछु गजलकार, समालोचक सभपर आरोप लगबैत छथि जे ओ गजलकेँ बुझि नै सकलाह। मुदा हमरा बुझने आलोचक सही छथि आ गजलकार गलत। कारण मैथिलीक किछु तथाकथित गजलकार सभ अपने गजलकेँ नै बूझि सकलाह। जकर परिणति अबूझ शेर सबहक रूपमे भेल। आ स्वाभाविक छै जे एहन-एहन गजलकेँ आलोचक नकारबे करतथि।

वर्तमान गजल-- अ.आ. (अनचिन्हार आखर) क बाद गजल अबूझ नै रहल। से हम किछु शेरक उदाहरणसँ देब।

१) चाहे अन्ना होथि आकि राजनीतिक पार्टी, दूनूक स्थितिकेँ परखैत मिहिर झा कहै छथि-

छोड़ि दिऔ हाथ देखिऔ केम्हर जाइ छै
जेतै तँ ओ उम्हरे सब जेम्हर खाइ छै

२) तँ जगदानंद झा "मनु" विस्थापित लोकक वेदना देखार करैत कहै छथि-

सोन सनक घर-आँगन स्वर्ग सन हमर परिवार
छोड़ि एलहुँ देस अपन दू-चारि टकाक बेपार पर

३) गप्प जँ आधुनिक शिक्षापर होइ आ ताहूमे कपिल सिब्बलकेँ धेआन रखैत तँ ताहूमे गजल पाछाँ नै रहल। अभय दीपराज जी कहैत छथि-

परीक्षाक जखन हम नाम सुनैत छी तँ कँपैत छी,
लगैत अछि सबटा बिसरल रहैत छी जे की पढ़ल अछि

४) संसार बदलि गेल मुदा नै बदलल तँ मिथिला, एकरे लक्ष्य करैत दीप नारायण "विद्यार्थी" कहै छथि-

जाति-पातिक भेद नहि बदलल समाजक आधार नहि बदलल
कोसीक धार बदलि गेल मित! जीवन धार नहि बदलल

५) अही मिथिलाक सभसँ लज्जाजनक पहलू दहेज पर सुनील कुमार झा एना टिप्पणी करै छथि-

बेटीक बियाहमे बिकल अंगा-नुआ
लड़काक सूट तँ कहले नै जाइ-ए

६) अही समाजक एकटा आर पहलू पर उमेश मंडल कहै छथि-

कियो ककरो नहि देखैए ऐ समाजमे
मोने मन झगड़ाइए चलू घुरि चली

७) आधुनिक मीडिआपर क्रूरतम प्रहार करैत मैथिलीक दोसर मुदा सक्षम महिला गजलकार श्रीमती शांतिलक्ष्मी चौधरी कहै छथि-

पापक पराकाष्ठामे जन्मै श्रीकृष्ण
मीडिआ छथि जागल कंसक भेषमे
आ एतबे पर नै रुकैत छथि। आ फेरो कहै छथि-
सोसल साइट पर करैत छै सेंसर के दाबी रे भाय
अभिव्यक्तिक स्वच्छंद साँढ़ मुँह बन्हबै की जाबी रे भाय

८) मुदा एहन परिस्थिति बेसी दिन बरदास्त नै कएल जा सकैए आ तँए ओम प्रकाश जी कहै छथि-

मान-अपमान दुनू भेटै छै, ई मायाक थीक लीला,
अन्याय कँ सदिखन दी मोचाड़ि, यैह थीक जिनगी

९) प्रेम आ प्रेम जनित वेदना गजलक प्रमुख अंग थिक। बिना एकरा गजल झुझुआन लागत। वर्तमान गजलमे इहो भेटत। रवि मिश्रा "भारद्वाज" कहै छथि-

मोन हमर बहुत चंचल ताहि पर ई यौवन
एना जे नैना चलेबै तँ हमर ईमान झुकि जेतै

आ इएह प्रेम जँ परिपक्व भऽ जाए तखन

१०) त्रिपुरारी कुमार शर्मा जीक शेर जन्मैए-

आँखि मिला कऽ हमरा सँ राह पकड़ लेलि अहाँ
कोना कटै अछि दिन आब रचना गवाह अछि

हमर मिहिर झा जीकेँ बूझल छन्हि जे ई वेदना किएक छै तँए ओ कहैत छथि-

हमरा अहाँ तोड़लहुँ सपना बुझि कऽ
हमरा अहाँ छोडलहुँ अपना बुझि कऽ

मुदा एतबो भेलाक बादो मैथिली ओ भाषा थिक जइमे विद्यापति सन कवि भेलाह। विद्यापति आशावादक सभसँ बड़का कवि छथि। आ हमर ओम प्रकाश जी अही आशाकेँ पकड़ि कहै छथि-

झाँपै लेल भसियैल जिनगीक टूटल धरातल
सपनाक नबका टाट भरि दिन बुनैत रहै छी

कुल मिला मैथिली गजल एखन विकासक दोसर चरणमे चलि रहल अछि जकर बानगी उपरक उदाहरण सभमे देखल जा सकैए।

मैथिली गजलक भविष्य पर हमर कोनो टिप्पणी नै रहत कारण हम कोनो ज्योतिषी नै छी।

आ अतीतो पर नै कहब कारण ई सभकेँ बूझल छै। ओना मंजर सुलेमानक आलेखक बाद मैथिली गजल निश्चित रूपे पाछाँ गेल (जीवन झासँ पाछाँ) जे स्वागत योग्य अछि।

## ११



## गजेन्द्र ठाकुर

गजल, रुबाइ, कता, हाइकू, शेनर्यू, टनका, हैबून, कुण्डलिया, दोहा, रोला ई सभ एकटा स्थापित विधा अछि। स्थापित विधा माने जकर लिखबाक विधि जइ भाषा सभक ई मूल खोज अछि, ओइ भाषामे स्थापित

भऽ गेल अछि। जँ हाइकू लिखबा काल कोनो निअम पालन नै करी तँ ओकर नाम क्षणिका पड़ि गेलासँ ओ हाइकू दोषविहीन नै भऽ जाएत। जँ कोनो भाषासँ हम गजल/ रुबाइ/ कता मैथिलीमे प्रयोग लेल सोचै छी तँ ऐ कारणसँ जे ओ ओइ भाषाक चमत्कारिक चीज अछि, मैथिलीक छौंक लगलासँ कोनो आर चमत्कारक हम आशा राखै छी। सएह हाइकू, शेनर्यू, टनका आ हैबून लेल सेहो लागू अछि। आब एतऽ ई देखबाक अछि जे कोनो विधाक आयात सतर्कतासँ हुअए, ओइ विधाक सैद्धान्तिक पक्ष सुदृढ़ छै। से जेना तेना आयात कऽ हाथपर हाथ धरि सए बर्ख आर इन्तजार करी ई सोचि जे तकर बाद एकर मैथिली छौंकबला अलग सिद्धान्त बनत, तँ तइ लेल स्थापित विधाक आयातक कोन बेगरता? एतेक समएमे तँ एकटा आर नव विधा बनि जाएत!

हँ, मात्र लिप्यांतरण कऽ देलासँ उर्दूक सभ गजल निअम हिन्दीक भऽ जाइत अछि, मुदा ओतहु वर्तनीक भिन्नता मारते रास काफियाक उपनिअमक निर्माणक बाध्यता उत्पन्न करैत अछि। मैथिली तँ साफे अलग भाषा अछि तँ एकर काफियाक निअम सोझे आयातित नै भऽ सकैए। बहरमे वर्ण/ मात्राक गणना पद्धति सेहो हिन्दी-उर्दूमे मात्र कोनो खास शब्दक वर्तनीक भिन्नताक कारण कखनो काल उपनिअम बनेबाक खगता अनुभूत करबैए, मुदा से मैथिलीमे सोझे आयातित नै भऽ सकैए कारण ई साफे अलग भाषा थिक। तँ की काफिया आ बहरक वर्ण/ मात्रा गणना पद्धति मैथिलीमे साफे छोड़ि देल जाए? आकि ओइमे ततेक ढील दऽ देल जाए जे ओकर कोनो मतलबे नै रहए? आ तखन जे बहरमे लिखथि वा काफियाक शुद्ध प्रयोग करथि से भेलथि कट्टर आकि जे एकर विरोध करथि से भेला कट्टर? आ जँ बिन काफिया आ बहरक गजलकेँ गजल नै कहल जाए तँ ओ रचना महत्वहीन भऽ गेल? ओ गजल नै भेल, वा जीवन युगक मैथिली गजल भेल, मुदा गीत/ कविता तँ भेबे कएल। कोनो गजल मात्र काफिया आ बहरक शुद्धता मात्र रहने उत्कृष्ट तँ नहिए हएत, मुदा उत्कृष्ट हेबाक सम्भावनाक प्रतिशतता कएक गुणा बढ़त। तहिना कोनो गजल सन रचना जँ अशुद्ध काफियामे आ बे-बहर अछि तँ सएह मात्र ओकर उत्कृष्टताक प्रमाण भऽ जाएत? एकर विपरीत हम ई कहए चाहब जे ओहनो रचना उत्कृष्ट भऽ सकैए, मुदा तकर सम्भावनाक प्रतिशतता भयंकर रूपेँ घटि जाएत।

गजल, रुबाइ, कता, हाइकू, शेनर्यू, टनका, हैबून, कुण्डलिया, दोहा आ रोला निअमबद्ध रचना अछि। एकरा अकविता, गद्य-कविता आ गीतक स्वरूप

देलासँ अहाँ भाषाक कोन उपकार कऽ सकब? कारण अकविता, गद्य-कविता आ गीत तँ स्वयं स्थापित विधाक स्वरूप लऽ लेने अछि। छोट कविता क्षणिका भऽ सकत, हाइकू नै। कुण्डलिया, दोहा आ रोलाक निअम मैथिलीमे बनेबामे कोनो असोकर्ज नै भेल कारण ई सोझे आयातित भऽ गेल मुदा गजल, रुबाइ, कता, हाइकू, शेनर्यू, टनका, हैबूनमे वर्ण/ मात्रा गणना पद्धति जापानी आ उर्दू-फारसीसँ अहाँ लइए नै सकै छी। जापानक लेखन पद्धति अल्फाबेट (वर्ण) आधारित अछिये नै, तखन अहाँ ओकर गणना पद्धति कोना आयात कऽ सकब। ओकर तरीका छै, पाश्चात्य तरीका आ सिलेबल आधारित लेखन पद्धति सेहो जापानी भाषामे होइ छै, से तकर प्रयोग कऽ ओइ चित्रात्मक लेखनक सिलेबल आधारित शैलीक मिलान संस्कृतक वार्णिक छन्द गणना पद्धतिसँ कएल गेल आ ओकरा हाइकू, शेनर्यू आ टनका लेल प्रयोग कएल गेल। तहिना गजल, कता आ रुबाइमे वैज्ञानिक आधारपर मैथिली भाषाक सापेक्ष निअम बनाओल गेल जइसँ गजल, कता आ रुबाइ मैथिलीमे दोसर भाषासँ एलाक उपरान्तो अपन मूल विशेषता बना कऽ राखि सकल। आ तकर बाद जे मैथिली गजल आ गजलकारक संख्यामे परिणामात्क आ गुणात्मक वृद्धि भेल अछि, से दुनियाँक सोझाँ अछि।

## रिपोर्ताज

४ दिसम्बर २०१० (शनि दिन) मिथिला सेवा संघ, जैतपुर (बदरपुर, नई दिल्ली) द्वारा भव्य रूपेँ विद्यापति पर्व समारोहक सफल आयोजन कएल गेल। उक्त आयोजनक अध्यक्षता केलनि मैथिली/ हिन्दीक वरिष्ठ साहित्यकार श्री गंगेश गुंजन आ विशिष्ट अतिथि रहथि युवा पत्रकार ओ बहुविध रचनाकार श्री गजेन्द्र ठाकुर। अध्यक्षीय भाषणक नमहर कड़ीमे श्री गंगेश गुंजन आग्रह जतौलनि जे ऐ आयोजनमे कविगोष्ठीक आयोजन आ महिलाक अनुपस्थितिकेँ भरल जाए। आतिथ्य भाषणमे श्री गजेन्द्र ठाकुर एक मात्र पाँतीमे गएर बाभनक उपस्थितिकेँ सेहो निश्चित करबाक विचार देलनि।

विजय मिश्र आ गंगेश गुंजन द्वारा दीप प्रज्वलनक पछाति मैथिलीक चर्चित-परिचित कलाकार द्वारा धमगिज्जर गीतनाद प्रस्तुत कएल गेल जे भोर धरि दर्शककेँ नै उठबाक लेल बन्हने रहल। श्रोता/ दर्शकक उपस्थिति सेहो अपेक्षासँ बेसी छल, जे प्रशंसनीय अछि।